POPULATION DYNAMICS AND FAMILY WELFARE : A CASE STUDY OF DISTRICT GHAZIPUR (U.P.)

THESIS SUBMITTED FOR THE DEGREE OF

Doctor of Philosophy

IN

Geography

Submitted by

Rana Pratap Yadav

M.A.

Under the Supervision of

Dr. Kumkum Roy

PROFESSOR IN GEOGRAPHY

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

ALLAHABAD UNIVERSITY

ALLAHABAD - 211002

Enrolment No. 99AU/661

2002

Dedicated to
My Parents,
Bhaiya and Bhabhi
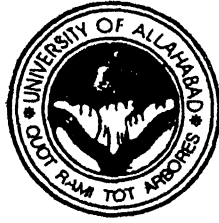
Allahabad University Allahabad
211002

Department of Geography

Dated 7. Nov 2002

Dr. Kumkum Roy
PROFESSOR

This is to certify that Shri Rana Pratap Yadav has worked for the full period prescribed under D Phil ordinances of Allahabad University, Allahabad, under my supervision It is recommended that his D Phil thesis entitled "POPULATION DYNAMICS AND FAMILY WELFARE A CASE STUDY OF DISTRICT GHAZIPUR (U P)" which embodies the results of his personal investigations, may be submitted for evaluation

Prof. (Dr.) Kumkum Roy
(Supervisor)
GEOGRAPHY DEPARTMENT
Allahabad University
Allahabad

अभारोक्ति

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की सम्पूर्णता का श्रेय शोध-निर्देशिका पूज्यनीया गुरू डॉ0 (श्रीमती) कुमकुम रॉय (प्रोफेसर भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद) को है, जिनके कुशल निर्देशन एव प्रोत्साहन ने ज्ञान की अभिनव दृष्टि द्वारा मेरा मार्ग प्रशस्त किया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भूगोल विभागाध्यक्ष प्रोफेसर सविन्द्र सिह के प्रति मै सहृदय आभार व्यक्त करता हूॅ जिन्होने शोध-कार्य हेतु विभागीय सुविधाएं प्रदान की।

मै पूज्य गुरुवर डॉ रामचन्द्र तिवारी (प्रोफेसर भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद) के प्रति श्रद्धावनत हूॅ जिन्होने अत्यन्त व्यक्त क्षणो मे भी मुझे प्रेरणा एव सहयोग दिया। परम आदरणीय गुरुवर डॉ0 सन्तोष कुमार मिश्रा (प्रवक्ता भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद) के प्रति शुद्ध हृदय से आभारी हूँ जिन्होने अपने सक्रिय सहयोग से प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को पूर्ण कराया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के कर्मचारियो— श्री केशव चन्द्र शुक्ल, श्री खेदूराम प्रजापति तथा श्री दिलीप कुमार दूबे को उनके सहयोग हेतु कृतज्ञता ज्ञापित करता हूॅ। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूज्य गुरुओ विशेषत प्रो0 बेचन दूबे, प्रो0 राणा पी बी सिह एव डॉ0 बनवारी राम यादव के प्रति नतमस्तक हूँ जिन्होने मुझे प्रेरणा एवं प्रोत्साहन दिया।

मै अपनी पूज्यनीया माताजी श्रीमती रामदुलारी देवी, पूज्य पिताजी श्री रामअधार यादव, पूज्यनीया भाभी श्रीमती शीला यादव, भइया श्री रामजी यादव (एस आई) तथा गुरू तुल्य ज्येष्ठ भ्राता डॉ0 हरिश्चन्द्र सिह यादव (वरिष्ठ प्रवक्ता-भूगोल, आर.एस एम पी जी कॉलेज धामपुर) डॉ0 नन्दलाल सिह यादव एव श्री श्याम जी यादव तथा पूज्य भाभी श्रीमती सुशीला यादव के प्रति आभार-प्रदर्शन की औपचारिकता मे न पड़कर उनके आशीर्वाद का ही आकांक्षी हूँ, क्योकि समस्त श्रेय आप पूज्य जनो को ही है।

सर्वेक्षण अवधि मे अहर्निश मेरे साथ रहे प्रिय लघु-भ्राता श्री संजय कुमार यादव को मैं अन्तर्मन से साधुवाद एवं शुभकामनाएं देता हूँ। इस अवधि मे हम दोनो के दुर्घटनाग्रस्त होने पर

आदरणीय श्री एस एस यादव, श्रीमती यादव एव आपकी दोनो सुपुत्रियो श्रीमती ममता यादव एव कु0 नीतू यादव ने तात्कालिक चिकित्सा उपलब्ध कराकर हमे आश्रय दिया इस हेतु मै आप सभी आदरणीय जनो के प्रति सहृदय कृतज्ञता ज्ञापित करता हूॅ। ग्राम्य सर्वेक्षण हेतु मुझे ग्राम प्रधानो, विकास खण्ड अधिकारियो, ग्राम विकास अधिकारियो, गणमान्य नागरिको तथा मित्रो- श्री छेदी सिह यादव, श्री चित्रसेन मिश्र, श्री अशोक कुमार राय, श्री दिवाकर यादव एव समादरणीय बी एस राय से जो सहयोग एव मार्गदर्शन प्राप्त हुआ उसके लिए मै आप सभी के प्रति आभार व्यक्त करता हूॅ।

जनपद एव जनपद के विभिन्न भागो मे स्थित कार्यालयो से आवश्यक अभिलेख एव आकडे उपलब्ध कराने मे जिलाधिकारी, अर्थ एव सख्याधिकारी, सूचना अधिकारी, जनगणना उपनिदेशक, चिकित्साधिकारी, कार्यालय राजकीय मुद्रणालय के श्री इन्द्रपाल, पुस्तकालय इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद, पुस्तकालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, कार्यालय जनसख्या निदेशालय लखनऊ, जनगणना निदेशालय लखनऊ, प्रकाशक पापुलेशन रिपोर्ट्स कोलकाता, के कर्मचारियो को उनके सहयोग एवं सहायता हेतु धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। मानचित्रण हेतु डॉ0 राजमणि त्रिपाठी (उपाचार्य, पत कृषि सस्थान झूँसी) एव उन सभी विद्वानो तथा लेखको के प्रति कृतज्ञ हूॅ जिनके शोध-प्रबन्ध, शोध-प्रपत्र एव पुस्तको आदि का अनुशीलन करने का अवसर मिला, तथा उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिनसे प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित हुआ हूॅ।

सर्वकालिक नैतिक समर्थन के लिए मै अपने अभिन्न मित्र श्री लालजी यादव (एस आई) श्री महेन्द्र प्रताप यादव, श्री भीम सिह यादव एवं श्री सत्येन्द्र प्रसाद के प्रति आभार प्रदर्शित कर हार्दिक प्रसन्नता की सहज अनुभूति कर रहा हूँ। प्रिय मित्रो- डॉ0 (कुँवर) मुनचुन गोपाल, डॉ0 बिजय कुमार सिह (एम.एससी पीएच डी. भूगोल बी.एच.यू) श्री नरेन्द्र कुमार (प्रवक्ता भूगोल, आदर्श इण्टर कालेज बेलवार, गोरखपुर) श्री कृपाशंकर पाल, चौधरी शिवपाल श्री चन्द्रेश यादव, शैलेन्द्र गुप्ता (शोध छात्र रसायन शास्त्र, चौ0 चरन सिह विश्वविद्यालय मेरठ) श्री बलजीत सिंह श्री अजय पाल तथा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सन्दर्शों पर सुझाव देने के लिए आदरणीय एन.एल पाल तथा भगवद्भक्ति मे अनुरक्त महात्मन् श्री सी.बी. राय के प्रति मै सादर आभार व्यक्त करता हूँ।

मै अपने सहपाठियो (शोधार्थियों) श्री प्रमोद कुमार उपाध्याय, कु0 नीलम कुशवाहा, कु0 मन्जू सिंह तथा गुरु-पुत्र सदीप रॉय, गुरु-पुत्री कु0 शिल्पी रॉय के सक्रिय सहयोग

के लिए धन्यवाद देता हूँ

मै पूज्य नानाजी स्व0 श्री राम बदन सिह यादव की दिवगत आत्मा के प्रति नतमस्तक हूँ जिनका कर्मठ व्यक्तित्व एव उदात्त विचार सदैव उत्तमोत्तम कृत्यो के लिए प्रेरणादायी रहेगा। आदरणीय चाचाजनो- श्री दुखन्ती यादव, श्री तिलक सिह यादव (शिक्षक जूनियर हाई स्कूल सादात), डॉ0 के डी यादव (प्रवक्ता हिन्दी, केन्द्रीय विद्यालय सीधी म0प्र0) एव आदरणीया चाचीजी श्रीमती हेमवती यादव (शिक्षिका प्राथमिक पाठशाला अकबरपुर) तथा प्रिय बहन श्रीमती हसा यादव, श्रीमती इन्दू यादव एव कु0 प्रतिभा यादव से मिले वैचारिक समर्थन एव प्रेरणा के लिए कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

मै अपनी धर्म-पुत्रियो- कु0 सञ्जू, कु0 आकाक्षा एव धर्म-पुत्र-द्वय कुमार दिव्याश एव कुमार विवेक तथा भानजे इन्द्रेश, तथा अनुपम को शुभकामनाए एव आशीर्वाद सम्प्रेषित करता हूँ जिनका निर्विकार मानस प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने हेतु प्रेरित करता रहा। प्रिय अनुजो- दिनेश कुमार, शिवानन्द, मनोज कुमार, अभिषेक, देवेन्द्र कुमार, आशीष कुमार, एव शैलेन्द्र कुमार के प्रति आभार एव धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होने कठिन परिस्थितियो मे मेरा उत्साह सम्बर्द्धन किया।

अन्त मे मै सुरूचिपूर्ण एव त्रुटिरहित कम्प्यूटर कम्पोजिग के लिए ''साधना कम्प्यूटर्स'' के सचालक श्री राजेन्द्र कुमार प्रजापति एव सहयोगियो को सधन्यवाद देता हूँ।

Rana Yadav

विजय दशमी

15 अक्टूबर 2002

राणा प्रताप यादव

शोध छात्र (भूगोल)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय,

इलाहाबाद 211002

विषयानुक्रम

पृष्ठसंख्या

पृष्ठसंख्या

पृष्ठसख्या

पृष्ठसंख्या

पृष्ठसंख्या

पृष्ठसंख्या

पृष्ठसख्या

पृष्ठसंख्या

पृष्ठसंख्या

पृष्ठसख्या

पृष्ठसख्या

पृष्ठसंख्या

पृष्ठसख्या

पृष्ठसंख्या

LIST OF MAPS AND DIAGRAMS

तालिका-सूची

प्रस्तावना

दुनिया अपनी अनेक नयी एव पुरानी जटिल समस्याओं के साथ इक्वीसवी सदी मे प्रवेश कर चुकी है। इन समस्याओं के समाधान पर ही इक्वीसवी सदी और सहस्राब्दि का भविष्य निर्भर करेगा। ऐसी ही एक समस्या है विश्व की तेजी से बढती हुई जनसख्या लगभग चार दशक पूर्वक सयुक्त राष्ट्र सघ ने स्पष्ट किया कि अगले पच्चीस वर्ष बाद बढती जनसख्या मानव अस्तित्व के लिए केन्द्रीय समस्या होगी। (यू0 एन0 1958V) 'परमाणु युद्ध, बढती जनसख्या तथा घनी-निर्धन के बीच बढता अन्तराल हमारे सामने सर्वप्रमुख समस्या है। (स्नो सी0 पी0 1959) स्थानीय, राष्ट्रीय एव वैश्विक स्तर पर शोधार्थियो, सचार माध्यमो, नीति निर्माताओ तथा प्रशासको द्वारा अनियन्त्रित जनसख्या ससाधन असन्तुलन से जनमानस को सचेत किया जाता रहा है। प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय सगठन यथा— 'सयुक्त राष्ट्र सघ', 'सयुक्त राष्ट्र के आर्थिक एव सूचना तथा नीति विश्लेषण विभाग', 'सयुक्त राष्ट्र जनसख्या आयोग', तथा 'विश्व बैक', प्रादेशिक एव वैश्विक जनसख्या समस्या के समाधान के लिए सहायता एव सुझाव देते रहे है।

जनसख्या का अध्ययन इसके तकनीकी, सास्कृतिक एव ससाधनात्मक विकास के अध्ययन से कम महत्व पूर्ण नही है। 1800 ई0 मे ससार की जनसख्या 90 करोड थी, जो 1900 मे 160 करोड, 1964 मे 320 करोड एव 2002 मे यह 620 करोड है। यह वृद्धि मानव के सतुलित सामाजिक तथा आर्थिक सास्कृतिक विकास के लिए एक चुनौती है। इस वृद्धि ने सम्पूर्ण मानव समाज के सम्मुख भविष्य के प्रति एक प्रश्नचिन्ह लगा दिया है जिसका समाधान अपेक्षित है। एक गभीर प्रश्न सामने आता है कि विकास की वर्तमान गति के साथ हमारी पृथ्वी कितने दिनो तक बढते हुए जनभार को पोषण प्रदान करती रहेगी (गार्नियर) विकसित देशो मे तो स्थिति फिर भी नियन्त्रण मे है, परन्तु विकासशील देश, जो विश्व जनसख्या का 3/4 भाग धारण करते है मे ऊँची जन्म एव स्वास्थ्य सेवाओं मे विकास से निम्न मृत्यु दर के कारण जनसख्या वृद्धि की विस्फोटक अवस्था से गुजर रहे है। परिणामत इन्हें बेरोजगारी, निम्न जीवन स्तर, कुपोषण, कृषि ससाधनो का कुप्रबन्ध एव मन्द औद्योगिक प्रगति इत्यादि समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जनसख्या समस्या से उत्पन्न चुनौतियो का समाज वैज्ञानिक अध्ययन विभिन्न संकल्पनाओं के माध्यम से करते है किन्तु क्षेत्रीय ईकाईयो की जनसंख्या-समस्या समाधान के लिए ये सकल्पनाए अपर्याप्त है। कोई ऐसी सार्वत्रिक संकल्पना नहीं है जो क्षेत्रीय विकास के लिए जनसख्या-समस्या

का समुचित समाधान प्रस्तुत कर सके। वर्तमान शताब्दी मे विकासशील देश गम्भीर जनसख्या दबाव को वहन करते हुए आत्मनिर्भरता के लिए प्रयासरत है। विकसित राष्ट्रो द्वारा पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर जनसख्या दबाव को ही केन्द्रीय बिन्दु मानकर सम्पूर्ण विद्वतापूर्ण तर्क को अभिकेन्द्रित करना समाज वैज्ञानिको के लिए चुनौती बन गया है।

विभिन्न जनसख्या एव विकास सम्बन्धी अध्ययन के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अधिकाश विद्वानो का ध्यान जनसख्या सम्बन्धी समस्याओं की यथार्थता को सामने लाना है जबकि आज समाज वैज्ञानिक इस बात की आवश्यकता अनुभव करते है कि समस्याओं के क्रम बद्ध विवरण के साथ ही साथ तार्किक समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाय।

■ जनसंख्या भूगोल की परिभाषा एवं अभिनव प्रवृत्तियाँ–

भूगोल के अध्ययन मे भू-क्षेत्र तथा मानव दो प्रधान एव महत्वपूर्ण अवयव है। भूगोल इन्ही दो घटको के परस्पर सम्बन्धो से उत्पन्न विविध परिवर्ती वितरणो तथा सम्मिश्र अर्न्तसम्बन्धो का विश्लेषण करता है।

भूगोल मे जनसख्या के अध्ययन मे सन् 1953 का महत्वपूर्ण स्थान है क्योकि इसी वर्ष जी0 टी0 ट्रिवार्था ने 'अमेरिकी भौगोलिक परिषद' के अध्यक्षीय भाषण मे 'दि केस फॉर पापुलेशन ज्याग्रफी' पढा तथा जनसख्या भूगोल को क्रमबद्ध भूगोल की शाखा के रूप मे प्रस्तुत किया। इनके अनुसार—'पृथ्वी तल पर बसे लोगो की प्रादेशिक विभिन्नता सम्बन्धी ज्ञान मे ही जनसख्या भूगोल के तत्व निहित है। (जी0 टी0 ट्रिवार्था 1951) 'जनसख्या भूगोल विद् जनसख्या के भूविन्यासगत पक्ष का, स्थल की समुच्चयिक प्रकृति के सन्दर्भ मे वर्णन करता है।'' (जेलिन्सकी डब्ल्यू0 1966 एप्रोलाग टू पापुलेशन ज्याग्रफी) बी0 गार्नियर की फ्रांसीसी भाषा से ऑग्ल भाषा मे बीवर द्वारा अनुदित पुस्तक मे जनसख्या भूगोल की निम्न परिभाषा दी गयी है--'जनसख्या भूगोल वर्तमान वातावरण के सम्बन्ध मे जनसॉख्यिकीय तथ्यो का वर्णन है।' (गार्नियर जे0 बी0, ज्याग्रफी ऑफ पापुलेशन) 'डेम्को' ने अपने द्वारा सम्पादित पुस्तक मे 'जनसख्या का भौगोलिक अध्ययन' अध्याय लिखा तथा जनसख्या भूगोल को परिभाषित करते हुए कहा -- 'जनसंख्या भूगोल, भूगोल की वह शाखा है जिसमे किसी क्षेत्र के जनसांख्यिकीय लक्षणो के क्षेत्रीय वितरण का विश्लेषण किया जाता है। इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय दशाओं के आपसी क्रिया-प्रतिक्रिया से उत्पन्न सामाजिक और आर्थिक प्रतिफलों का अध्ययन किया जाता है, समयानुसार जनसंख्या वितरण के क्षेत्रीय प्रारूप को प्रभावित करने वाली प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।' (डेम्को जी0 जे0 1970 पापुलेशन ज्याग्रफी

ए रीडर, सम्पादित) 'जनसख्या भूगोल न केवल जनसख्या के विभिन्न लक्षणो के क्षेत्रीय तथा सामयिक विवरण तथा अन्तरो का वर्णन करता है बल्कि उनके कारण, परिणाम तथा उन प्रक्रियाओं का वर्णन करता है जो इस प्रकार के वितरण व अन्तरो को जन्म देते है।' (चान्दना आर0 सी0 1997, जनसख्या भूगोल) 'जनसख्या भूगोल, धरातल पर जनसख्या के सख्यात्मक व सरचनात्मक विशेषताओं के वितरण और उनमे क्षेत्रीय अन्तर उत्पन्न करने वाले गतिशील तत्वो के अध्ययन के साथ-साथ क्षेत्रीय विभिन्नता को प्रभावित करने वाले कारको के जनसख्या तथ्यो से अर्न्तसम्बन्धो की व्याख्या करता है।' (यादव हीरालाल, 1997)

जनसख्या भूगोल विदो द्वारा दी गयी उपरोक्त परिभाषाए जनसख्या भूगोल का स्वरूप एव प्रकृति इगित करती है, परिभाषाओं के विश्लेषण से एक तथ्य साफ झलकता है कि यदि भौगोलिक अध्ययन का मूल विषय क्षेत्रीय अध्ययन प्रक्रिया है तो स्पष्टत जनसख्या एक गत्यात्मक तत्व है और उपरोक्त परिभाषाए जनसख्या भूगोल की प्रकृति के स्पष्टत निकट है एव उसे विश्लेषित करती है। परिभाषाओं के आधार पर जनसख्या भूगोल के निम्न अध्ययन तथ्य है--

(1) जनसख्या सम्बन्धी गुणो की स्थानिक, कालिक विशेषताओं का वर्णन करना।

(2) जनसख्या की विविध स्थानिक एव कालिक दशाओं का विवेचन करना।

(3) उपरोक्त स्थितियो को निर्मित करने वाली प्रक्रियाओं का विश्लेषण करना।

अभिनव प्रवृत्तियाँ–

साठ व सत्तर के दशको मे जनसख्या भूगोल के अध्ययन का प्रमुख उपागम जनसख्या के क्षेत्रीय वितरण का विश्लेषण परिवर्तनशील सन्दर्भ मे करना रहा है। फलत· इसमे क्षेत्रीय पक्ष के साथ-साथ समय का आयाम भी जुड गया। क्यो? के उत्तर मे यह पारिस्थितिकी के क्षेत्र मे भी प्रवेश कर गया। वस्तुत· आज भी पारिस्थितिकी उपागम महत्वपूर्ण है। पिछले दो दशको मे जनसख्या भूगोल मे अवधारणात्मक एव साख्यिकीय विधियो के प्रयोग मे वृद्धि हुई है, नये दृष्टिकोण तथा विधितन्त्रो के उपयोग से जनसख्या भूगोल सकारात्मक और व्यवहारपरक होता जा रहा है। जनसख्या भूगोल के कतिपय नवीन आयाम निम्न है--

(1) **भौगोलिक सूचना प्रणाली के अभ्युदय से जनगणनाओं मे अब छोटे क्षेत्रो के लिए जनसंख्या सम्बन्धी विस्तृत और विश्वसनीय आँकडे उपलब्ध कराये जा रहे है भारत मे ग्राम विकासखण्ड व जिले स्तर पर आँकडे उपलब्ध है फलतः जनसख्या सम्बन्धी अधिक सूक्ष्म विश्लेषण सम्भव हुआ है।**

(2) **अनेक मानचित्राकन तकनीक एव साँख्यिकीय विधियो के प्रयोग के फलस्वरूप**

अब जनसख्या परिवर्तन के लिए उत्तरदायी कारको-- जन्मदर, मृत्युदर प्रवास को शुद्धता से ज्ञात किया जा सकता है। उन्नत प्रवास को शुद्धता से ज्ञात किया जा सकता है। उन्नत साख्यिकीय विधियो का प्रयोग अब कम्प्यूटर की सहायता से किया जा रहा है एव बहुकारक विश्लेषणो से निष्कर्ष निकाले जा रहे है।

(3) दो दशक पूर्व जनसख्या सम्बन्धी अध्ययन और शोध कार्यों मे जनसख्या के प्रादेशिक प्रतिरूपो के अवलोकन और विश्लेषण पर अधिक ध्यान दिया जाता रहा है तथा जनाकिकी प्रतिरूपो का वितरण एव नियमितता की खोज पर ही ध्यान दिया जाता रहा है, परन्तु वर्तमान समय मे जनॉकिकी प्रक्रियाओं पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है।

(4) जनाकिकी ऑकडे अब विविध मापो मे उपलब्ध कराये जा रहे है, फलत विश्व स्तर से महाद्वीप, देश, राज्य, जिला और स्थानीय स्तर पर क्षेत्रीय विशिष्टताए, कार्यकारण सम्बन्ध तथा जनाकिकी प्रक्रियाओं को समझने मे सहायता प्राप्त हुई है।

(5) जनसख्या के नीति-निर्धारण, क्रियान्वयन और परिवर्तन के नाभिकीय केन्द्र के रूप मे छोटे क्षेत्रो की जनाकिकी विशेषताओं का अध्ययन अधिक उपयोगी प्रमाणित हो रहा है। वर्तमान मे वृहद प्रदेशो की तुलना मे लघु क्षेत्रो की जनाकिकी विशेषताओं पर शोध हो रहे है।

(6) जनसख्या प्रारूप की अवधारणा भूगोल मे नवीन विकास है, इसका अध्ययन वैज्ञानिक एव व्यवहारिक ह। इसमे जनाकिकी गुणो की पहचान कर अन्तर्सम्बन्धित व्याख्या की जा रही है। प्रारूपो का निर्धारण देश एव काल के परिप्रेक्ष्य मे जनसख्या सम्बन्धी विशेषताओं को समानता एव असमानता के आधार पर किया जाता है।

■ जनसंख्या भूगोल का साहित्य–

जनसख्या सम्बन्धी ज्ञान की जिज्ञासा मानव को उसके अस्तित्वकाल से रही होगी। मानव इतिहास इस बात का साक्षी है कि समय की गति के साथ राज्य की रूचि जनसंख्या (जन्म, मृत्यु, आवास एवं प्रवास) में सर्वप्रथम सुरक्षा एव करों के माध्यम से आय कमाने में रही होगी, जिसके कारण जनसंख्या का लेखा-जोखा रखना आवश्यक रहा होगा। इन उद्देश्यो ने ही जनसख्या के

परिमाणात्मक एव गुणात्मक पहलुओं का अध्ययन करने को बाध्य किया होगा।

इस प्रकार के अध्ययन के लिए पजीकृत जीवन समको की आवश्यकता पडी होगी जो कि वास्तव मे ईसा से 1250 वर्ष पूर्व मिश्र मे रामसे द्वितीय के शासनकाल मे पाया जाता है लेकिन समयानुसार विश्व के विभिन्न राष्ट्र अपने प्रशासन तथा सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक एव सास्कृतिक समस्याओं के निराकरण के लिए जनसख्या सम्बन्धी अभिलेख तैयार करते रहे। ईसा पूर्व 480 मे यूनान एव ईसा पूर्व 435 मे रोम मे जनगणना की गयी भारत मे रामायण एव महाभारत काल मे जनगणना के प्रमाण उपलब्ध है। 'कौटिल्य' के 'अर्थशास्त्र' एव 'अबुल फजल' के 'आइने अकबरी' मे भी जनगणना के स्पष्ट उल्लेख है।

जनसख्या सम्बन्धी बिखरे विचारो को वैज्ञानिक स्वरुप प्रदान करने का श्रेय जानग्राण्ट (1662) को है। जिन्होने मृत्यु के समको पर आधारित 'नेचुरल एण्ड पोलिटिकल आब्जर्वेशन मेड अपान द बिल्स ऑफ मारिटेलिटी' नामक पुस्तक प्रकाशित की। इसीलिए जॉनग्राण्ट को जनाकिकी का जनन माना जाता है। परन्तु जनसख्या को वैज्ञानिकता तब प्रदान की गयी जब थॉमस राबर्ट माल्यस (1796) ने जनसख्या सम्बन्धी विभिन्न प्रयोगो को प्रस्तुत किया जिसका शीर्षक था— 'एन एसे ऑन दि प्रिसिपल्स ऑफ दि पापुलेशन एज इट्स इफेक्ट टू दि फ्यूचर इम्प्रूवमेन्ट ऑफ सोसाइटी' गुई लार्ड नामक फ्रासीसी विद्वान ने जनाकिकी शब्द की रचना की। उन्नीसवी शताब्दी मे जोसिया, मिने, विलियन, फट, जानफिन्लेशन प्रभृति विद्वानो ने जनसख्या अध्ययन को विशेष प्रोत्साहन दिया। बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे कार्लसाण्डर्स, आइने ड्यूमट, पूलर लुडविग, मोसर, एव अल्फ्रेड लोटका ने जनसख्या सम्बन्धी अध्ययन को आगे बढाया। कैनन, वाइलेपर्ल, हेलपटन, बरहल्टर्स, आदि ने गणितीय एव साख्यिकीय रीतियो से जनाकिकी को महत्वपूर्ण बताया।

उपरोक्त सन्दर्श इस बात की ओर इगित करते है कि प्राचीन काल से विभिन्न विद्वानो एव विचारको द्वारा जनसख्या भूगोल का अध्ययन किया जाता रहा है। लेकिन भूगोल विद्वानो द्वारा जनसख्या को अपने आधार विषय बनाने के सन्दर्भ मे विवाद है। भौगोलिक अध्ययन मे जिस प्रकार भौम्याकृति, जलवायु, कृषिभूमि आदि तत्वों का क्रमबद्ध विश्लेषण किया जाता है, जनसख्या अध्ययन उपेक्षित रहा। आर0 सी0 चाँदना एव एम0 एस0 सिद्धू ने अपनी पुस्तक 'इन्ट्रोडक्शन टू पापुलेशन ज्याग्रफी' मे स्वीकार किया है कि मानव भूगोलवेत्ताओं ने यद्यपि जनसख्या वितरण एव उसके स्वरूप को विविध रूपो में व्यक्त किया है फिर भी भूगोल मे मानव के स्थान निर्धारण मे भूगोलविदो के ही विवाद का उल्लेख किया है। सन् 1933 तक प्रकाशित भूगोल के किसी भी प्रामाणिक अध्ययन ने जनसंख्या भूगोल का पूर्ण अभाव था हार्टशोर्न द्वारा

लिखित 'द नेचर ऑफ ज्याग्रफी' तथा 'परस्पेक्टिव ऑन द नेचर ऑफ ज्याग्रफी' मे भी भौतिक भूगोल ऐतिहासिक भूगोल, राजनैतिक भूगोल आर्थिक भूगोल आदि विविध शाखाओ का ही उल्लेख किया गया है। लेकिन जनसख्या भूगोल को एक क्रमबद्ध उपविभाग के रूप मे भी उल्लिखित नही किया गया है। डिकिन्सन एव होवार्थ ने भी 'द मेकिग ऑफ ज्याग्रफी' मे इसके स्वतत्र अस्तित्व का उल्लेख नही किया है। उल्ड्रीज एव ईस्ट के 'द स्पिरिट ऑफ ज्याग्रफी' मे भी जनाकिकी अध्ययन अपर्याप्त है। हेटनर ने अपने शोध प्रबन्ध 'मेथडोलाजिकल रैम्बल्स' (जिसे आपने 'विधि बिहार' कहा) मे मानव को भौगोलिक अध्ययन के रूप मे विश्लेषित किया। कैमिले वैलो ने 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइन्सेज' मे मानव को भौगोलिक विश्लेषण का लक्ष्य तक नही माना है। एच0 एच0 बैरोज की 'ज्याग्रफी एज ह्यूमन इकोलाजी' मे भी जनसख्या अध्ययन का सन्दर्भ नहीं प्राप्त होता।

सन् 1923 मे स्टेन डी ग्रीस ने अपने प्रपत्र— 'ऑन द डिफीनिशन मेथड एण्ड क्लासिफिकेशन ऑफ ज्याग्रफी' मे जनसख्या भूगोल को एक प्रतिष्ठित स्थान प्रदान किया जी0 टी0 ट्रिबार्थ के अनुसार 'फ्रास' के 'पियरे जार्ज' प्रथम भूगोल वेत्ता रहे जिन्होने जनसख्या भूगोल के विविध तथ्यो का प्रतिपादन सफलतापूर्वक किया।

वस्तुत बीसवी शताब्दी के मध्य तक कुछ महत्व पूर्ण अध्ययन प्रकाशित हो चुके थे लेकिन उनमे वितरण, घनत्व एव वृद्धि के अतिरिक्त अन्य विशेषताओं के अध्ययन का सर्वथा अभाव था। आग्लभाषी विश्व मे इस विषय का इतिहास सन् 1953 से प्रारम्भ होता है। विस्कान्सिन विश्वविद्यालय के प्रो0 जी0 टी0 ट्रिवार्था ने 'एसोसियेशन ऑफ अमेरिकन ज्याग्रफर्स' के समक्ष अपने अध्यक्षीय भाषण मे जनसख्या भूगोल को भूगोल की एक पृथक शाखा के रूप मे विकास की पहल की। आपने जनसख्या भूगोल का एक पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया तदुपरान्त यू0 एस0 ए0 एव विश्व के अन्य देशो के विश्वविद्यालयो ने उनका अनुगमन किया। प्रो0 ट्रिवार्था ने जनसख्या भूगोल को परिभाषित करते हुए बताया कि जनसख्या भूगोल का मुख्य ध्येय बसे हुए पृथ्वी तल पर जो विभिन्नता एव विविधता पाई जाती है, प्रादेशिक स्तर पर उसी का ज्ञान प्राप्त करना होता है। ट्रिवार्था के विचारो को अधिक गति प्रदान करने का कार्य 'डेम्को' ने किया। इन्होने जनसख्या की विशिष्टता पर अधिक बल दिया। 1954 मे पी0 ई0 जेम्स द्वारा सम्पादित पुस्तक 'अमेरिकन ज्याग्रफी इन्वेन्ट्री एम्ड प्रास्पेक्ट में ट्रिवार्था के अध्यक्षीय भाषण छपने के साथ ही जनसंख्या भूगोल को ठोस आधार प्राप्त हो गया। जे0 आई0 क्लार्क ने 'पापुलेशन ज्याग्रफी मे जनसख्या भूगोल को परिभाषित करने के साथ ही साथ उसके विषय क्षेत्र की परिसीमा बताया। विलवर जेलिन्स्की ने अपनी पुस्तक 'ए प्रोलाग टू पापुलेशन ज्याग्रफी' मे जनसख्या भूगोल वेताओं

हेतु जनसख्या से सम्बन्धित विविध पहलुओ के अध्ययन की तरफ स्पष्ट सकेत किया। गार्नियर की पुस्तक 'ज्याग्रफी ऑफ पापुलेशन' से फ्रास मे जनसख्या भूगोल को अधिक प्रोत्साहन मिला। पीटर्स तथा लारकिन (1979) ने 'पापुलेशन ज्याग्रफी प्राब्लम्स कान्सेप्ट एण्ड प्रास्पेक्ट' लिखा। डेम्को (1970) ने पापुलेशन ज्याग्रफी ए रीडर लिखा। इन प्रमुख भूगोल वेत्ताओं के अतिरिक्त डी० किग्सले ने 'पापुलेशन ऑफ इण्डिया एण्ड पाकिस्तान, एफ० जे० माकहाऊस ने 'पापुलेशन' (1958), ई० ए० एकरमैन ने 'ज्याग्रफी एण्ड डिमोग्रैफी इन द स्टडी ऑफ पापुलेशन' लिखा टी० एल० स्मिथ ने 'फण्डामेण्टल ऑफ पापुलेशन ज्याग्रफी (1960) ए० मैलेजीन' ट्रेण्डस एण्ड इश्यूज सोवियत ज्याग्रफी ऑफ पापुलेशन (1969) , डब्ल्यू० एस थाम्पसन ने 'पापुलेशन प्राब्लम' (1965) एल० हेनरी ने 'पापुलेशन एनालिसिस एण्ड माडल्स' (1976) तथा डी० आई० वैलेण्ट्री ने 'द थ्योरी ऑफ पापुलेशन' (1978) ने जनसख्या भूगोल पर विस्तृत प्रकाश डाला है।

भारत मे जनसख्या भूगोल का प्रारम्भ गुरुदेव सिह गोसल (1956) के शोध प्रबध से प्रारम्भ होता है। जिससे प्रभावित होकर एस० पी० चटर्जी ने भारत की जनसख्या का मानचित्रण विविध पक्षो के आधार पर किया। के० एस० अहमद ने सम्पूर्ण देश के सदर्भ मे जनसख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारको को स्पष्ट किया। उ० प्र० मे जनसख्या वृद्धि की प्रवृत्ति को 1947 मे प्रो० आर० एल० सिह द्वारा विश्लेषित किया गया। इसके अतिरिक्त जनसख्या भूगोल पर अधिकाधिक पुस्तके, शोध-प्रबन्ध एव शोध-प्रपत्र प्रस्तुत किये गये जिनमे प्रमुख रूप से सी० बी० मामोरिया द्वारा इण्डियाज पापुलेशन प्राब्लम, आर० सी० शर्मा द्वारा 'पापुलेशन ट्रेन्डस रिसोर्सेज एण्ड इनवार्मेण्टल हैण्ड बुक ऑफ पापुलेशन ज्याग्रफी', पी० जी० भट्टाचार्य द्वारा 'पापुलेशन प्राब्लम इन इण्डिया' (1961) एस० एन० अग्रवाल द्वारा 'इण्डियाज पापुलेशन प्राब्लम', (1977), हसराज द्वारा फण्डामेण्डल ऑफ डिमोग्रैफी पापुलेशन· स्टडीज विथ स्पेशल रिफरेन्स टू इण्डिया'। (1978) ए० भट्टाचार्या द्वारा पापुलेशन ज्याग्रफी इन इण्डिया। आर० सी० चान्दना द्वारा 'इण्ट्रोडक्शन टू पापुलेशन ज्याग्रफी आर० एन० मिश्र द्वारा 'द लोअर गगा घाघरा दो आब ए स्टडी इन पापुलेशन एण्ड सेटिलमेट ज्याग्रफी'। ओम प्रकाश द्वारा 'पापुलेशन ज्याग्रफी ऑफ उ० प्र०', सान्त्वना घोष द्वारा 'पापुलेशन ऑफ बिहार : ए ज्याग्राफिकल स्टडी', आई० रिचर्डस द्वारा 'पापुलेशन एण्ड सेटिलमेट इन मेरठ डिस्ट्रिक्ट', राजेन्द्र प्रसाद गुप्त द्वारा 'पापुलेशन ज्याग्रफी ऑफ राजस्थान' इत्यादि शीर्षक पर जनसख्या भूगोल का सम्यक् अध्ययन किया गया।

भारत मे जनसंख्या भूगोल के अन्तर्गत जनसख्या वितरण, घनत्व, एवं वृद्धि पर अधिक अध्ययन प्राप्त है लेकिन किसी क्षेत्र की जनसंख्या के विविध पहलुओं का सम्यक् अध्ययन वहाँ

के भौगोलिक परिवेश मे करने का सर्वप्रथम प्रयास कृष्णन एव चान्दना द्वारा किया गया। गोपाल कृष्णन का अध्ययन क्षेत्र अमृतसर एव गुरुदासपुर जनपद एव चॉदना का अध्ययन रोहतक एव गुडगॉव जनपद था। अण्डमान, नागालैण्ड एव मुर्शिदाबाद के राढ मैदान पर एव नेपाल का जनसख्या अध्ययन क्रमश पी० के० सेन, एल० आर० सिह, बनर्जी, रे तथा एस० के० मेहता द्वारा किया गया। तारा कानित्कार द्वारा 'प्रिसुपल ऑफ पापुलेशन स्टडीज' (1985) टी० के० राव व जी० रामाराव द्वारा 'इन्ट्रोक्शन टू इवाल्यूशन ऑफ डिमोग्रैफिक इम्पैक्ट ऑफ फेमिली प्लानिग प्रोग्राम', के० श्रीनिवास एव एस० मुकर्जी द्वारा 'डायनमिक्स ऑफ पापुलेशन एण्ड फेमिली वेलफेयर्स' आदि प्रमुख अध्ययन है जिसमे समग्र जनाकिकी विशेषताए भी सम्मिलित की गयी। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम सस्थान नई दिल्ली, अन्तर्राष्ट्रीय जनसख्या अध्ययन सस्थान मुबई, ग्रामीण स्वास्थ्य एव परिवार नियोजन सस्थान गाधीग्राम, मुख्य है जो जनसख्या व परिवार नियोजन से सम्बद्ध अध्ययन मे रत है।

■ जनसंख्या वृद्धि एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम–

सयुक्त राष्ट्र सघ के स्रोतो से प्राप्त आकडे बताते है कि दुनिया की जनसख्या 1804 मे एक अरब थी, 1927 मे 2 अरब 1960 मे 3 अरब, 1974 मे 4 अरब 1987 मे 5 अरब एव 1999 मे बढकर 6 अरब हो गयी। स्पष्टत 1960 से 1999 मे विश्व जनसख्या दुगुनी हो गयी। यू० एन० ओ० के 'सूचना एव नीति विश्लेषण विभाग' के अनुसार जनसख्या का यह बेलगाम काफिला 2030 तक 8 5 अरब हो जायेगा। जनसंख्या मे अप्रत्याशित उच्च वृद्धि का कारण इस अवधि मे विकासशील देशो की मृत्यु दर में ह्रास है। लगभग 4 59 अरब जनसंख्या विकासशील देशों मे निवास करती है। विकसित देशो मे कृषि व औद्योगिक उत्पादन बढ रहा है तथा जनसख्या न्यून गति से बढ रही है या स्थिर है जबकि विकासशील देशो मे जनसख्या तेजी से बढ रही है। वर्तमान मे वैश्विक जनसख्या वृद्धि 1 4 प्रतिशत प्रतिवर्ष, विकासशील देशो की 1 9 तथा भारत की 1 93 प्रतिशत प्रतिवर्ष है। भारत मे जनसख्या का आकार एव वृद्धि दर अपने जनाकिकी इतिहास के लिए अभूतपूर्व एवं चिन्ताजनक है। 1951 मे राष्ट्र की जनसख्या 36.10 करोड थी जो 1991 मे 84.30 करोड़ हो गयी तथा 2001 मे 102 70 करोड रही। अर्थात् भारतीय जनसंख्या मे 1951 से 2001 की अवधि मे 184 48 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 1991-2001 दशक मे वृद्धि 21.34 प्रतिशत रही।

जब 1974 मे विश्व की जनसंख्या 4 अरब पहुँच गयी तो अधिकतर देशो के प्रतिनिधियों का 'कैरो सम्मेलन' आयोजित किया गया तथा जनसंख्या की वृद्धि को कम करने के लिए अनेक

कार्यक्रम स्वीकार किये गये। यह प्रक्रिया साल दर साल चलती रही। इसी प्रकार 1994 मे काहिरा मे सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय जनसख्या सम्मेलन मील का पत्थर है। इसमे जनसख्या के मुद्दे को अन्तर्राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा स्थानीय स्तरो पर विकास के अनेक कार्यक्रमो के निर्माण क्रियान्वयन, निरीक्षण एव मूल्याकन का अभिन्न अग बनाने का प्रस्ताव पारित किया गया। इस सम्मेलन मे गरीबी उन्मूलन और मानव ससाधन मे निवेश को उच्च प्राथमिकता देने का प्रस्ताव रखा गया। भाग लेने वाले देशो ने सकल घरेलू उत्पाद का कम से कम 0 7 प्रतिशत सूचना सुलभता, बालक बालिकाओं के लिए प्राथमिक शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवा, लैगिक समानता एव महिला सशक्तीकरण जैसी परियोजनाओं मे लगाने का निर्णय लिया। काहिरा सम्मेलन और उसके पहले के अन्य सम्मेलनो के निष्कर्षों तथा नीतिगत निर्णयो के सन्दर्भ मे विचार करे तो स्पष्ट होता है अनेक देशो ने इससे लाभ उठाया है। यद्यपि भारत प्रथम विकासशील राष्ट्र है जिसने सन् 1951-52 मे सकारात्मक जनसख्या नीति लागू किया। भारत के सन्दर्भ मे परिवार कल्याण कार्यक्रम एक कल्याणकारी योजना है जिसका उद्देश्य व्यक्ति, समाज एव राष्ट्र की उन्नति करना है। कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल मनुष्य की सख्या को कम करना है बल्कि लोगो के जीवन स्तर को बेहतर बनाना है। (अग्रवाल एस0 एन0 इण्डियाज पापुलेशन प्राब्ल्मस 1978) प्रथम पचवर्षीय योजना मे जनसख्या वृद्धि के घटको की व्याख्या कर परिवार कल्याण कार्यक्रम के विधियो के प्रति सकारात्मक अभिरूचि उत्पन्न करने पर विशेष बल दिया गया। द्वितीय योजना मे स्वेच्छा पूर्वक नशबन्दी पर जोर दिया गया। तृतीय योजना मे औषधि उपगमन के स्थान पर शिक्षा प्रसार उपगमन पर विशेष बल दिया गया। प्राथमिक स्वास्थ्य कन्द्रो के प्रसार द्वारा परिवार कल्याण विधियो की सरलतम पहुँच पर ध्यान केन्द्रित किया गया। 1966-69 तक तीन एक वर्षीय योजनाओं मे कार्यक्रम मे अधिक सक्रियता लाते हुए 'स्वास्थ्य मन्त्रालय' को 'स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मन्त्रालय' में परिवर्तित कर दिया गया लूप, बन्ध्याकरण आदि मे तेजी लाई गयी। 'हम दो हमारे दो', 'छोटा परिवार सुख का आधार' इत्यादि का व्यापक प्रसार किया गया।

चतुर्थ योजना मे 'छोटा परिवार' विकास का प्रतीक माना जाने लगा जन्म दर को 39 प्रति हजार से 1978 तक 23 प्रति हजार करने का समयबद्ध लक्ष्य रखा गया। पॉचवी योजना मे परिवार कल्याण कार्यक्रम मे आधारिक परिवर्तन किया गया न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, बाल एव मातृत्व पोषण आदि आयामो को परिवार कल्याण कार्यक्रम से सम्बद्ध किया गया। 16 अप्रैल, 1976 को अनिवार्य बन्ध्याकरण की नीति के साथ जनसंख्या नीति लागू की गयी जिसका दूरगामी नकारात्मक प्रभाव पडा। 1977 मे जनता सरकार ने 'परिवार नियोजन' को 'परिवार कल्याण कार्यक्रम' मे परिवर्तित कर स्वेच्छया बन्ध्याकरण की मुख्य प्रतिपाद्यता के साथ समग्र विकास वाली जनसंख्या नीति लागू की। छठी योजना मे श्रीमती गांधी द्वारा परिवार कल्याण कार्यक्रम को 20 सूत्रीय योजना मे प्रमुख महत्व दिया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार कल्याण साधनो के विस्तार, वन्ध्याकरण कराने वालों को प्रोत्साहन राशि, परिवार

कल्याण केन्द्रो पर स्त्री कर्मचारियो की नियुक्ति की व्यवस्था की गयी। सातवी योजना मे 42 प्रतिशत दम्पतियो को परिवार कल्याण के अन्तर्गत लाभान्वित कराना, शिशु मृत्यु दर 90 प्रति हजार करना एव स्त्री शिक्षा पर विशेष ध्यान देने का लक्ष्य रखा गया एव स्त्रियो की वैवाहिक उम्र 20 वर्ष करने का प्रस्ताव किया गया। आठवी योजना मे मातृ शिशु स्वास्थ्य योजना को विशेषाधिकार परिप्रेक्ष्य मे लागू किया गया। 'हेल्थ फार अण्डर प्रिविलेज्ड' फलक को सगत बनाने पर बल दिया गया।

राष्ट्रीय जनसख्या नीति 2000 के अनुसार सामाजिक आर्थिक विकास के लिए जीवन मे गुणात्मक सुधार किया जाना आवश्यक है ताकि मानव शक्ति उत्पादक पूँजी मे परिवर्तित हो सके। इस नीति के तात्कालिक उद्देश्यो मे गर्भनिरोध के उपायो के विस्तार हेतु स्वास्थ्य एव बुनियादी ढॉचे का विकास किया गया मध्यकालिक उद्देश्यो मे 2010 तक कुल प्रजनन दर को घटाना। दीर्घ कालिक उद्देश्यो मे सन् 2045 तक स्थाई आर्थिक विकास हेतु आवश्यक स्थिर जनसख्या के उद्देश्य की प्राप्ति। इसके लिए शिशु स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, 14 वर्ष तक शिक्षा को मुफ्त तथा अनिवार्य बनाना, सार्वभौमिक टीकाकरण, प्रजनन विनियमन के लिए सूचना सलाह, तथा गर्भ निरोधक विकल्पो को विकास के लक्ष्य निर्धारित किये गये है। प्रधानमत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने वर्ष 2002 तक जनसख्या स्थिरता के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु राष्ट्रीय जनसख्या स्थिरता कोष' को स्थापित करने की घोषणा 22 जुलाई, 2000 को की। प्रधानमत्री की अध्यक्षता मे एक सौ सदस्यीय राष्ट्रीय जनसख्या आयोग गठित किया गया है। आयोग राष्ट्रीय जनसख्या नीति के क्रियान्वयन की समीक्षा करेगा, एव तदनुरूप सुझाव एव आवश्यक निर्देश देगा तथा व्यापक जनअभियान तैयार करने मे मदद करेगा। दसवी योजना के दृष्टिकोण पत्र मे 2011 तक दशकीय जनसख्या वृद्धि को 16.2 प्रतिशत करना, शिशु मृत्यु दर को 2007 तक 45 तथा 2012 तक 10 प्रति हजार जीवित जन्मो तक लाने का लक्ष्य रखा गया है।

आंकड़ों के स्रोत–

जनसख्या वृद्धि को प्रभावित करने वाले अनेक घटक है। ये घटक जनसख्या की निम्न एव उच्चवृद्धि के लिए उत्तरदायी है। जनसख्या वृद्धि दर को कम करने, जनसख्या एव परिवार कल्याण नियोजन हेतु सुझावो को प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त आकडो की आवश्यकता होती है तथा इस सन्दर्भ मे परिवार कल्याण कार्यक्रम का मूल्यांकन अनिवार्य होता है। प्रस्तुत अध्ययन मे जनगणना विभाग द्वारा प्रकाशित, अप्रकाशित आँकड़े, जनपद अभिलेख, साख्यिकी कार्यालय, जिला सूचना कार्यालय, जिला चिकित्साधिकारी कार्यालय, जनसंख्या निदेशालय (लखनऊ), उ0 प्र0 सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग (लखनऊ), राजकीय प्रेस इलाहाबाद, शिक्षा एव स्वास्थ्य बुलेटिनो एव विभिन्न सरकारी कार्यालयों एवं कतिपय विद्वानों द्वारा प्रकाशित कृतियों से आंकड़े

सग्रहीत किये गये है।

प्रस्तुत अध्ययन— (1) जनगणना स्रोतो से एव विभिन्न प्रशासकीय स्रोतो से प्राप्त ऑकडो के विश्लेषण एव (11) सर्वेक्षण द्वारा सग्रहीत प्राथमिक ऑकडे जो मर्त्यता उत्पादकता, व्यवसायिक सरचना, जनसख्या वृद्धि एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की प्रवृत्तियो के विश्लेषण के लिए प्रश्नावली विधि से प्राप्त किये है, की विवेचना पर आधारित है।

द्वितीयक आँकडो का प्रयोग अध्ययन क्षेत्र की भौतिक सास्कृतिक पृष्ठभूमि, के स्पष्टीकरण के लिए प्रयोग किया गया है। 1951-2001 तक विविध स्रोतो से प्राप्त जनगणना आकडो का प्रयोग जनसख्या वितरण, घनत्व, वृद्धि, जनाकिकी सरचना, प्रजनन दर, मृत्युदर एव जनसख्या स्थानान्तरण की प्रवृत्तियो के विश्लेषण के लिए किया गया है। परिवार कल्याण कार्यक्रम की लक्ष्यानुरूप सफलता का विवेचन जिला चिकित्साधिकारी कार्यालय से प्राप्त ऑकडो के आधार पर किया गया है।

मानचित्र तथ्यात्मक सूचना का महत्वपूर्ण स्रोत है। स्थिति, विस्तार, उच्चावच, ढाल, प्रवाह, का विश्लेषण स्थलाकृतिक मान चित्र पर आधारित है। जिलाधिकारी कार्यालय से प्रकाशित आकडो के आधार पर जनपद की जलवायविक दशाओं की सम्यक विवेचना की गयी है।

विकासशील अर्थव्यवस्था मे उत्पादकता, मर्त्यता, व्यवसाय एव परिवार कल्याण कार्यक्रम से सम्बद्ध विश्लेषण के लिए द्वितीयक ऑकडो की अपर्याप्तता है। अत सामाजिक आर्थिक गत्यात्मकता के लिए उपरोक्त सन्दर्भित सूचनाए चयनित 10 गॉवो के 500 उत्तरदाताओं द्वारा प्राप्त की गयी है। उत्पादकता, मर्त्यता, जनसख्या वृद्धि, व्यवसायिक सरचना की प्रवृत्तियो की विवेचना एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की सफलता एव असफलता का मूल्याकन तथा नीति नियोजन के लिए सूचनाओं का सग्रह प्रश्न सारणी विधि से किया गया है। सर्वेक्षण हेतु प्रत्येक तहसील से दो गाँवो का चयन वर्गबद्ध अनियत प्रतिचयन विधि पर आधारित है।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध का आधार भूत उद्देश्य गाजीपुर जनपद की जनसख्या समस्या को वर्तमान विकास की चुनौतियों के सन्दर्भ मे प्रस्तुत करना है। जनसख्या की भूवैन्यासिक गत्यात्मकता अध्ययन क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में प्रस्तुत करना तथा जनसंख्या परिवर्तन के लिए उत्तरदायी कारका- जन्मता, मर्त्यता तथा प्रवास का परीक्षण करना है। प्रस्तुत शोध मे उद्देश्यो से सम्बद्ध सन्दर्शों को निम्न रूप में प्रस्तुत किया गया है—

(1) अध्ययन क्षेत्र के जनसख्या प्रतिरूप का भूवेन्यासिक वितरण तथा जनसख्या वृद्धि की स्थानिक विभिन्नताओं का विश्लेषण करना।

(2) जन्मदर तथा मृत्युदर प्रतिरुपो का विश्लेषण तथा प्रव्रजित तथा आव्रजित जनसख्या प्रतिरूप का विवेचन करना।

(3) अध्ययन क्षेत्र की जनाकिकी सरचना— आयु लिग सरचना, साक्षरता, शेक्षिक स्तर, वैवाहिक स्तर तथा व्यावसायिक सरचना मे परिवर्तन एव सामाजिक सास्कृतिक विशेषताओं का अध्ययन करना।

(4) परिवार कल्याण कार्यक्रम, जनसख्या नीति की सफलता का मूल्याकन एव असफलता के कारणो का पता लगाना एव प्रभावो का स्पष्टीकरण करना।

(5) उत्पादकता एव सामाजिक आर्थिक कारको के सम्बन्धो की व्याख्या यथा -- शिशु का आर्थिक महत्व, पुत्र को महत्व देने का कारण, पारिवारिक सगठन, महिला स्तर तथा उपरोक्त से सम्बद्ध कार्यक्रम एव नीतियाँ सुझाना जिससे जन्म दर पर नियन्त्रण पाया जा सके।

जनपद गाजीपुर की जनसख्या गत्यात्मकता एव परिवार कल्याण कार्यक्रम का भोगोलिक विश्लेषण कतिपय परिकल्पनाओं के सत्यापन एव परीक्षण के लिए किया गया है। परिकल्पनाए विभिन्न विद्वानो द्वारा विकासशील अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ मे जनसख्या वृद्धि एव गत्यात्मक सामाजिक आर्थिक, सास्कृतिक एव राजनीतिक परिवेश के विभिन्न घटको पर निर्भर है। सम्बद्ध परिकल्पनाए निम्नवत है—

(1) विकास प्रक्रिया एव मानव ससाधन के अन्योन्याश्रित सम्बन्ध एव तज्जनित परिणाम ही किसी क्षेत्र की सामाजिक अवसरचना को निर्धारित करता है।

(2) विकास के आधार भूत कारक के रूप मे सम्भावनाएँ व्यापक एव असीमित है।

(3) श्रमशक्ति की कारक जनसख्या को विकास मे बाधित करने के बजाय सहायक तत्व के रूप मे परिभाषित किया जाय।

(4) अत्यन्त पिछड़े कृषिगत समाज मे जहाँ मानव ससाधन के विकास को सामन्ती एव औपनिवेशिक एव ऐतिहासिक तत्वो ने अवरुद्ध कर रखा है, जनसख्या बहुत हद तक गरीबी एव पिछड़ेपन का कारण प्रतीत होती है।

(5) वैज्ञानिक एव तकनीकी विकास का तर्क सगत ढाँचा ही किसी पिछडे खेतिहर समाज की जनसख्या समस्या का हल प्रस्तुत करता है।

(6) सघन कृषित क्षेत्रो मे स्थानान्तरण के लिए आकर्षण कारक की अपेक्षा प्रतिकर्षण कारण उत्तरदायी है, इस हेतु नगरीय आकार मे अप्रत्याशित वृद्धि सर्वोत्तम मायक है।

(7) स्वास्थ्य सेवाओं मे विस्तार से मृत्युदर घटती है, परन्तु जन्मदर मे अनुकूल कभी नही आती है, इस हेतु परिवार कल्याण विधियो की उपलब्धता एव अनेक सामाजिक आर्थिक, सास्कृतिक कारक उत्तरदायी हे।

(8) उच्च प्रजनन दर उच्च मृत्युदर से सम्बद्ध हे। सामाजिक आर्थिक स्तर के अनुसार छोटे परिवार की स्वीकार्यता मे अन्तर है।

विधितन्त्र एव शोध प्रबन्ध की सरचना–

जनसख्या सम्बन्धी समस्याओं का समाधान, भौगोलिक दृष्टिकोण से करना तथा क्षेत्रीय प्रादेशिक अन्तर का स्पष्टीकरण जनपद गाजीपुर के विशेष सन्दर्भ मे प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे जनसख्या भूगोल मे प्रचलित अध्ययन विधियो का यथासम्भव प्रयोग किया गया है। जनसख्या विश्लेषण मे क्रमबद्ध उपागम के साथ विधितन्त्र विश्लेषण एव व्यावहारिक विधि का प्रयोग किया गया है जिससे तथ्यो का विश्लेषण किया जा सके। विकासखण्ड को अध्ययन का आधार बनाया गया है क्योकि यह जनपद के विकास की आधार भूत ईकाई है। जनसख्या विश्लेषण की परम्परागत विधियो को ही अपनाया गया है तथापि सर्वत्र साख्यिकीय विधियो का प्रयोग कर तथ्यो की प्रामाणिकता मे अभिवृद्धि की गयी है।

किसी भी आनुभविक अध्ययन मे अभीष्ट कार्य निष्पादन के लिए समाज वैज्ञानिक शोधार्थियो द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार निरीक्षण एव प्रश्नावली विधि से सूचनाए एकत्र की जाती हे। प्रस्तुत अध्ययन मे प्रतिदर्श 10 ग्रामो के 500 उत्तरदाताओं से प्राप्त सूचनाओं द्वारा जनसख्या वृद्धि, व्यवसायिक सरचना, परिवार कल्याण कार्यक्रम की यथार्थता को प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है। सर्वेक्षण के लिए उत्तरदाताओं से उनकी सुविधानुसार सूचनाए ग्रहीत की गयी हे। उनकी योग्यता एव समझ के अनुसार प्रश्नो को पूछा गया है। इस बात का सर्वथा ध्यान रखा गया है कि कही कोई सूचना छूट न जाय। उत्तरदाताओं से शिष्टता बनाये रखने का पूरा प्रयास किया गया है। कही भी अवाछित हस्तक्षेप का प्रयास नही किया गया है।

सम्पूर्ण अध्ययन आठ अध्यायो मे विभक्त है। **प्रथम अध्याय** जनपद की भौगोलिक एव सास्कृतिक पृष्ठभूमि से सम्बद्ध हे जिसमे जनपद की ऐतिहासिकता, स्थिति-विस्तार, उच्चावच,

अपवाह, जलवायविक विशेषताए, भ्वाकृतिक विभाजन, प्राकृतिक वनस्पति, भूमि उपयोग, शस्य प्रतिरूप एव गहनता, शस्य-सयोजन प्रदेश, सिचाई एव सिचाई गहनता, शैक्षिक सस्थाए, परिवहन सचार तथा पर्यटन स्थलो का विवरण है।

द्वितीय अध्याय मे जनसख्या वितरण एव घनत्व का विवेचन हे जिसमे जनसख्या वितरण का सामान्य प्रतिरूप बिन्दु विधि एव वृत्त आरेख द्वारा, अनुसूचित जाति जनसख्या का प्रतिशत वितरण एव ग्रामो के आकार के अनुसार जनसख्या वितरण, विकास खण्ड वार वर्गीकृत गॉवो का वितरण, अनधिवासित गॉवो का वितरण, विकास खण्डवार अनधिवासित गाँवो का वितरण प्रस्तुत किया गया है। जनसख्या घनत्व के अन्तर्गत विकास खण्डवार आकिक, कृषि, कायिक, एव पोषण जनसख्या घनत्व, तथा विकास खण्डवार ग्रामीण जनसख्या घनत्व एव नगरीय केन्द्रो का जनसख्या घनत्व विवरित है।

तृतीय अध्याय मे जनसख्या वृद्धि का विश्लेषण किया गया है। जनपद की जनसख्या वृद्धि का प्रदेश एव राष्ट्र की जनसख्या वृद्धि के सन्दर्भ मे तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। जनसख्या वृद्धि का क्षेत्रीय प्रारूप तहसीलवार एव विकास खण्ड बार क्रमश ग्रामीण एव नगरीय जनसख्या के विशेष सन्दर्भ मे प्रस्तुत किया गया है। इसी अध्याय मे धर्मानुसार जनसख्या वृद्धि, जनसख्या परिवर्तन निर्देशाक, स्थानीयकरण लब्धि, स्थानीयकरण गुणाक, एव जनसख्या प्रक्षेपण का प्रस्तुतीकरण किया गया है।

शोध-प्रबन्ध के **चतुर्थ अध्याय** मे जन्मदर, मृत्यु दर एव जनसख्या स्थानान्तरण का विश्लेषण प्रभावित करने वाले कारको के सन्दर्भ मे किया गया है। सर्वेक्षित गॉवो मे जन्मदर एव मृत्युदर, शैक्षणिक स्तर के अनुसार जन्मदर, आयु वर्गानुसार जन्मदर, आयवर्ग एव आर्थिक स्तर के अनुसार जन्मदर, तथा व्यावसायिक सरचना के अनुसार जन्मदर का स्पष्टीकरण किया गया है। स्थानान्तरण के अन्तर्गत प्रभावित करने वाले कारक, प्रकार, स्थानान्तरण के वर्ग एव सिद्धान्त तथा आव्रजन, प्रव्रजन का विवेचन क्रमश ग्रामीण एव नगरीय क्रम मे किया गया हे।

पॉचवे अध्याय मे जनपद की जनाकिकी सरचना का विवरण हे जिसमे लिग सरचना, आयु सरचना, ग्रामीण एव नगरीय आयु सरचना तथा जनसख्या का सरचनात्मक अनुपात, वैवाहिक स्तर, साक्षरता तथा इसका क्षेत्रीय वितरण प्रारूप विकास खण्डवार सम्पूर्ण, स्त्री, पुरुष एव ग्रामीण, नगरीय, आयुवर्गानुसार साक्षरता, अनुसूचित जाति, जनजाति साक्षरता एव शैक्षिक स्तर के क्रम मे विवेचन किया गया है। व्यावसायिक सरचना के अन्तर्गत कार्यरत जनसख्या का तुलनात्मक विवरण प्रदेश एव राष्ट्र के सन्दर्भ मे दिया गया है। कार्यरत जनसख्या का वितरण प्रारूप विकास खण्डवार कृषक, कृषक मजदूर, उद्योग एव निर्माण कार्य, एव अन्य व्यवसाय के

क्रम मे व्यवस्थित कर विवेचित किया गया है। नगरीय केन्द्रो की व्यावसायिक सरचना का स्पष्टीकरण तथा सर्वेक्षित ग्रामो की व्यावसायिक सरचना का विवेचन भी उपरोक्त क्रम मे दिया गया है।

छठॉ अध्याय परिवार कल्याण कार्यक्रम के सगठन एव कार्यप्रणाली से सम्बद्ध है, जिसमे भारत मे परिवार कल्याण कार्यक्रम का इतिहास, परिवार कल्याण कार्यक्रम की आवश्यकता, बाधाए एव प्रगति का मूल्याकन, राष्ट्रीय, प्रादेशिक एव जिला स्तर पर सगठन, परिवार कल्याण की विधियॉ, तथा जनपद मे परिवार कल्याण कार्यक्रम की उपलब्धि का क्रमबद्ध विवेचन किया गया है। परिवार कल्याण कार्यक्रम की प्रगति के सन्दर्भ मे पचवर्षीय योजनाओं को आधार बनाया गया हे तथा तद्नुरूप 1976, 1977, 1981, एव 2000 की जनसख्या नीतियो की समीक्षा की गयी हे तथा दसवी योजना के दृष्टि-पत्र मे परिवार कल्याण कार्यक्रम के लक्ष्यो को स्पष्ट किया गया है।

सातवे अध्याय मे परिवार कल्याण कार्यक्रम से सन्दर्भित अभिरुचियो का विवरण व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर प्रभावित करने वाले सास्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक, एव जनाकिकी कारको के विशेष सन्दर्भ मे प्रस्तुत किया गया है। सास्कृतिक कारको मे परिवार के आकार, पुत्र को वरीयता, पुत्री को वरीयता न देना, धर्म-जाति से सन्दर्भित परिवार कल्याण की अभिरुचियो का विवरण दिया गया है। सामाजिक आर्थिक कारको मे व्यवसाय, मासिक आय एव शिक्षा तथा जनाकिकी कारको मे विवाह के समय पति-पत्नी की आयु, अगीकरण के समय पति-पत्नी की आयु एव जीवित बच्चो की सख्या के सम्बन्ध मे परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियाँ व्यवहृत है तथा परिवार कल्याण कार्यक्रम न अपनाने के कारणो की समीक्षा की गयी है।

आठवे अध्याय मे जनसख्या एव परिवार कल्याण कार्यक्रम से सम्बद्ध समस्याओं, नियोजन एव उपयुक्त सुझाव दिये गये है। जनसख्या दबाव, जनसख्या दबाव एव खाद्यपूर्ति, तीव्र जनसख्या वृद्धि, निर्भर जनसख्या मे वृद्धि, निम्न लिगानुपात, अल्प साक्षरता, व्यावसायिक असन्तुलन आदि प्रमुख जनपद की जनसख्या समस्याए है। साधनो की अनुपलब्धता, सीमित आर्थिक सहायता, कर्मचारियो का अभाव, उदासीनता, जनस्वास्थ्य रक्षको की उपेक्षा, यौन शिक्षा का अभाव, धार्मिक विरोध, अशिक्षा, परिवार व्यवस्था आदि प्रमुख परिवार कल्याण से सम्बद्ध प्रमुख समस्याए हैं जिनके निराकरण के लिए उपयुक्त नियोजन एव सुझाव दिये गये हैं। अन्त मे सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची एव परिशिष्ट दिया गया है।

❑ **अध्याय 1**

भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

1 1 जनपद गाजीपुर की ऐतिहासिकता-

श्रुतिपरम्परा एव पौराणिक गाथाओं के समानान्तर पूरे जनपद मे ऐतिहासिक तथ्यो का एक जाल बिछा है। उन गाथाओं के अनुसार जनपद गाजीपुर का इतिहास आध्यात्मिक, सास्कृतिक सामाजिक एव स्वाधीनता सग्राम मे उर्जस्वित रहने के साथ ही साथ अपनी सस्कृति को आज भी अपने मे समेटे है। सतत् प्रवाहिनी शस्यशालिनी मा गगा इस जनपद की चार तहसीलो से स्पर्श करती हुई यू गुजरती है मानो वह पौराणिक आख्यानो के महर्षियो एव तपस्वियो को तारने क लिए बलखाती आशीर्वाद देती हुई आगे बढती चली है।

गाजीपुर का नामकरण महाराज गाधि के नाम पर हुआ है। पुराणो मे इसे काशी की बहन कहा गया है। पौराणिक काल से जितना आगे बढा जाय गाजीपुर का अस्तित्व उतना ही अधिक स्पष्ट होता है। कहा जाता है कि ज्ञानप्राप्ति के बाद महात्मा बुद्ध सारनाथ से चलकर गाजीपुर मे प्रवेश किये और यहा के निवासियो को उपदेश देते हुए वे उत्तर की ओर चले गये। उनके यहा आने के कारण मौर्य और गुप्त सम्राटो ने भी इस जनपद को महत्व दिया। गुप्त सम्राट स्कन्दगुप्त का बनवाया हुआ अभिलेख (सैदपुर भीतरी) मे अब भी है जो इतिहासकारो एव पुरातत्वविदो को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। ह्वेनसाग ने इस स्थान को चेन जू नाम से उद्बोधित किया हे जिसका अर्थ सम्राट की राजधानी अर्थात् युद्धपति से लगाया जाता है। इसे ही उधरनपुर या गजराजपतिपुर से जोडते है।

गाजीपुर के निर्माण की तिथि 730 हिजरी है। जो 1330 ए डी के आस-पास है। सैयद मसूद ने गाजी की पदवी धारण कर गाजीपुर नगर को बसाया (गजेटियर 1971) बुद्ध युगीन सिक्के जौहरगज मे तथा स्कन्दगुप्त के जाने के अवशेष भीतरी मे गुप्तवश से जनपद को जोड़ते हैं। लठिया जमानिया का अशोक लाट, प्रहलादपुर की ऐतिहासिकता विशिष्ट है। गाजीपुर शहर मे स्थित पहाड खा का पोखरा, लार्ड कार्नवालिस का मकबरा, गगा पर निर्मित कराई गयी नवली की मशहूर मस्जिद, शेख अब्दुल्ला द्वारा बनवाये गये जलालाबाद एव कासिमाबाद के किले,

युसुफपुर-मुहम्मदाबाद के शहीद-स्मारक पार्क, सादात का स्वतत्रता सेनानियो से सबद्ध प्रस्तर लाट इत्यादि ऐतिहासिकता को बढाने मे सहायक है। (सूचना केन्द्र गाजीपुर 1999)

इस प्रकार महर्षि विश्वामित्र के पिता महाराजा गाधि द्वारा स्थापित और महर्षि यमदग्नि द्वारा पोषित यह भूखण्ड, ऋृषियो, महर्षियो, राजाओं, महाराजाओं, सत-महात्माओं, चिन्तको, पराक्रमी, शूरमाओं और स्वतत्रता सग्राम के बलिदानियो की कर्म स्थली रहा है। महर्षि परशुराम, कण्व की भूमि जेसा कि किवदती तथा श्रुति परम्परा है, राजा जनक तथा श्रवण कुमार के अलावा इतिहास के साक्ष्यो के आधार पर स्कन्दगुप्त, पहाड खा की कथा को अपने आचल मे छिपाये जनपद की धुरी स्व डा शिवपूजन राय, स्व डा मुख्तार अहमद और परमवीर चक्र प्राप्त स्व अब्दुल हमीद को पैदा करके इसे वीर वसुन्धरा बना देती है। सन् 1942 के 'भारत छोडो आदोलन' मे सादात के अग्रेज पुलिस थाने के सिपाहियो से, भारत को स्वतत्र कराने के लिए स्व कुलदीप सिह यादव एव स्व महीप सिह यादव नामक भाइयो ने जो वीरतापूर्ण सग्राम किये उसके प्रमाण आज भी सादात के लघुशिला पट्ट पर अकित है जो इन्हे भारत मा का अमर सपूत प्रमाणित करते है। इसके अतिरिक्त स्वाधीनता के लिए सघर्षरत मा भारती के सपूतो का बलिदान आत्मोत्सर्ग से सम्बद्ध मुहम्मदाबाद युसुफपुर की घटना, नदगज की ह्रदय विदारक घटना, आकुसपुर पिपरीडीह ट्रेन काड यहा के क्रातिकारियो के अपूर्व साहस का दिग्दर्शन कराते है।

1.2 स्थिति एव विस्तार–

गाजीपुर जनपद (25°,19' से 25°,54' उत्तरी अक्षाश तथा 83°,4' से 83°,58' पूर्वी देशान्तर) मध्य गगा मैदान मे स्थित पूर्वी उत्तर प्रदेश के वाराणसी मडल के उत्तरी भाग मे स्थित है। जनपद का सपूर्ण क्षेत्रफल 3384 2 वर्ग किमी है। इसके पश्चिम मे आजमगढ एव जौनपुर जनपद उत्तर पूर्व मे बलिया जनपद, एव दक्षिण मे वाराणसी जो सभी उत्तर प्रदेश के जिले है। दक्षिण पूर्व दिशा मे बिहार प्रात का शाहाबाद जिला जिसकी सीमा कर्मनाशा नदी बनाती है। स्थित है। जनपद की पूर्व-पश्चिम अधिकतम लम्बाई 90 किलोमीटर तथा उत्तर दक्षिण अधिकतम चौडाई 64 किलोमीटर है। प्रशासनिक दृष्टि से जनपद को पाच तहसीलो गाजीपुर, सैदपुर, मुहम्मदाबाद, जमानिया, जखनिया तथा विकास खण्ड की दृष्टि से 16 विकास खण्डो, गाजीपुर, करण्डा, बिरनो,मरदह, सैदपुर, देवकली, सादात, जखनिया, मनिहारी, मुहम्मदाबाद, भावरकोल, कासिमाबाद, बाराचॅबर, जमानिया, भदौरा एव रेवतीपुर मे विभक्त कर जनपद का विकास किया जा रहा है। **(चित्र सख्या 1 1)**

LOCATION MAP OF DISTT
GHAZIPUR
INDIA
UP
Uttaranchal
U P
STUDY AREA
REFERENCE MAP
A Z A M G A R H
B A L L I A
JAUNPUR
G A N G A
V A R A N A S I
B I H A R
Mardah
Qasimabad
Jakhania
Birno
Barachawar
Sadat
Manihari
Muhammadabad
GHAZIPUR
Bhanwarkol
Saidpur
Deokali
Reotipur
Karnda
Jamania
Bhadaura
From Jaunpur
From Azamgarh
To Mau
To Rasra
To Ballia
To Buxar
From Mughal sarai
Udanti N
Gangi N
Chhoti
Sarju
Nadi
KARAMNASA NADI
NH 29
BOUNDARY H Q
STATE
DISTRICT
TAHSIL
BLOCK
RAILWAY LINE
SAMPLE VILLAGES
Km

Fig. 1.1

1 3 उच्चावच्च एवं संरचना–

गाजीपुर जनपद का सपूर्ण भाग सामान्यत समतल है नदी तटीय क्षेत्रो मे ही कटाव के फलस्वरूप तथा नालो के कारण असमतल भूभाग दिखाई पडता हे। जनपद की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 70 मीटर है। उत्तर-पश्चिम मे 73 मीटर तथा दक्षिण-पूर्व मे 67 मीटर औसत ऊँचाई है। समूचे जनपद का औसत ढाल नदियो के सामान्य बहाव से उत्तर-पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर पाया जाता है। यत्र-तत्र प्राचीन अधिवासो के एव किलो के अवशेष टीलो के रूप मे पाये जाते है। जो पूरे जनपद के प्राचीन सस्कृति के प्रतीक है। प्रायद्वीप तथा वाह्य प्रायद्वीप के बीच मे यह मैदान भूमि की पपडी के अवगमन को सूचित करता है। जो प्लीस्टोसीन तथा आधुनिक युगो मे बने हुए अवसादो द्वारा पाट दिया गया है। (वाडिया डी एन 1939) अध्ययन क्षेत्र का यह भाग दक्षिण मे प्राय द्वीपीय भारत को उत्तर मे स्थित हिमालय क्षेत्र से अलग करता है। हिमालय से निकलने वाली नदिया सिन्धु गगा के धसे भाग मे जलोढ मिट्टी के निक्षेप द्वारा इस मैदान की उत्पत्ति हुई है। यह निक्षेप प्लीस्टोसीन युग मे प्रारम्भ हुआ तथा आज भी निक्षेपण हो रहा है। (वाडिया 1961) इस सिन्धु गगा के धसे भाग की उत्पत्ति से सीधा सबध रखती है। भूगर्भवेत्ता एडवर्ड स्वेस ने बताया है कि हिमालय केनिर्माण के समय उसके तथा पठार के बीच एक गर्त का निर्माण हो गया था, जिसका नामकरण उन्होने 'विशाल खड्ड' किया है। यह खड्ड एक विस्तृत अभिनति के रूप मे था, जिसकी तली असमतल होने के कारण एक समभिनति (विस्तृत अभिनति के अन्तर्गत छोटी-छोटी अभिनति का होना) के रूप मे थी। हिमालय से आने वाली नदियो ने अपने साथ लाये हुए तलछट को जमा करके उसे भर दिया, जिससे विशाल मैदान का सृजन हुआ। इनके अनुसार विशाल खड्ड का तल असमान था जिसका ढाल उत्तर की ओर मन्द, परन्तु प्रायद्वीप की ओर खडा था। स्वेस न बताया कि मैदान के नीचे हिमालय तथा पठारी भाग कडी चट्टानो द्वारा सम्बद्ध है।

सतलज-गगा-ब्रह्मपुत्र के पूर्वी मैदान मे ही अध्ययन क्षेत्र का मुख्य भाग आता है। इस मैदान की गहराई बहुत अधिक है। प्रतिवर्ष गगा और उसकी सहायक नदियो द्वारा लाई गयी बारीक काप मिट्टी की तहे जमती जाती है। यह मैदान अपेक्षाकृत अधिक नम और निम्न भूमि वाला है। अध्ययन क्षेत्र मे बागर के मैदान पाये जाते है। इसमे चीका एव रेत की प्रधानता है। इस मैदान का निर्माण गगा एव उसकी सहायक नदियो द्वारा लाई गयी जलोढ मिट्टी से हुआ है। गगा का सारा मैदान ही बागर और खादर नामक ऊची-नीची भूमि से बना हुआ है। प्राचीन जलोढ अर्थात् बागर क्षेत्र एक बड़े भूभाग पर विस्तृत हैं। नये जलोढ अर्थात् खादर प्राय बाढ के मैदानी क्षेत्रो मे ही मिलते हैं।

1 4 अपवाह एवं जलाशय–

अध्ययन क्षेत्र मध्य गगा मैदानी भूभाग केगगा अपवाह प्रणाली मे स्थित है। इस जनपद मे दो महत्वपूर्ण नदिया गगा एव गोमती है। जो अपनी सहायक नदियो (कर्मनाशा, गागी, मगई, बेसू व छोटी सरयू) के साथ क्षेत्र मे प्रवाह प्रणाली को विकसित करते है। गगा नदी ऊचे कगार से युक्त प्राचीन ग्रथो मे पवित्र एव स्वर्ग के समान मानी गयी है। यह बर्फीले हिमालय के क्षेत्र से निकल कर उत्तर काशी, हरिद्वार, बदायू, फतेहगढ, कानपुर, इलाहाबाद, मिर्जापुर, वाराणसी होते हुए इस जनपद के दक्षिण सीमा मे प्रवेश करती है। पवित्र गोमती पीलीभीत से निकलकर खीरी, सीतापुर, लखनऊ, बाराबकी, सुल्तानपुर तथा जौनपुर होते हुए गाजीपुर जनपद के पश्चिम भाग मे प्रवेश कर कुछ ही दूर प्रवाहित होकर गाजीपुर वाराणसी की सीमा बनाते हुए कैथी मे गगा नदी से मुहाना नामक स्थान पर मिलती है।

जनपद मे गगा एव गोमती की कुल लम्बाई क्रमश 90 किमी तथा 30 किमी हे। अनेक मौसमी नाले गगा के दोनो ओर मिलते है। इस प्रकार ये दोनो नदिया उबड-खाबड क्षेत्र का विकास करती है। वर्षा मे इन नदियो मे भयकर बाढ आ जाती है। कर्मनाशा नदी मिर्जापुर के कैमूर से निकल कर वाराणसी होती हुई शाहाबाद (बिहार) की सीमा से प्रवाहित होती है। कर्मनाशा नदी मे बाढ अधिकतर आती रहती है, इसकी बाढ की विभीषिका का वर्णन डा शिव प्रसाद सिह ने अपनी कहानी 'कर्मनाशा की हार' मे किया है। इस नदी की औसत चौडाई 100 मीटर है। छोटी सरयू आज मगढ से बलिया होकर जनपद की सीमा बनाती हुई बहती हे। गागी नदी आजमगढ से होकर जनपद के पश्चिम भाग से प्रवेश करके मैनपुर मे गगा मे मिल जाती है। वेसू नदी जनपद के पश्चिम भाग से प्रवेश करके शादियाबाद, युसुफपुर होते हुए घौसपुर मे गगा से मिल जाती है। 'मगई' नदी भी आजमगढ से प्रवाहित होती हुई जनपद के उत्तर पश्चिम भाग से प्रवेश करके पूर्व की ओर बलिया जनपद मे चली जाती है। जनपद गाजीपुर मे प्रवेश करने से पूर्व मगई नदी सुल्तानपुर से निकलकर 140 किमी दूरी तक प्रवाहित होती है। (चित्र सख्या 1 4)

1.4.1 जलाशय–

अध्ययन क्षेत्र मुख्यतया गगा नदी के बाढ से प्रभावित होता है। जब इसमे बाढ आती है तो इसकी सहायक नदिया विशेषकर गोमती और वेसू नदी का जल अवरूद्ध हो जाता है। परिणाम स्वरूप विस्तृत भूभाग जलमग्न हो जाता है। इन नदियो से वर्षा काल मे बाढ की विभीषिका भयावह

DISTRICT GHAZIPUR
DRAINAGE
N
Bhainsahi Nadi
Daritol
Jarotham Tal
Mangai Nadi
Nadah Tal
Besu Nadi
Udanti Nadi
Gunwa Tal
Gangi Nadi
GANGA RIVER
Gomti River
KARAMNASA NADI
8 4 0 8 16
Km
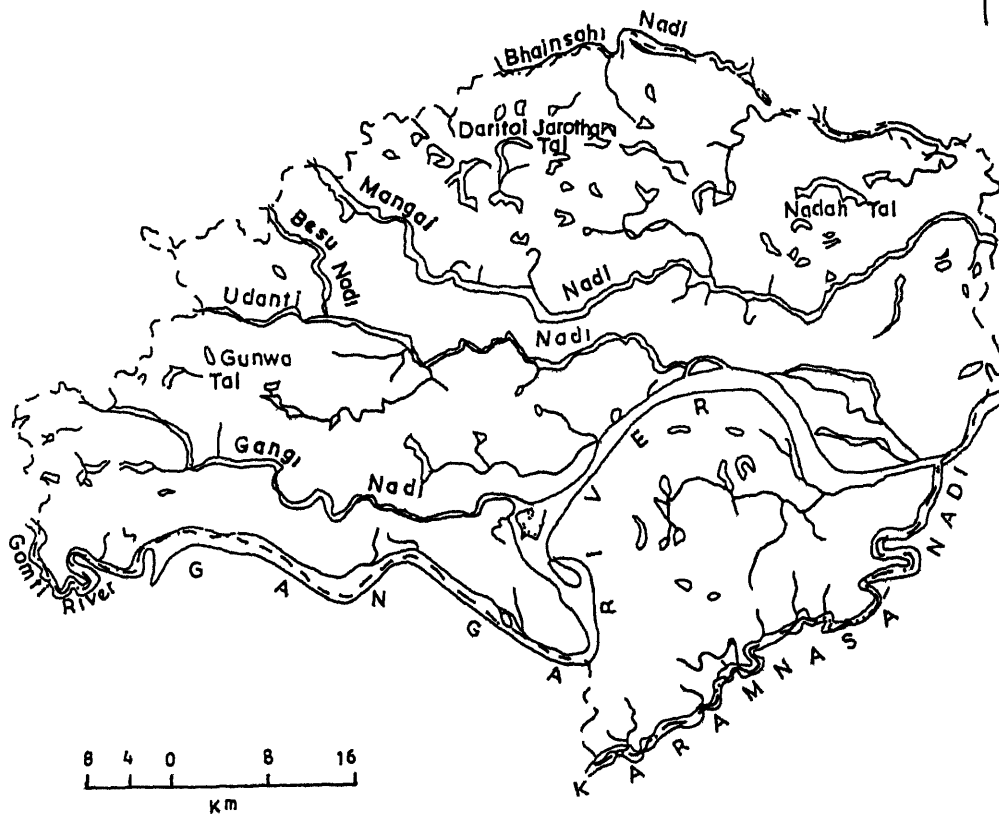
Fig. 1.2

हो जाती है। अध्ययन क्षेत्र मे इसके द्वारा खरीफ फसल अधिक प्रभावित हो जाता है। लेकिन खादर भूमि पर खेती करने वाले किसान बडी बाढ की अपेक्षा करते है। क्योकि बाढ के द्वारा नई उपजाऊ मिट्टी जम जाता है जिससे अच्छी रबी फसल प्राप्त हो जाती है। नदियो के अतिरिक्त वर्षा के मौसम मे बहुत सी झीले ए तालाब अधिकतम क्षेत्रो को जलमग्न कर देते है। 1774, 1784, 1797, 1830, 1891, 1894, 1955, 1961, 1974, 1980, 1987, 1993 की बाढ प्रमुख है। गाजीपुर शहर 1903, 1915, 1922, 1943, 1980, 1993 तथा 1998 मे भयकर बाढ से प्रभावित हुआ हे। जनपद मे जलाशयो की मात्रा कम ही हे। अत्यधिक वर्षा, अल्प ढाल, निष्कासन स्रोतो की कमी एव अक्षमता तथा सामान्य प्रवाह मे अवरोध इत्यादि तत्वो के परिणाम स्वरूप अध्ययन क्षेत्र के दक्षिण पूर्वी भाग के कुछ भागो मे जल प्लावन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। **(चित्र सख्या 1 4)**

1 5 जलवायु–

मानव जीवन को प्रत्यक्ष एव परोक्ष दोनो रूपो से प्रभावित करने वाले कारको मे जलवायु का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। जलवायविक विशिष्टताए, भूमि उपयोग के प्रकार, उसकी गहनता, फसलो के उत्पादन वितरण इत्यादि को प्रभावित करके क्षेत्र विशेष के जनसख्या वहन क्षमता को बहुत अशो तक निर्धारित करती है। इस तथ्य को ध्यान मे रखते हुए प्रस्तुत सन्दर्भ मे जलवायविक तत्वो का विश्लेषण विशेषत उनके ऋत्विक परिप्रेक्ष्य मे किया गया है- **(चित्र सख्या 1 3)**

1.5.1 तापमान–

अध्ययन क्षेत्र का औसत तापमान (वार्षिक) 24 85 से ग्रे (2000) है। वर्ष के सबसे ठण्डे माह जनवरी का औसत तापमान 4 3 एव सबसे गर्म माह मई का औसत तापमान 45 6° से ग्रेट है। कभी-कभी ठण्डी हवाओं से तापमान इतना गिर जाता है कि रबी की फसल (दलहन, तिलहन) को बहुत हानि पहुचती है। गर्मी की ऋतु मे गर्म हवाओं (लू) एव शीत ऋतु मे ठण्डी हवाओं (शीतलहरी) के प्रभाव स्वरूप तापक्रम मे आकस्मिक परिवर्तन होता है।

1.5.2 वायुभार-

शीत ऋतु के प्रारम्भ (अक्टूबर) मे वायुमण्डलीय दाब 1001 5 मिलीबार तथा जनवरी का वायुदाब 1008 4 मिलीबार हो जाता है। फरवरी मे तापक्रम के वृद्धि के पश्चात् वायुदाब

घटने लगता है तथा मई मे यह 994 2 मिलीबार तक पहुच जाता हे। जून एव जुलाई के महीने न्यूनतम वायुमण्डलीय दाब क्रमश 990 2 एव 991 1 मिलीबार प्रदर्शित करते है।

1 5 3 वायुदिशा-

वायुदिशा मौसम परिवर्तन के साथ-साथ बदलती रहती है। वर्षा ऋतु (जून के अतिम सप्ताह से अक्टूबर के मध्य तक) मे दक्षिण पूर्व मानसूनी हवाए लती हे। जबकि शीत ऋतु (मध्य अक्टूबर से फरवरी तक) मे उत्तरी पूर्वी हवाओं की प्रधानता होती है। ग्रीष्म ऋतु (मार्च के प्रारम्भ से जून तक) मे प्राय पश्चिमी भाग से अत्यधिक गर्म हवाये चलती है। जिसे लू कहते हे। कभी-कभी धूलभरी प्रचण्ड वायु (आधी) भी अध्ययन क्षेत्र को प्रभावित करती है।

1.5 4 सापेक्षिक आर्द्रता-

मौसम मे भारी परिवर्तन, क्षेत्र विशेष की सापेक्षिक आर्द्रता मे परिलक्षित होता है। अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता अगस्त (85 6%) वर्षा ऋतु मे एव न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता 36 7% ग्रीष्म ऋतु मे पाई जाती है। दिसम्बर एव फरवरी महीनो मे औसत सापेक्षिक आर्द्रता क्रमश 73 1% एव 66 0% रहती है। **(तालिका 1 1)**

1 5.5 वर्षा-

जलवायविक तत्वो मे वर्षा अपना एक विशिष्ट स्थान रखती हे। बगाल की खाडी से प्रवाहित होने वाली दक्षिणी पश्चिमी मानसून अध्ययन क्षेत्र की वर्षा का मुख्य स्रोत है। इसका आगमन यहा प्राय जून के अतिम सप्ताह मे होता है तथा यह मध्य अक्टूबर तक वर्षा प्रदान करता है। कभी-कभी मानसून विलम्ब से प्रारम्भ होता है तो वह अपने सामान्य समय से पूर्व ही समाप्त हो जाता है। सामन्यतया वार्षिक वर्षा (1007,8 मिमी) का 75 प्रतिशत भाग मध्य जून से मध्य सितम्बर मे प्राप्त होता है। शेष 25 0 प्रतिशत शीत ऋतु के दिसम्बर जनवरी एव फरवरी माह मे उपलब्ध होता है। जो रबी की फसल के लिए विशेष उपादेय होता है।

1.6 ऋतुएं-

तापमान, वायुदाब, वर्षा की मात्रा एव वर्षा युक्त दिनो की सख्या के आधार पर वर्ष को तीन ऋतुओं मे बाटा जा सकता है-

1.6 1 ग्रीष्म ऋतु-

ग्रीष्म ऋतु मार्च के महीने से प्रारम्भ होती है। क्रमश तापमान बढने लगता हे तथा मई एव जून के महीनो मे गर्मी अत्यधिक तथा असहनीय हो जाती है। दोपहर मे घर के बाहर काम करना असह्य हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु का उच्चतम एव न्यूनतम तापमान क्रमश 37 67° एव 21 42° से0ग्रे0 होता है। इस ऋतु मे तापान्तर 16 25° से0ग्रे0 रहता है। सूर्य की तीव्र गर्मी के कारण धरातल वनस्पति विहीन होने लगता है। ग्रीष्म ऋतुओं मे गर्म शुष्क हवा, जिसे 'लू' कहते है मई एव जून मे विशेष प्रभावकारी होती है। कभी-कभी लू के साथ आधी भी चलती है। आधी के बाद यदा-कदा वृष्टि भी हो जाती है जो हवा मे ठण्डक ला देती है। गगा घाटी मे इसे 'नार्वेस्टर' कहते है तथा इससे कभी-कभी आधी के साथ मूसलाधार वर्षा हो जाती है। जब आधी की गति 85-90 किमी प्रतिघटा तक हो जाती है तो वह विशालकाय वृक्षो एव छप्पर की छतो का विनष्टीकरण कर देती है। इस ऋतु मे हल्की वर्षा के पश्चात् दिन की तेज गर्मी से आराम मिलता है तथा कभी-कभी तत्काल ही खरीफ की तैयारी हेतु जुताई प्रारम्भ हो जाती हे।

तालिका 1 1

जनपद गाजीपुर की औसत जलवायविक दशाए (1911-2000)

	तापमान (से ग्रे)			सापेक्षिक आर्द्रता प्रतिशत	वायुभार (मि बार)	वर्षा (मिमी)	वार्षिक वर्षा का प्रतिशत
	अधिकतम	न्यूनतम	औसत				
जनवरी	23 4	8 3	15 8	77 0	1008 4	14 7	1 45
फरवरी	27 2	11 4	19 3	66 0	1006 0	17 5	1 75
मार्च	33 3	16 7	25 0	47 8	1002 8	7 6	0 75
अप्रैल	38 4	22 3	30 3	38 7	998 9	7 6	0 75
मई	40 8	24 9	32 8	45 3	994 2	17 5	1 73
जून	38 2	22 0	30 3	59 5	990 2	123 9	12 29
जुलाई	33 8	26 0	29 9	80 2	991 1	273 6	27 21
अगस्त	32 7	22 1	28 9	85 6	996 6	181 4	17 99
सितम्बर	32 4	19 4	27 4	82 1	1001 5	95 7	5 92
अक्टूबर	29 4	14 5	25 9	73 0	1006 1	5 6	0 5
नवम्बर	26 3	18 5	21 8	66 5	1007 1	5 7	0 55
दिसम्बर	24 3	8 8	16 5	73 1	1009 5	4 3	0 44

स्रोत- जिलाधीश कार्यालय से प्रकाशित आकडा।

1 6 2 वर्षा ऋतु-

जून के अतिम सप्ताह से वर्षा ऋतु का आगमन हो जाता है। किन्तु सर्वाधिक वर्षा जुलाई एव अगस्त के महीनो मे होती है। इस ऋतु मे कुल वार्षिक वर्षा का लगभग 90 प्रतिशत प्राप्त हो जाता है। इस समय सापेक्षिक आर्द्रता बहुत अधिक लगभग 86 प्रतिशत हो जाती हे। तथा औसत तापक्रम 26° सेटीग्रेड के मध्य रहता है। यह उल्लेखनीय है कि प्रतिवर्ष वर्षा ऋतु के आगमन का समय एव वर्षा की मात्रा एक समान नही रहती। इसमे प्राय परिवर्तन होता रहता हे। कभी-कभी तीव्र हवाये चलती है। जुलाई से मध्य अक्टूबर तक वायुदाब 991 12 मीलीबार से 1001 5 मिलीबार के मध्य घटता-बढता रहता है।

1.6 3 शीत ऋतु–

शीत ऋतु मे आकाश स्वच्छ एव नीला रहता है। अक्टूबर मे दक्षिण पूर्व मानसून की वापसी के साथ इसका आगमन होता है। सामान्यत तत्काल ही तापक्रम मे कमी प्रारम्भ हो जाती है। दिन के समय आकाश निर्मल रहता है। जिससे धरातल पर पर्याप्त सूर्यातप प्राप्त होता हे किन्तु रात्रि मे आकाश के निर्मल होने से विकिरण क्रिया द्वारा ताप का आसानी से ह्रास हो जाता है। परिणाम स्वरूप रात्रि ठडी और दिन कुछ गर्म रहता है। नवम्बर मे गाजीपुर का औसत सामान्य तापक्रम 14 5° सेन्टीग्रेड एव अधिकतम तापमान 29 4° सेटीग्रेट रहता है। दिसम्बर की रात्रि अधिक ठडी और दिन मामूली गर्म होते है। जनवरी वर्ष का सबसे ठडा माह (ओसत 8 3° सेटीग्रेट के आस पास) होता है।

फरवरी माह मे मौसम मे सूक्ष्म परिवर्तन प्रारम्भ हो जाता है। वायुदाब एव पवन की दिशा पूर्ववत रहती है लेकिन ताप मे धीरे-धीरे वृद्धि होने लगती है। वायु महाद्वीपीय होने के कारण प्रधानत शुष्क होती है। कभी-कभी उत्तरी पश्चिमी चक्रवात आ जाते है, अन्यथा मौसम साफ रहता है। उक्त चक्रवात से शरद ऋतु मे कुछ वर्षा हो जाती है जिससे तापमान मे गिरावट के साथ-साथ ठडी पछुवा की अनुभूति होती है। प्राय दो एक दिन ही बदली का मौसम होता है अन्यथा आकाश स्वच्छ रहता है। शीत ऋतु की हल्की वर्षा का रबी की फसल पर अत्यत लाभदायक असर होता है। इस समय शीत लहरी का प्रभाव मानव स्वास्थ्य तथा फसलो के लिए हानिकारक होता है। ऐसा प्रकोप बहुधा दिसम्बर एव जनवरी के महीनो मे देखा जाता है।

DISTRICT GHAZIPUR
AVERAGE CLIMATIC CONDITIONS
1911-2000
TEMPERATURE(°C)
Max Temp
Mean Temp
Minim Temp
Relative Humidity
RAINFALL (Cm)
RELATIVE HUMIDITY (%)
J F M A M J J A S O N D
CLIMOGRAPH
WET BULB TEMPERATURE(°C)
RELATIVE HUMIDITY(%)
HYTHERGRAPH
MEAN TEMPERATURE(°C)
RAINFALL (Cm)
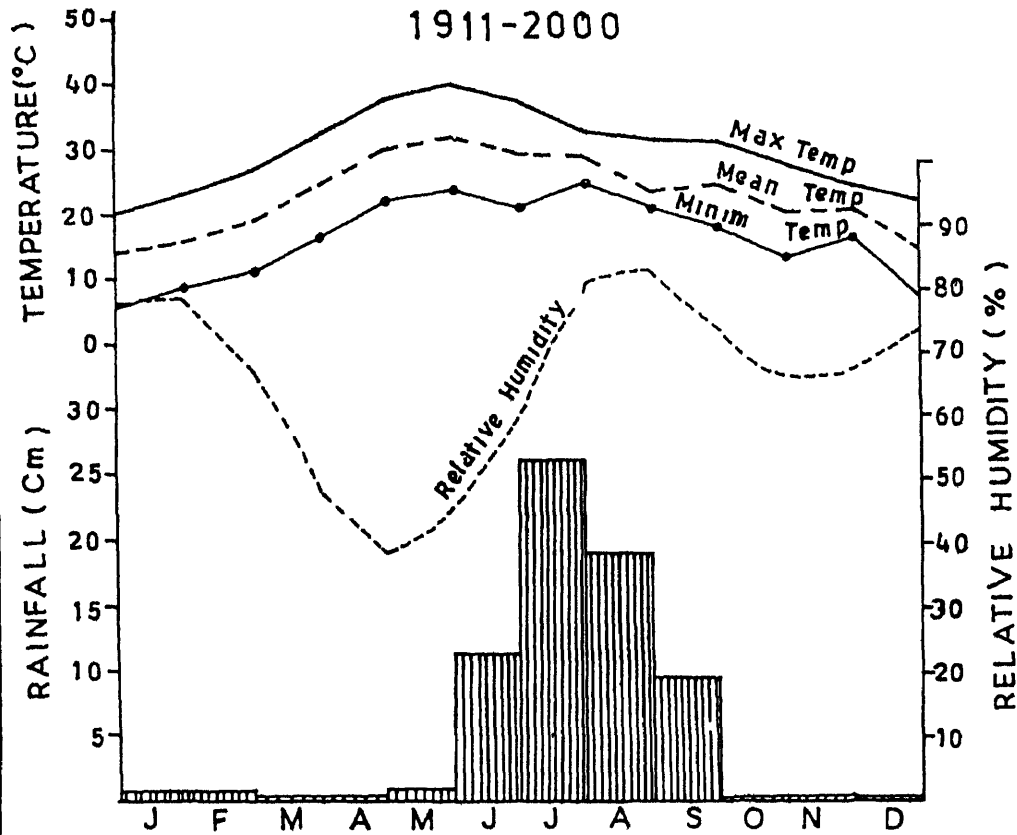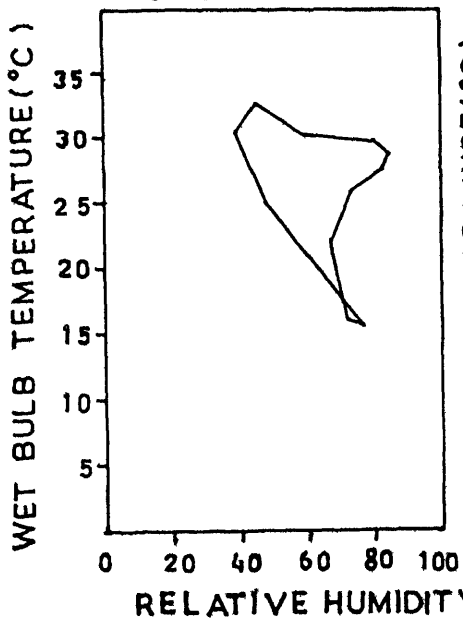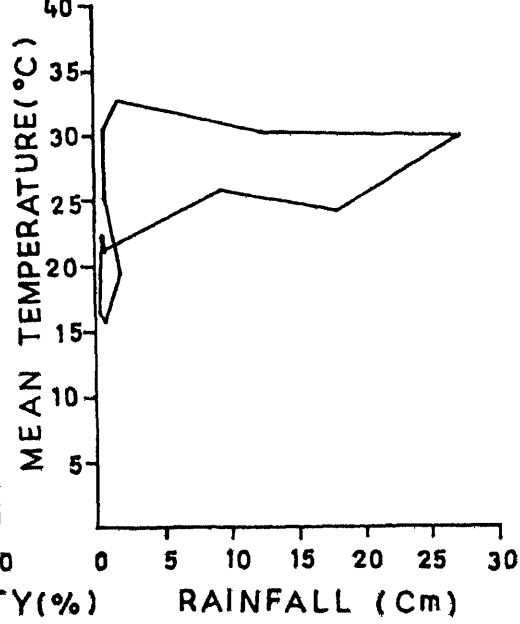
Fig. 1.3

1 7 भौतिक विभाजन–

उच्चावच्च, अपवाह एव मृदा के आधार पर अध्ययन क्षेत्र को निम्म भोतिक विभागो मे बाटा जा सकता है— (चित्र 1 4)

1 7.1 उत्तरी गंगा मैदान-

छोटी सरयू और गगा के मध्य स्थित इस भूभाग का क्षेत्रफल 2424 वर्ग किमी जो सपूर्ण अध्ययन क्षेत्र का 69 9 प्रतिशत हे। इस विभाग को निम्न उपविभागो मे विभक्त किया गया है-

1.7.1 1 बेसू-छोटी सरयू के मध्य मैदानी भूभाग-

इस भूभाग का क्षेत्रफल 1240 वर्ग किमी (35 9 प्रतिशत पूरे अध्ययन क्षेत्र का) है। इस भूभाग मे अनेको ताल एव झील पायी जाती है। जिसमे हाथी, कुरावल, असली बूखर, तथा उज्जेन मुख्य है। इस भूभाग मे ऊसर एव अम्लीय तथा क्षारीय मिट्टियो के छोटे-छोटे क्षेत्र फैले है। बेसू नदी के दाहिने किनारे वाला भूभाग ज्यादा ऊचा नीचा एव कटा हुआ है।

1 7 1 2 बेसू-गंगा मध्य मैदानी भूभाग-

कुल क्षेत्रफल के 34 प्रतिशत (1184 वर्ग किमी) भूभाग पर फैला है। यह क्षेत्र अधिकाशतया खादर है। जो प्रतिवर्ष बाढ से प्रभावित होता है। परिणामत नयी बाढ द्वारा लाई गयी मिट्टी का जमाव होता रहता है। इस क्षेत्र मे कुसाताल तथा परना झील मुख्य जल सग्रहण क्षेत्र पाये जाते है।

1.7 2 गंगा के दक्षिण का मैदानी भूभाग-

गगा एव कर्मनाशा नदियो के मध्य स्थित इस भूभाग का क्षेत्रफल सपूर्ण अध्ययन क्षेत्र का 30 10 प्रतिशत (1040 वर्ग किमी) बडका ताल तथा गोहदा-वाला ताल इस क्षेत्र के मुख्य ताल है।

1 8 मिट्टिया-

अध्ययन क्षेत्र जलोढ मिट्टियो से निर्मित है। नवीन जमाव के कारण मृदा परिच्छेदिका पूर्णतया विकसित नही है। स्थानीय उच्चावच्च एव अपवाह मे अतर, मृदा सरचना मे विभिन्नता दृष्टिगोचर करता है (मेहरोत्रा सी एम 1968) अध्ययन क्षेत्र की मिट्टी को निम्नलिखित विभागो मे विभक्त किया गया है। (चित्र 1 4)।

1 8 1 गगा खादर मिट्टी-

यह मिट्टी अध्ययन क्षेत्र के दक्षिण भाग मे गगा नदी के आस पास पाई जाती हे। गगा-गागी के मध्य के अधिकाश भूभाग मे इस प्रकार की मिट्टी है। मृदा सरचना बलुई एव बारीक दोमट के बीच है इसमे नाइट्रोजन एव फास्फोरस की मात्रा अधिक है। लवणता मध्यम एव पी एच मूल्य 7 4 है।

1 8 2 गंगा-पार खादर मिट्टी-

यह मिट्टी अपेक्षाकृत दोमट सरचना वाली है एव अध्ययन क्षेत्र के जमानिया एव बाराचवर विकास खण्डो मे पायी जाती है। कालान्तर मे मिट्टी वनावट प्रक्रमो ने अत्यधिक विकसित मृदा परिच्छेदिका का निर्माण किया है। जो कही- कही चूने के ससाधनो से युक्त है। इसकी लवणता मध्यम एव पी एच मूला 7 7 है। यह मिट्टी गेहू, जौ एव चना आदि फसलो के लिए अत्यधिक उपयुक्त है।

1.8.3 उत्तरी उच्च-भूभागीय मिट्टी-

अध्ययन क्षेत्र के मध्य के अधिकाश भूभाग मे इस प्रकार की मिट्टी है। गागी नदी के किनारे का पतले भूभाग मे भी इस प्रकार की मिट्टी पायी जाती है। यह उपजाऊँ दोमट मिट्टी है जिसका पी एच मूल्य 7 0 है। इसका रग पीले भूरे से गहरे भूरे के बीच है तथा मृदा परिच्छेदिका प्रौढ है।

DISTRICT GHAZIPUR
PHYSIOGRAPHIC DIVISION
SURFACE CONFIGURATION
CHHOTI SARJU
I-A
Mangai
Nadi
Besu
Nadi
Gangi
Nadi
I-B
RIVER
GANGA
II
I-North Ganga Plain
A-Besu Chhoti Sarju Plain
B Besu Ganga Plain
II-South Ganga Plain
70
72
72
70
68
66
66
68
70 Contour (m)
SOILS
Khadar karail Light Shilowclay
Northern Saune Alkali
Northern Low Land
Southern Low Lands
Trans Khader
Ganga Khadar
Northern Upland
Small Ravines Broken Lands Unclasified
Northern Low Land Alkali
Southern Low Lands Karail Deep Medium Clay
5 0 5 10 15 20
Km
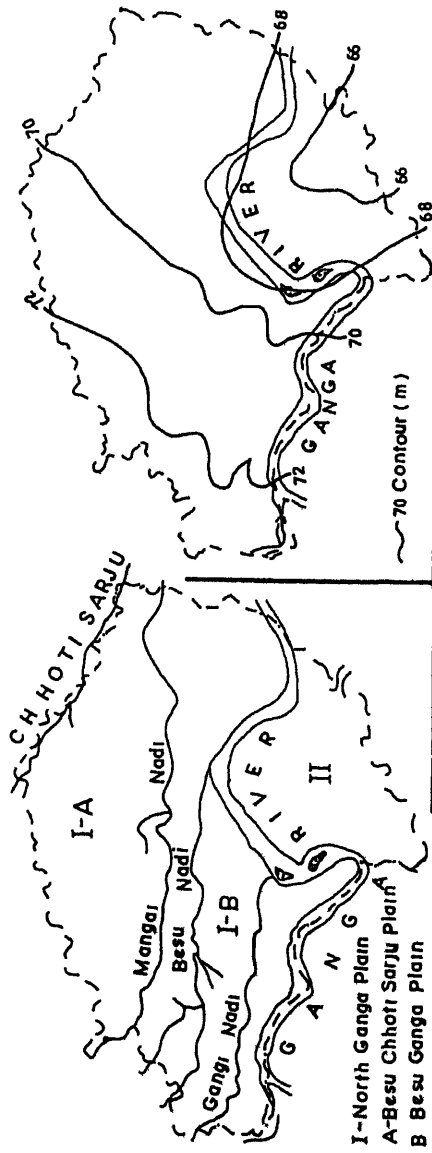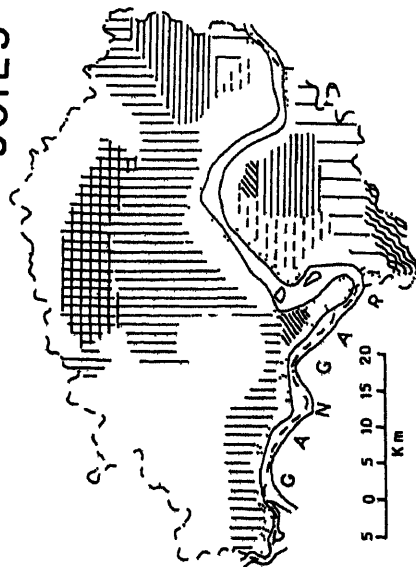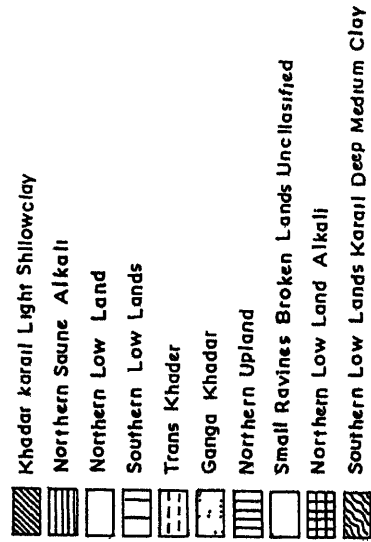
Fig. 1.4

1 8 4 उत्तरी निम्न भू-भागीय मिट्टी-

यह मटियार दोमट प्रकार की मिट्टी है जो अध्ययन क्षेत्र के निम्न भूभाग यथावाराचवर, गाजीपुर, देवकली, सैदपुर, मरदह, एव विरनो विकास खडो मे पायी जाती है। सामान्यतया यह मिट्टी रेह से प्रभावित है। लगभग 0 5 मीटर की गहराई पर उपस्थित कटोर ककड़ की परत वर्षा के पानी को अदर जाने से रोक देती है। यह मिट्टी सामान्य से मध्यम स्तर की क्षारीय है। एव इसका पी एच मूल्य 6 7 है।

1 8 5 दक्षिणी निम्न भूभागीय मिट्टी-

यह गहरे रगवाली मटियार मिट्टी है। यह जब नम रहती है तब काफी मुलायम रहती है लेकिन सूख जाने पर अत्यधिक कठोर हो जाती है। फलस्वरूप दरारो का प्रादुर्भाव होता हे। सामान्यतया यह जमाँनिया, रेवतीपुर, करण्डा एव भदौरा विकास खडो मे पाई जाती है। कर्मनाशा नदी के आस-पास यह मिट्टी कुछ सीमा तक हल्की है। इसकी लवणता मध्यम एव पी एच मूल्य 7 4 से 8 1 के मध्य है।

1 8 6 बीहड़ मिट्टी-

यह गागी एव बेसू नदियो के किनारे प्रमुखतया सैदपुर, सादात एव मनिहारी विकास खडो मे पायी जाती है। यह अवर्गीकृत मिट्टी है एव मृदा परिच्छेदिका पूर्ण विकसित नहीं है। इसकी लवणता मध्यम एव पी एच मूल्य 8 2 है।

1 9 प्राकृतिक वनस्पति–

किसी भी भूभाग की वनस्पति वहा के जलवायु के विविध तत्वो विशेषकर तापक्रम, वर्षा, मिट्टी तथा भूपृष्ठ के वैज्ञानिक इतिहास से प्रभावित होती है। (सिंह जगदीश 1996) प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र मानसून जलवायु के अन्तर्गत आता है। यहा उगने वाले वृक्ष ग्रीष्म काल मे अपनी पतिया गिरा देते हैं जिसके कारण इन्हें पर्णपाती वन कहा जाता है। वनस्पति प्रधानत चरागाह एव

बगीचे के रूप मे है। सामान्यतया वनस्पतिया अधिक सघन नही है तथा इनमे बडे वृक्षो की ऊचाई 30-35 मीटर तक पाई जाती है। आम, जामुन, शीशम, नीम, बेर, महुआ, पीपल, बरगद, बास इत्यादि यहा के प्रमुख वृक्ष है। फलदार वृक्षो का वितरण प्राय बगीचे के रूप मे दृष्टव्य होता हे। जिसमे नीम, शीशम एव बास भी लगे रहते है। अधिकाशत बस्तियो मे मकानो के सामने छाया के लिए नीम के वृक्ष तथा तालाब एव बावलियो के किनारे बास कुज देखने को मिलता हे। बरगद, पीपल तथा पकडी के वृक्ष कम सख्या मे एव सार्वजनिक स्थानो पर पाये जाते है। क्योकि अन्य वृक्षो की तुलना मे ये अधिक भूमि घेरते है तथा अपेक्षाकृत कमजोर होने के कारण इनकी लकडी अनुपयोगी होती है। हिन्दू धर्म-दर्शन मे पीपल का वृक्ष काटना अपराध माना जाता हे, क्योकि भगवत् गीता मे भगवान कृष्ण ने कहा है कि वृक्षो मे मै पीपल हू। फलत पीपल के बहुत पुराने वृक्ष भी विद्यमान है। वर्तमान मे सघन वृक्षारोपण के अन्तर्गत शीशम, यूकेलिप्टस, गुलमोहर के वृक्ष सडको के किनारे लगाये जा रहे हैं। सघन वनस्पति के अभाव के कारण वन्य जन्तुओं का सर्वथा अभाव है। सियार, लोमडी, नीलगाय (जिसे स्थानीय भाषा मे 'घडरोज कहा जाता हे) पाये जाते है।

1 10 भूमि उपयोग प्रतिरूप-

भूमि एक आधारभूत प्राकृतिक ससाधन है, जिस पर सभी आर्थिक, सामाजिक एव सास्कृतिक कार्य घटित होते है। वस्तुत मानव की आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य मे भूमि अपनी क्षमता के अनुसार एक ससाधन के रूप प्रतिष्ठित हो जाती है। इस स्थिति मे क्षेत्र विशेष के भूमि उपयोग प्रतिरुप का वहा की आर्थिक एव सामाजिक समस्याओं के समाधान एव क्षेत्रीय विकास मे महत्वपूर्ण योगदान होता है। बारलो (1961) ने भूमि ससाधन उपयोग को भूमि समस्या एव उसके नियोजन की विवेचना की धुरी बताया है। कैरियल (1972) ने भूमि उपयोग, भूमि प्रयोग एव भूमि ससाधन उपयोग को भूमि विकास की तीन विशिष्ट परिरिस्थितियो का द्योतक कहा है। सिह द्वारा प्रस्तावित सारिणी मे भूमि ससाधन उपयोग कृषि विकास की चौथी (व्यापारिक कृषि) अवस्था स्वीकार किया गया है। (सिंह बी बी 1979) इस अवस्था मे कृषि अप्राप्य भूमि उपयोग मे वृद्धि एव कृषिगत क्षेत्र मे ह्रास होने पर भी शस्यक्रम गहनता एव कृषि गहनता मे वृद्धि होती रहती है। तथा कृषको का झुकाव यात्रिक कृषि पद्धति तथा माग एव पूर्ति पर आधारित मुद्रादायिनी फसलो की ओर अधिक होता है। अध्ययन क्षेत्र मे भूमि ससाधन उपयोग इसी अवस्था का द्योतक है।

'भूमि उपयोग' शब्द का प्रयोग 'सावर' (1919) तथा जोन्स एव 'फ्रिन्च' (1925) द्वारा अपनी कृतियो मे 20 वी शताब्दी के प्रथम चरण मे किया गया। परन्तु भूगोल मे इसके अध्ययन को वास्तविक एव व्यावहारिक महत्व 'डडले स्टाम्प के ग्रेट ब्रिटेन के भूमि उपयोग सर्वेक्षण से प्राप्त हुआ। भारतीय विद्वानो मे प्रो एस पी चटर्जी, भाटिया, जसवीर सिह, पी एस तिवारी, राव', अली', 'सिन्हा' मुनीस रजा, आर पी मिश्र, एन पी अय्यर, एम एफ सिद्दीकी के भूमि उपयोग सम्बन्धी अध्ययन उपयुक्त है।

भूमि उपयोग प्राकृतिक एव सास्कृतिक उपादानो के सयोग का प्रतिफल हे। मानवीय सभ्यता और उसकी आवश्यकताओं मे परिवर्तन के अनुसार भूमि उपयोग का स्वरूप परिवर्तित होता रहता है। जिसमे परोक्ष रुप से कृषि विकास की आवश्यकताए अकित रहती है। कृषि कार्य मे विशिष्टता एव विविधता भूमि उपयोग के विकास क्रम की द्योतक है तथा ये मानव जीवन यापन के प्राथमिक आवश्यकताओं से लेकर सामाजिक, आर्थिक एव सास्कृतिक विकास को प्रभावित करती है। अध्ययन क्षेत्र की अर्थव्यवस्था पूर्णत कृषि पर आधारित एव ग्रामीण है। अत क्षेत्र के समग्र विकास के लिए विकास खड स्तर पर भूमि उपयोग का सम्यक अध्ययन अत्यत आवश्यक हे।

1 10 1 शुद्ध बोया गया क्षेत्र-

शुद्ध बोया गया क्षेत्र भूमि उपयोग का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष हे। इसके उपयोग की विभिन्न दशाए मानव के सामाजिक, आर्थिक एव सास्कृतिक विकास के स्तर की द्योतक है। सामान्यत मानव कृषि कार्य से सबधित विभिन्न सुविधाओं का विकास कर कृषित भूमि के विस्तार के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है। विकास खड स्तर पर सर्वाधिक शुद्ध बोया गया क्षेत्र 1984-85 मे भाँवर कोल विकास खड मे 82 96 प्रतिशत तथा सबसे कम गाजीपुर विकास खड मे 71 28 प्रतिशत था। 1999-2000 मे सर्वाधिक शुद्ध बोया गया क्षेत्र मुहम्मदाबाद विकास खड मे 84 04 प्रतिशत एव सबसे कम गाजीपुर विकास खड मे 60 33 प्रतिशत रहा। अन्य विकास खडो मे शुद्ध बोया गया क्षेत्र 1999-2000 मे जखानिया 82 44, मनिहारी 81 78, सादात 76 94, सैदपुर 79 59, देवकली 78 78, बिरनो 81 33, मरदह 81 20, करण्डा 79 20, कासिमाबाद 79 25, बाराचँवर 81 41, भावरकोल 81 90, जमानिया 77 86, रेवतीपुर 77 36 एव भदौरा मे 51 56 प्रतिशत रहा। (**परिशिष्ट** 1 1, 1 2 **चित्र सं0** 1 5)

1 10 2 कृषि योग्य बंजर भूमि-

1984-85 मे कृषि योग्य बजर भूमि का सर्वाधिक वितरण मनिहारी विकास खड मे 3 43 प्रतिशत एव न्यूनतम भॉवरकोल विकास खड मे 0 37 प्रतिशत था। 1999-2000 मे सर्वाधिक कृषि योग्य बजर भूमि मनिहारी विकास खड मे 3 10 एव सबसे कम जमानिया मे 0 06 प्रतिशत रहा। अन्य विकास खडो मे कृषि योग्य बजर भूमि का वितरण, यथा जखनिया 2 02, सादात 2 09, सैदपुर 1 40, देवकली 1 31, बिरनो 1 77, गाजीपुर 0 77, मरदह 1 99, करण्डा 0 44, कासिमाबाद 1 46, बाराचँवर 1 62, मुहम्मदाबाद 0 64, भाँवरकोल 0 43, रेवतीपुर 1 38, तथा भदौरा मे 0 24 प्रतिशत रही। (**परिशिष्ट** 1 1, 1 2, **चित्र स0** 1 5)

1 10 3 ऊसर एवं कृषि-अयोग्य भूमि–

आधुनिक सदर्भ मे कृषि अयोग्य भूमि का अभिप्राय ऐसी भूमि से है जिसे वैज्ञानिक अनुसधानो एव अभिनव तकनीको द्वारा कृषि गत क्षेत्र मे नही ला सके है। ऊसर भूमि मे पर्याप्त सुधार लाया गया है। 1984-85 मे सर्वाधिक ऊसर एव कृषि अयोग्य भूमि जमानिया विकास खड मे 4 70 प्रतिशत तथा न्यूनतम भाँवरकोल विकास खड मे 0 70 प्रतिशत थी। अन्य विकास खडो मे इस भूमि का प्रतिशत जखानियाँ मे 1 96, मनिहारी मे 1 77, सादात मे 3 18, सैदपुर मे 1 24, देवकली मे 1 36, बिरनो मे 1 54, गाजीपुर मे 1 13, मरदह मे 1 46, करण्डा मे 4 04, कासिमाबाद मे 1 65, बाराचँवर मे 1 30, मुहम्मदाबाद मे 0 90, रेवतीपुर मे 3 27, तथा भदौरा मे 1 10 प्रतिशत था। 1999-2000 मे सर्वाधिक ऊसर एव कृषि अयोग्य भूमि 3 21 प्रतिशत जमाँनिया विकास खड मे एव सबसे कम भाँवरकोल विकास खड मे 0 48 प्रतिशत रहा। अन्य विकास खडो मे ऊसर एव कृषि-अयोग्य भूमि का वितरण प्रतिशत जखनियाँ 1 16, मनिहारी 1 89, बिरनो 1 17, गाजीपुर 1 22, मरदह 1 18, करण्डा 1 69, कासिमाबाद 1 48, बाराचँवर 1 66, मुहम्मदाबाद 0 78, रेवतीपुर 0 59 एव भदौरा मे 0 95 प्रतिशत रहा। (**परिशिष्ट** 1 1, 1 2, **चित्र स0** 1 5)

1 10 4 कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग मे लाई गयी भूमि-

यह ऐसा गैर कृषि क्षेत्र है जहा इमारते, औद्योगिक सस्थान, सडके, रेलवे, जलमार्ग, नहरे आदि भूमि को घेरे हुए है। (हुसैन एम 2000) जनपद मे इस प्रकार की भूमि का सर्वाधिक क्षेत्र 1984-85 मे गाजीपुर विकास खड मे 19 23 तथा न्यूनतम 6 00 प्रतिशत मरदह विकास खड मे था। 1999-2000 मे सर्वाधिक क्षेत्र गाजीपुर मे 22 49 प्रतिशत तथा न्यूनतम मरदह विकास खड मे ही 8 20 प्रतिशत रहा। 1999-2000 मे अन्य विकास खडो मे इस प्रकार की भूमि का वितरण प्रतिशत जखनिया 9 80, मनिहारी 8 35, सादात 10 13, सैदपुर 10 01, देवकली 10 75, बिरनो 9 96, करण्डा 18 13, कासिमाबाद 7 64, बाराचँवर 9 02, मुहमम्दाबाद 9 86, भॉवरकोल 9 93, जमानिया 15 47, रेवतीपुर 14 54 तथा भदौरा मे 11 53 प्रतिशत रहा। (**परिशिष्ट** 1 1, 1 2, **चित्र स0** 1 5)

1 10 5 परती भूमि-

परती भूमि वह भूमि होती है जो कभी कृषि के अधीन थी परन्तु वर्तमान समय मे कतिपय कारणो से उस पर कृषि कार्य नही किया जा रहा है। उत्तर दायी कारणो मे किसान की असमर्थता, जलाभाव, मृदा अपरदन, अलाभजनक स्थिति, आदि। (हुसैन एम 2000) जनपद मे सर्वाधिक परतीभूमि 1984-85 मे कासिमाबाद विकास खड मे 10 78 प्रतिशत, सबसे कम भदौरा विकास खड मे 3 30 प्रतिशत थी। 1999-2000 सर्वाधिक परती भूमि कासिमाबाद विकास खड मे 3 05 प्रतिशत तथा सबसे कम जमाँनिया मे 0 43 प्रतिशत रही। (**परिशिष्ट** 1 1, 1 2, **चित्र सख्या** 1 5)

1 10 6 चरागाह, उद्यान एवं वृक्ष-

1984-85 मे सर्वाधिक चरागाह सादात विकासखड मे 1 41 प्रतिशत था तथा न्यूनतम 0 003 प्रतिशत भाँवरकोल विकास खड मे था। 1999-2000 मे सर्वाधिक क्षेत्र सादात मे ही 0 92 प्रतिशत तथा मुहम्मदाबाद जमाँनिया, भदौरा चरागाह विहीन रहे।

DISTRICT GHAZIPUR
LAND USE PATTERN
1999 - 2000
Jakhania
Mardah
Qasimabad
Barachawar
Birno
Manihari
Muhammadabad
Sadat
Ghazipur
Bhanwarkol
Saidpur
Deokali
Karanda
Reotipur
Bhadaura
Zamania
GANGA
GANGA RIVER
Net Area Sown
Cultivable Waste
Area Not Available For Cultivation
Other Uncultivated Land
Fallow Land
Garden and Grazing
5 0 5 10 15
Km
(After prof K Roy)
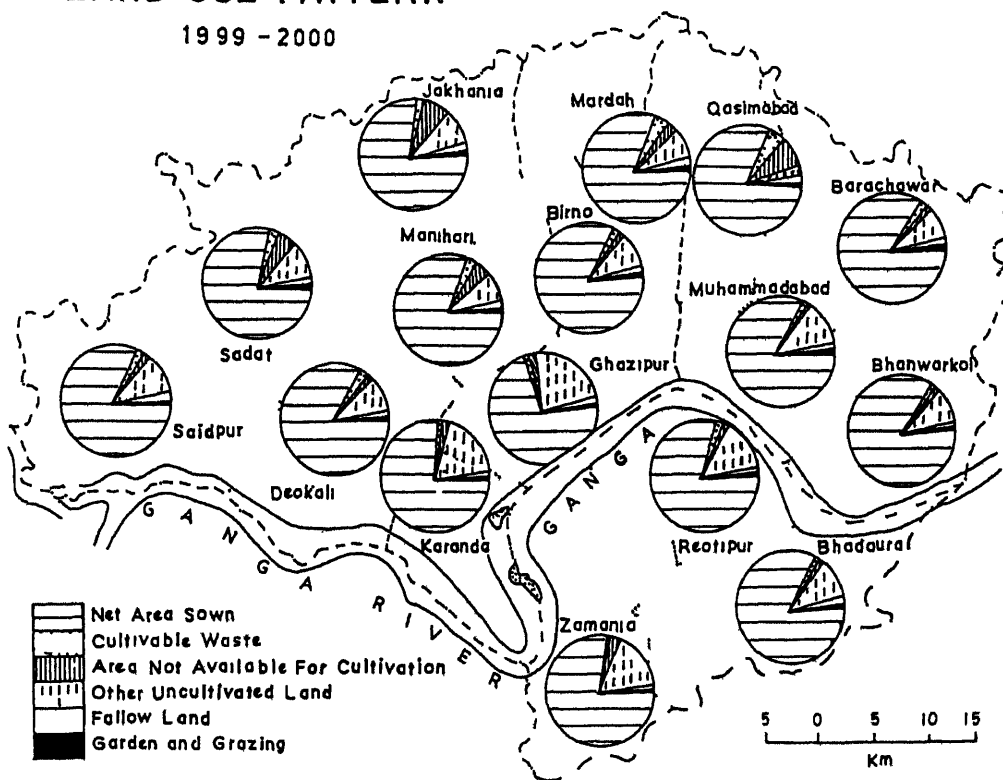
Fig. 1.5

उद्यान वृक्ष तथा झाडियो का प्रतिशत 1984-85 मे सर्वाधिक रेवतीपुर मे 2 00 प्रतिशत तथा न्यूनतम 0 50 प्रतिशत गाजीपुर विकास खड मे रहा। (**परिशिष्ट** 1 1, 1 2, **चित्र सख्या** 1 5)

1 11 शस्य प्रतिरूप एवं क्षेत्रीय वितरण प्रारूप

क्षेत्र विशेष मे फसलो के क्षेत्रीय वितरण प्रारुप को शस्य प्रतिरूप की सज्ञा दी जाती है। यह कुल फसलगत क्षेत्र अथवा सकल बोये गये क्षेत्र के प्रतिशत द्वारा ज्ञात किया जाता है। जो भोतिक सामाजिक आर्थिक, तकनीकी एव प्रशासनिक आदि कारको द्वारा प्रभावित होता है। उपरोक्त कारको मे असमान वितरण के कारण ही शस्य प्रतिरूप मे क्षेत्रीय एव सामयिक अतर पाया जाता है। भौतिक कारको मे वर्षा, तापक्रम, ढाल, आर्द्रता, जल स्तर का प्रभाव शस्य प्रतिरूप एव फसल चक्र पर पडता है। कृषि अर्थशास्त्री लोकनाथन (1967) द्वारा फसल चक्र पर पडने वाले प्रभावो का विशेष अध्ययन किया गया है। डी झा (1963) कृषक परिवारो के सिचाई साधनो से सपन्न कार्य के शस्य स्वरूप के आर्थिक पक्षो का अध्ययन किया। सी रामलिंगन ने लघु स्तर पर शस्य स्वरूप तथा जोत-आकार, रैयतवारी, सिचाई, शुद्ध लाभ, मिश्रित फसल व्यवस्था के आधार पर शस्य-प्रतिरूप का अध्ययन किया है। जोत आकार मे वृद्धि के साथ-साथ व्यापारिक फसलो के क्षेत्र मे वृद्धि होती है तथा खाद्यान्न फसलो के क्षेत्र मे ह्रास होता है (जोगलेकर 1963) प्रस्तुत अध्ययन मे शस्य प्रतिरूप की विवेचना विभिन्न प्रभावी कारको के सदर्भ मे विकास खडवार की गयी हे जिससे फसल वितरण सबधी विशेषताए सुगमता से स्पष्ट हो जाँय—

1 11 1 धान या चावल-

खाद्यान्नो मे धान या चावल एक महत्वपूर्ण फसल है व्यावसायिक रूप से इसका उत्पादन जनपद के सभी विकास खडो मे होता है। 1984-85 मे सकल बोये गये क्षेत्र का सर्वाधिक चावल उत्पादक क्षेत्र मरदह विकास खड मे 39 78 प्रतिशत तथा न्यूनतम 8 59 प्रतिशत भाँवरकोल विकास खड मे था। 1999-2000 मे सर्वाधिक चावल उत्पादक क्षेत्र मरदह 44 74 एव न्यूनतम करण्डा 16 23 प्रतिशत रहा। (**परिशिष्ट** 1 3, 1 4)

1 11.2 गेहूं-

वर्तमान मे अध्ययन क्षेत्र मे गेहू सर्वप्रमुख फसल है। 1984-85 मे सर्वाधिक सकल बोये गये क्षेत्र से मरदह विकासखड मे 39 78 प्रतिशत तथा सबसे कम भाँवरकोल विकास खड मे 27 08 प्रतिशत उत्पन्न हुआ था। 1999-2000 मे सर्वाधिक गेहू सैदपुर विकास खड मे 51 11 प्रतिशत, तथा सबसे कम 24 18 प्रतिशत भोवरकोल विकास खड मे उत्पादित हुआ है। सिचाई सुविधाओं की अभिवृद्धि ने अधिक क्षेत्रो पर गेहू की कृषि को विस्तीर्ण करने मे सहायता की है। इसके साथ-साथ उन्नत बीजो एव उर्वरको एव कीटनाशको के प्रयोग ने गेहू की कृषि को प्रभावित किया है। (**परिशिष्ट** 1 3, 1 4)

1.11 3 मक्का-

मक्का की कृषि 1984-85 मे सैदपुर मे सर्वाधिक 3 30 प्रतिशत एव सबसे कम भदौरा मे 0 05 प्रतिशत भाग पर होती थी। धान की कृषि मे उत्तरोत्तर विकास से मक्का क्षेत्रफल मे निरन्तर कमी हो रही है। 1999-2000 मे सर्वाधिक मक्का उत्पादक क्षेत्र मुहम्मदाबाद विकास खड मे 0 81 प्रतिशत तथा सबसे कम 0 005 प्रतिशत जमॉनिया विकास खड मे रहा। (**परिशिष्ट** 1 3, 1 4)

1 11 4 जौ-

1984-85 मे सर्वाधिक जौ उत्पादक क्षेत्र गाजीपुर मे 4 36 प्रतिशत एव सबसे कम मरदह मे 1 73 प्रतिशत था। 1999-2000 मे सर्वाधिक जौ उत्पादक क्षेत्र रेवतीपुर 4 26 प्रतिशत रहा। जबकि सबसे कम 0 78 प्रतिशत देवकली मे रहा। (**परिशिष्ट** 1 3, 1 4)

1.11 5 ज्वार-बाजरा-

1984-85 मे ज्वार-बाजरा के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्र भोवरकोल मे 13 71 प्रतिशत तथा सबसे कम मरदह मे 1 94 प्रतिशत था। 1999-2000 मे सर्वाधिक क्षेत्रफल करण्डा मे 14 23 प्रतिशत तथा सबसे कम मरदह मे 0 46 प्रतिशत रहा। (**परिशिष्ट** 1 3, 1 4)

उपरोक्त विवेचनो से स्पष्ट है कि जिन फसलो को अधिक सिचाई की आवश्यकता होती है उनका प्रतिशत निरन्तर बढ रहा है। जबकि अल्प जल की आवश्यकता वाली फसले जैसे जौ का प्रतिशत निरन्तर कम हो रहा है। इसका सीधा सबध सिचाई साधनो के विकास से है। तालिका

1 2 से स्पष्ट हैं वर्तमान मे गेहू 40 2 प्रतिशत, धान 33 90, जौ 2 4, बाजरा 3 4, दाले 11 1, तिलहन 0 2, आलू 2 3, गन्ना 4 4 एव 2 0 प्रतिशत पर अन्य फसले उगाई जा रही है। (तालिका 1 2)

तालिका 1 2

प्रमुख फसलो के अन्तर्गत क्षेत्रफल (1999-2000)

फसल	क्षेत्रफल	
	हेक्टेयर	प्रतिशत
गेहू	146065	40 2
धान	123270	33 9
जौ	8758	2 4
बाजरा	12387	3 4
कुल दाले	40360	11 10
कुल तिलहन	487	0 20
आलू	8585	2 30
गन्ना	15898	4 40
अन्य फसले	7544	2 00

स्रोत- जनपद साख्यिकी पत्रिका 2000

1 12 शस्य गहनता-

शस्य गहनता का अभिप्राय कृषि क्षेत्र मे फसलो की आवृत्ति से है। अर्थात् एक निश्चित कृषि क्षेत्र पर फसल वर्ष मे कितनी बार उगाई जाती है। फसलो की यही आवृत्ति उस क्षेत्र विशेष की शस्य गनहता कहलायेगी। शस्य क्रम गहनता वह सामयिक बिन्दु है जहा भूमि श्रम, पूजी का सम्मिश्रण सर्वाधिक लाभप्रद सिद्ध होता है। (स्टाम्प एल डी 1962)। इस प्रकार शस्य गहनता मुख्यत प्राकृतिक, मृदा एव जलवायु, तकनीकी, प्रबधकीय, सिचाई, मशीनीकरण, फसल चक्र तथा जैविक उन्नतशील बीज आदि कारको का योग है। यदि इस सकल्पना का तात्पर्य एक ही खेत मे एक वर्ष मे एक से अधिक फसलोत्पादन है तो यह निम्न सूत्र द्वारा ज्ञात की जा सकती है-

$$\text{शस्य गहनता} = \frac{\text{कुल फसलगत क्षेत्र}}{\text{शुद्ध बोया गया क्षेत्र}} \times 100$$

उपरोक्त सूत्र के आधार पर जनपद गाजीपुर की औसत शस्य क्रम गहनता 1974-75 मे 126 31 प्रतिशत तथा 1984-85 मे 142 72 प्रतिशत थी तथा 1989-90 मे 147 83 तथा 1999-2000 मे औसत शस्य क्रम गहनता 150 82 है। परन्तु विकास खण्ड स्तर पर इसमे पर्याप्त विभिन्नता दृष्टिगोचर होती है। 1989-90 मे एव 1999-2000 मे सबसे कम शस्य गहनता क्रमश सादात (122 7 प्रतिशत), एव सैदपुर मे 114 9 प्रतिशत थी। शस्य गहनता विश्लेषण हेतु इसे पाच वर्गों मे विभक्त किया गया है-

अतिनिम्न शस्य गहनता 1999-2000 मे 2 विकास खण्डो सैदपुर एव भाँवरकोल मे थी। निम्न शस्य गहनता 1989-90 मे 3 विकास खडो मे जो सादात, रेवतीपुर एव भावरकोल है। 1999-2000 मे- निम्न गहनता मे कोई भी

तालिका 1 3

जनपद गाजीपुर-शस्य गहनता

	1989-90			1999-2000		
विकास खण्ड	शुद्ध बोया गया क्षेत्र (हे)	सकल बोया गया क्षेत्र (हे)	शस्य गहनता प्रतिशत	शुद्ध बोया गया क्षेत्र (हे)	सकल बोया गया क्षेत्र (हे)	शस्य गहनता प्रतिशत
जखनिया	16361	23629	142 2	16795	25166	149 84
मनिहारी	17966	24228	134 85	18246	28036	153 65
सादात	18209	22357	122 7	17164	26632	154 13
सेदपुर	17328	24711	142 60	17278	19859	114 9
देवकली	17635	23758	134 7	17602	22913	130 82
बिरनो	12748	22257	174 5	12565	21152	168 34
मरदह	14787	25769	174 2	15057	24325	161 55
गाजीपुर	10898	19650	180 3	11037	19404	175 80
करण्डा	11884	16746	140 93	12210	17686	157 76
कासिमाबाद	1849	29851	161 80	17682	29392	166 22
बाराचवर	15975	26118	163 49	15973	25782	161 40
मुहम्मदाबाद	24278	21449	150 22	15055	22023	146 28
भावरकोल	20195	24750	12 55	20726	24749	119 4
जमानिया	21341	34867	163 38	21296	27608	176 59
रेवतीपुर	1744	21900	124 82	17330	22987	132 64
भदौरा	16722	25620	153 21	17783	27244	153 20

स्रोत- जिला साख्यिकय पत्रिका 1991 एव 2001

तालिका 1 4

शस्य गहनता			
श्रेणी	समूह शस्य गहनता प्रतिशत	विकास खडों की सख्या	
		1989-90	1999-2000
अतिनिम्न	120 से कम	-	2
निम्न	120 से 130	3	-
मध्यम	130 से 140	2	2
उंच्च	140 से 150	3	2
अतिउच्च	150 से अधिक	8	11

विकास खड नही है। मध्यम गहनता के अन्तर्गत 1989-90 मे मनिहारी एव देवकली विकास खड है। जबकि 1999-2000 मे इस श्रेणी मे देवकली एव रेवतीपुर विकास खड है। उच्च गहनता के अन्तर्गत 1989-90 मे 3 विकास खड एव 1999-2000 मे 2 विकास खड हे। अति उच्च गहनता के अन्तर्गत 1989-90 मे जहा 8 विकास खड थे वही 1999-2000 मे इसके अन्तर्गत कुल 11 विकास खड आते है। (**तालिका** 1 4, **चित्र सख्या** 1 6)

1 13 शस्य-संयोजन प्रदेश–

किसी क्षेत्र विशेष मे प्रमुख फसलो के साथ गौण फसले भी बोई जाती है। कृषि क्षेत्र या प्रदेश मे बोई जाने वाली प्रमुख फसलो के समूह को शस्य सयोजन कहते हैं। शस्य सयोजन से कृषि की क्षेत्रीय विशेषताओं को आसानी से समझा जा सकता है। शस्य सयोजन प्रदेशो का निर्धारण उन फसलो के स्थानिक वर्चस्व के आधार पर किया जाता है जिसमे क्षेत्रीय सहसबध पाया जाता है। फसलो के इस प्रकार के अध्ययन से जहा एक ओर क्षेत्रीय कृषि समस्याओं की जानकारी मिलती है वही वर्तमान कृषि समस्याओं के निराकरण हेतु समुचित सुझाव दिये जा सकते है। शस्य–सयोजन प्रदेश का स्वरूप मुख्यत क्षेत्र के भौतिक (जलवायु, जल प्रवाह, मृदा) तथा सामाजिक-आर्थिक, सास्कृतिक कारको से प्रभावित होता है। यहा शस्य-सयोजन प्रदेशो का निर्धारण (दोई के० 1957-59) महोदय द्वारा प्रस्तुत साख्यिकी विधि के आधार पर किया गया है। इस विधि का प्रयोग शर्मा द्वारा उत्तर प्रदेश के शस्य सयोजन प्रदेशो के निर्धारण मे किया गया है। अध्ययन क्षेत्र मे चार शस्य सयोजन प्रदेशो का निर्धारण किया गया है। (**चित्र सख्या** 1 7)

DISTRICT GHAZIPUR
CROPPING INTENSITY
1989-90
1999-2000
As Percentage of Gross Cropped Area
130
150
170
190
GANGA R
CROP-COMBINATION REGIONS
WRSG
RWSG
RWSJ
WRJG
RWSG
RWJP
WRJS
WRJP
WJGR
WRJS
WJRA
WGRJ
RWGCB
RWJC
W Wheat
J Jowar Bajra
R Rice
G Gram
P potato
S Sugarcane
B Barley
A Arhar
First Rank
Second Rank
Third Rank
Forth Rank
5 0 5 10 15 20
Km
(After prof R L Singh)
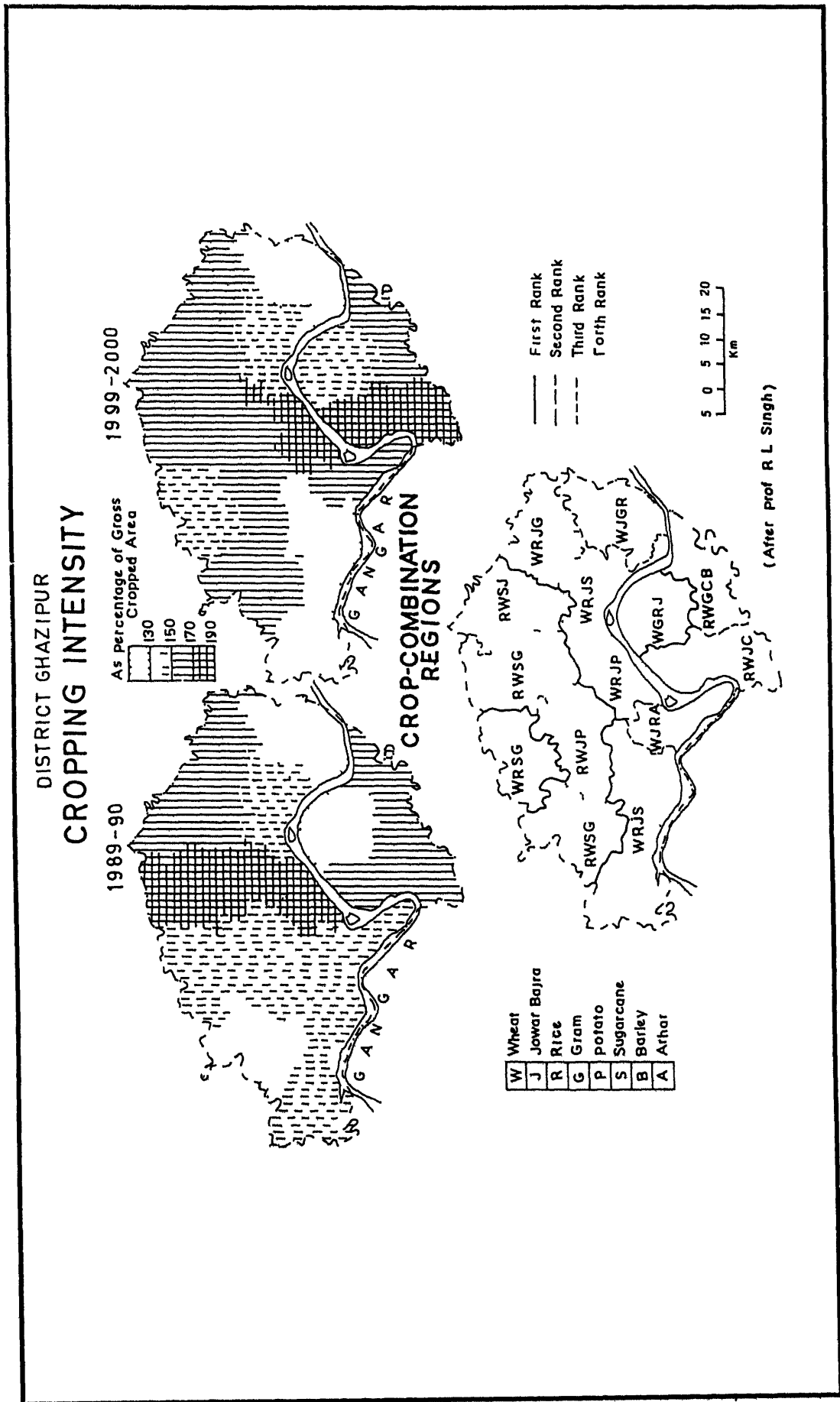
Fig. 1.6

1 13 1 प्रथम स्तरीय शस्य-सयोजन प्रदेश–

प्रथम स्तरीय शस्य-सयोजन प्रदेश के अन्तर्गत गेहू 9 विकास खडो मे तथा धान 7 विकास खडो मे है। **(चित्र सख्या 1 7, परिशिष्ट 1 5)**

1 13 2 द्वितीय स्तरीय शस्य सयोजन प्रदेश-

इसमे धान गेहू मुख्य सम्मिश्रण है जो 7 विकास खडो मे है। इसके अतिरिक्त 6 विकास खडो मे यह गेहू-धान सयोजन के रूप मे मिलता हे। वस्तुत समग्र जनपद मे 13 विकास खडो मे यह प्रतिरूप देखने को मिलते हैं। इसका एकमात्र कारण क्षेत्र मे सीमान्त एव लघुकृषको का बाहुल्य है। ये कृषक अपनी सीमित भूमि पर परिवार के सामान्य भरण पोषण के लिए केवल खाद्यान्न उत्पन्न करते है। जबकि दो विकासखडो मे गेहू व ज्वार-बाजरा तथा एक विकासखड मे गेहू व चना द्वितीय स्तरीय शस्य सयोजन प्रदेश के अन्तर्गत आते है। **(चित्र सख्या 1 7, परिशिष्ट 1 5)**

1.13 3 तृतीय स्तरीय शस्य संयोजन प्रदेश-

क्षेत्र के 5 विकास खडो मे गेहू–धान-ज्वार-बाजरा का सम्मिश्रण देखने को मिलता है। गेहू-धान-गन्ना का भी सम्मिश्रण तृतीय स्तरीय शस्य सयोजन प्रदेश मे आता है। गेहू-धान- गन्ना जखनिया, गेहू ज्वार- बाजरा व चना- भावरकोल, गेहू- ज्वार- बाजरा व धान- करण्डा, गेहू-चना-धान रेवतीपुर, धान- गेहू ज्वार-बाजरा- जमानिया, तथा धान-गेहू चना-भदौरा विकास खड मे हैं। (**चित्र सख्या** 1 7, **परिशिष्ट** 1 5)

1 13 4 चतुर्थ स्तरीय शस्य संयोजन प्रदेश

अध्ययन क्षेत्र के तीन विकास खडो–सैदपुर, देवकली, मुहम्मदाबाद मे चतुर्थ स्तरीय शस्य सयोजन प्रदेश गेहू- धान, ज्वार, बाजरा- गन्ना से निर्मित होता है। जखनिया मे गेहू- धान- गन्ना व चना, गाजीपुर मे गेहू-धान ज्वार-बाजरा व आलू, बाराचवर विकास खड मे, गेहू-धान-ज्वार-बाजरा व चना व धान करण्डा विकास खड मे, गेहू-ज्वार-बाजरा-धान-अरहर- रेवतीपुर मे, जबकि सादात-बिरनो, मरदह विकास खडो मे धान-गेहू व गन्ना व चना, जमानियाँ विकास खड मे धान-गेहू-ज्वार-बाजरा व चना, भदौरा मे धान-गेहू-चना-जौ तथा कासिमाबाद, मनिहारी विकास खडो मे धान-गेहू-गन्ना व ज्वार बाजार चतुर्थ स्तरीय शस्य–सयोजन प्रदेश का निर्धारण करते हैं। **(चित्र सख्या- 1 7, परिशिष्ट 1 5)**

1 14 सिचाई-

प्राचीनकाल से ही मानव जल का प्रयोग सिचाई के लिए करता रहा है। अधिकाश प्राचीन सभ्यताए सिचाई की उपलब्धता पर ही विकसित होती रही है। सिचाई के लिए अधिकतर सतह एव भूमिगत जल का प्रयोग होता है। समग्र भूमिगत एव सतही जल को कृत्रिम विधियो द्वारा कृषि क्षेत्रो मे पहुचाने को सिचाई कहते है। वस्तुत सिचाई की आवश्यकता वही होती है जहा वर्षा का जल फसलोत्पादन के लिए अपर्याप्त होता है। स्वत कृषि विकास एव तद्नुरूप आर्थिकी के लिए सिचाई अनिवार्य घटक है। अध्ययन क्षेत्र मे जल का स्रोत वर्षा है। यह वर्षा वर्ष के कतिपय महीनो मे ही होती है। इससे प्राप्त हुआ जल कुछ मात्रा मे तालो एव पोखरो मे सचित रहता है तथा अधिकाश भाग बहता हुआ नदियो मे चला जाता हे। 'भारत मे कुल वर्षा की मात्रा 3000 एकड फीट हे जिसका 1000 मिलियन एकड फीट वाष्पीकृत हो जाता है। 650 मिलियन एकड फीट भूमिगत हो जाता है। शेष 1350 मिलियन फीट वाष्पीकृत हो जाता है।' (के एल राव)

जनपद मे जल की सामान्य जल सतह लगभग 15-45 फीट है। भूमिगत जल का प्रयोग नलकूप, कुओं एव हैडपप के रुप मे होता है। सतह का जल जो ताल, पोखर मे इकट्ठा होता है तथा नदियो के प्रवाह के रूप मे प्रयोग किया जाता है। जनपद मे गगा पर स्थापित की गयी 6 देवकली कैनाल से निकाली गयी नहरो का वर्ष भर सिचाई के रूप मे प्रयोग होता है। जल एकत्रित महत्वपूर्ण तालो मे- बरकाताल, नवाहताल, गोहदावाला ताल, जरोथा ताल, गुनवा एव केथियाताल है।

1 14 1 सिचाई के स्रोत-

आधुनिक हरित क्राति के युग मे खाद्यापूर्ति के समुचित समाधान के लिए, कृषि उत्पादन मे वृद्धि हेतु सिचाई के साधनो का प्रयोग अनिवार्य एव निर्णायक हे। अध्ययन क्षेत्र मे नलकूप (राजकीय एव निजी), नहरे, कूए एव तालाब अपने महत्व के क्रम मे है। 1989-90 मे कुल सिचित क्षेत्र का 70 58 प्रतिशत नलकूपो द्वारा 29 प्रतिशत नहरो द्वारा, 0 10 प्रतिशत कूपो द्वारा एव 0 55 प्रतिशत तालाबो द्वारा सिचित था। 1999-2000 मे इन साधनो द्वारा क्रमश 73 50 प्रतिशत, 29 02 प्रतिशत, 0 165 प्रतिशत तथा 0 059 प्रतिशत सिचित था।

1.14 1.1 नलकूप-

नलकूप (सरकारी एव निजी) अध्ययन क्षेत्र के प्रमुखतम सिचाई के स्रोत हैं। 1999-2000 मे अध्ययन क्षेत्र का 73 50 प्रतिशत मुहम्मदाबाद मे है एव सबसे कम रेवतीपुर में 18 28 प्रतिशत है। **(तालिका 1 5)**

1 14 1.2 नहरें-

नहरो द्वारा सबसे अधिक सिचित क्षेत्र भदौरा मे 78 16 प्रतिशत हे। सबसे कम मुहम्मदाबाद मे कुल सिचित क्षेत्र का 0 26 प्रतिशत है। जनपद के समस्त सिचित क्षेत्र का 26 02 प्रतिशत नहरो द्वारा सीचा जाता हे।

अध्ययन क्षेत्र मे अधिकाश भाग (99 52 प्रतिशत भाग) उपरोक्त साधनो द्वारा सिचित है, जबकि अल्पमात्रा मे कुए, तालाब एव अन्य साधनो द्वारा सिचित क्षेत्र मनिहारी सादात, गाजीपुर एव रेवतीपुर मे हे। (तालिका 1 5)

तालिका 1 5

जनपद गाजीपुर सिचित क्षेत्रफल (हेक्टेयर एव प्रतिशत मे)

1999-2000

विकास खड	कुल सिचित क्षेत्र (हेक्टे)	नलकूप (निजी एव राजकीय) हेक्टेयर	प्रतिशत	नहरे (हेक्टे0)	प्रति0	कुए (हेक्टे0)	प्रति शत	तालाब हेक्टे	प्रति शत
जखनिया	15372	12957	84 20	2415	15 7	-	-	-	-
मनिहारी	15372	11555	75 16	3778	24 5	39	0 25	-	-
सादात	14767	9427	83 8	5043	34 16	297	2 01	-	-
सैदपुर	12608	6451	51 16	6157	48 83	-	-	-	-
दवकली	12617	9842	78 00	2775	21 99	-	-	-	-
बिरनो	11615	9940	85 57	1695	14 59	-	-	-	-
मरदह	13316	105060	78 90	2759	20 70	-	-	-	-
गाजीपुर	9509	9079	95 47	325	3 41	-	-	105	1 10
करण्डा	7750	7358	94 51	392	5 05	-	-	-	-
कासिमाबाद	14878	14178	95 29	700	4 70	-	-	-	-
बाराचवर	14559	14383	98 79	226	1 55	-	-	-	-
मुहम्मदाबाद	11359	11329	99 73	30	0 26	-	-	-	-
भावरकोल	10400	9262	89 05	1140	10 96	-	-	-	-
जमानिया	17550	3990	22 75	13560	77 26	-	-	-	-
रेवतीपुर	5975	1636	18 28	2428	27 10	-	-	17	0 18
भदौरा	11959	2611	21 83	9348	78 16	-	-	-	-
योग	203512	150085	73 50	52969	26 02	336	0 165	122	0 059

स्रोत- साख्यिकीय पत्रिका जनपद गाउर 2000

तालिका 1 6

जनपद गाजीपुर- सिचाई गहनता

	1989-1990			1999-2000		
विकास खड	शुद्ध बोया गया क्षेत्र (हेक्टेयर)	शुद्ध सिचित क्षेत्र (हेक्टेयर)	गहनता प्रतिशत	शुद्ध बोया गया क्षेत्र (हेक्टेयर)	शुद्ध सिचित क्षेत्र (हेक्टे)	गहनता (प्रतिशत)
जखनिया	16361	11746	71 79	16795	15373	91 53
मनिहारी	17966	14496	80 68	18246	15372	84 24
सादात	18209	15012	82 44	17164	14767	86 03
सैदपुर	17328	15630	90 20	17278	12608	72 97
देवकली	17635	13660	77 45	17602	12617	71 67
बिरनो	12748	10378	81 40	12565	11615	92 43
मरदह	14787	12539	84 79	15057	13316	88 43
गाजीपुर	10893	10055	92 30	11037	9509	86 15
करण्डा	11834	6843	57 82	11210	7750	69 13
कासिमाबाद	18449	14743	79 91	17682	14878	84 04
बाराचवर	15975	12145	76 02	15973	14559	91 11
मुहम्मदाबाद	14278	10256	71 83	15055	11359	75 45
भावरकोल	20195	7031	34 81	20726	10400	50 17
जमानिया	21341	18185	85 21	21296	17550	82 40
रेवतीपुर	17944	7443	41 47	17330	8957	51 68
भदौरा	16722	10924	65 32	16783	11959	71 25
योग	263330	189898	72 11	263010	203512	77 37

स्रोत- जनपद साख्यिकीय पत्रिका 1991, तथा 2000

1 15 सिंचाई गहनता-

किसी क्षेत्र के कृषि के विकास मे सिंचाई गहनता का महत्वपूर्ण योगदान होता है क्योकि सिंचाई गहनता फसल उत्पादकता मे अभिवृद्धि तथा भूमि के मूल्य वृद्धि मे सहायक है। सिंचाई गहनता के माध्यम से क्षेत्रीय विसगतियो को कम करने, एव अविकसित क्षेत्र को विकसित करने मे इसकी निर्णायक भूमिका होती है (भाटिया एस0 एस0 1967)। सिचाई गहनता को ज्ञात करने

DISTRICT GHAZIPUR
IRRIGATION INTENSITY
1989-90
G A N G A R
As percentage of net Irrigated area
35
45
55
65
75
85
95
1999-2000
G A N G A R
5 0 5 10 15 20
Km
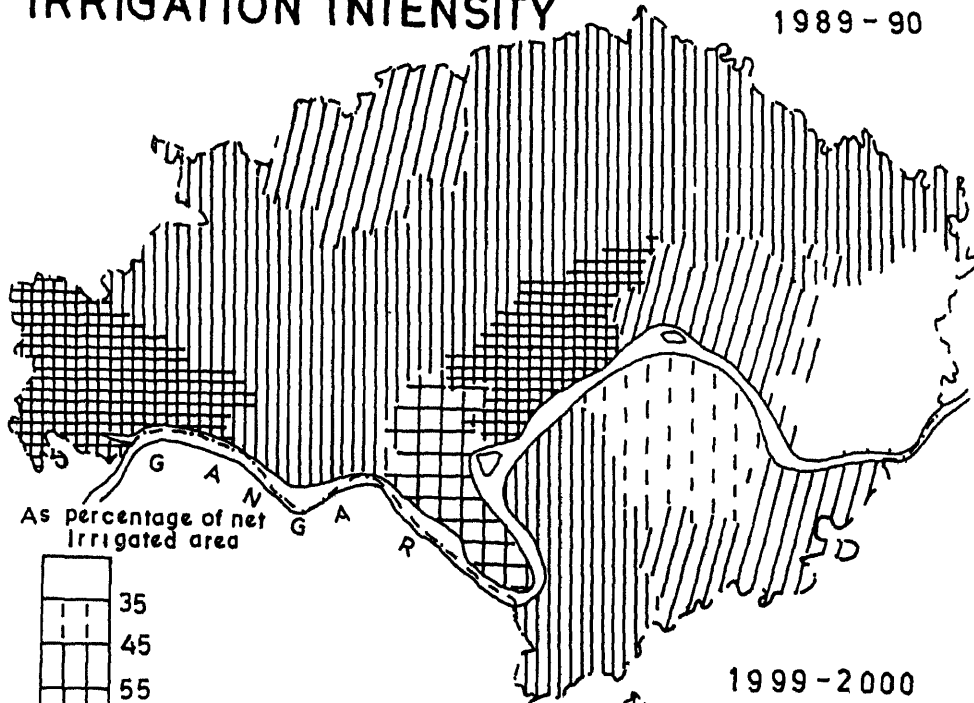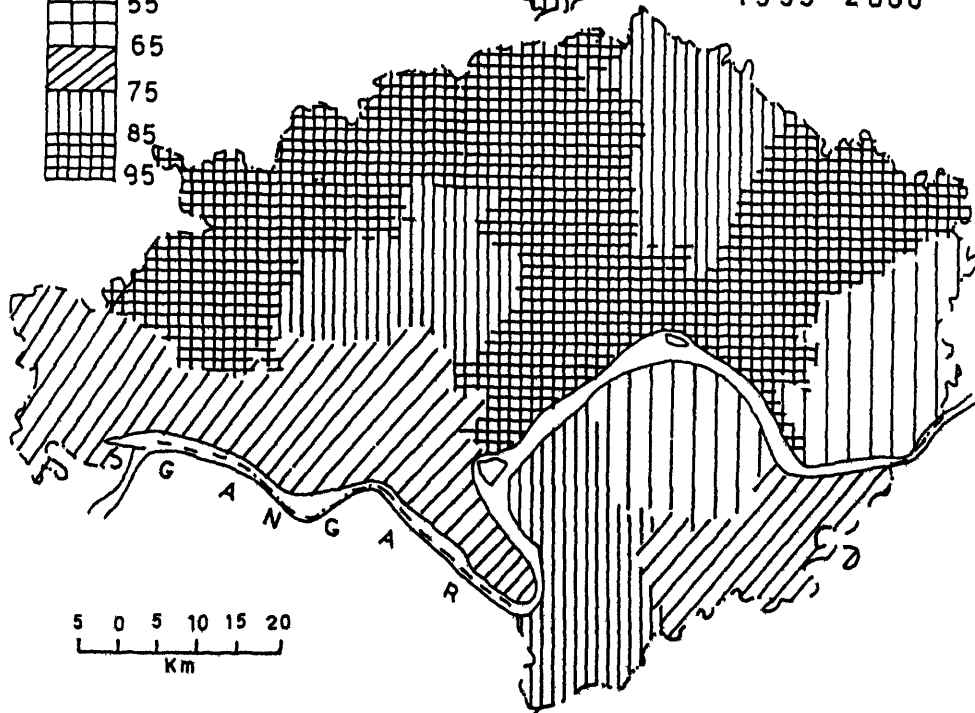
Fig. 1.7

के लिए निम्न सूत्र का उपयोग किया गया है-

$$\text{सिंचाई गहनता} = \frac{\text{शुद्ध सिचित क्षेत्रफल}}{\text{शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल}} \times 100$$

जनपद मे 1989-90 मे कुल सिचाई गहनता 72 11 प्रतिशत थी जो 1999-2000 मे 77 37 प्रतिशत हो गयी। समस्त जनपद को मध्यम, उच्च एव अतिउच्च सिचाई गहनता मे विभक्त किया गया है।

1989-90 मे **मध्यम गहनता के अन्तर्गत (30-50 प्रतिशत)** भावरकोल (34 81 प्रतिशत), रेवतीपुर (41 47 प्रतिशत) है। 1999-200 मे कोई भी विकस खड मध्यम गहनता मे नही है। 1989-90 मे **उच्च गहनता (50-70 प्रतिशत)** के अन्तर्गत करण्डा विकास खड हे जिसकी गहनता 57 82 प्रतिशत है। 1999-2000 मे रेवतीपुर (51 68 प्रतिशत), भावरकोल (50 17 प्रतिशत) तथा करण्डा (69 13 प्रतिशत) हे।

1989-90 मे **अति उच्च गहनता के अन्तर्गत** (70 प्रतिशत से अधिक) मे कुल 13 विकास खड है जिसमे सर्वाधिक गहनता गाजीपुर मे 92 30 प्रतिशत है। 1999-2000 मे इस वर्ग के अन्तर्गत 12 विकास खड है जिसमे सर्वाधिक गहनता जखनिया की 91 53 प्रतिशत है। **(तालिका 1 6 चित्र सख्या 1 7)**

1 16 शैक्षिक संस्थाएं-

जनपद मे 1999-2000 तक कुल जूनियर बेसिक स्कूलो की सख्या 1830 है। जिसमे 1731 ग्राम्याचलो मे एव 99 नगरीय क्षेत्रो मे है। जूनियर बेसिक स्कूलो की सर्वाधिक सख्या देवकली मे 148 है। सबसे कम 69 रेवतीपुर विकास खड मे है। सीनियर बेसिक स्कूलो की सख्या 396 है जिसमे महिला सीनियर बेसिक स्कूलो की सख्या 56 है। सबसे अधिक सीनियर बेसिक स्कूलो की सख्या देवकली मे 36 है तथा न्यूनतम 11 भावरकोल मे है। महिला सीनियर बेसिक विद्यालयों की सख्या सर्वाधिक मुहम्मदाबाद मे 6 है। अधिकाश विकास खडो मे महिला सीनियर बेसिक स्कूलो की सख्या 2-4 के बीच है। हायर सेकेण्डरी स्कूलो की सख्या 22 है। सर्वाधिक हायर सेकेण्डरी स्कूलो की सख्या 13 जखनिया मे है। सादात, देवकली, मरदह, बाराचवर, भाँवरकोल विकास खडो में हायर सेकेण्ड्री स्कूलो की पख्या 12-12 है। जमानिया, रेवतीपुर, कासिमाबाद, मनिहारी विकास खडो में यह सख्या 9-9 है। गाजीपुर, करण्डा में 6-6 हायर सेकेण्ड्री स्कूल हैं। सैदपुर विकास खड मे इनकी सख्या 10 मुहम्मदाबाद में 5 तथा भदौरा

एव बिरनो विकास खडो मे हायर सेकेण्ड्री स्कूलो की कुल सख्या 4-4 है। हायर सेकेण्ड्री बालिका स्कूलो की सख्या मनिहारी, सैदपुर, गाजीपुर मे दो-दो तथा जखनिया, सादात, मरदह, कासिमाबाद, बाराचॅवर, रेवतीपुर, भदौरा मे एक-एक है। शेष विकास खड इससे रहित है। जनपद मे कुल महाविद्यालयो की सख्या 30 है जिसमे से जखनिया मे 4, मनिहारी, सादात, देवकली, करण्डा, जमानिया विकास खडा मे 2-2, रेवतीपुर मे तीन भावरकोल मे 1 महाविद्यालय है। उच्च शिक्षा हतु विद्यार्थियो को वाराणसी स्थित बी एच यू , इलाहाबाद वि वि इला मे आना पडता हे। इसके अतिरिक्त कुछ महाविद्यालयो मे स्नात्कोत्तर कक्षाओं की स्थापना से कुछ सीमा तक उच्च शिक्षा प्राप्ति की सम्भावना बढी है। सन् 1981 मे जनपद की साक्षरता दर 27 62 प्रतिशत थी जो 1991 मे बढकर 34 0 प्रतिशत हो गयी तथा 2001 की जनगणना के अनुसार जनपद की साक्षरता दर 60 06 प्रतिशत है। ध्यातव्य है कि उत्तर प्रदेश की साक्षरता दर 2001 मे 57 36 हं। यह तथ्य इस बात की ओर इगित करता है कि यदि जनपद की सामाजिक अव सरचना उत्तरोत्तर विकसित होती रही तो यह जनपद सपूर्ण साक्षरता की ओर बढेगा इसमे सशय नही।

जनपद मे तकनीकी शिक्षा हेतु एक पालिटेक्नीक विद्यालय है, तथा दो औद्योगिक प्रशिक्षण सथान है।

1 17 उद्योग-

जनपद मे 'ओपियम क्षारोद फैक्टरी' की स्थापना 1820 मे की गयी थी। स्ततत्रता के बाद कृषि पर आधारित उद्योगो की स्थापना की गयी। बहादुरगज मे पूर्वांचल विकास सहकारी कताई मिल कार्यरत है। इसके अतिरिक्त नदगज मे नदगज सिहोरी सुगर मिल कार्यरत है। यहा शराब निर्माण की भी एक फैक्ट्री है। जिला उद्योग केन्द्र गाजीपुर द्वारा 31 मार्च 1999 तक 4658 लघु उद्योगों की स्थापना करायी गयी जिसके अन्तर्गत चावल मिल, खाद्य तेल, रेडीमेट गारमेन्टस, प्रिटिग प्रेस, फर्नीचर, कृषि यत्र, टी बी रिपेयरिंग, ऊनी, कालीन उद्योग महत्वपूर्ण है। (सामाजिक आर्थिक समीक्षा जनपद गाजीपुर 1999) 1999 मे कुल लघु उद्योगो की सख्या 16031 थी। ये कारखाने कारखाना अधिनियम 1948 के अन्तर्गत नामाकित किये गये है। लघु औद्योगिक इकाइयो में खादी, हस्तकला समितिया, लघु एव हस्तकला की सहकारी समितियो की देख रेख मे वित्तीय सहायता उद्योग निदेशालय, एव खादी एव ग्रामोद्योग बोर्ड लखनऊ द्वारा की जाती है।

1 18 परिवहन तथा सचार-

परिवहन सभी यात्रिक साधनो एव सगठनो का योग है जो व्यक्ति, वस्तुओं अथवा समाचार को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुचाने मे सहायक होते हे। यदि कृषि ओर उद्योग किसी देश के आर्थिक जीवन का शरीर एव हड्डिया मानी जाये तो परिवहन को उस आर्थिक ढाचे की स्नायु प्रणाली माननी चाहिए। (मामोरिया सी बी) जनपद मे 1998-99 मे सडको की कुल लम्बाई 2519 किमी है तथा सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा निर्मित सडको की लबाई 1617 किमी है। लगभग 1773 गाव सडको से जुडे है। जनपद मे राजमार्ग वाराणसी - गोरखपुर है जो सैदपुर, देवकली, गाजीपुर, बिरनो, मरदह से गुजरता है। मुख्य जिला मार्ग बलिया- वाराणसी मार्ग, ताडीघाट- गहमर, जलालाबाद- मरदह, औडिहार केराकत (जौनपुर मार्ग), सेदपुर-सादात, जगीपुर-बहरियाबाद मार्ग। लगभग 500 आबादी वाले गावो को सड़को से जोड़ दिया गया है। प्रधानमत्री ग्राम सड़क योजना 2001 के अनुसार मुख्य सड़क से 3 किमी दूर स्थित गावो को पक्की सडक से जोड़ने की व्यवस्था है। इस योजना के सफल क्रियान्वयन से ग्रामीण परिवहन व्यवस्था सुचारू हो जायेगी।

जनपद मे यातायात हेतु राजकीय एव प्राइवेट दोनो प्रकार की बसो की सुविधा है। कुल 367 बस स्टैण्ड है। जनपद मे उत्तर रेलवे तथा पूर्वोत्तर रेलवे पर कुल स्टेशनो की सख्या 32 है।

जनपद मे कुल 376 डाकघर है, कुल 7 तारघर, 668 पी सी ओ, तथा 5763 टेलीफोन कनेक्शन है। मनोरजन हेतु कुल 19 छविगृह है। (सामाजिक आर्थिक समीक्षा (2000)

1 19 पर्यटन स्थल-

1.19.1 मौनी बाबा धाम-

यह धाम चोचकपुर बाजार के समीप गगा जी के तट पर स्थित है। यहा कार्तिक पूर्णिमा के दिन एक विशाल मेला लगता है। जहा लोग गगा स्नान करके मौनी बाबा का दर्शन करते है।

1 19 2 कामाख्या देवी मंदिर-

यह मदिर भदौरा ब्लाक मे गहमर के पास स्थित है। यहा नवरात्रि मे मेला लगता हे। इसी के पास एक सुरम्य पार्क भी है जो मदिर की छटा मे वृद्धि का परिचायक हे।

1 10.3 लार्ड कार्नवालिस मकबरा-

यह मकबरा गाजीपुर शहर मे गोराबाजार मे स्थित है। यहा पर जनपद के विभिन्न गावो से लोग आते रहते है और आकर्षक पार्क मे टहलते है।

1 19 4 बाराह मंदिर- औड़िहार-

यह मदिर औडिहार स्टेशन से 1 किमी दूरी पर स्थित है। जनश्रुतियो के अनुसार भगवान विष्णु इसी स्थान पर बाराह रुप धारण किये थे। जो गगा के तट पर स्थित है यहाँ पर बाराह कुण्ड भी बना हुआ है।

1 19.5 चौमुख नाथ धाम मंदिर- धुवार्जुन-

यह मदिर ऐतिहासिक स्थल भीतरी से कुछ ही दूरी पर स्थित है। जहा शिवरात्रि के दिन एक मेला लगता है। यहा पर दूर-दूर से लोग पूजा करने आते है।

1.19.6 बाबा कीना राम मंदिर-

यह मदिर भदौरा ब्लाक मे कर्मनाशा नदी के किनारे स्थित है। यहा पर बाबा कीनाराम की सुन्दर मूर्ति स्थापित की गयी है। उनके अनुयायी आज भी प्रतिदिन दर्शन करते है।

1.19.7 बुढ़ना मंदिर सैदपुर-

यह मदिर सैदपुर शहर मे गगा जी के बाये किनारे पर स्थित है। यहा पर शहरी एव ग्रामीण अचल से पूजा करने के लिए बड़ी सख्या मे लोग आते रहते हैं।

1 19.8 शिवमंदिर देवकली-

यह मदिर गाजीपुर जनपद के देवकली विकास खड मे स्थित है। यहा पर प्रतिवर्ष शिवरात्रि पर महान मेला लगता है। इस मदिर के विकास के लिए 4,00,000 रुपया व्यय किया गया हे।

1 19 9 महाहर महोदय मदिर-

यह मरदह विकास खड मे स्थित है। सूर्यवशी राजा दशरथ शिकार करने के उद्देश्य यहा पधारे थे यही एक तालाब है जहा जल भरते समय श्रवण कुमार को तीर लगा था। यहा भी शिवरात्रि के पर्व पर विशाल मेला लगता है।

REFERENCES

1. Bhatia S S (1967) 'A New Messurment of Agricultural efficiency in U P' Economic Geography Vol 43 P 244-260
2. Doi K (1957) 'The Industrial Structure of Japanese Prefectures' Proceeding of I G U Regional conference in Japan P 310-316
3. Gazzettear District Ghazipur U P (1971) P 1
4. Hussain Mazid (2000) 'Agricultural Geography' (in Hindi) Rawal Publication Jawahar Nagar Jaipur P 164-165
5. Hussain Mazid (1970) 'Pattern of Crop Concentration in U P' Geographical review of India XXXII P 87
6. Information Centre District Ghazipur U P 1999
7. Jha D (1963) 'Economics of Crop Patterne of Irrigated forms in North Bihar', Indian Journal of Agricultural Economics Vol XVIII No 1 P 168
8. Jogelakar N M (1963) 'Study of Cropping Pattern On An Urban Fringe' Journal of Agri Economics Vol 18 No 1 PP 97-100
9. Loknathan P S (1963) 'Cropping Patterne In Madhya Pradesh' National Council of Aplied Economic Research, New Delhi 18 March P 6-20
10. Mehrotra C L (1968) 'Soil Survey and Soil Work in U P' Government Printing and Stationery, Allahabad P 20
11. Ojha S S (2001) 'Geography of India' (in Hindi) Bhaugolic Adhyayan Sansthan Govindpur, Allahabad P 81
12. Ramlingon C (1963) 'Some Economic Aspects of Cropping Pattern' Vol XVIII No 1 P 160
13. Singh J (1996) 'Arthik Bhoogole' Gyanodaya Prakashan Gorakhpur P 48

14 Sıngh B B (1979) Agrıcultural Geography Tara Publıcatıons Varanası P 128

15 Stamp L D (1962) 'The Land of Brıtaın ıts Use and Mısuse' P 426 III edıtıon

16 Wadıa D N and Auden J B (1939) 'Geography and Structure' of Northerne Memorıes of the G S I Vol 73 Delhı P 134

17 Wadıa D N (1961) 'Geography of Indıa' London PP 388-390

अध्याय 2

जनसंख्या वितरण एवं घनत्व

जनसख्या वितरण का भौगोलिक स्वरूप अनेक सामाजिक आर्थिक सास्कृतिक, एव ऐतिहासिक कारको का समेकित प्रतिरूप दर्शाता है। जनसख्या-वितरण एव घनत्व की विभिन्नताओं के यथोचित अध्ययन के निमित्त यह आवश्यक होता है कि सम्बद्ध क्षेत्र के जनसख्गा वितरण व घनत्व के प्रतिरूपो का विश्लेषण किया जाए। वितरण प्रतिरूप के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता हे कि जनसमुदाय ने किस अश तक भौतिक पर्यावरण से समायोजन किया हे तथा उसमे सशोधन किया है और किन क्षेत्रो को निवास हेतु चयनित किया है, अथवा उसे छोड़ दिया है (ओझा रघुनाथ 1983)। जनसख्या भूगोल के अध्ययन मे किसी स्थान विशेष की भूमि एव उस पर विकसित जनसख्या के परिज्ञान हेतु जनसख्या वितरण एव घनत्व का अध्ययन आवश्यक होता है।

2 1 जनसख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक -

किसी विशिष्ट समय मे किसी क्षेत्र मे जनसख्या का वितरण वहा के प्राकृतिक दशाओं के अतिरिक्त वहाँ के सामाजिक, आर्थिक, जनाकिकी, राजनैतिक आर ऐतिहासिक कारको के सम्मिलित प्रभाव का प्रतिफल होता है। अत इन कारको को अलग-अलग नही अपितु समेकित रूप मे देखा जाना चाहिए। जनसख्या वितरण की गत्यात्मक प्रक्रिया मानव समूहो से सम्बद्ध होती है किसी व्यक्ति विशेष से नही अत पर्यावरण से सामूहिक अनुकूलन होता है। पर्यावरण से तात्पर्य केवल प्राकृतिक पर्यावरण ही नही वरन् उसका सामाजिक सास्कृतिक पर्यावरण भी है। जनसख्या वितरण मे प्रादेशिक अन्तर उसके सकेन्द्रण की मात्रा व पर्यावरण के अनेक तत्वो के समुच्चयिक प्रभाव का प्रतिफल होती है। अत जनसख्या वितरण तथा घनत्व को पर्यावरण अवबोध तथा उसके प्रभाव से समझा जा सकता है। सम्पूर्ण रूप से हम उसे जनसख्या परिस्थितिकी कह सकते हैं (पडा बी0 पी0), और इस परिस्थितिकी मे असतुलन से आप्रवास एव उत्प्रवास होने लगता है। फलत वितरण प्रभावित होने लगता है।

सयुक्त राष्ट्र के जनसख्या प्रभाग का अध्ययन न0 50, **'डिटरमिनेन्ट्स एण्ड कान्सीक्यून्सेस ऑफ पापुलेशन ट्रेन्ड'** के अनुसार जनसख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक भौतिक,

सामाजिक एव सास्कृतिक और जनसाख्यिकीय है। (चान्दना आर सी 1997) अध्ययन क्षत्र मे जनसख्या वितरण एव घनत्व को प्रभावित करने वाले निम्न कारक हे--

(1) **भौतिक तत्व एव प्राकृतिक ससाधन**–स्थिति, जलवायु धरातलीय स्वरूप, जल, खनिज, मिट्टी, वन आदि।

(2) **जनाकिकीय कारक**– जनसख्या स्थानान्तरण, जन्मदर, मृत्युदर आदि।

(3) **सास्कृतिक कारक**– कृषि का स्वरूप, सिचाई, औद्योगिक विकास की अवस्था, आर्थिक उत्पादन, यातायात के साधन, तथा अन्य तृतीयक व्यवस्थाओं का विकास एव नगरीकरण

(4) **अन्य कारक**– ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक प्राकृतिक कारको मे धरातलीय स्वरूप, वर्षा की प्रकृति, जल स्तर, जलवायु की दशाए, मृदा एव प्राकृतिक वनस्पति प्रमुख है।

किसी भी प्रदेश के जनसख्या के वितरण पर उस प्रदेश के जातीय वर्ग की अपेक्षा मानव के आवासीय स्थानो पर परिस्थितिक नियन्त्रण मुख्य रूप से अधिक प्रभावित करने वाला कारक होता है। (यू एन स्टडी न 50 डिटर मिनेन्टस एण्ड कान्सीक्यून्सेस ऑफ पापुलेशन ट्रेन्ड) जनसख्या वितरण मे सास्कृतिक कारक अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। (क्लार्क जे आई) के अनुसार किसी भी क्षेत्र की आर्थिक दशा, आधुनिक प्राविधिक ज्ञान, सामाजिक सगठन सर्वोपरि है। इसके अतिरिक्त जनसख्या वितरण को ऐतिहासिक एव राजनैतिक कारक भी प्रभावित करते है। ऐतिहासिक परिदृष्टि का होना वर्तमान जनसाख्यिकीय प्रतिरुप को गहराई से समझने के लिए बहुत ही जरूरी है। यही कारण हे कि जनसख्या वितरण एव घनत्व के विश्लेषण मे समय-आयाम महत्वपूर्ण है।

2 2 जनसंख्या का वितरण-

जनपद गाजीपुर का क्षेत्रफल की दृष्टि से उ प्र मे 34वाँ तथा जनसख्या की दृष्टि से 19वाँ स्थान है। (साख्यिकीय डायरी 1998 एव जनगणना पुस्तिका 2001) 2001 मे जनपद मे प्रदेश की 1 84 प्रतिशत जनसख्या निवास कर रही थी इसका मुख्य कारण अध्ययन क्षेत्र के भू-वैन्यासिक स्वरूप का मानव निवास के लिए उपयुक्त होना है। प्रसिद्ध भूगोलविद् स्टील (1955) के अनुसार- 'जनसख्या का भू-वैन्यासिक वितरण क्षेत्र की सामान्य निवास्यता एव ऐतिहासिक

परिप्रेक्ष्य मे इसकी घटनाओं द्वारा नियन्त्रित होता है।' जनपद के जनसख्या वितरण को चित्र 2 1 मे प्रदर्शित किया गया है। जिसके अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उत्तरी, पश्चिमी सीमावर्ती, एव दक्षिण मे बिहार के सीमावर्ती क्षेत्रो मे जनसख्या विरल, मध्यवर्ती, पूर्वी एव पश्चिमी भागो मे जनसख्या सघन वितरित है। जनसख्या के सामान्य वितरण मानचित्र को सीमाकित प्राकृतिक प्रदेशो के मानचित्र पर अध्यारोपित करने पर प्राकृतिक प्रदेशो की विशिष्टताओं एव जनसख्या वितरण के मध्य सहसम्बन्ध पाया जाता है। जनपद मे जनसख्या वितरण के स्वरूप मे अन्तर्क्षेत्रीय भिन्नताए भी पायी जाती है। अध्ययन क्षेत्र को निम्नाकित वितरण प्रदेशो मे विभाजित किया गया है।— **(चित्र सख्या 2 1)**

2 2 1 विरल जनसंख्या के क्षेत्र-

अध्ययन क्षेत्र मे विरल जनवितरण का सम्बन्ध कृषि दशाओं की अनुपयुक्तता से ह। विरल क्षेत्र उत्तरी पश्चिमी सीमावर्ती, दक्षिण बिहार के सीमावर्ती क्षेत्र है। यहाँ प्राकृतिक वातावरण अनुकूल न होने के कारण जनसख्या का वितरण अत्यन्त विरल है। **(चित्र सख्या 2 1)**

2 2.2 मध्यम जन वितरण क्षेत्र-

अकृषित भूमि को कृषि योग्य बनाने, सिचाई के साधनो की उपलब्धता, परिवहन एव स्वास्थ्य-शिक्षा सेवाओं के विस्तार के कारण जनपद के पश्चिमी, दक्षिणी एव गाँगी के उत्तरी भाग अपेक्षाकृत कम विरलहै। **(चित्र सख्या 2 1)**

2.2.3 सघन जन वितरण के क्षेत्र-

जनपद के मध्यवर्ती, पूर्वी, गागी नदी के पूर्वी भाग सघन वितरित है। **(चित्र सख्या 2 1)**

उपरोक्त विवेचनो से स्पष्ट है कि जनपद के सुदूर उ भाग की अपेक्षा द (गगा का उ एव प भाग) सघन वितरित है। जबकि पूर्वी भाग अपेक्षाकृत कम सघन है। चूँकि कृषि जनपद की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है अत जहाँ इसके लिए उपयुक्त दशाए है वहाँ जन वितरण मे अल्प विषमता है। कुल मिलाकर जनपद मे जनवितरण कृषि कारको की पकड़ का परिचायक है।

DISTRICT GHAZIPUR
DISTRIBUTION OF POPULATION
2001
Jangipur
Ghazipur
Muhammadbad
Saidpur
Gahmar
Zamania
G A N G A R
URBAN POP
40,000
20 000
10 000
RURAL POP
Each dot represent 500 Persons
5 0 5 10 15
Km
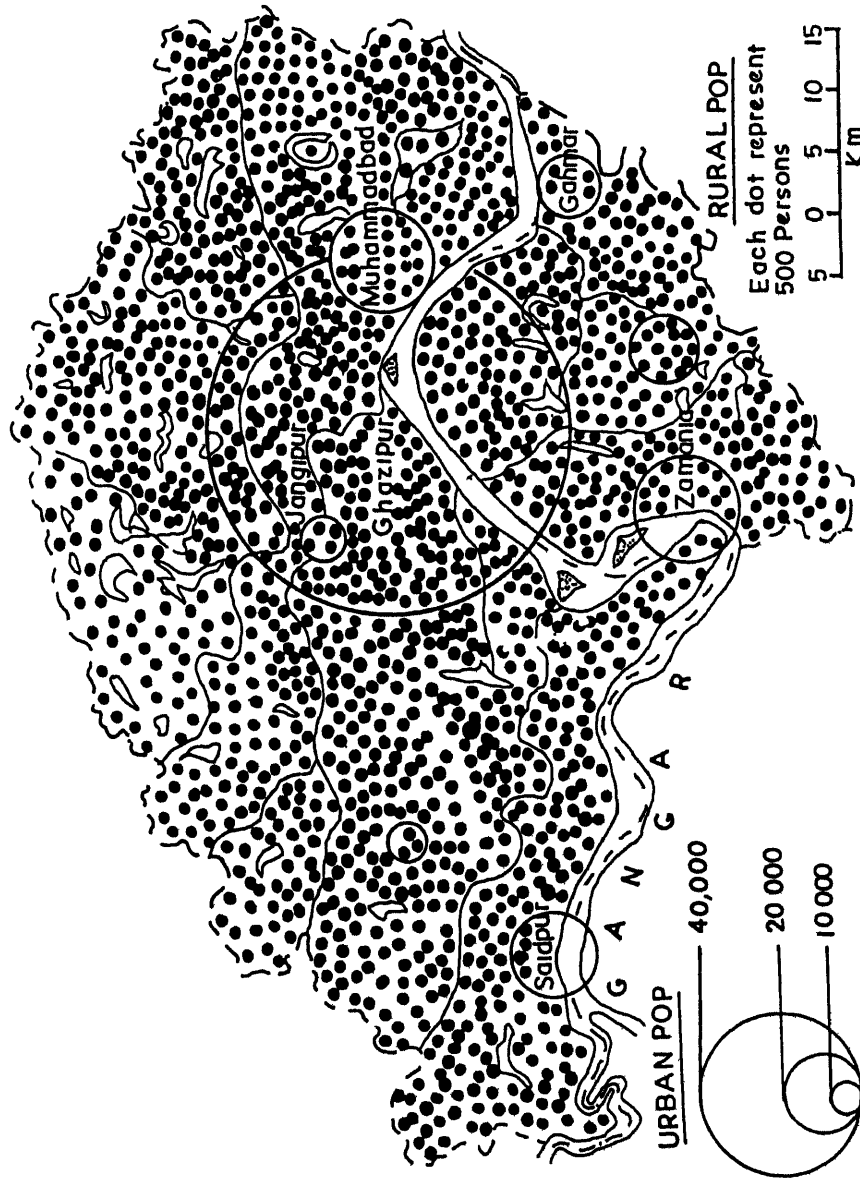
Fig. 2.1

2 3 ग्रामों के आकार के अनुसार जनसंख्या वितरण-

1 अति निम्न जनसख्या के गाँव (200 से कम ज गसख्या)

2 निम्न जनसख्या के गाँव (200-499 जनसख्या)

3 साधारण जनसख्या के गाँव (500-999 जनसख्या)

4 मध्यम जसख्या के गाँव (1000-1999 जनसख्या)

5 उच्च जनसख्या के गाँव (2000-4999 जनसख्या)

6 अति उच्च जनसख्या के गाँव (5000 से अधिक जनसख्या)

तालिका 2 1

जनसख्या के अनुसार वर्गीकृत ग्राम

	जनसख्या का वर्गीकरण					
वर्ष	**200 से कम**	**200-499**	**500-999**	**1000 1999**	**2000 4999**	**5000 से से अधिक**
1961	600	1123	479	210	77	13
1971	818	802	520	260	95	15
1981	715	702	606	360	141	16
1991	586	674	640	446	219	28

स्रोत- जनपद साख्यिकी पत्रिका 2000

तालिका 2 1 से स्पष्ट है कि 200 से कम जनसख्या वाले ग्रामो की सख्या मे ह्रसोन्मुख प्रवृत्ति है। इसके वितरीत निम्न, साधारण, मध्यम, उच्च एव अति उच्च जनसख्या वाले गाँवो की सख्या मे वृद्धि की प्रवृत्ति रही है। यह स्थिति जनसख्या मे वृद्धि का परिणाम है।

आकार के अनुसार ग्रामो की सख्या से स्पष्ट है कि 1961-1991 मे 200 से कम जनसख्या के गाँवो की स क्रमश 600 से 586 हो गयी है। इसी प्रकार 200-499 जनसख्या वाले गाँवो की सख्या 1961 मे 1123 थी जो 1991 म 674 हो गयी है। 500-999 जनसख्या वाले गाँवों की सख्या मे वृद्धि हुई है। 1961 मे इनकी सख्या 479 थी जो 1991 मे 161 गाँवो की वृद्धि के साथ 640 हो गयी इसी प्रकार 1000-1999 जनसख्या आकार वाले गाँवो मे 236 की वृद्धि होकर 446 हो गयी। 2000-4999 आकार वाले गाँवो मे 1961-1991 की अवधि मे 142 ग्रामो की वृद्धि हुई। इस अवधि मे 5000 से अधिक जनसख्या वाले

गाँवो की सख्या 13 से 28 हो गयी। जनसख्या आकार के अनुसार गाँवो की सख्या मे वृद्धि जनपद मे जनसख्या वृद्धि की प्रवृत्ति को इगित करती है, क्योकि जनसख्या की वृद्धि के साथ ग्राम अधिक जनसख्या वर्ग मे परिवर्तित हो जाते है। 1991 मे विकास खण्डवार जनपद मे विभिन्न आकार की जनसख्या वाले ग्रामो का वितरण इस प्रकार है—

200 से कम जनसख्या वाले ग्रामो की सख्या जखनियो मे 49, मनिहारी मे 39, सादात मे 31, सैदपुर मे 67, देवकली मे 46, विरनो मे 35, मरदह मे 23, गाजीपुर मे 40, करण्डा मे 18, कासिमाबाद मे 61, वाराचँवर मे 48, मुहम्मदाबाद मे 52, भाँवरकोल मे 37, जमानिया मे 18, रेवतीपुर मे 6 तथा भदौरा मे 16 ग्राम है।

200-499 जनसख्या वाले गाँवो की सख्या जखनिया मे 59, मनिहारी मे 54, सादात मे 62, सैदपुर मे 64, देवकली मे 62, बिरनो मे 35, मरदह मे 23, गाजीपुर मे 46, करण्डा मे 14, कासिमाबाद मे 60, बाराचँवर मे 48, मुहम्मदाबाद मे 56, भाँवरकोल मे 43, जमानिया मे 31, रेवतीपुर मे 8 तथा भदौरा मे 6 ग्राम है। इसी प्रकार **500-999 जनसख्या वाले गाँवो की साख्या** जखनियाँ मे 58, मनिहारी मे 55, सादात मे 41, सैदपुर मे 67, देवकली मे 58, बिरनो मे 27, मारुह मे 30, गाजीपुर मे 42, करण्डा मे 19, कासिमाबाद म 62, बाराचँवर मे 42, मुहम्मदाबाद मे 55, भाँवरकोल मे 27, जमानियाँ मे 27, रेवतीपुर मे 17 तथा भदौरा मे 13 ग्राम है। **1000-1999 जनसख्या वाले ग्रामो की सख्या** जखनियाँ मे 11, मानिहारी मे 12, सादात मे 16, सैदपुर मे 17, देवकली मे 12, बिरनो मे 13 मरदह मे 16, गाजीपुर मे 14, करण्डा मे 17, कासिमाबाद मे 13, वाराचँवर मे 8, मुहम्मदाबाद मे 10, भाँवरकोल मे 9, जमानियाँ मे 24, रेवतीपुर मे 14 तथा भदौरा विकास खण्ड मे **2000-4999 जनसख्या वाले ग्रामो की सख्या 13** है। 5000 से अधिक जनसख्या वले ग्रामो की सख्या जखनिया, सादात, सैदपुर, देवकली, बिरनों, मुहम्मदाबाद मे 1-1 ग्राम जबकि 2 की सख्या वाले विकास खण्ड मरदह, बारचँवर तथा गाजीपुर है। इस आकार वाले गाँवो की सख्या भाँवरकोल जमानिया मे 3-3 तथा भदौरा मे 8 है।

जिला, प्रान्त एव राष्ट्र के विभिन्न आकार के ग्रामो, एव जनसख्या के तुलनात्मक अध्ययन इस तथ्य की ओर इगित करते हैं कि ग्रामो के आकार मे वृद्धि के साथ ही साथ उनके प्रतिशत मे भी वृद्धि होती है। वस्तुत वह अवस्था निम्नश्रेणी तक ही सीमित है। इसके बाद जैसे-जैसे ग्रामा का आकार बढता है जनसख्या मे ऋणात्मक वृद्धि होती है। उत्तर प्रदेश मे 1961 मे साधारण वर्ग के गाँव तथा 1971-81 मे मध्यम वर्ग के गाँवो मे जनसख्या बढती गयी है। इसके बाद जनसख्या की तीव्र वृद्धि से छोटे आकार के गाँवो को बड़ा आकार दिया है। यही स्थिति राष्ट्रीय स्तर पर भी द्रष्टव्य होती है। देश की जनसख्या का अधिकाश भाग छोटे अथवा बड़े एकाकी गाँवो मे रहता है। उत्तर प्रदेश, म प्र बिहार, उड़ीसा मे सबसे छोटे आकार वाले गाँवो की सख्या सबसे अधिक है। (बसल एस सी)

तालिका 2 2

विकास खण्ड वार वर्गीकृत गाँव 1991

विकसा खण्ड	जनसख्या का वर्गीकरण					
	200 से कम	200-499	500-999	1000-1999	2000-4999	5000 से अधिक
जखनिया	49	59	58	29	11	1
मनिहारी	39	54	55	36	12	-
सादात	31	62	41	32	16	1
सैदपुर	67	64	67	35	17	1
देवकली	46	62	58	36	12	1
बिरनो	35	35	27	21	13	1
मरहद	23	26	30	26	16	2
गाजीपुर	40	46	42	30	14	2
करण्डा	18	14	19	21	17	-
कासिमाबाद	61	60	62	33	13	-
बाराचवर	48	48	42	33	08	2
मुहम्मदाबाद	52	56	55	34	10	1
भाँवरकोल	37	43	27	36	09	3
जमानिया	18	31	27	24	24	3
रेवतीपुर	06	08	17	14	14	4
भदौरा	16	06	13	06	13	8
योग	586	674	640	446	219	28

स्त्रोत- जनपद साख्यिकी पत्रिका 2000

अध्ययन क्षेत्र मध्य गगा मैदान के समतल भाग मे स्थित होने के कारण भूमि प्रबन्धन, वितरण, सामाजिक सास्कृतिक पर्यावरण स्थितियो के कारण छोटे-छोटे गाँव समूहो मे स्थित रहा है। जनसख्या मे तीव्र वृद्धि (26 18 प्रति 2001) के कारण बड़े ग्रामो का अस्तित्व द्रष्टव्य हो रहा है।

2.4 अनधिवासित गॉवों का वितरण-

अनेक गृहो का समूह जिसे हम अधिवास कहते है, मानव की निवास्यता को उजागर करता है। पृथ्वी तल का वह भाग जहाँ मानव की निवास्यता का प्रभाव है, अधिवासी क्षेत्र तथा जहाँ

मानव का बसाव नही है निरधिवासी कहते है। (राव बी0 पी0) अध्ययन क्षेत्र मे अनधिवासित ग्रामो का तात्पर्य उन क्षेत्रो या पुरवो से है जो पहले अधिवासित थे लेकिन प्राकृतिक वातावरण की प्रतिकूलता एव समूहन की भावना ने वर्तमान समय मे उन्हे निरधिवासित स्वरूप प्रदान किया है लेकिन इन अधिवासो का प्रयोग अल्पकालिक उद्देश्यो के लिए किया जाता है। स्थानीय ग्रामीण भाषा मे इन्हे 'बेचिरागी ग्राम' भी कहते है।

तालिका 2 3

अनधिवासित ग्रामो की सख्या

अनाधिवासित गाँव		
वर्ष	उ प्र	जनपद
1961	12720	873
1971	12032	858
1981	11678	823
1981	-	823
1991	-	781
2001	-	-

स्रोत- जिला जनगणना हस्त पुस्तिका 1961, 1971, 1981, 1991

तालिका 2 3 से स्पष्ट है कि अनधिवासित गाँवो की सख्या मे निरन्तर ह्रास हो रहा है। जनपद मे जहाँ 1961 मे इनकी सख्या 873 थी जो 1991 मे 781 हो गयी इसमे 92 की कमी हुई है। यह जनसख्या मे तीव्र वृद्धि के कारण है क्योकि ये अधिवास अब धीरे-धीरे स्थायी निवास के रूप मे परिवर्तित हो रहे है।

जनपद मे अनधिवासित गाँवो के प्रतिशत वितरण मे विभिन्नताएँ है। 1991 मे कुल ग्रामो मे 23 21 प्रतिशत ग्राम अनधिवासित थे। विकास खण्डवार जखनिया मे 15 16 प्रतिशत, मनिहारी मे 17 99 प्रतिशत, सादात मे 10 73, सैदपुर मे 11 34, देवकली मे 15 35, बिरनो मे 8 30, मरदह मे 9 62, गाजीपुर मे 21 26, करण्डा में 28 80 कासिमबाद मे 22 89 बाराचँवर मे 27 01 मुहम्मदाबाद मे 34 38, भाँवरकोल मे 47 08, जमानिया मे 31 35, रेवतीपुर मे 34 37, तथा भदौरा मे 36 73 प्रतिशत है। (**तालिका 2 4**)

तालिका 2 4

विकास खण्ड वार अनधिवासित ग्राम 1991

(प्रतिशत मे)

विकासखण्ड	अधिवासित	अनधिवासित	योग	कुल ग्रामो मे अनधि-वासित ग्रामो का प्रतिशत
जखनिया	207	37	244	15 16
मनिहारी	196	43	239	17 99
सादात	183	22	205	10 73
सैदपुर	250	32	282	11 34
देवकली	215	39	254	15 35
बिरनो	132	12	144	8 30
मरदह	122	13	135	9 62
गाजीपुर	174	47	221	21 26
करण्डा	89	36	125	28 80
कासिमाबाद	229	68	297	22 89
बाराचँवर	181	67	248	27 01
मुहम्मदाबाद	208	109	317	34 38
भाँवरकोल	145	129	274	47 08
जमानिया	127	058	185	31 35
रेवतीपुर	63	33	96	34 37
भदौरा	62	36	98	36 73
योग	2583	781	3364	23 21

स्रोत- जिला साख्यिकीय पत्रिका 2000

तालिका 2 5

जनपद मे अनुसूचित जाति/जनजाति जनसख्या

वर्षवार कुल जनसख्या एव प्रतिशत

वर्ष	कुल जनसख्या	अनुसूचित जाति की जनसख्या	प्रतिशत	अनुसचित जनजाति की जनसख्या	प्रतिशत
1961	13,21,578	2,38,268	18 02	-	-
1971	15,31,654	2,97,336	19 41	-	-
1981	19,44,669	4,00,350	20 58	73	0 0037
1991	24,16,617	4,97,100	20 57	404	0 016

स्रोत- जनपद साख्यिकी पत्रिका 2000

2 5 अनुसूचित जाति/जनजाति जनसख्या वितरण का क्षेत्रीय आयाम–

समाज मे अनुसूचित जातियो-जनजातियो को अछूत के रूप मे अपेक्षित किया जाता रहा है परन्तु सरकार की सक्रियता एव विविध योजनाओं के क्रियान्वयन से इनका **सामाजिक-आर्थिक** स्तर उठा है। विगत समय एव वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे इनके द्वारा अभिग्रहीत राजनैतिक जागरूकता ने इन्हे समाज की मुख्यधारा की ओर उन्मुख किया है। शैक्षिक सुविधाए एव उनका अभिग्रहण प्रमुख उत्थानक कारक है। अध्ययन क्षेत्र मे इनकी जनसख्या असमान रूप से वितरित है। तालिका 2 5 से स्पष्ट हैकि 1961 से 1981 तक अनुसूचित जाति की जनसख्या मे निरन्तर वृद्धि हुई है। 1961 मे इनकी सख्या कुल जनसख्या मे 18 02 प्रतिशत थी जो 1971 मे 19 41 प्रतिशत तथा 1981 मे 20 58 प्रतिशत एव 1991 मे 20 57 प्रतिशत हो गयी। ध्यातव्य है कि 1981 मे इनकी जनसख्या मे ऋणात्मक कमी आयी है, जो जनसख्या वृद्धि रोकने हेतु परिवार कल्याण कार्यक्रमो के क्रियान्वयन एव शैक्षिक स्तर मे सुधार का स्पष्ट सकेत है। विकास खण्डवार अनुसूचित जाति जनजाति जनसख्या का वितरण प्रतिशत तालिका 2 6 एव चित्र सख्या 2 2 मे प्रदर्शित है। अनुसूचित जातियों का जनसख्या प्रतिशत जखनिया विकास खण्ड मे 25 28 प्रतिशत, मनिहारी मे 23 63 प्रतिशत, सादात मे 24 70 प्रतिशत, सैदपुर मे 22 66 प्रतिशत देवकली मे 23 47 प्रतिशत, बिरनो मे 24 75 प्रतिशत, मरदह मे 25 61 प्रतिशत, गाजीपुर मे 21 41 प्रतिशत, करण्डा मे 18 79 प्रतिशत, कासिमाबाद में 22 01 प्रतिशत, बाराचँवर मे 19 95 प्रतिशत, भाँवरकोल में 18 82 प्रतिशत, जमनियाँ मे 17 68 प्रतिशत,

DISTRICT GHAZIPUR
DISTRIBUTION OF SC POPULATION
1991
GANGA RIVER
As percentage of total Population
> 19
19 - 21
21 - 23
< 23
5 0 5 10 15
Km
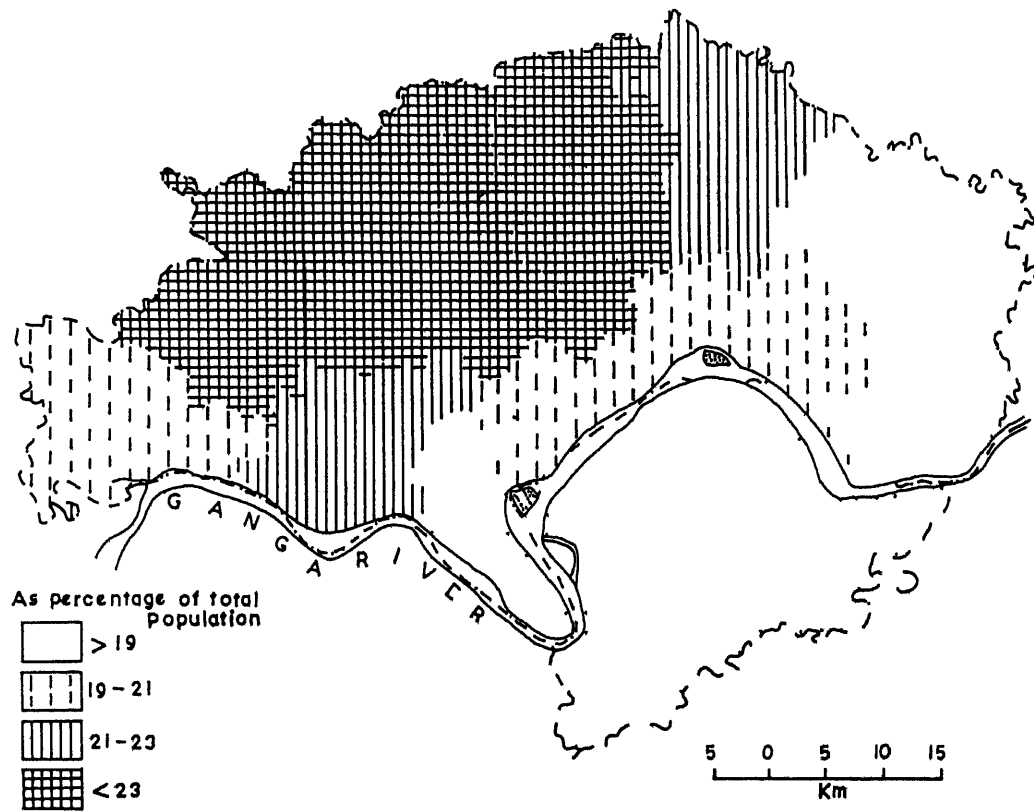
Fig. 2.2

रेवतीपुर मे 18 74 प्रतिशत, भदौरा मे 14 71 प्रतिशत है।

जनपद मे अनुसूचित जनजातियो की जनसख्या नगण्य है। 1981 मे यह कुल जनसख्या का 0 0037 प्रतिशत थी (तालिका 2 5) तथा 1991 मे 0 016 प्रतिशत थी। इनकी जनसख्या कुल 5 विकास खण्डो - सादात, देवकली, बिरनो गाजीपुर तथा बाराचँवर मे वितरित है। सादात मे 0 04 प्रतिशत, सैदपुर मे 0 03 प्रतिशत, बिरनो मे 0 02 प्रतिशत, गाजीपुर मे 0 03 प्रतिशत तथा बाराचँवर मे 0 108 प्रतिशत है।

तालिका 2 6
विकास खण्डवार अनुसूचित जाति/जनजाति जनसख्या
(प्रतिशत मे) 1991

विकास खण्ड	कुल जनसख्या	अनु जाति की जनसख्या	अनु जाति की जनसख्या प्रतिशत	अनु जनजाति की जनसख्या	प्रतिशत
जखनिया	1,46,251	36,978	25 28	-	-
मनिहारी	1,44,055	34,044	23 63	60	0 04
सादात	1,48,610	36,707	24 70	-	-
सैदपुर	1,68,637	38,219	22 66	59	0 03
देवकली	1,52,806	35,867	23 47	-	-
बिरनो	1,08,687	26,902	24 75	29	0 02
मरदह	1,23,233	31,572	25 61	-	-
गाजीपुर	1,37,016	29,339	21 41	50	0 03
करण्डा	1,01,847	19,146	18 79	-	-
कासिमाबाद	1,55,426	34,219	22 01	-	-
बाराचँवर	1,30,546	26,044	19 95	141	0 108
मुहम्मदाबाद	1,47,516	29,456	19 96	-	-
भाँवरकोल	1,35,519	25,518	18 82	-	-
जमानियाँ	1,68,926	29,883	17 68	-	-
रेवतीपुर	1,24,748	23,385	18 74	-	-
भदौरा	1,44,492	21,260	14 7[illegible]	-	-

स्रोत- जनपद साख्यिकीय पत्रिका 2000

2.6 जनसंख्या घनत्व–

जनसख्या घनत्व का तात्पर्य जनसख्या एव धरातल के अनुपात से है। यह जनसख्या जमाव की एक मात्रा का मापन है जिसे प्रति इकाई क्षेत्रफल मे व्यक्तियो की सख्या के रूप मे व्यक्त किया जाता है। (यादव हीरालाल 1997) मनुष्य एव भूमि के मध्य अनुपात जो किसी क्षेत्र के प्रमुख तत्व है, ये सभी जनसख्या अध्ययनो के मूल बिन्दु होते है। (डेम्को जी0जे0 1970)

क्षेत्र विशेष के ससाधनो के विदोहन के अभिनिर्धारण के लिए जनसख्या घनत्व का मापन अनिवार्य है। सन् 2001 की जनसख्या के अनुसार जनपद मे जनसख्या का घनत्व 903 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। जबकि इसी वर्ष उ प्र एव भारत का जनसख्या घनत्व क्रमश 689 एव 324 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है। इस प्रकार जनपद का घनत्व प्रदेश से 1 48 गुना एव देश से 2 78 गुना है। 1991 मे जनसख्या के अनुसार जनपद का घनत्व 741 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी था इस अवधि मे प्रदेश एव देश का घनत्व क्रमश 471 एव 267 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी था। 1981, 1971 एव 1961 मे जनपद का घनत्व क्रमश 584, 453 एव 392 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी था।

तालिका 2 7

जनपद गाजीपुर जनसख्या घनत्व

वर्ष	क्षेत्रफल वर्ग किमी	जनसख्या जनपद	जनपद का जनसख्या घनत्व प्रति वर्ग किमी	उ प्र का जनसख्या घनत्व प्रति वर्ग किमी	भारत का जनसख्या घनत्व/ वर्ग किमी
1961	3384	13,21,578	392	251	142
1971	3381	15,31,657	453	300	177
1971	3377	19,44,669	584	377	216
1991	3337	24,16,617	741	471	267
2001	3337	30,49,337	903	689	324

स्रोत- जिला जनगणना हस्त पुस्तिका 1971, 1991 तथा 1991, जनगणना पुस्तिका उ प्र, एव भारत 1971, 1981, 1991 एव 2001

किसी क्षेत्र विशेष मे भूमि तथा जनसख्या दो महत्वपूर्ण तत्व होते हैं अत इनका अनुपात सभी जनसख्या अध्ययन मे आधारभूत एव विचारणीय होता है। वस्तुत भूमि पर जनसख्या के दबाव को आकिक, कृषि, कायिक, एव पोषाण घनत्व आदि रूपो में व्यक्त किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र मे जनसख्या घनत्व के इन प्ररूपो को दशकीय वृद्धि के साथ तालिका 2 8 मे दिखाया गया है।

तालिका 2 8

जनसख्या घनत्व व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 (1961-2001)

वर्ष	आकिक घनत्व	कृषि घनत्व	कायिक घनत्व	पोषण घनत्व
1961	392	137 11	438 25	403 96
1971	453	134 02	551 95	403 71
1981	584	139 47	695 42	490 04
1991	741	181 38	845 17	1051 13
2001	903	-	-	-

2 6 1 आंकिक जनसंख्या घनत्व–

साधारणत किसी क्षेत्र की कुल जनसख्या को उसके क्षेत्रफल से विभाजित करके प्रतिवर्ग मील या प्रतिवर्ग किमी जनसख्या प्राप्त करते है इसको आकिक या गणितीय जनसख्या घनत्व कहते है। (यादव हीरालाल 1997) गणितीय घनत्व के उपयोग मे निम्न कठिनाइयो का सकेत किया गया है। (क्लार्क जे0ई0 1972)

(1) जनसख्या आँकड़ा आर्थिक एकरूपता मे न प्राप्त होकर प्रशासनिक अथवा प्रयुक्त क्षेत्रीय इकाई के रूप मे प्राप्त होता है।

(2) यह प्रशासनिक एकरूपता कदा्चित सामाजिक सास्कृतिक पक्ष को अभिव्यक्ति नही दे पाती।

(3) यह औसत अभिव्यक्ति के अनेक पक्षो को नजरअन्दाज कर देता है।

(4) मानचित्र मे वर्गीय अन्तराल का प्रयोग एकाकी स्वरूप को ही व्यक्त करता है।

(5) आकिक घनत्व क्षेत्र के विभिन्न भौगोलिक तथ्यो से असम्बद्ध होता है।

उपरोक्त आपत्तियो के बावजूद समाज विज्ञानो मे इस प्रकार के घनत्व का प्रयोग बहुतायत से होता है। क्योकि यह क्षेत्रीय विभिन्नताओं एव वितरण के रूप को प्रस्तुत करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। आकिक या गणितीय घनत्व ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है—

$$\text{आकिक घनत्व} = \frac{\text{कुल जनसख्या}}{\text{कुल क्षेत्रफल}}$$

तालिका 2 9

आकिक जनसख्या घनत्व

वर्ग	जनसख्या घनत्व प्रति वर्ग किमी	विकास खण्डो की स			
		1961	1971	1981	1991
निम्न घनत्व	350 से कम	02	-	-	-
साधारण घनत्व	350 500	12	13	02	-
मध्यम घनत्व	500-560	02	02	01	05
उच्च घनत्व	650-800	-	01	02	09
अति उच्च घनत्व	800 से अधिक	-	-	01	03

2 6.2 आंकिक जनसंख्या घनत्व का क्षेत्रीय वितरण प्रारूप-

जनपद गाजीपुर मे 1931 के बाद जनसख्या घनत्व मे निरन्तर वृद्धि हुई है। 2001 मे यह घनत्व 903 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी है। 1961 मे 392, 1971 मे 453 तथा 1981 एव 1991 मे क्रमश 584 तथा 741 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी रहा है। 1961 की जनगणना के अनुसार सर्वाधिक जनसख्या घनत्व गाजीपुर विकास खण्ड मे 581 02 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी तथा न्यूनतम घनत्व रेवतीपुर विकास खण्ड मे 328 36 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0। 1991 मे भी यही स्थिति रही। गाजीपुर विकास खण्ड मे 756 52 तथा रेवतीपुर मे 365 52 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी था। 1981 मे भी अधिकतम घनत्व गाजीपुर विकास खण्ड मे 960 46 एव न्यूनतम रेवतीपुर मे 446 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी ।

1991 मे घनत्व वर्ग मे वृद्धि होकर गाजीपुर अति उच्च वर्ग मे एव रेवतीपुर मध्यम वर्ग मे आ गया। 1991 मे सर्वाधिक घनत्व गाजीपुर विकास खण्ड मे 1365 50 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी तथा न्यूनतम रेवतीपुर विकास खण्ड मे 528 14 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी रहा है। (**तालिका 2 10, चित्र सख्या 2 3**)

तालिका 2 10

जनसख्या घनत्व प्रतिवर्ग किमी 1991

विकास खण्ड	आकिक	कायिक	कृषि	पोषण
जखनियाँ	716 21	828 38	174 74	1253 65
मनिहारी	641 09	743 97	181 88	1228 40
सादात	637 98	791 42	184 64	1125 40
सैदपुर	858 70	988 64	183 24	1339 23
देवकली	722 14	791 37	170 78	1300 80
बिरनो	762 84	865 41	189 90	1039 66
मरदह	660 41	722 54	169 76	1044 70
गाजीपुर	1365 70	1767 32	224 50	1467 92
करण्डा	658 00	785 49	167 30	1206 28
कासिमाबाद	727 32	821 89	185 99	1043 19
बाराचँवर	639 30	742 75	178 85	1413 66
मुहम्मदाबाद	1010 18	1110 83	219 25	1386 80
भाँवरकोल	516 26	620 05	159 32	1243 06
जमानिया	687 06	803 40	172 56	958 17
रेवतीपुर	528 14	645 79	159 87	923 71
भदौरा	728 07	867 48	165 12	965 06

स्रोत- जिला जनगणना हस्त पुस्तिका 1991 एव साख्यिकीय पत्रिका 1994, जनपद गाजीपुर।

2.6.2.1 निम्न घनत्व वर्ग (350 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 से कम)-

आकिक जनसख्या घनत्व के इस वर्ग मे 1961 मे दो विकास खण्ड मरदह (341 62 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी) एव रेवतीपुर (328 36 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0) आते हैं। 1961 के बाद जनपद का कोई भी विकास खण्ड इस वर्ग मे नही आता है। (**परिशिष्ट 2 1**)

DISTRICT GHAZIPUR
POPULATION DENSITY
1981
1991
PERSON / Km2
< 550
550 - 700
700 - 850
850 - 1000
>1000
G A N G A R
10 0 10 20
Km
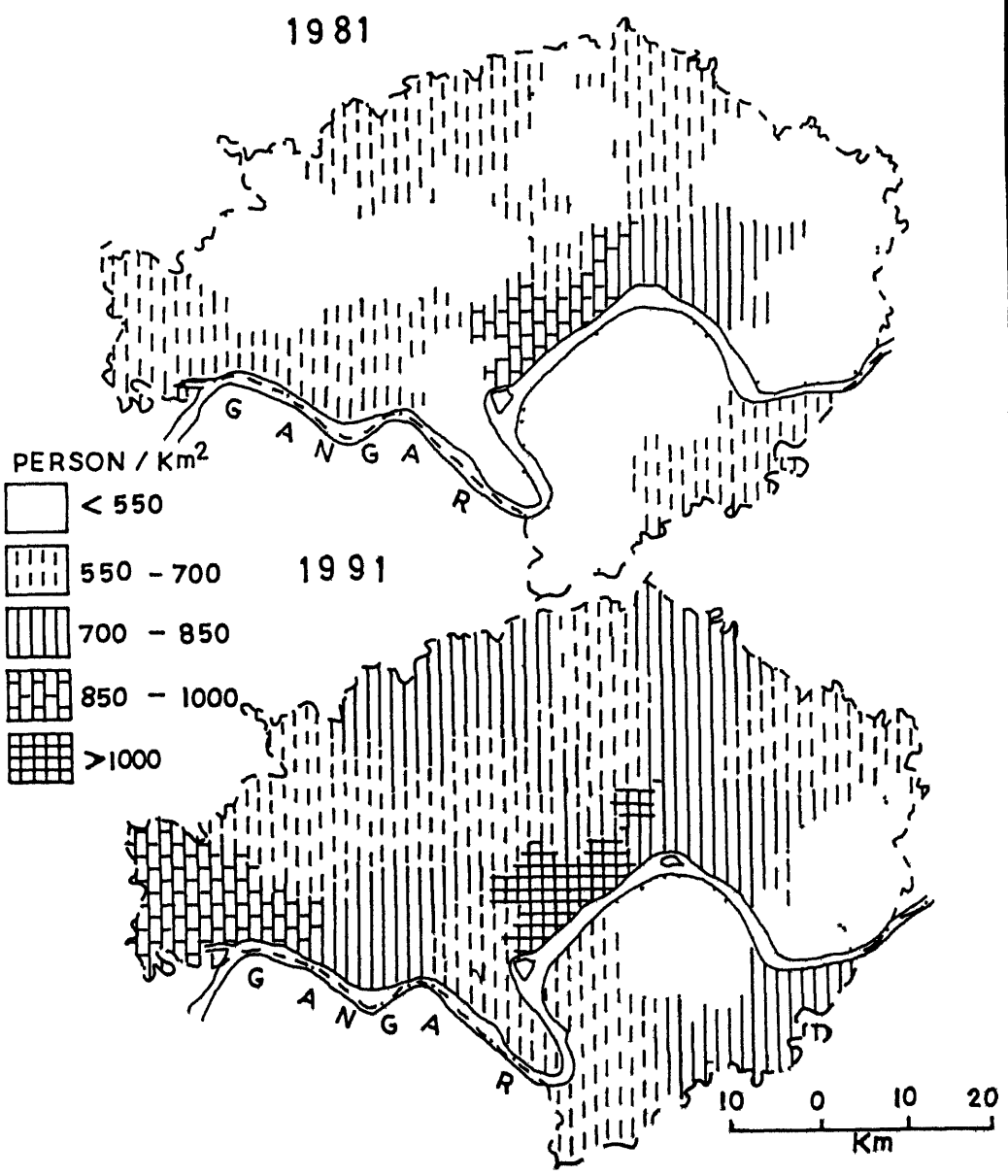
Fig. 2.3

2 6 2 2 साधारण घनत्व वर्ग (350-500 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी)-

इस वर्ग के अन्तर्गत जनपद मे 1961 मे 12 विकास खण्ड, यथा करण्डा (364 50), बिरनो (360 00), सैदपुर (453), देवकली (364 20), सादात (360 59 व्यक्ति), जखनियाँ (381 84 व्यक्ति), मनिहारी (351 64), भाँवरकोल (351 58), कासिमाबाद (373 13 व्यक्ति), बाराचँवर (387 47 व्यक्ति), जमानियाँ (371 65 व्यक्ति), एव भदौरा (402 15 व्यक्ति) आते है। 1971 मे इस वर्ग के अन्तर्गत 13 विकास खण्ड सम्मिलित हो गये यथा करण्डा (427 व्यक्ति), बिरनो (430 व्यक्ति), मरहद (413 व्यक्ति), देवकली (411 व्यक्ति), सादात (448 00 व्यक्ति), जखनियाँ (446 00 व्यक्ति), मनिहारी (403 व्यक्ति), भँावरकोल (470 व्यक्ति), कासिमाबाद (457 व्यक्ति), बाराचँवर (396 व्यक्ति), जमानियाँ (414 व्यक्ति), भदौरा (469 व्यक्ति), जनसख्या घनत्व मे उत्तरोत्तर वृद्धि के कारण 1981 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मात्र दो विकास खण्ड भाँवरकोल (475 व्यक्ति) तथा रेवतीपुर (466 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी) थे। 1991 के अन्तर्गत इस वर्ग मे कोई विकास खण्ड नही था, यह जनघनत्व मे तीव्र वृद्धि का ही परिणाम है। **(परिशिष्ट 2 1)**

2.6 2.3. मध्यम घनत्व वर्ग (500-650 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी.)-

इसके अन्तर्गत 1961 मे 2 विकास खण्ड गाजीपुर (581 02 व्यक्ति) एव मुहम्मदाबाद (542 व्यक्ति) सम्मिलित है। 1971 मे भी दो विकास खण्ड सैदपुर (523 80 व्यक्ति) एव मुहम्मदाबाद (628 20 व्यक्ति) रहे। 1981 मे इस वर्ग के अन्तर्गत 11 विकास खम्ड-करण्डा (539 व्यक्ति) बिरनो (587 41 व्यक्ति), मरदह (522 व्यक्ति), देवकली (551 व्यक्ति), सादात (544 13 व्यक्ति, जखनियाँ (572 व्यक्ति), मनिहारी (511 व्यक्ति), कासिमाबाद (559 71 व्यक्ति), बाराचँवर (525 व्यक्ति), जमानियाँ (532 07 व्यक्ति) एव भदौरा (605 26 व्यक्ति), सम्मिलित हो गये। 1991 मे इस वर्ग के अन्तर्गत 5 विकास खण्ड थे मनिहारी (641 09 व्यक्ति), सादात 637 98 व्यक्ति), भाँवरकोल (516 29 व्यक्ति), रेवतीपुर (528 14 व्यक्ति), तथा बाराचँवर (639) आ गये। **(परिशिष्ट (2.1)**

2 6 2 4 उच्च घनत्व वर्ग (650-800 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी)-

इस वर्ग के अन्तर्गत 1961 मे एक भी विकास खण्ड नही था, 1971 मे केवल गाजीपुर विकास खण्ड (756 52 व्यक्ति) था। 1981 मे गाजीपुर इस वर्ग से बाहर हो गया एव इसमे सेदपुर (667 व्यक्ति) तथा मुहम्मदाबादा (792 व्यक्ति) सम्मिलित हो गये। 1991 मे इस वर्ग के अर्न्तगत जनपद के 9 विकास खण्ड यथा- जखनियाँ (716 21 व्यक्ति), देवकली (722 व्यक्ति), बिरनो (762 84 व्यक्ति, मरदह (660 41 व्यक्ति), करण्डा (658 व्यक्ति), कासिमाबाद (727 32 व्यक्ति, जमानियाँ (687 06 व्यक्ति) तथा भदौरा (728 07 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी) सम्मिलित हो गये। (परिशिष्ट 2 1)

2 6 2.5 अति उच्च घनत्व - (800 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से अधिक)–

इस वर्ग मे 1961, 1971 मे कोई विकास खण्ड नहीं था 1981 मे गाजीपुर विकास खण्ड (960 46 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी), इस वर्ग मे आ गया। 1991 में अति उच्च वर्ग मे 3 विकास खण्ड सैदपुर (858 70 व्यक्ति), गाजीपुर (1365 70 व्यक्ति) तथा मुहम्मदाबाद (1010 18 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी) इस वर्ग मे सम्मिलित हो गये। (परिशिष्ट 2 1)

2.6.3 कृषि जनसंख्या घनत्व-

कृषि घनत्व, कृषि प्रधान देशो के सन्दर्भ में कृषि ससाधन पर जनसख्या दबाव मापने का सुन्दर तरीका माना जाता है। (ट्रिवार्थ जी टी) कृषि जनसख्या घनत्व एक निश्चित समय पर प्रति ईकाई कृषिगत भूमि पर कृषि मे सलग्न जनसख्या का परिचायक है। (चान्दना) अर्थात् कृषि मे लगी जनसख्या और कृषित क्षेत्र का अनुपात कृषि जनसख्या घनत्व है। उन देशों में जहाँ अधिकाश जनसख्या कृषि कार्य मे लगी हो, वहाँ मानव–क्षेत्रफल के अन्तर्सबध को अभिव्यक्त करने का यह सुरुचिपूर्ण सूचकाक है। कृषि घनत्व की गणना निम्न सूत्र की सहायता से की जाती है—

$$\text{कृषि घनत्व} = \frac{\text{कृषि में सलग्न जनसख्या}}{\text{कृषिगत क्षेत्र}}$$

DISTRICT GHAZIPUR
DENSITY
1991
NUTRITIONAL
Persons/Km2
< 1000
1000 - 1100
1100 - 1200
1200 - 1300
> 1300
G A N G A R
AGRICULTURAL
PERSONS/Km2
150 - 165
165 - 180
180 - 195
> 195
10 0 10 20
Km
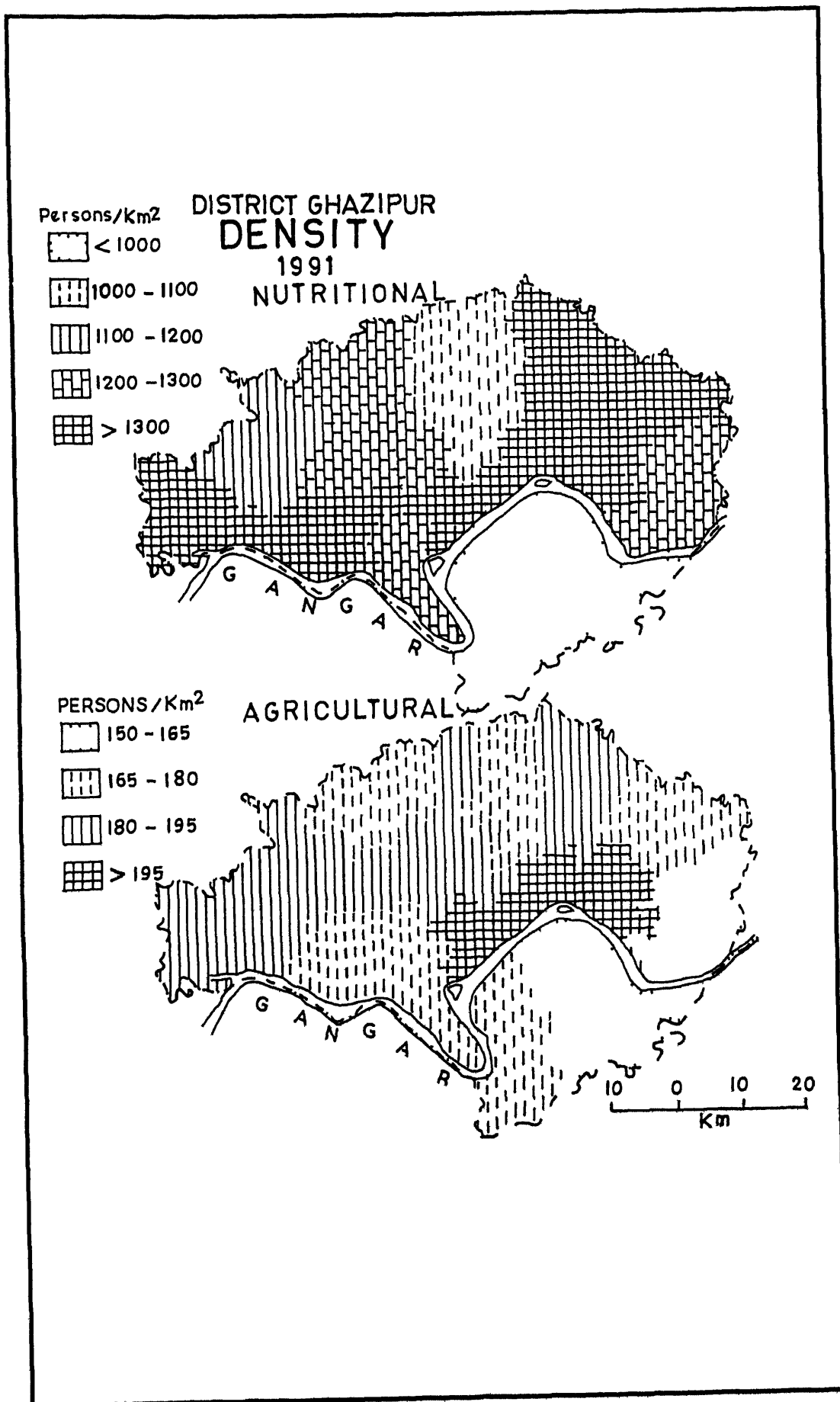
Fig. 2.4

2.6 3.1 कृषि जनसंख्या घनत्व का क्षेत्रीय वितरण प्रारूप–

जनपद मे 1961 मे कृषि जनसख्या घनत्व 137 11 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी, 1971 मे 134 02 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 तथा 1981 मे 139 47 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 रहा। 1991 मे यह जनसख्या घनत्व 181 38 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 रहा। 1991 मे जनपद के विकास खण्ड मे सर्वाधिक कृषि जनसख्या घनत्व गाजीपुर विकास खण्ड मे 224 50 व्यक्ति तथा सबसे कम भाँवरकोल विकास खण्ड मे 159 32 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी रहा। इसी प्रकार अन्य विकास खण्डो का कृषि जनसख्या घनत्व जखनियाँ (174 74 व्यक्ति), मनिहारी (181 88) व्यक्ति), सादात (184 64 व्यक्ति), सैदपुर (183 24 व्यक्ति), देवकली (170 78) बिरनो (189 90) मरदह (169 76 व्यक्ति), करण्डा (167 30 व्यक्ति) कासिमाबाद (185 99) बाराचँवर (178 85 व्यक्ति), मुहम्मदाबाद (219 25 व्यक्ति), जमानियाँ (172 56 व्यक्ति), रेवतीपुर (159 87 व्यक्ति), भदौरा (165 12 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 है। जनपद के कृषि जनसख्या घनत्व मे 1961-71 की अवधि मे ऋणात्मक वृद्धि हुई है जबकि 1981 के बाद घनत्व मे घनात्मक वृद्धि हुई है। कृषि जनसख्या घनत्व एव आकिक घनत्व की तुलनात्मकता इस बात की ओर सकेत करती है कि कृषि घनत्व मे आकिक घनत्व की तरह अल्प असमानता है। (**तालिका 2 10, चित्र सख्या 2 4**)

2.6 4 कायिक जनसंख्या घनत्व-

यह मानव–क्षेत्र गणना की अधिक परिष्कृत विधि है जिसमे कुल क्षेत्रफल की जगह कुल कृषिगत भूमि के क्षेत्रफल से जनसख्या को विभाजित किया जाताहै। (यादव हीरालाल (1997 वस्तुत कुल जनसख्या का किसी क्षेत्र पर भार ज्ञात करना जिस पर वे भार नही डालते, वैज्ञानिक नही है। जब किसी ऐसे क्षेत्रफल जैसे पहाड़ी चट्टानी, रेगिस्तानी, नदी तालाब, को सम्मिलित करते है जिस पर मानव आधिवास सम्भव नहीं। अतएव वास्तविक भार ज्ञात करने के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि समस्त क्षेत्रफल को न लेकर केवल कृषि योग्य भूमि को ही लिया जाए। यह घनत्व सम्पूर्ण जनसख्या तथा समस्त कृषिगत भूमि का अनुपात व्यक्त करता है। (चान्दना आर0सी0 1997) कायिक जन घनत्व ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है।

$$\text{कायिक जनसख्या घनत्व} = \frac{\text{कुल जनसख्या}}{\text{कृषिगत भूमि का क्षेत्रफल}}$$

तालिका 2 11

कायिक जनसख्या घनत्व (1981-1991)

कायिक घनत्व वर्ग	कायिक जनसख्या प्रति वर्ग किमी	विकास खण्डो की सख्या	
		1981	1991
निम्न	600 से कम	03	-
साधारण	600-650	06	02
मध्यम	650-700	03	-
उच्च	700-750	00	03
अति उच्च	750 से अधिक	04	11

2 6.4.1 कायिक जनसख्या घनत्व का क्षेत्रीय वितरण प्रारूप–

1961 मे जनपद का कायिक जनसख्या घनत्व 438 25 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी था, जो 1971 मे बढकर 551 95 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 हो गया। 1981 मे 695 42 व्यक्ति, 1991 मे 845 17 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 हो गया। स्पष्ट है कि 1961 के बाद कायिक घनत्व तीव्र गति से बढा है।

1981 मे **निम्न कायिक घनत्व वर्ग (600 से कम)** मे 3 विकास खण्ड थे - रेवतीपुर 557 50 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी, भदौरा 581 60 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 तथा भाँवर कोल (553 09 व्यक्ति), 1991 मे जनपद का कोई भी विकास खण्ड इस वर्ग मे नही रहा।

1981 मे साधारण कायिक घनत्व बर्ग मे जनपद के 6 विकास खण्ड यथा मरदह (603 40), मनिहारी (602 22 व्यक्ति) बिरनो (644 32 व्यक्ति), कासिमाबाद (614 44 व्यक्ति), बाराचँवर (606 61 व्यक्ति), जमानियाँ (603 53 व्यक्ति) 1991 मे इस वर्ग म 2 विकास खण्ड रेवतीपुर (645 79) और भाँवरकोल (620 05 व्यक्ति) आते थे।

1981 मे मध्यम जनघनत्व वर्ग मे 3 विकास खण्ड करण्डा (687 84 व्यक्ति), जखनियाँ (670 07 व्यक्ति), तथा सादात (682 90 व्यक्ति), आते थे। 1991 मे इस वर्ग मे कोई भी विकास खण्ड नही थी।

1981 मे उच्च कायिक जनघनत्व वर्ग में कोई भी विकास खण्ड नही था, 1991 में इस वर्ग मे 3 विकास खण्ड सम्मिलित हो गये। बाराचँवर (742 75 व्यक्ति), मरदह

DISTRICT GHAZIPUR

PHYSIOLOGICAL DENSITY

1981

GANGA R

PERSONS / Km²

< 600

600 - 700

700 - 800

800 - 900

900 - 1000

> 1000

1991

GANGA R

10 0 10 20

Km
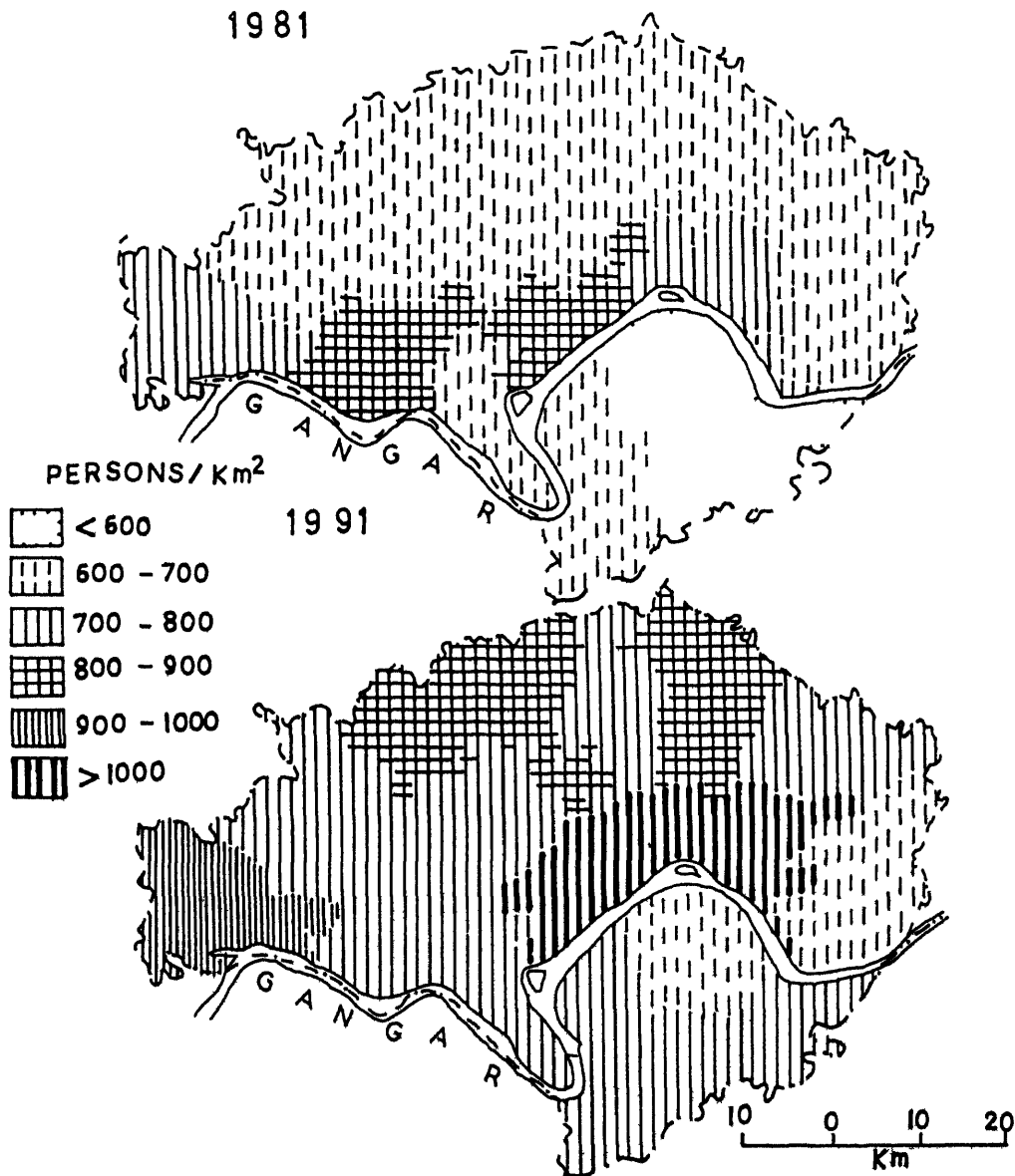
Fig. 2.5

(722 54 व्यक्ति), मनिहारी (743 97 व्यक्ति) है। **अति उच्च कायिक जनघनत्व वर्ग** मे 1981 मे 4 विकास खण्ड मुहम्मदाबाद (791 34 व्यक्ति), सैदपुर (757 20 व्यक्ति), गाजीपुर (874 77 व्यक्ति) तथा देवकली (855 15 व्यक्ति), आते थे। 1991 मे इस वर्ग के अन्तर्गत कुल 11 विकास खण्ड सम्मिलित हो गये, यह जन घनत्व मे तीव्र वृद्धि के कारण हुआ। इन विकास खण्डो मे - जखनियॉं (828 38) सादात (791 42), सैदपुर (988 64), देवकली (791 37 व्यक्ति), बिरनो (865 41), गाजीपुर (1767 32 व्यक्ति), करण्डा (785 49 व्यक्ति), कासिमाबाद (821 89 व्यक्ति), मुहम्मदाबाद (1110 83 व्यक्ति), जमानियॉं (803 40 व्यक्ति), भदौरा (867 48 व्यक्ति) रहे। **(मानचित्र सख्या 2 5)**

2 6.5 पोषण जनसंख्या घनत्व–

पोषण घनत्व ग्रामीण जनसख्या एव सकल बोये गये क्षेत्र के अनुपात को व्यक्त करता है (ओझा रघुनाथ) जिन देशो की अधिकाश जनसख्या ग्रामीण है तथा जहाँ आय और भोजन का मुख्य आहार कोई एक प्रमुख अनाज ही होता है, वहाँ इस प्रकार के घनत्व का अधिक महत्व होता है। (मामोरिया सी0बी0 1999) थाईलैण्ड, दक्षिण चीन, भारत के प बगाल राज्य मे चूँकि चावल अधिक बोया जाता है, एव प्रमुख भोज्य खाद्यान्न है, अत यहाँ पोषण घनत्व की जनसख्या के उपयोग का मापदण्ड कहा जा सकता है। पोषण जनघनत्व का परिकलन निम्न सूत्र की सहायता से किया गया है

$$\text{पोषण जनसख्या घनत्व} = \frac{\text{ग्रामीण जनसख्या}}{\text{सकल बोया गया क्षेत्रफल}}$$

2.6.5.1 पोषण जनसंख्या घनत्व का क्षेत्रीय वितरण प्रारूप-

1991 में जनपद का पोषण जनघनत्व 1051 13 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 था, यह 1981 मे 490 04 व्यक्ति, 1971 मे 403 71 व्यक्ति एव 1961 मे 403 96 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 था। स्पष्ट है कि 1971 से 1991 तक पोषण जनघनत्व मे 2 60 गुना वृद्धि हुई है जो सकल बोये गये क्षेत्र पर अत्यधिक जनसख्या दबाव को ज्ञापित करती है। 1991 मे विकास खण्डो मे पोषण जनसख्या घनत्व सर्वाधिक 1413 66 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 बाराचँवर विकास खण्ड मे था तथा न्यूनतम 923 71 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 रेवतीपुर विकास खण्ड मे था। इसी

प्रकार अन्य विकास खण्डो का पोषण जनसख्या घनत्व जखनियाँ 1253 65 व्यक्ति, मनिहारी 1228 40 व्यक्ति सादात 1125 40 व्यक्ति, सैदपुर 1339 23 व्यक्ति, देवकली 1300 80 व्यक्ति, बिरनो 1039 66 व्यक्ति, मरदह 1044 70 व्यक्ति, गाजीपुर 1467 92, करण्डा 1206 28, कासिमाबाद 1043 19 व्यक्ति, मुहम्मदाबाद 1386 80, भाँवरकोल 1243 06 व्यक्ति, जमानियाँ 958 17 व्यक्ति भदौरा 965 06 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 रहा। **(तालिका 2 10, चित्र सख्या 2 4)**

2 6.6 ग्रामीण जनसख्या घनत्व–

किसी स्थान का ग्रामीण जनसख्या घनत्व वहाँ के भौतिक एव आर्थिक दशाओं पर निर्भर करता है। उसके ससाधन की उपलब्धता पर ही जनसख्या स्थानान्तरण अल्पाधिक्य होता हे। (जेलिन्सकी डब्ल्यू0 बी0 1966)

जनपद मे 1971 मे ग्रामीण जनघनत्व 436 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 था, 1981 मे 542 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 एव 1991 मे यह घनत्व 661 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 हो गया। 2001 मे ग्रामीण जनघनत्व 845 10 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 रहा। 2001 का सर्वाधिक घनत्व ग्रामीण जनसख्या मे अधिक औसत वृद्धि के फलस्वरूप परिलक्षित होना है।

तालिका 2 12

ग्रामीण जनसख्या घनत्व

जनसख्या घनत्व वर्ग	ग्रामीण जनघनत्व प्रतिवर्ग किमी0	विकास खण्डो की स0 1971	1981	1991
निम्न	400 से कम	01	-	-
साधारण	400-500	12	03	-
मध्यम	500-600	02	10	02
उच्च	600-700	-	03	08
अति उच्च	700 से अधिक	-	-	06

2.6.6.1 निम्न घनत्व वर्ग-

3774-70
6748

जनपद में 1971 में निम्न घनत्व वर्ग मे मात्र दो विकास खण्ड [illegible] (3[illegible].00 व्यक्ति) तथा रेवतीपुर (365 52 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0) थे, 19[illegible] में इस वर्ग मे जनपद का कोई भी विकास खण्ड नहीं था। यही स्थिति 1991 में भी रही है। साधारण जनघनत्व वर्ग मे

1971 मे जनपद के 12 विकास खण्ड थे यथा-करण्डा (437 00 व्यक्ति), बिरनो (430), मरदह (413 00 व्यक्ति), सैदपुर (495 00 व्यक्ति), देवकली (411 00 व्यक्ति), सादात (448 00 व्यक्ति), जखनियाँ (446 00 व्यक्ति), मनिहारी (403 व्यक्ति), भाँवरकोल (470 00 व्यक्ति), कासिमाबाद (457 00 व्यक्ति), जमानियाँ (414 व्यक्ति), तथा भदौरा (469 व्यक्ति) प्रति वर्ग किमी0 थे। 1981 मे इस वर्ग के अन्तर्गत 3 विकास खण्ड - भाँवरकोल (475 00 व्यक्ति), भदौरा तथा रेवतीपुर क्रमश 495 एव 466 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 थे। तीव्र जनसख्या वृद्धि के कारण 1991 मे इस वर्ग के अन्तर्गत जनपद का कोई भी विकास खण्ड नहीं था। **(परिशिष्ट 2 2, चित्र सख्या 2 6)**

2 6.6.2 मध्यम ग्रामीण जनसंख्या घनत्व वर्ग-

इस वर्ग के अन्तर्गत 1971 मे जनपद के 2 विकास खण्ड- गाजीपुर (538 00 व्यक्ति) तथा मुहम्मदाबाद (502 04 व्यक्ति) थे। 1981 मे इस वर्ग के अन्तर्गत जनपद के 10 विकास खण्ड सम्मिलित हो गये यथा - करण्डा 539, बिरनो 551, मरदह 522, देवकली 551, सादात 527, जखनियाँ 572, मनिहारी 511, कासिमाबाद 528, बाराचँवर 525, तथा जमानियाँ 500 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 थे। 1991 मे इस वर्ग मे केवल दो विकास खण्ड - भाँवरकोल 516 तथा रेवतीपुर 528 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 रहे। **(परिशिष्ट 2 2, चित्र सख्या 2 6)**

2 6 6 3 उच्च ग्रामीण जनघनत्व वर्ग-

1971 में इस वर्ग मे जनपद का कोई भी विकास खण्ड नहीं था, 1981 में इस वर्ग मे 3 विकास खण्ड आ गये जो सैदपुर (638 व्यक्ति), गाजीपुर (669 व्यक्ति) तथा मुहम्मदाबाद (688 व्यक्ति) थे। 1991 मे इस वर्ग मे जनपद के 8 विकास खण्ड जुड़ गये जो जनसख्या वृद्धि का परिणाम है। ये विकास खण्ड - मनिहारी (641 व्यक्ति), सादात (631 व्यक्ति), मरदह (660 व्यक्ति), करण्डा (658 व्यक्ति), कासिमाबाद (673 व्यक्ति), बाराचँवर (639 व्यक्ति), जमानियाँ (609 व्यक्ति), भदौरा (685 व्यक्ति) रहे। **(परिशिष्ट 2 2, चित्र संख्या 2 6)**

2.6.6.4 अति उच्च ग्रामीण जनसंख्या घनत्व-

इस वर्ग के अन्तर्गत 1971 एवं 1981 में कोई भी विकास खण्ड नहीं था, 1991 में इस वर्ग में 6 विकास खण्ड रहे यथा - जखनियाँ (716 व्यक्ति), सैदपुर (775 व्यक्ति), देवकली

DISTRICT GHAZIPUR
RURAL DENSITY
1981
1991
GANGA R
PERSONS / Km2
< 500
500 - 600
600 - 700
700 - 800
> 800
10 0 10 20
Km
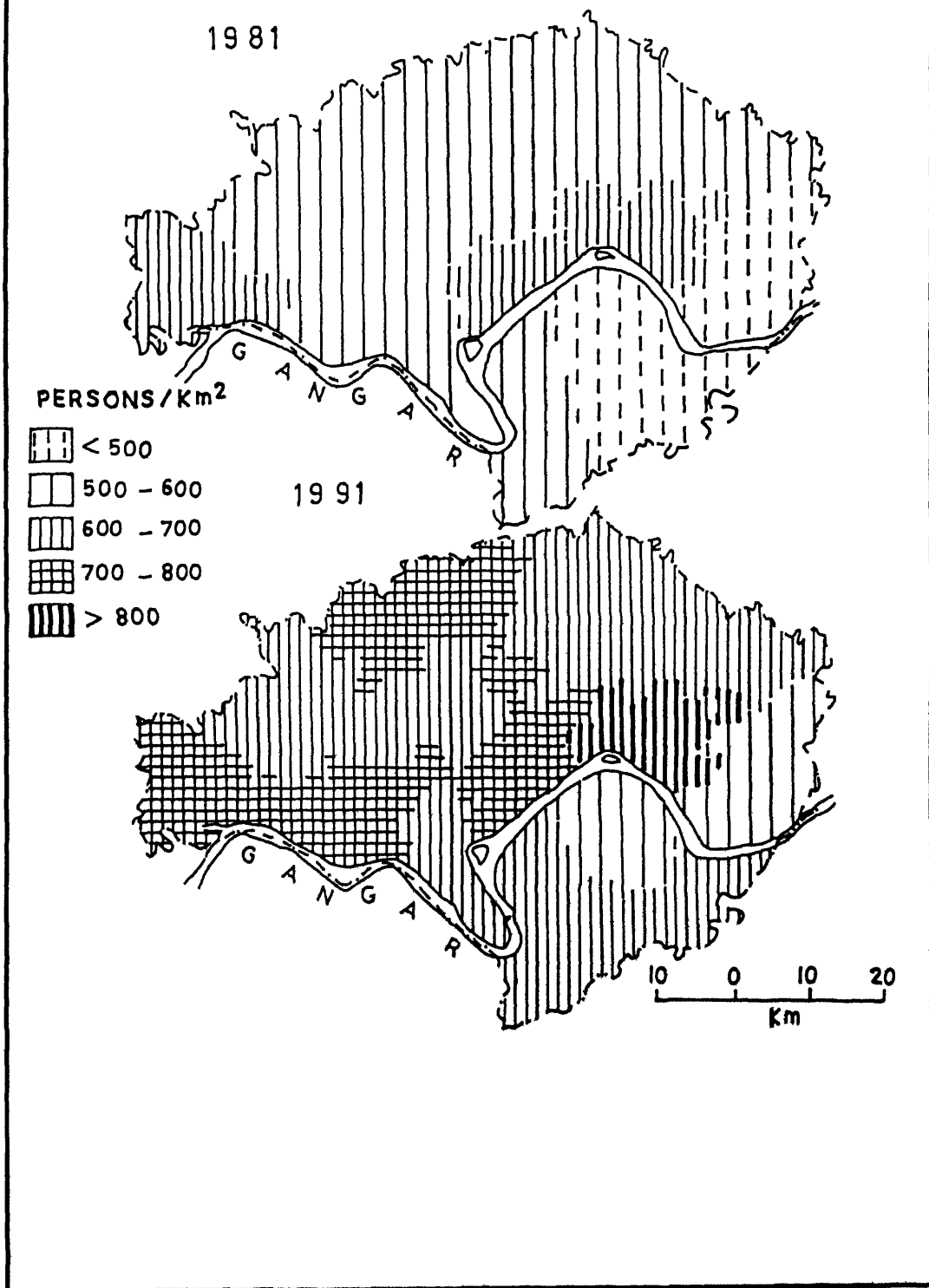
Fig. 2.6

(722 व्यक्ति), बिरनो (709 व्यक्ति), गाजीपुर (863 व्यक्ति) तथा मुहम्मदाबाद (872 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी) रहे। **(परिशिष्ट 2 4, चित्र सख्या 2 6)**

2 6 7 नगरीय जनसंख्या घनत्व–

ग्रामीण एव नगरीय क्षेत्रो की अर्थ व्यवस्था, सामाजिक जीवन, तथा राजनैतिक जीवन काफी सीमा तक आपस मे भिन्न होते है। (चान्दना 1997) इस विभिन्नता को स्पष्ट करने के लिए जनसख्या घनत्व का स्पष्टीकरण अनिवार्य है, क्योकि यह उन समग्र दशाओं का द्योतक है जिनके कारण नगरीय जनसख्या घनत्व ग्रामीण जनसख्या घनत्व से अधिक है। जनपद मे 1961 मे नगरीय केन्द्र के रूप मे सैदपुर एव गाजीपुर नगर पालिका थे। 1971 मे मुहम्मदाबाद नगरीय केन्द्र के रूप मे विकसित हो गया। सन् 1971 मे शहरी एग्लोमिरेशन की सकल्पना का प्रारम्भ हुआ जिसे 1981 की जनगणना मे सम्मिलित किया गया जिसके अनुसार नगर केन्द्र के बाह्य क्षेत्रो, एव वाह्य वृद्धियो सहित दो या अधिक नगर जो विस्तीर्ण क्षेत्र का निर्माण करते है सम्मिलित किये गये। (भारतीय जनगणना 1981) इस सकल्पना के अनुसार वर्तमान मे जनपद मे कुल 9 नगरीय केन्द्र है - सादात, सैदपुर, जगीपुर, गाजीपुर नगर पालिका, मुहम्मदाबाद, बहादुर गज, जमानियाँ, दिलदार नगर फतेहपुर बाजार। **(तालिका 2 14)**

तालिका 2 13

जनपद गाजीपुर का नगरीय जनसख्या घनत्व

वर्ष	घनत्व प्रतिवर्ग किमी
1961	2339
1971	2693
1981	3110
1991	3910
2001	5118 (1991 के क्षेत्रफल पर आधारित)

स्रोत- जनगणना पुस्तिका 1961, 1971, 1981, 1991 तथा अनन्तिम जनगणना 2001 जनपद गाजीपुर।

2 6.7.1 नगरीय केन्द्रों का जनसंख्या घनत्व–

तालिका 2 13 से स्पष्ट है कि नगरीय जनसख्या घनत्व मे उत्तरोत्तर वृद्धि होती गयी है, जहाँ 1961 मे यह घनत्व 2339 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 था जो 1991 मे 3910 तथा 2001 मे 5118 हो गया। 1961 से 2001 की अवधि मे 2 18 गुना वृद्धि हुई है।

1961 मे सैदपुर का जनसख्या घनत्व 1445 30 व्यक्ति, गाजीपुर नगर पालिका का 2705 53 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी था 1971 मे सैदपुर का 1813 17, गाजीपुर नगर पालिका का 3323 74 व्यक्ति एव मुहम्मदाबाद का 2097 63 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 था। 1981 मे सादात का 2494, सैदपुर का 3288 व्यक्ति, जगीपुर का 2705 व्यक्ति, गाजीपुर नगर पालिका का 4423 व्यक्ति, मुहम्मदाबाद का 2840 व्यक्ति, बहादुरगज का 3512 00 व्यक्ति, जमानियाँ का 2463, दिलदारनगर फतेहपुर का 4236 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 था। 1991 मे सर्वाधिक घनत्व दिलदार नगर फतेहपुर का 5743 व्यक्ति तथा न्यूनतम जमानियाँ का 2807 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी था। इसके अलावा अन्य केन्द्रो का जनसख्या घनत्व सादात 3066 व्यक्ति, सैदपुर 3288 व्यक्ति, जगीपुर 3574, मुहम्मदाबाद 3686 व्यक्ति, बहादुर गज 4554 व्यक्ति, गाजीपुर का 5575 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 था।

2001 मे सर्वाधिक घनत्व गाजीपुर नगर पालिका का 7522 43 व्यक्ति तथा न्यूनतम जमानियाँ का 3056 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 रहा। सादात का 3830 37 व्यक्ति, सैदपुर का 3891 51 व्यक्ति, जगीपुर का 4805 19 मुहम्मदाबाद का 4761 25 व्यक्ति, बहादुरगज का 5925 64, दिलदारनगर फतेहपुर बाजार का 7175 47 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 रहा। (**तालिका 2 14**)

तालिका 2 14

नगरीय केन्द्रो का जनसख्या घनत्व

नगरीय केन्द्र	1961	1971	1981	1991	2001
सादात	-	-	2494	3066	3830 37
सैदपुर	1445 30	1813 17	2335	3288	389 51
जगीपुर	-	-	2705	3574	4805 19
गाजीपुर नगर पालिका	2705 53	3323 74	4423	5575	7522 43
मुहम्मदाबाद	-	2097 63	2840	3686	4761 25
बहादुर गज	-	-	3512	4554	5925 64
जमानियाँ	-	-	2463	2807	3056 61
दिलदार नगर फतेहपुर बाजार	-	-	4236	5743	7175 47

REFERENCES

1 Clark J I (1972) `Population Geography" Tergaman Press Oxford P 131

2 Chandana R C (1997) ``Population Geography" (in Hindi) Kalyani Publishers New Delhi P 50

3 Chandana R C (1997) ``Population Geography" (in Hindi) Kalyani Publishers New Delhi P 253

4 Demko G J (1970) ``Population Geography A Reader" McGrow Hill company New York P 22

5 Mamoria C B (1999) "Human and Economic Geography" (In Hindi) Sahitya Bhawan Publication Agra P 115

6 Ojha R (1983) `Jansankya Boogol' Pratibha Prakashan Kanpur P 84 (in Hindi)

7 Rao B P (1989) 'Human Geography' (in Hindi) Vasundhara Prakashan Gorakhpur P 160-161

8 Steel R W (1955) ``Land and Population in British Tropical Africa" P 40

9 Trewartha G T (1969) ``A Geography of Population World Pattern" Johon Wiley and sons New York

10 Yadav H L (1997) `Jansankhya Boogole" Vasundhara Prakashan Gorakhpur PP 33-35

11 Yadav Rana P S (1997) 'Population Study of Sadat Block District Ghazipur U P' Dissertation work for M A in Geography B H U P P 18-21

12 Zelinsky W B (1968) ``A Prologue to Population Geography" Prentice Hall Inc N J PP- 32-33

अध्याय 3

जनसंख्या वृद्धि

किसी भी स्थान के भौगोलिक अध्ययन मे जनसख्या एव उसके विभिन्न तत्वो के अध्ययन का विशेष वैशिष्ट्य है। क्योकि जहाँ मानव एक भौगोलिक तत्व है, वही एक ससाधन एव कारक भी है। जनसख्या भूगोल मे मानव की सख्या वृद्धि, वितरण सस्कृति एव अन्य जनाकिकीय विशेषताओ का क्षेत्रिय अध्ययन महत्वपूर्ण केन्द्रीय तत्व के रुप मे किया जाता है क्योकि मानव तरह-तरह के ससाधनो का प्रणेता, उपभोक्ता एव सास्कृतिक वातावरण का निर्माण कर्त्ता भी है।

मानव उपने विवेक का प्रयोग कर भौगोलिक वातावरण को निश्चित सीमा तक परिवर्तित कर व्यष्टि एव समष्टि के लिए उपयोगी बनाता है तथा इस परिवर्तन से वह स्वय भी प्रभावित होता है। परिणामत प्रदेश की जनसाख्यिकीय विशेषताए प्रदेश के भौतिक एव सास्कृतिक वातावरण, एव ससाधनो के समन्वित रुप का प्रतिफल होती है।

किसी स्थान की जनसख्या परिवर्तन या जनसख्या वृद्धि का अर्थ अधिकतर एक क्षेत्र विशेष मे रह रहे लोगो की सख्या मे परिवर्तन से है। (चान्दना आर0सी0 1997) यह परिवर्तन धनात्मक या ऋणात्मक हो सकता है। जनसख्या समूह मे किसी प्रकार का परिवर्तन ही जनसख्या वृद्धि कहलाता है। यदि परिवर्तन वृद्धि मे है तो धनात्मक एव ह्रास मे है तो ऋणात्मक वृद्धि होती है।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण जनसख्या वृद्धि विकासशील देशो मे रही है जहाँ विश्व की 75 प्रतिशत जनसख्या निवसित है। (हुसैन माजिद 1999) वस्तुत सार्वत्रिक जनसख्या वृद्धि धीरे-धीरे कम हो रही है और अनेक राष्ट्रो विशेषकर विकसित ससार मे जनसख्या वृद्धि से जनसख्या सतुलन के जनसाख्यिकी परिवर्तन का अनुभव किया है। फिर भी अनेक विकासशील देशो मे जनसख्या वृद्धि 3 प्रतिशत प्रतिवर्ष से अधिक है। अध्ययन क्षेत्र जनपद गाजीपुर मध्य गगा मैदान के ऊपजाऊँ क्षेत्र मे आता है जहाँ जनसख्या पर्याप्त होने के साथ-साथ जनसख्या विकास की गति भी अधिक है।

3 1 जनपद गाजीपुर में जनसंख्या वृद्धि-

सन् 1901 की जनगणना के अनुसार जनपद गाजीपुर की जनसख्या 8,57, 830 थी जो 2001 मे बढकर 30,49,337 हो गयी। इन दस दशको मे कुल जनसख्या मे 255 47

प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जनपद की जनसख्या मे प्रतिदशक वृद्धि मे असमानताए है। बीसवी शताब्दी के प्रथम दो दशको मे जनसख्या वृद्धि ऋणात्मक रही है। 1921 के बाद के दशको मे यह वृद्धि धनात्मक होने के साथ-साथ आगे के वर्षो मे क्रमश तीव्र होती गयी (**तालिका 3 1**) जनसख्या वृद्धि के दृष्टिकोण से 1921 ई0 एक जनाकिकी विभाजक के रूप मे है। क्योकि इसी जनगणना वर्ष के बाद प्रत्येक दशक मे जनसख्या वृद्धि धनात्मक होती रही है। यद्यपि जनपद मे 1921 के बाद प्रत्येक दशक मे जनसख्या बढी है, लेकिन वृद्धि की दर समान नही है। 1931-1941 के दशक मे जनसख्या वृद्धि 19 44 प्रतिशत रही जबकि 1941-51 मे जनसख्या वृद्धि 15 67 प्रतिशत हो गयी।

जनपद गाजीपुर की जनसख्या वृद्धि का विश्लेषण करने के लिए, पिछले 100 वर्षो के समग्र काल को दो भागो मे बाँटा जा सकता है यथा-

(1) ऋणात्मक वृद्धि काल (1901-1921)

(2) धनात्मक वृद्धि काल (1921-2001)

तालिका 3 1

जनपद गाजीपुर मे जनसखया वृद्धि (1901-2001)

वर्ष	जनसख्या	प्रतिशत वृद्धि प्रतिदशक	प्रतिशत वृद्धि		प्रतिशत वृद्धि	
			ग्रमीण	नगरीय	उ0प्र0	भारत
1901	8,57,830	-	-	-	-	-
1911	7,88,298	-8 11	-9 14	3 68	-0 97	5 73
1921	7,81,333	-0 88	-1 38	4 12	-3 08	-0 30
1931	8,24,721	5 55	3 83	21 56	6 66	11 00
1941	9,85,081	19 44	19 63	17 95	13 57	14 22
1951	11,00,932	15 82	15 67	17 04	11 82	13 31
1961	13,21,578	15 83	25 64	-26 17	16 66	21 51
1971	15,31,654	15 89	14 58	52 80	19 80	24 80
1981	19,44,669	26 96	22 40	123 60	25 52	24 75
1991	24,16,617	24 27	25 01	15 57	25 55	23 86
2001	30,49,337	26 18	25 82	30 67	25 80	21 34

स्रोत- जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 1961, 1971, 1981 एव साख्यिकी पत्रिका 2000 तथा अनन्तिम जनगणना 2001

3 1 1 ऋणात्मक वृद्धि काल (1901-1921 ई0)-

जनपद मे बीसवी शताब्दी के प्रथम दो दशको मे जनसख्या वृद्धि ऋणात्मक रही। इन दो दशको मे यह ऋणात्मक वृद्धि (-8 11, तथा- 3 08 प्रतिशत) क्रमश रही। बीसवी शदी के दो दशको मे प्रदेश की ऋणात्मक जनसख्या वृद्धि क्रमश -0 97 तथा -0 88 प्रतिशत रही तथा भारत मे प्रथम दशक मे धनात्मक (5 73) एव द्वितीय दशक मे ऋणात्मक (-0 30) जनसख्या वृद्धि रही । उपरोक्त दोनो दशको मे जनसख्या की ऋणात्मक वृद्धि का कारण 1904 का दुर्शिक्ष तथा 1911ई की महामारी रही।

3 1 2 धनात्मक वृद्धि का काल-(1921-2001)-

जनपद मे 1921 के बाद जमसख्या मे अनवरत धनात्मक वृद्धि होती गयी है। 1921 मे जनपद की जनसख्या 7,81,333 थी। जो 1931 मे बढकर 8,24,721 हो गयी, 1941 मे 9,85,081, 1951मे 11,00,932, 1961मे 13,21,578, 1971मे 15,31,654, 1981 मे 19,44,669, 1991 मे 24,16,617 तथा 2001 मे 30,49,337 हो गयी। 1921 से 1931 के दशक मे जनसख्या वृद्धि 5 55 प्रतिशत से बढकर 1931-41 मे 19 44 हो गयी लेकिन इसके बाद के दशक 1941-51 मे जनसख्या वृद्धि तीव्र गति से घटकर 15 82 प्रतिशत हो गयी। इसका मुख्य कारक प्रव्रजन रहा। पुन 1951-61मे जनसख्या वृद्धि 15 83,1961-71 मे 15 89,1971 तक आते-आते प्राचीन सामन्ती प्रथा धीरे-धीरे समाप्त हो गयी थी तथा मनुष्य के जीवन यापन की सुविधाए धीरे-धीरे विकसित होने लगी थी। (थाम्पसन डब्ल्यु एस 1951)। विकास प्रक्रिया के समारम्भ होने के साथ ही जनसख्या मे भी वृद्धि प्रारम्भ हो गयी। 1951 से 2001 मे जनपद की जनसख्या वृद्धि 177 03 प्रतिशत रही। जबकि इसी अवधि मे उ प्र की जनसख्या मे-162 65 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो कि जनपद की वृद्धि से कम है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् के दशको मे न केवल दशक वृद्धि दर ज्यादा हो गयी है बल्कि वृद्धि दर अन्तराल मे भी वृद्धि हुई है। 1951-1961 के दशक मे जनसख्या वृद्धि 15 83 प्रतिशत तथा उ प्र एव भारत की जनसख्या वृद्धि 16 66 एव 21 51 प्रतिशत रही जो विगत सभी दशको से अधिक है। जनसख्या में इस दशक मे शुरु की गयी ग्रामीण विकास परियोजनाओ के माध्यम से आर्थिक विकास ग्रामीण स्वास्थ्य सुविधाए तथा सास्कृतिक विकास पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा। (बसल एस सी 1999) इसके अतिरिक्त सिचाई सुविधाओं के विकास,अकृषित भूमि

को कृषि भूमि मे बदलने की योजना ने कृषि प्रधान क्षेत्र की समृद्धि को निश्चितत प्रभावित किया फलत जनसख्या मे वृद्धि हुई।

छठे दशक के बाद जनसख्या मे तीव्रता से बृद्धि हुई। 1961-1971 मे जनसख्या मे 15 83 प्रतिशत की वृद्धि हुई। जो उ प्र के 19 80 प्रतिशत से कम है। 1971-81 के दशक मे जनसख्या वृद्धि 26 96 प्रतिशत थी जो उ प्र की जनसख्या वृद्धि 25 52 प्रतिशत से अधिक है। 1981-91 के दशक जनपद की जनसख्या वृद्धि 24 27 प्रतिशत एव उ प्र की जनसख्या वृद्धि 25 55 प्रतिशत से कम है। इस अवधि मे उन्नतशील बीजो, सिचाई सुविधाओ के विकास के लिए नहरो एव नलकूपो का विकास किया गया। भूमिहीनो को भूमि वितरीत की गयी। सक्रामक बीमारियो पर नियन्त्रण कर लिया गया। 1991-2001के दशक मे जनपद की जनसख्या वृद्धि 26 18 प्रतिशत एव प्रदेश एव राष्ट्र की जनसख्या बृद्धि 25 80 एव 21 34 प्रतिशत रही। जनसख्या वृद्धि की यह तीव्र प्रवृत्ति विभिन्न भागो मे विकासजन्य क्रिया कलापो का ही प्रतिफल है। यथा-ग्रामीण विकास योजनाए (आई आर डी पी,सूखा सम्भावित क्षेत्र विकास योजना, उन्नत किस्म के बीज की एचवाईवी सीड्स योजना) एव अन्य सामाजिक योजनाओ जैसे जवाहर ग्राम समृद्धि, इन्दिरा आवास, अन्नपूर्णा योजना आदि का जनसख्या वृद्धि पर सकारात्मक एव नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

3.2 जनसंख्या वृद्धि का क्षेत्रीय प्रारूप-

अध्ययन क्षेत्र मे जनसख्या वृद्धि की असमानता को स्पष्ट करने के लिए **तालिका 3 2** मे तहसीलो की 1961 से 2001 तक की दशकीय जनसख्या बृद्धि प्रदर्शित की गयी है।

तालिका 3 2

जनपद गाजीपुर -तहसीलवार जनसख्या वृद्धि प्रतिशत मे

	दशकीय जनसख्या वृद्धि (प्रतिशत मे)			
तहसील	1961-1971	1971-81	1981-91	1991-2001
जखनियाँ	-	-	-	-
सैदपुर	16 71	26 93	24 85	-31 73
गाजीपुर	20 67	20 10	26 37	26 29
मुहम्मदाबाद	13 41	32 75	22 96	25 27
जमानियाँ	12 53	21 18	22 56	25 53

स्रोत– जनगणना हस्त पुस्तिका 1961,1971,1981,1991 एव अनन्तिम जनगणना 2001 जनपद गाजीपुर
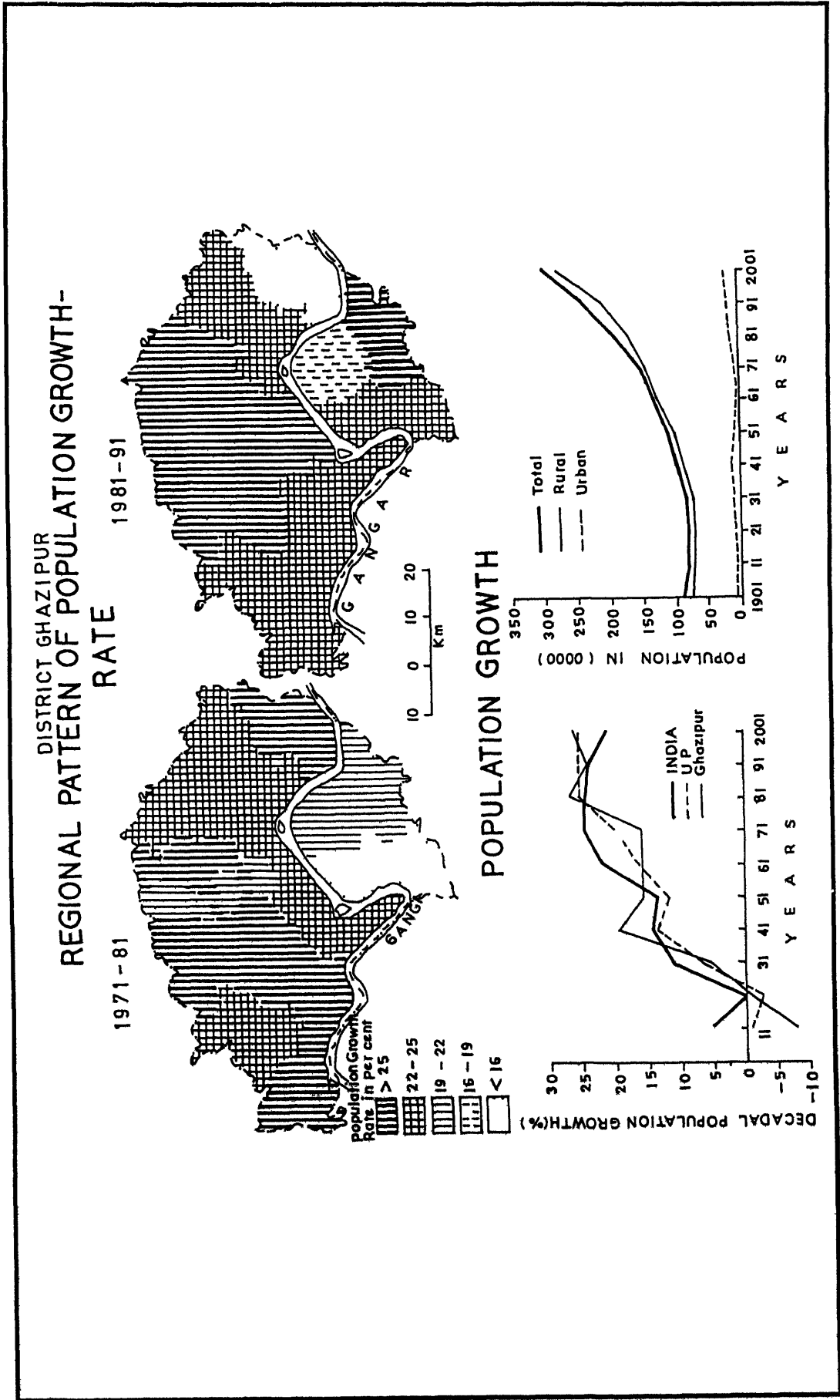
3 2.1 तहसीलवार जनसंख्या वृद्धि-

तालिका 3 2 से स्पष्ट है कि 1961-1971 मे सर्वाधिक जनसख्या वृद्धि गाजीपुर तहसील मे हुई जो 20 67 प्रतिशत दशकीय है। इसके अतिरिक्त सैदपुर मे 16 71, मुहम्मदाबाद 13 41 तथा न्यूनतम जमानियाँ तहसील मे 12 53 प्रतिशत है। 1971-1981 मे सर्वाधिक जनसख्या वृद्धि मुहम्मदाबाद तहसील मे 32 75 प्रतिशत तथा न्यूनतम गाजीपुर तहसील मे 20 10 प्रतिशत थी। सैदपुर एव जमानियाँ तहसीलो की जनसख्या वृद्धि क्रमश 26 93 एव 21 18 प्रतिशत थी। 1981-1991 मे सर्वाधिक जनसख्या वृद्धि गाजीपुर तहसील मे 26 37 प्रतिशत एव न्यूनतम 22 56 प्रतिशत जमानियाँ तहसील मे है सैदपुर एव मुहम्मदाबाद तहसीलो की वृद्धि 24 85 एव 22 96 प्रतिशत थी।

1991-2001 मे सैदपुर तहसील मे-31 73 प्रतिशत की ऋणात्मक वृद्धि दिखाई गयी है इसका कारण सैदपुर तहसील की प्रशासनिक सीमा मे परिवर्तन कर एक नयी तहसील जखनियाँ (1995) बनाई गयी जिसकी वर्तमान जनसख्या 463605 है। फलत ऋणात्मक जनसख्या वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त गाजीपुर मे 26 29, मुहम्मदाबाद मे 25 27 तथा जमानियाँ तहसील मे 25 53 प्रतिशत वृद्धि रही।

3.2 2 विकास खण्ड वार जनसख्या वृद्धि-

1971-1981 की अवधि मे यदि जनपद के विकास खण्डो पर दृष्टि डाले तो सबसे अधिक जनसख्या वृद्धि भाँवरकोल विकास खण्ड मे 27 40 प्रतिशत है तथा न्यूनतम जमानियाँ विकास खण्ड मे 15 00 प्रतिशत है। अन्य विकास खण्डो मे यथा जखनियाँ 26 80 प्रतिशत, मनिहारी 25 60 प्रतिशत, सादात 22 40 प्रतिशत, सैदपुर 27 00 प्रतिशत, देवकली 25 50 प्रतिशत, मरहद 25 70 प्रतिशत, गाजीपुर 23 64 प्रतिशत, करण्डा 22 60 प्रतिशत, कासिमाबाद 22 40 प्रतिशत, बाराचँवर 24 30, मुहम्मदाबाद 24 70 प्रतिशत विरनो 19 50 प्रतिशत, रेवतीपुर 21 70 प्रतिशत तथा भदौरा मे 20 60 प्रतिशत थी। **(तालिका 3 3 मानचित्र सख्या 3 1)**

सन् 1981-1991 मे सर्वाधिक जनसख्या वृद्धि भदौरा विकास खण्ड मे 41 60 प्रतिशत रही तथा न्यूनतम वृद्धि भाँवरकोल विकास खण्ड मे है (13 77 प्रतिशत) अन्य विकास खण्डो मे जखनियाँ 25 40 प्रतिशत, मनिहारी 26 45 प्रतिशत, सादात 23 08 प्रतिशत, सैदपुर 23 38 प्रतिशत, देवकली 24 84 विरनों 28 44 प्रतिशत, मरहद 26 82 प्रतिशत, गाजीपुर 27 25 प्रतिशत, करण्डा 21 85 प्रतिशत, कासिमाबाद 28 62 प्रतिशत, बाराचँवर 24 90 प्रतिशत, मुहम्मदाबाद 24 05 प्रतिशत, जमानियाँ 24 64 प्रतिशत तथा रेवतीपुर 19 52 प्रतिशत, रही। **(तालिका 3.3, मानचित्र सख्या 3.1)**

तालिका 3 3

विकास खण्ड वार जनसख्या वृद्धि (प्रतिशत मे)

विकास खण्ड	जनसख्या वृद्धि 1971-81	जनसख्या वृद्धि 1981-1991
जखनियाँ	26 80	25 40
मनिहारी	25 60	26 45
सादात	22 40	23 08
सैदपुर	27 00	23 38
देवकली	25 50	24 84
बिरनो	19 50	28 44
मरदह	25 70	26 82
गाजीपुर	23 64	27 25
करण्डा	22 60	21 85
कासिमाबाद	22 40	28 62
बाराचँवर	24 30	24 90
मुहम्मदाबाद	24 70	24 05
भाँवरकोल	27 40	13 77
जमानियाँ	15 00	24 64
रेवतीपुर	21 70	19 52
भदौरा	20 60	41 70

स्रोत- जिला जनगणना हस्त पुस्तिका 1971,1981 एव साख्यिकी पत्रिका 2000 जनपद गाजीपुर।

3 3 ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि-

भारत का हृदय गाँवों मे बसता है, जिसको क्षेत्रीय की अपेक्षा स्थलीय दृष्टि से अच्छी तरह समझा जा सकता है। भारत सही अर्थों मे गाँवो का देश है। (सिह आर0एल0 1975) जनपद की ग्रामीण जनसंख्या 1901 मे 7,89,083 थी जो 2001 मे 28,16,348 हो गयी। इस प्रकार 1901 से 2001 की अवधि मे 256 91 प्रतिशत की वृद्धि हुई। जबकि इसी अवधि मे उ प्र की ग्रामीण जनसख्या में 248 95 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

तालिका 3 4 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 1901 से 2001 तक सम्पूर्ण जनसख्या की भाँति ग्रामीण जनसख्या मे भी क्रमिक वृद्धि हुई है। वर्ष 1901-1911के दशक में जनसख्या

मे -9 14 प्रतिशत तथा 1911-1921 के दशक मे -1 38 प्रतिशत वृद्धि रही। 1921 महत्वपूर्ण जनाँकिकी विभाजक वर्ष है क्योकि इसके बाद जनसख्या मे धनात्मक वृद्धि हुई हे। 1921-1931 मे ग्रामीण जनसख्या बढकर 7,34,160 हो गयी जिसकी प्रतिशत वृद्धि 3 83 थी। 1931-1941 के मध्य 19 63 प्रतिशत जनसख्या वृद्धि रही। 1941 से जनसख्या बढकर 1951 मे 10,15,926 हो गयी। 1941-1951 के दशक मे 15 67 प्रतिशत वृद्धि हुई। 1951-1961 के मध्य जनसख्या मे 25 64 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 1961 मे ग्रामीण जनसख्या 12,76,424 हो गयी। 1961-1971 के मध्य ग्रामीण जनसख्या मे 14 58 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 1971 से 1981 के मध्य जनसख्या मे 22 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 1981 मे कुल ग्रामीण जनसख्या 17,90,387 थी जो 1991 मे बढकर 22,38,315 हो गयी। 1981-1991 के मध्य जनसख्या मे 25 01 प्रतिशत वृद्धि हुई। 1991-2001 के मध्य जनसख्या मे 25 82 प्रतिशत वृद्धि हुई। 2001 मे ग्रामीण जनसख्या 28,16,348 रही। **(तालिका 3 4 मानचित्र सख्या 3 1)**

तालिका 3 4

जनपद गाजीपुर ग्रामीण जनसख्या वृद्धि-

वर्ष	जनसख्या	दशकीय परिवर्तन (प्रतिशत मे)
1901	7,89,083	-
1911	7,16,988	-9 14
1921	7,07,036	-1 38
1931	7,34,160	3 83
1941	8,78,268	19 63
1951	10,15,926	15 67
1961	12,76,424	25 64
1971	14,62,654	14 58
1981	17,90,387	22 40
1991	22,38,315	25 01
2001	28,16,348	25 82

स्रोत-जनपद साख्यिकी पत्रिका 2000 एव अनन्तिम जनगणना 2001

ध्यातव्य है कि स्वतन्त्रता के बाद ग्रामीण जनसख्या मे तीव्र वृद्धि हुई है 1951-2001 मे ग्रामीण जनसख्या वृद्धि 177 21 प्रतिशत हुई है।

3 3 1 ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि का क्षेत्रीय प्रारूप-

ग्रामीण जनसख्या वृद्धि के क्षेत्रीय प्रारुप को तालिक 3 5 मे तहसीलवार ग्रामीण जनसख्या वृद्धि एव तालिका 3 6 मे विकास खण्ड वार ग्रामीण जनसख्या वृद्धि को दिखाया गया हे।

तालिका 3 5

जनपद गाजीपुर-तहसीलवार ग्रामीण जनसख्या वृद्धि (प्रतिशत मे)

	दशकीय ग्रामीण जनसख्या वृद्धि (प्रतिशत मे)			
	1961-1971	1971-1981	1981-1991	1991-2001
जखनियाँ	-	-	-	-
सैदपुर	16 55	25 51	24 53	-31 19
गाजीपुर	20 45	22 97	26 33	24 75
मुहम्मदाबाद	9 33	29 92	22 55	22 05
जमानियाँ	12 53	8 56	27 75	25 20

स्रोत-जनगणना हस्त पुस्तिका 1961-1971,1981,1991 एव अनन्तिम जनगणना 2001 जनपद गाजीपुर

3 3.1 1 तहसीलवार ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि–

तालिका 3 5 से स्पष्ट है 1961-1971 के बीच ग्रामीण जनसख्या मे सर्वाधिक वृद्धि गाजीपुर तहसील मे 20 45 प्रतिशत थी। सैदपुर मे 16 55 प्रतिशत,मुहम्मदाबाद मे 9 33 प्रतिशत तथा जमानियाँ मे 12 53 प्रतिशत वृद्धि अकित की गयी। 1971-1981 मे सबसे अधिक वृद्धि मुहम्मदाबाद तहसील मे 29 92 प्रतिशत थी, सबसे कम वृद्धि जमानियाँ तहसील मे 8 56 प्रतिशत थी। सैदपुर की ग्रामीण जनसख्या वृद्धि 25 51 प्रतिशत तथा गाजीपुर की 22 97 प्रतिशत थी।

1981-1991 मे सर्वाधिक वृद्धि जमानियाँ तहसील मे 27 77 प्रतिशत थी जबकि न्यूनतम मुहम्मदाबाद मे 22 55 प्रतिशत थी। सैदपुर एव गाजीपुर तहसील की ग्रामीण जनसख्या वृद्धि क्रमश 24 53 एव 26 33 प्रतिशत रही। 1991-2001 मे सैदपुर तहसील मे -32 19 प्रतिशत वृद्धि का कारण इसकी प्रशासनिक सीमा में परिवर्तन कर जखनियाँ तहसील का बनाया जाना है। 2001 में जखनियाँ तहसील की कुल ग्रामीण जनसख्या 4,53,263 रही। इस अवधि

मे तहसील गाजीपुर की कुल ग्रामीण जनसख्या वृद्धि 24 75 प्रतिशत,मुहम्मदाबाद की 22 05 प्रतिशत तथा जमानियाँ की 25 20 प्रतिशत वृद्धि रही। (**तालिका 3 5**)

3 3.1.2 विकास खण्डवार ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि-

विकास खण्डवार ग्रामीण जनसख्या वृद्धि मे 1961-1971,एव 1971-1981 मे पर्याप्त असमानताए है। (तालिका 3 6) 1961-1971 मे सर्वाधिक वृद्धि 54 78 प्रतिशत बिरनो विकास खण्ड मे एव न्यूनतम 6 88 प्रतिशत मुहम्मदाबाद विकास खण्ड मे है। अन्य विकास खण्डो मे यथा–जखनियाँ मे 12 67 प्रतिशत,मनिहारी मे 10 43 प्रतिशत, सादात 10 28 प्रतिशत, सैदपुर 14 59 प्रतिशत, देवकली 33 70 प्रतिशत, मरहद 13 47 प्रतिशत, गाजीपुर 13 53 प्रतिशत, करण्डा 12 21 प्रतिशत, कासिमाबाद 9 10 प्रतिशत, बाराचँवर 11 95 प्रतिशत, भाँवरकोल 15 35 प्रतिशत, जमानियाँ 9 13 प्रतिशत, रेवतीपुर 11 17 प्रतिशत तथा भदौरा 10 05 प्रतिशत थी। 1971-81 मे सर्वाधिक ग्रामीण जनसख्या वृद्धि भाँवरकोल विकास खण्ड मे 46 48 प्रतिशत रही तथा न्यूनतम वृद्धि रेवतीपुर विकास खण्ड मे 3 73 प्रतिशत थी। इसके अतिरिक्त जखनियाँ 29 39 प्रतिशत,मनिहारी 32 50 प्रतिशत,सादात 29 50 प्रतिशत, सैदपुर 27 07 प्रतिशत, देवकली 12 95 प्रतिशत बिरनो 7 58 प्रतिशत, मरदह 14 28 प्रतिशत, गाजीपुर 6 91, करण्डा 29 59, कासिमाबाद 27 21 प्रतिशत, बाराचँवर 43 75 प्रतिशत, मुहम्मदाबाद 18 80 प्रतिशत, जमानियाँ 29 19 प्रतिशत तथा भदौरा विकास खण्ड मे 10 21 प्रतिशत वृद्धि थी।

1981-91 मे सबसे अधिक जनसख्या वृद्धि भदौरा विकास खण्ड में 41 69 प्रतिशत रही। अन्य विकास खण्डो मे यथा-जखनियाँ 25 41 प्रतिशत, मनिहारी 26 45 प्रतिशत,सादात 24 77 प्रतिशत,सैदपुर 21 75 प्रतिशत, देवकली 24 84 प्रतिशत, बिरनो 28 17 प्रतिशत, मरदह 26 83 प्रतिशत, कासिमाबाद 28 54 प्रतिशत,बाँराचँवर 24 91 प्रतिशत मुहम्मदाबाद 23 19 प्रतिशत, जमानियाँ 23 70 प्रतिशत तथा रेवतीपुर विकास खण्ड मे 19 52 प्रतिशत ग्रामीण जनसख्या वृद्धि रही। (**तालिका 3 6**)

3.4 नगरीय जनसंख्या वृद्धि-

भारत में 3000 बी0सी0 हड़प्पा एव मोहनजोदोड़ो मे नगरीय सभ्यता के प्रमाण मिले है। भारतीय इतिहास में नगरों का प्रादुर्भाव सर्वप्रथम सैन्धव सभ्यता मे हुआ। (श्रीवास्तव के0 सी0 2000) नगरीय जनसख्या मे वृद्धि के महत्वपूर्ण कारक, आर्थिक हैं। नगरो मे रोजगार की सुविधाए जनसख्या को आकर्षित करती हैं। (डॉ0 हुसैन मा0 1998) नगरीय जनसख्या मे वृद्धि

DISTRICT GHAZIPUR
POPULATION GROWTH
(IN 000)
1961-91
Saidpur
Sadat
Jakhania
Manihari
Deokali
Birno
Karanda
Mardah
Ghazipur
Qasimabad
Muhammada bad
Reotipur
Jamania
Barachawar
Bhanwarkol
Bhadaura
RIVER
GANGA
Km
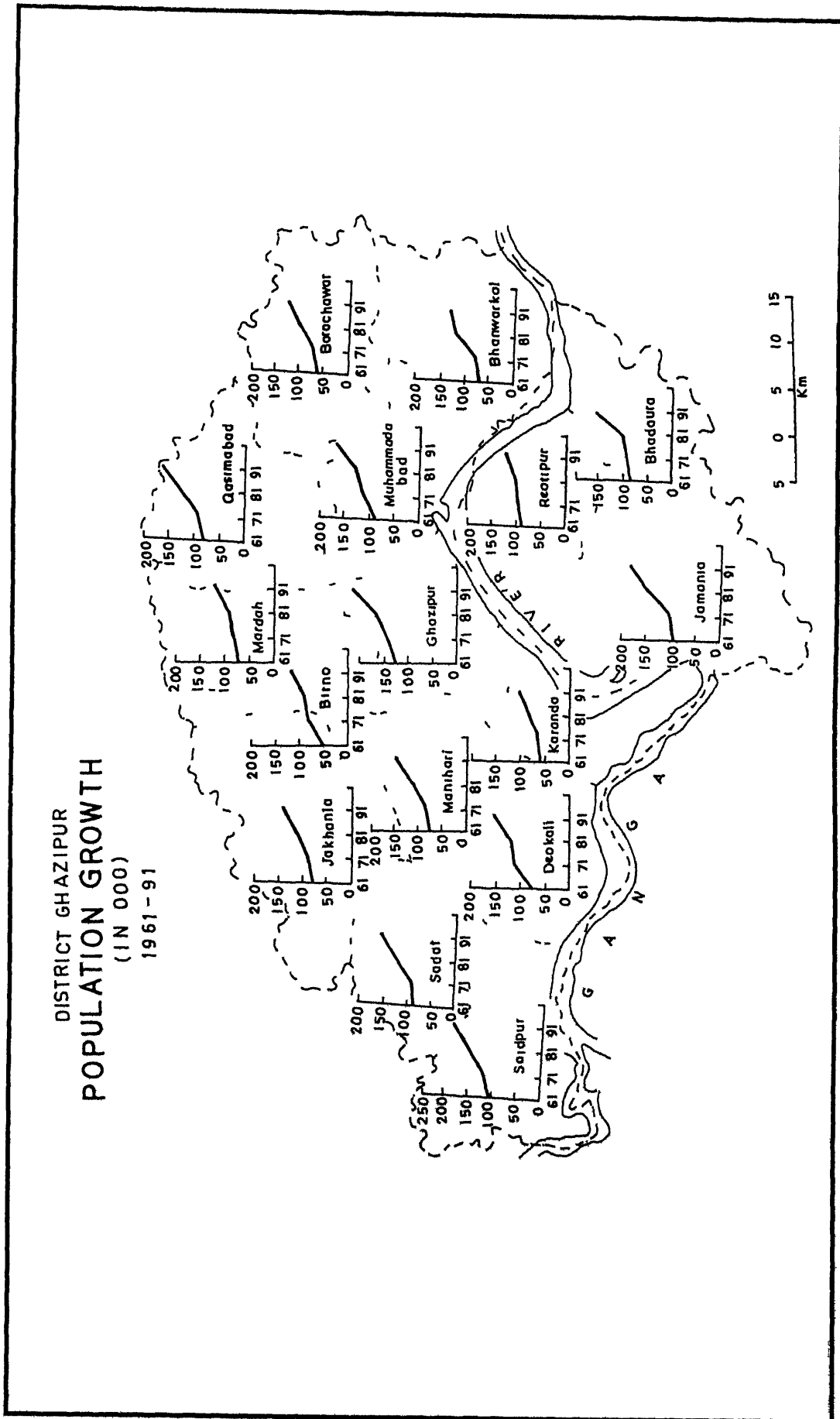
Fig. 3.2

का सबसे प्रभावी कारक ग्रामीण जनसख्या का नगरीय क्षेत्रो की ओर पलायन है। (दुबे के0के0 तथा सिह एम0बी0 2001)

तालिका 3 6

जनपद गाजीपुर विकास खण्डवार ग्रामीण जनसख्या वृद्धि

	दशकीय ग्रामीण जनसख्या वृद्धि (प्रतिशत मे)		
	1961-1971	1971-1981	1981-1991
जखनियाँ	12 67	29 39	25 41
मनिहारी	10 43	32 50	26 45
सादात	10 28	29 50	24 77
सैदपुर	14 59	27 06	21 75
देवकली	33 70	12 95	24 84
बिरनो	54 78	07 58	28 17
मरदह	13 47	14 28	26 83
गाजीपुर	13 53	06 91	27 94
करण्डा	12 21	29 59	21 86
कासिमाबाद	09 10	27 21	28 54
बाराचँवर	11 95	43 75	24 91
मुहम्मदाबाद	06 88	18 80	23 19
भाँवरकोल	15 35	46 48	13 78
जमानियाँ	09 13	29 19	23 70
रेवतीपुर	11 17	03 73	19 52
भदौरा	10 05	10 21	41 69

स्रोत- जनगणना हस्तपुस्तिका 1961, 1971, 1981 तथा साँख्यिकी पत्रिका 2000। जनपद गाजीपुर।

जनपद मे 1901 से 2001 की अवधि मे नगरीय जनसख्या 69,007 से बढकर 2,32,989 हो गयी। अर्थात् 237 63 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 1901 से 1951 तक लगातार नगरीय जनसख्या में वृद्धि होती गयी है। 1951-1961 की अवधि मे नगरीय जनसख्या की वृद्धि ऋणात्मक थी। जिसका मुख्य कारण नगरीय केन्द्रो की परिभाषा मे परिवर्तन है, क्योकि जहाँ 1951 में कुल 12 नगरीय केन्द्र थे वहीं 1961 में मात्र 2 केन्द्र रह गये। शेष 10 केन्द्र ग्रामीण क्षेत्रो में सम्मिलित कर लिये गये। फलत उसमें निवसित जनसख्या मे धनात्मक वृद्धि हुई है। 1961-1971 के दशक मे जनसख्या 52 80 प्रतिशत बढ़ी है। 1971-1981 में नगरीय

जनसख्या वृद्धि 123 60 प्रतिशत थी। 1981-1991 मे यह वृद्धि 15 70 एव 1991-2001 के मध्य जनसख्या मे दशकीय वृद्धि 30 67 प्रतिशत रही है। (तालिका 3 1) (**मानचित्र सख्या 3 1**)

तालिका 3 7

जनपद गाजीपुर तहसीलवार नगरीय जनसख्या वृद्धि (प्रतिशत)

	नगरीय जनसख्या वृद्धि (प्रतिशत मे)			
तहसील	**1961-1971**	**1971-1981**	**1981-1991**	**1991-2001**
जखनियाँ	-	-	-	-
सैदपुर	25 45	95 82	34 46	-18 63
गाजीपुर	22 84	46 76	26 62	34 87
मुहम्मदाबाद	-	108 67	29 76	28 86
जमानियाँ	-	-	-22 35	30 25

स्रोत- जिला जनगणना पुस्तिका 1961, 1971, 1981, 1991 तथा अनन्तिम जनगणना 2001 से परिकलित।

3.4.1 तहसीलवार नगरीय जनसंख्या वृद्धि-

तहसीलवार नगरीय जनसख्या वृद्धि तालिका 3 7 मे प्रदर्शित की गयी है। 1961-1971 मे सैदपुर एव गाजीपुर तहसीलो की नगरीय जनसख्या वृद्धि क्रमश 25 45 एव 22 84 प्रतिशत थी। 1971-1981 मे मुहम्मदाबाद की नगरीय जनसख्या वृद्धि 108 67 प्रतिशत, सैदपुर की 95 82 प्रतिशत तथा गाजीपुर तहसील की 46 76 प्रतिशत थी। 1981-1991 मे जमानिया तहसील की जनसख्या वृद्धि ऋणात्मक थी, जबकि सैदपुर की 34 46 एव गाजीपुर की 26 62 प्रतिशत, मुहम्मदाबाद की 29 76 प्रतिशत थी। 1991-2001 के दशक मे जखनिया तहसील बनाये जाने से सैदपुर की नगरीय जनसख्या मे ऋणात्मक वृद्धि हुई है, क्योकि इस तहसील की 10,342 जनसख्या जखनिया तहसील मे निवसित हो गयी। गाजीपुर तहसील की नगरीय जनसख्या वृद्धि 34 87 प्रतिशत, मुहम्मदाबाद की 28 86 प्रतिशत, तथा जमानियाँ की 30 25 प्रतिशत रही।

उपरोक्त विवेचनो से स्पष्ट होता है कि 1901 से 1951 तक जनपद की नगरीय जनसख्या मे उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। नगरीय परिभाषा मे परिवर्तन के कारण नगर केन्द्रों के घट जाने से 1961 में नगरीय जनसख्या में ऋणात्मक वृद्धि हुई है। पुन 1961 से इसमे धनात्मक वृद्धि का समारम्भ होता है जो 2001 तक जारी है। ग्रामीण जनसख्या का नगरीय केन्द्रों की ओर

पलायन हो रहा है जो एक खतरनाक प्रवृत्ति है। ग्रामीण विकास योजनाओ के सुचारु क्रियान्वयन एव कृषि को उद्योग का दर्जा देकर इस प्रवृत्ति पर रोक लगायी जानी चाहिए।

3 5 धर्म के अनुसार जनसंख्या वृद्धि-

धर्म वह तत्व है जो मनुष्य तथा समाज के अस्तित्व को धारण करता है। यह सामाजिक व्यवस्था का नियामक है। महाभारत मे कहा गया है कि-

धारणात् धर्ममित्याहु धर्मो धारयते प्रजा।
यस्याद्वारण सयुक्त स धर्म इति निश्चय।।
महाभारत कर्णपर्व 109 58

जनसख्या वृद्धि के सन्दर्भ मे धार्मिक कारको से जुड़ा एक और कारक है- मानव जाति। जब धार्मिक वर्ग या सामाजिक वर्ग अल्प सख्यक होता है तो उसकी उत्पादकता का स्तर उच्च हो सकता है (डे0एल0 1968) तथा स्वास्थ्य सुविधाओ मे सुधार से मृत्युदर कम होने से जनसख्या तीव्र गति से बढती है।

तालिका 3 8

जनपदीय गाजीपुर धर्म के अनुसार जनसख्या वृद्धि (प्रतिशत मे)

	धर्म के अनुसार दशकीय जनसख्या वृद्धि (प्रतिशत मे)		
	1961-1971	1971-81	1981-1991
हिन्दू	14 20	26 09	24 23
मुस्लिम	35 31	34 96	24 19
ईसाई	314 09	45 05	11 13
सिख	1 61	130 15	-26 89
बौद्ध	100 00	150 00	516 66
जैन	-57 14	--	--
अन्य	--	--	--

स्रोत- जिला जनगणना हस्त पुस्तिका 1961, 1971, एव उ0प्र0 साख्यिकी डायरी 1993 तथा जिला साख्यिकी पत्रिका 1994

जनपद मे 1961-1971 के बीच ईसाई समुदाय की जनसख्या वृद्धि सर्वाधिक थी। 1961 में इनकी जनसख्या 305 थी जो 1971 में 1263 हो गयी। बौद्ध धर्मानुयायियों की

जनसख्या मे 100 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 1971 मे इनकी कुल जनसख्या 12 थी। हिन्दुओ की जनसख्या मे इस अवधि मे 14 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस समुदाय की जनसख्या 1961 मे 12,12,666 थी जो 1971 मे 1,38,44,934 हो गयी। मुस्लिम जनसख्या मे 1961-1971 की अवधि मे 35 31 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। 1971-1981 के दशक मे सर्वाधिक वृद्धि बौद्धो मे 150 00 प्रतिशत है। इसका मुख्य कारण आप्रवास है, क्योकि समीपवर्ती सारनाथ इत्यादि बौद्ध धर्म स्थल इनके आकर्षण का प्रमुख कारण है। इस अवधि मे सिख समुदाय की जनसख्या मे 130 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। ईसाईयो की जनसख्या मे 45 05 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। इस वृद्धि का प्रमुख कारण दलित लोगो द्वारा धन के लालच मे धर्म परिवर्तन है। हिन्दुओ की जनसख्या वृद्धि 26 09 एव मुस्लिम समुदाय की 34 96 प्रतिशत थी।

1981-1991 मे सर्वाधिक वृद्धि बौद्धो मे 516 66 प्रतिशत रही। सिखो की जनसख्या मे ऋणात्मक वृद्धि- 26 89 प्रतिशत रही जिसका कारण प्रवास हे। ईसाइयो की जनसख्या मे 11 13 प्रतिशत वृद्धि रही। मुस्लिमो की जनसख्या मे 24 19 प्रतिशत एव हिन्दुओ की जनसख्या मे 24 23 प्रतिशत वृद्धि रही।

3 6 जनसंख्या परिवर्तन निर्देशांक-

दशकीय जनसख्या वृद्धि की भाँति जनसख्या वृद्धि का ज्ञान जनसख्या परिवर्तन निर्देशाक भी कराता है। यह विधि प्रदेश एव देश से तुलना करने मे सर्वाधिक उपयोगी प्रमाणित होती है। अन्तर्दशकीय जनसख्या परिवर्तन ज्ञात करने के निमित्त इस विधि का प्रयोग (माकहाउस 1972) 1971 तथा (महतो0के0 1974) द्वारा किया गया है। इसे निम्न सूत्र से परिकलित करते है-

$$\text{ज0प0नि0} = \frac{\text{ज1}}{\text{ज2}}$$

ज0प0नि0 = जनसख्या परिवर्तन निर्देशाक

ज1 = जनस0 1991

ज2 = जनस0 1981

जनपद गाजीपुर का जनस0 परिवर्तन निर्देशाक 1981-1991 मे 1 24 प्राप्त हुआ तथा 1991-2001 में 1 26 रहा। जबकि उ0प्र0 का ज0प0 नि0 1981-1991 में 1 25 एव 1991-2001 में 1 18 रहा। 1981-1991 में विकास खण्डों में सर्वाधिक जनसख्या परिवर्तन निर्देशाक बिरनों विकास खण्ड में 2 28 है तथा सबसे कम भाँवरकोल विकास खण्ड मे 1 13

रहा। अन्य विकास खण्डो मे जखनियाँ 1 25, मनिहारी 1 26, सादात 1 23, सैदपुर 1 23, देवकली 1 24, गाजीपुर 1 27, करण्डा 1 21, कासिमाबाद 1 28, बाराचँवर 1 24, मुहम्मदाबाद 1 24, जमानियाँ 1 24 तथा भदौरा मे 1 41 रहा। (**तालिका 3 9**)

3 7 स्थानीयकरण गुणांक-

यद्यपि उपरोक्त विधिया जनसख्या के क्षेत्रीय प्रतिरूप को अभिव्यक्त करती है फिर भी यदि प्रत्येक विकास खण्ड की जनसख्या वृद्धि को जनपद की जनसख्या वृद्धि के साथ तुलनात्मक रूप से अध्ययन किया जाय तो ज्यादा समीचीन है। इस विधि को स्थानीयकरण गुणाक कहते हे। इसका प्रयोग डॉ0 पाण्डेय ओ0 (1941) तथा शास्त्री जी एम (1942) द्वारा किया गया। इसका अध्ययन निम्न सूत्र की सहायता से किया जाता है-

$$\text{स्थानीयकरण} = \frac{\dfrac{\text{ज}_1 - \text{ज}_2}{\text{ज}_2} \times 100}{\dfrac{\text{प}_1 - \text{प}_2}{\text{प}_2} \times 100}$$

ज_1 = विकास खण्ड की जनसख्या 1991

ज_2 = विकास खण्ड की जनसख्या 1981

प_1 = जनपद की जनसख्या 1991

प_2 = जनपद की जनसख्या 1981

यदि स्थानीयकरण गुणाक का मान एक (1) प्राप्त होता है तो विकास खण्ड की जनसख्या वृद्धि का प्रतिशत जनपद के समकक्ष होता है। एक से अधिक अथवा कम मान होने पर विकास खण्ड मे जनसख्या वृद्धि अधिक अथवा कम होती है। विकास खण्डो मे एक से अधिक स्थानीयकरण गुणाक वाले विकास खण्डो की सख्या 11 है। ये विकास खण्ड जखनिया 1 04, मनिहारी 1 08, देवकली 1 02, बिरनो 1 17, मरदह 1 10, गाजीपुर 1 12, करण्डा 1 17, कासिमाबाद 1 02, जमानियाँ 1 01 तथा भदौरा का स्थानीयकरण गुणाक 1 71 है।

एक (1) से कम स्थानीयकरण गुणाक वाले विकास खण्डो की सख्या 5 है। जिसमे सादात का 0 95, सैदपुर का 0 96, करण्डा का 0 90, मुहम्मदाबाद का 0 99 तथा भाँवरकोल का स्थानीयकरण गुणाक 0 56 रहा है।

3.8 स्थानीयकरण लब्धि-

जनसख्या वृद्धि के दो प्रकार के प्रतिशत सम्बन्ध को स्थानीयकरण लब्धि कहा जाता है। (चोर्ले एव हैगेट 1970) ने इस विधि का प्रयोग किया है। वस्तुत स्थानीयकरण लब्धि किसी प्रदेश विशेष मे जनसख्या के सापेक्षिक केन्द्रीयकरण का घोतक है। स्थानीयकरण लब्धि के 1 00 होने का तात्पर्य होता है कि किसी भी क्षेत्र मे जनसख्या वृद्धि का प्रतिशत एव आधार वर्ष की जनसख्या का प्रतिशत एक समान है।

1 00 मान से कम होने पर जनसख्या वृद्धि जनसख्या वितरण के प्रतिशत से कम होती है जैसा कि इस जनपद मे नही है। यदि मान 1 00 से अधिक है तो क्षेत्र की जनसख्या वृद्धि का प्रतिशत आधार वर्ष की जनसख्या प्रतिशत से अधिक है। स्थानीयकरण लब्धि का मान निम्न सूत्र से परिकलित किया गया है-

$$\text{स्थानीयकरण लब्धि} = \frac{\frac{ज_1 - ज_2}{ज_2} \times 100}{\frac{ज_2}{प_2} \times 100}$$

ज1 = विकास खण्ड की जनसख्या 1991

ज2 = विकास खण्ड की जनसख्या 1981

प2 = जनपद के आधार वर्ष की जनसख्या 1981

तालिका 3 9

जनसख्या वृद्धि (1981-91)

विकास खण्ड	जनसख्या परिवर्तन निर्देशाक	स्थानीयकरण गुणाक	स्थानीयकरण लब्धि
जखनियाँ	1 25	1 04	4 23
मनिहारी	1 26	1 08	4 52
सादात	1 23	0 95	3 56
सैदपुर	1 23	0 96	3 00
देवकली	1 24	1 02	3 94
बिरनो	2 28	1 17	6 07
मरदह	1 26	1 10	5 36
गाजीपुर	1 27	1 12	3 15
करण्डा	1 21	0 90	5 08
कासिमाबाद	1 28	1 17	4 25
बाराचँवर	1 24	1 02	5 58
मुहम्मदाबाद	1 24	0 99	3 39
भाँवरकोल	1 13	0 56	2 24
जमानियाँ	1 24	1 01	3 13
रेवतीपुर	1 19	0 80	3 63
भदौरा	1 42	1 71	7 48

स्रोत- जिला जनगणना पुस्तिका 1981, 1991 से परिकलित।

जनपद के किसी विकास खण्ड मे स्थानीयकरण लब्धि मान 1 00 से कम नही है अर्थात् सभी विकास खण्डो मे जनसख्या वृद्धि का प्रतिशत 1981 से अधिक है। सबसे अधिक मान भदौरा विकास खण्ड मे 7 48 है तथा सबसे न्यूनतम भाँवरकोल मे 2 24 है। जनपद के अन्य विकास खण्डो की स्थानीयकरण लब्धि यथा- जखनियाँ 4 23, मनिहारी 4 52, सादात 3 56, सैदपुर 3 00, देवकली 3 94, बिरनो 6 07, मरदह 5 36, गाजीपुर 3 15, करण्डा 5 08, कासिमाबाद 4 25, बाराचँवर 5 58, मुहम्मदाबाद 3 39, जमानियाँ 3 13 तथा रेवतीपुर विकास खण्ड की स्थानीयकरण लब्धि 3 63 रही।

DISTRICT GHAZIPUR
POPULATION PROJECTION
PROJECTED POP
POPULATION IN LAKH
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0
1901 11 21 31 41 51 61 71 81 91 2001 11 21 31
YEARS
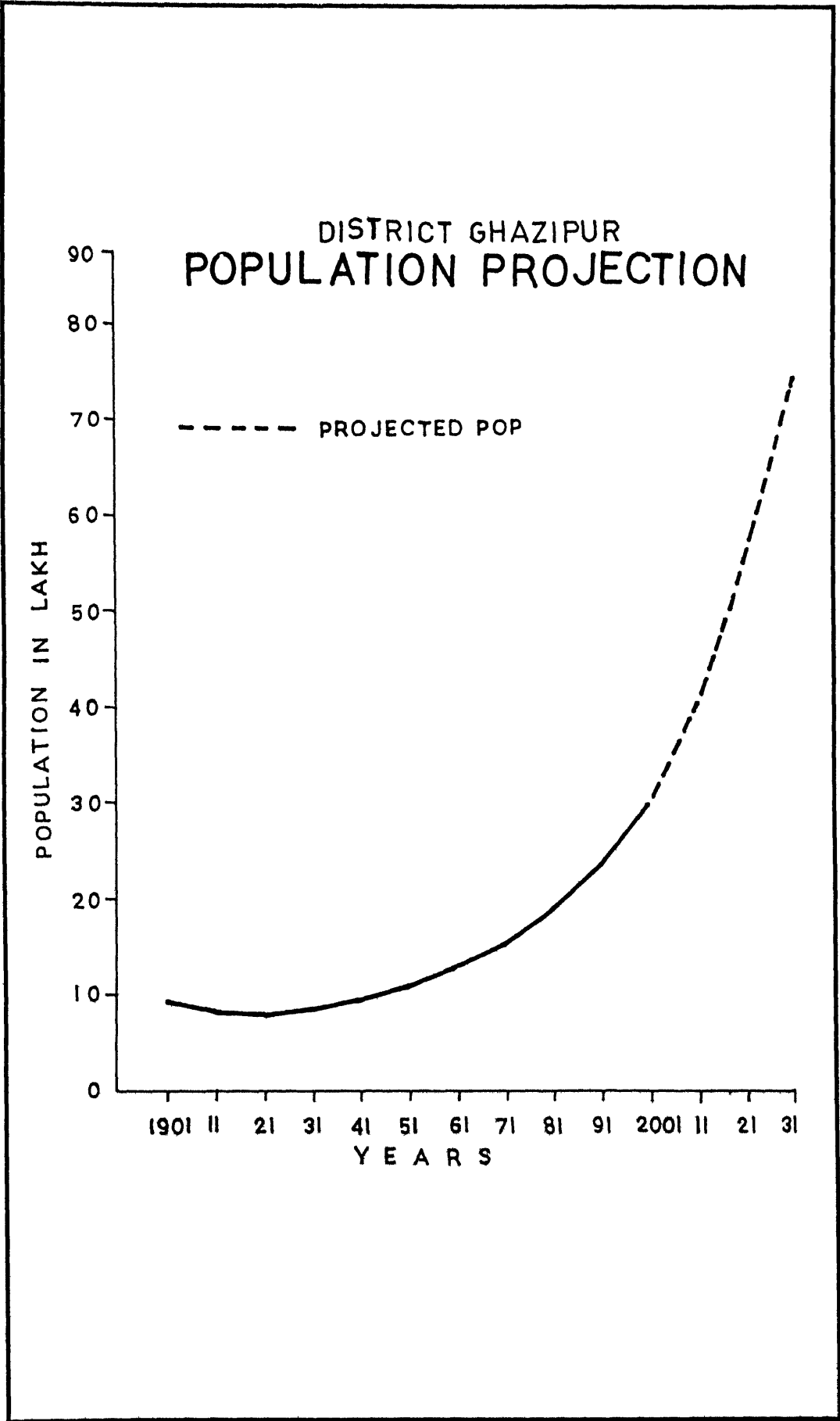
Fig. 3.3

3 9 जनसंख्या प्रक्षेपण-

मानव ससाधन के समुचित अध्ययन हेतु क्षेत्र विशेष का विगत जनसख्या सम्बन्धी तत्वो के विश्लेषण के साथ-साथ उसके भावी स्वरूप का अध्ययन भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्योकि इसकी जनसख्या नीति-नियोजन मे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जनसख्या वृद्धि के विगत अध्ययनो के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह वृद्धि आगे भी जारी रहेगी। जनसख्या प्रक्षेपण को निम्न सूत्र से परिकलित किया गया है—

$$\text{जनसख्या प्रक्षेपण} = \text{वास्तविक जनसख्या} \left(\frac{1 + \text{दर}}{100}\right)^{\text{समय}}$$

तालिका 3 10

जनपद गाजीपुर जनसख्या प्रक्षेपण

वर्ष	प्रक्षेपित जनसख्या
2001	30,49,337*
2001	40,73,914
2021	55,40,523
2031	75,37,311

* वास्तविक जनसख्या

तालिका 3 10 एव चित्र (3 3) से स्पष्ट है कि जनपद की जनसख्या 2031 तक 75,37,311 होने का अनुमान है। परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रभावती क्रियान्वयन से इस बढती हुई जनसख्या के बेलगाम काफिले को रोका जाना चाहिए।

REFERENCES

1 Bansal S C (1999) 'Advanced Geography of India' (in Hindi) Minakshi Prakashan Mereth P 437

2 Chandana R C (1997) 'Population Geography' (in Hindi) P 86 Kalyani Publishers B-I\1292 Rajendra Nagar, Ludhiyana

3 Census of India (2001) 'Series 10 U P Provisional Population Totals Paper I of 2001

4 District Census Handbook (1951) Ghazipur

5 Hussain M (1999) 'Human Geography' (in Hindi) Rawat Publications Jawahar Nagar Jaipur P 74

6 Hussain M (1998) 'Urbanisation in India Appraisal' National Geographical Journal of India N G S I B H U P 1

7 Omprakash (1973) 'Population Geography of U P' Published Ph D Thesis B H U P 16

8 Provisional Population Totals District Ghazipur U P Tables I and II 2001

9 Singh R L and Singh K N (1975) 'Readings in Rural Settlement Geography' N G S I B H U

10 Singh M B and Dubey K K (2001) 'Jansankhya Boogole' Rawat Publications Jaipur and New Delhi P 54

11 Srivastava K C (2000) 'Prachin Bharat Ka Itihas Tatha Sanskriti' United Book Depot 21 University Road, Allahabad P 31

12 Thompson W S (1951) Population Progress In Far East London P 54

❑ **अध्याय 4**

जन्मदर, मृत्युदर एवं जनसंख्या-स्थानान्तरण

जन्मदर, मृत्युदर एव जनसख्या स्थानान्तरण, जनसख्या वृद्धि के तीन मौलिक घटक के रूप मे स्वीकार्य है। इन मौलिक घटको मे परिवर्तन ही जनसख्या वृद्धि मे परिवर्तन लाता है। इस प्रकार जनसख्या मे ह्रास एव वृद्धि इन तत्वो से विशेष रूप से प्रभावित होते है। जन्मदर एव मृत्युदर जनसख्या अध्ययन के प्रमुख तत्व है ये तत्व जनसख्या वृद्धि एव जनसख्या ह्रास के बीच गत्यात्मक सामञ्जस्य स्थापित करते है। जनसख्या वृद्धि एक पक्षीय प्रक्रिया नही है, वस्तुत जनसख्या वृद्धि जन्मदर एव मृत्युदर के बीच स्थापित एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। (बोग डी 1969)

4 1 जन्मदर को प्रभावित करने वाले कारक-

जन्मदर को प्रभावित करने वाले निम्न कारक है-

4 1 1 जैव शारीरिक कार्य-

प्रजाति, स्वास्थ्य, उर्वरता (स्त्री के जन्म देने की क्षमता)

4.1.2 जनांकिकी कारक-

आयु सरचना, लिंगानुपात, ग्रामीण-नगरीय आवास, क्रियाशील व अक्रियाशील स्त्रियाँ।

4.1.3 सामाजिक कारक-

विवाह की आयु, वैवाहिक जीवन की अवधि, धार्मिक नियत्रण, शिक्षा, स्त्री की सामाजिक स्थिति, परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण।

4 1.4 आर्थिक कारक-

आय तथा जीवन स्तर, भोजन का प्रकार।

4 1 5 राजनैतिक कारक-

जनसख्या नीतियाँ तथा परिवार कल्याण कार्यक्रम के लिए किये गये प्रयास, आवास, प्रवास की नीति।

4.1 6 वातावरण के कारक-

अतिउच्च अथवा अतिनिम्न तापक्रम आर्द्रता व शुष्कता।

4 1.7 धार्मिक कारक-

जन्मदर पर नियत्रण के प्रति धार्मिक दृष्टिकोण।

वस्तुत जन्मदर को प्रभावित करने वाले उपरोक्त सामाजिक–आर्थिक कारको के अतिरिक्त अनेक कारक व्यक्तिगत एव मनोवैज्ञानिक है जिनका परिस्थिति विशेष मे अवश्यम्भावी प्रभाव होता है।

जन्मदर को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण जैव शारीरिक कारक उर्वरता अर्थात् स्त्री के जन्म देने की क्षमता है। सामान्यत यह 14-44 वर्ष की आयु तक है। पुरुषो मे सतानोत्पत्ति की क्षमता 8 वर्ष से प्रारम्भ होकर मृत्यु पर्यन्त चलती हैं। स्वास्थ्य तथा मानसिक स्वास्थ्य होने की दशा मे उत्पादकता उच्च होगी, परन्तु वस्तुस्थिति इसके विपरीत है। क्योकि खराब स्वास्थ्य से मर्त्यता उच्च होगी, फलत लोगो पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है।

जनाकिकी कारकों मे आयु सरचना से विवाहित जीवन काल कारक घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध है क्योकि विवाहित जीवन काल जितना लम्बा होगा उत्पादकता दर उतनी ही उच्च होगी। भारत मे बाल विवाह के प्रचलन से प्रभावशाली विवाहित जीवन काल तथा उर्वरता में धनात्मक सबध है। (स्मिथ 1983)

जन्मदर के सामाजिक नियत्रकों मे महत्वपूर्ण कारक है विवाह के समय आयु, जिस समाज मे बाल विवाह है, वहा उत्पादकता दर उच्च है। भारत मे यदि विवाह के लिए कानूनी रूप से व्यवहृत 18 वर्ष की उम्र मे बालाओं की शादी की जाय तो निश्चित रूप से जन्मदर एक तिहाई कम हो जायेगी। शिक्षा-विशेषत स्त्री शिक्षा का जन्मदर पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है।

हालाकि सामान्यतया शिक्षा जन्मदर को नीचे लाने मे सहायक है, फिर भी शिक्षा का एक क्रातिक स्तर होता है। भारत मे लगभग 12 वर्ष की स्कूली शिक्षा को क्रातिक स्तर माना गया हं। भारतीय प्रत्यादर्श के 16 वे चक्र के सर्वेक्षण मे यह पाया गया है कि 12 वर्ष की शिक्षा प्राप्त स्त्रियो के औसतन 2 बच्चे, 10 वर्ष की शिक्षा वाली स्त्रियो 4 6 बच्चे, 8 वर्ष की शिक्षा वाला स्त्रियो के 5 बच्चे, 5 वर्ष की शिक्षावाली स्त्रियो के 6 6 बच्चे होते है।

धार्मिक कारको मे एक मूल अवधारणा यह है कि जब धार्मिक वर्ग अल्प सख्यक होता है तो उसकी जन्मता उच्च होती है। भारत के अल्पसख्यक वर्गों विशेषत मुसलमानो मे यह प्रवृत्ति पायी जाती है। भारत मे यद्यपि मुस्लिम एव हिन्दू एक ही वातावरण मे रहते है लेकिन उनके जन्मदर मे अतर है जो इस्लाम धर्म की मान्यता के कारण है क्योकि उनमे कृत्रिम नियत्रण पर रोक है। उन सामाजिक वर्गों मे जहा परिवार कल्याण कार्यक्रमो के प्रनि भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण है उनके जन्मदर मे भी भिन्नता है। उदाहरणत भारत मे अनुसूचित जाति, जनजाति, हिन्दू, मुसलमान तथा अन्य धार्मिक वर्गों की जन्म दर मे विभिन्नता है। प्राचीन समय मे ब्रह्मचर्य के पालन से इस पर नियत्रण किया जाता था। वर्तमान समय मे विभिन्न गर्भ निरोधको के प्रयोग से जन्मदर पर नियत्रण किया जा सकता है।

भारतीय समाज मे पुत्र के बिना परिवार अपूर्ण माना जाता है, इसके लिये उन पर सामाजिक एव मनोवैज्ञानिक दबाव होता है, फलत पुत्र प्राप्ति की जीजिविषा जनसख्या वृद्धि के लिए उत्तरदायी बन जाती है।

जन्मदर के नियत्रण मे परिवार कल्याण कार्यक्रमो का प्रभाव बढ रहा है। भारत मे विगत जनसख्या नीतियो का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। फलत जनसख्या वृद्धि दर 1 93 वार्षिक हो गयी है (2001) विगत जनसख्या नीतियो के नकारात्मक बिन्दुओं को ध्यातव्य रखते हुए राष्ट्रीय जनसख्या नीति 2000 घोषित की गयी है। नवीन जनसख्या नीति मे 2045 तक स्थिर जनसख्या प्राप्ति का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए शिशु स्वास्थ्य, मातृत्व स्वास्थ्य, एव अनेक बुनियादी परिवार कल्याण कार्यक्रम सुविधाओं के विस्तरण की योजना है। प्रधानमत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की अध्यक्षता मे सौ करोड़ की आरम्भिक पूजी से राष्ट्रीय जनसख्या स्थिरता कोष की भी स्थापना की गयी है। निकट भविष्य में इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। जन्मदर नियत्रक आर्थिक कारको मे परिवार का आय स्तर प्रमुख है। परिवार के आय स्नर तथा जन्मदर मे ऋणात्मक सह सबध पाया जाता है। जिन परिवारो मे आय स्तर उच्चतम है उनकी जन्मदर कम है। निम्न आय वाले परिवारो में जहा बच्चे को पूजी समझा जाता है जन्मदर उच्च है।

तालिका 4 1

गाजीपुर जनपद मे जन्मदर (1901 से 1991) 1000 जनसख्या पर

दशक	जनपद	ग्रामीण	नगरीय
1901-1911	29 80	29 67	15 10
1911-1921	36 60	37 75	17 32
1921-1931	35 02	37 95	17 50
1931-1941	31 41	31 87	24 51
1941-1951	31 20	31 21	24 24
1951-1961	35 32	33 89	23 28
1961-1971	33 10	34 10	22 52
1971-1981	33 03	33 92	21 45
1981-1991	31 33	33 57	20 99

स्रोत– जनगणना पुस्तिका एव जिला चिकित्सालय गाजीपुर।

4 2 जनपद गाजीपुर में जन्मदर–

तालिका 4 1 से स्पष्ट है कि जन्मदर मे 1901-1911, 1911-21, 1921-31, 1931-41, 194151, 1951-61, 1961-71, 1971-81, तथा 1981-91 मे जन्मदर क्रमश 29 80, 36 60, 35 02, 31 41, 31 20, 35 32, 33 10, 33 03 तथा 31 33 है। स्पष्ट है कि 1901 से 1921 तक सतत् वृद्धि हुई है जबकि 1931-1951 तक जनसख्या जन्मदर मे ह्रास की प्रवृत्ति है। पुन 1951-61 के दशक मे जन्मदर मे वृद्धि देखी जा सकती है। 1961 के बाद जन्मदर मे लगातार कमी आ रही है निश्चित रूप से यह कमी जनपद के सामाजिक आर्थिक विकास एव परिवार कल्याण कार्यक्रम के क्रियान्वयन की सूचक हे। जन्मदर की यही प्रवृत्ति ग्रामीण एव नगरीय जनसख्या मे दृष्टव्य होती है। ग्रामीण जन्मदर- 1901-11, 1911-21, 1921-31, 1931-41, 1941-51, 1951-61, 1961-71, 1971-81, एव 1981-91 मे क्रमश 29 67, 37 75, 37 95, 31 87, 31 21, 33 89, 34 10, 33 92 तथा 33 57 है। उपरोक्त अवधि मे नगरीय जन्मदर क्रमश 15 10, 17 32, 17 50, 24 51, 24 24, 23 28, 22 52, 21 45 तथा 20 99 प्रति हजार रही। स्पष्टत जन्मदर में कमी की प्रवृत्ति शिक्षा, स्वास्थ्य एत्र परिवार कल्याण कार्यक्रमों की

क्रियाशीलता का परिणाम है। विशेषकर स्त्री शिक्षा एव बाल विवाह के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण ने जन्म दर को प्रभावित किया है। (**तालिका 4 1 एव चित्र 4 1**)

4.3 मृत्युदर एवं निर्धारक कारक-

जनसख्या वृद्धि के कारको मे मृत्युदर महत्वपूर्ण प्रभावकारी कारक है। ऐतिहासिक दृष्टि से मृत्यु दर ने जनसख्या वृद्धि के निर्धारण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मृत्युदर को प्रभावित करने वाले कारक स्थान एव समयानुसार परिवर्तनशील होते है। ये कारक जनसाख्यिकीय, सामाजिक एव आर्थिक है-

4 3 1 जनसाख्यिकी कारक-

आयु सरचना, लिंगानुपात, नगरीकरण की मात्रा।

4 3.2 सामाजिक कारक-

बाल हत्या, विधवा पुनर्विवाह, स्वास्थ्य सेवाए, शिक्षा तथा धार्मिक विश्वास।

4 3.3 आर्थिक कारक-

आय स्तर एव अर्थव्यवस्था का प्रकार।

4 3.4 अन्य कारक-

युद्ध, सक्रामक बीमारिया, दुर्भिक्ष, प्राकृतिक आपदा आदि।

किसी जनसख्या की मृत्युदर निर्धारण मे आयु सरचना सबसे महत्वपूर्ण कारक है। सामान्यत बालक जैसे-जैसे बढ़ता है, मृत्यु का खतरा घटता जाता है परन्तु प्रौढ़ावस्था के बाद आयु वृद्धि के साथ मौत का खतरा बढ़ता जाता है। अत जिन देशो मे प्रौढ़ व वृद्ध अधिक होते हैं, वहा मृत्युदर अधिक होती है। विकसित देशों की मृत्युदर का यह प्रमुख कारण है। कैंसर, हृदय गति अवरोध आदि का संबध भी इसी आयुवर्ग से है।

यह स्वीकार्य है कि पुरुषो तथा स्त्रियो की मृत्यु दर अलग-अलग होती है क्योकि दोनो लिगो मे रोगो से लड़ने की क्षमता अलग-अलग होती है, प्रत्येक आयुवर्ग मे स्त्रियो की मर्त्यता अल्प है। यह एक जनाकिकी तथ्य है कि स्त्रियो की जीवन सभाव्यता पुरुषो से अधिक है लगभग सभी देशो मे पुरुष मर्त्यता स्त्रियो से कही अधिक है। (स रा 1953 पृष्ठ 48) भारत मे जीवन की सम्भाव्यता पुरुषो की 59 8 तथा स्त्रियो की 61 7 है।

ऐतिहासिक काल मे ग्राम्य क्षेत्रो की अपेक्षा नगरीय क्षेत्रो मे मृत्युदर उच्च थी। यह अतराल अब कम हो गया है बल्कि कही-कही अल्प हो गया है। विकासशील देशो मे नगरीय मृत्युदर ग्रामीण मृत्युदर से कम है, क्योकि नगरीय क्षेत्रो मे स्वास्थ्य सुविधाओं का पर्याप्त विकास हुआ है। यद्यपि नगरीय विकास के प्रथम स्तर पर जब ग्रामीण जनसख्या प्रवासित होकर नगरो मे जाती ह तो कदाचित् वातावरण के साथ अनुकूलन न होने एव सक्रमित बीमारियो के कारण मृत्यु दर अधिक होती है। नगरीय विकास की क्रमिक अवस्थाओं मे स्वास्थ्य सेवाओं मे सुधार इत्यादि से मृत्यु दर कम होने लगती है।

मृत्यु दर निर्धारक सामाजिक कारको मे बालहत्या, विधावा पुनर्विवाह पर रोक, स्वास्थ्य साक्षरता, धार्मिक मान्यताए प्रमुख है। स्वास्थ्य सबधी सुविधाओं की उपलब्धि मे अतर के कारण ही विकसित एव विकासशील देशो की मृत्युदर मे अतर पाया जाता है। प्रति डाक्टर पर जनसख्या मात्रा और मृत्युदर मे सीधा धनात्मक सह सबध है। पोषण, आवास, स्वच्छता सबधी सुविधाये भी इससे सम्बद्ध है। इन सुविधाओं की सार्वत्रिक पहुच के लिए साक्षरता महत्वपूर्ण तथ्य है। क्योकि साक्षरता बढने के साथ ही इन सुविधाओं की जानकारी होने से मृत्युदर मे कमी आने लगती है।

मृत्युदर निर्धारित करने वाले आर्थिक कारको मे प्रति व्यक्ति आय महत्वपूर्ण है क्योकि इस पर स्वास्थ्य सबधी सुविधाओं की उपलब्धता निर्भर है। अमीर- गरीब के बीच मृत्युदर मे अतर आय मे असमानता के कारण है। जब स्वास्थ्य सुविधाए सर्व सुलभ हो जाती है तो मृत्यु दर की असमानता मे कमी आती है। औद्योगिक अर्थव्यवस्था में प्रदूषण, दुर्घटना इत्यादि के कारण कृषीय समाज की अपेक्षा मृत्यु दर उच्च होती है।

उपरोक्त कारको के अतिरिक्त प्राकृतिक- आपदा, युद्ध, महामारी, खाद्य पदार्थों की कमी इत्यादि के कारण भी मृत्यु दर उच्च होती है।

4 4 जनपद गाजीपुर में मृत्यु दर-

जनपद गाजीपुर की मृत्युदर प्रति हजार सगणित की गयी है जो तालिका 4 2 मे प्रदर्शित है। तालिका से स्पष्ट है कि 1901-11 में मृत्युदर 31 45 थी जो 1911-21 मे 37 10 हो

तालिका 4 2

जनपद गाजीपुर मृत्युदर (1901-1991)

वर्ष	जनपद	ग्रामीण	नगरीय
1901-1911	31 45	32 42	10 51
1911-1921	37 10	35 86	13 10
1921-1931	31 23	34 37	11 98
1931-1941	27 45	27 42	10 97
1941-1951	19 21	24 25	10 49
1951-1961	18 12	22 95	10 52
1961-1971	14 22	19 32	10 21
1971-1981	7 72	15 15	8 92
1981-1991	7 24	13 93	8 54

स्रोत- वही तालिका 4 1

गयी क्योकि 1915-18 तक के देशव्यापी अकाल, प्लेग, महामारी एव मलेरिया के कारण मृत्युदर मे वृद्धि हुई है। किन्तु 1921 के बाद मृत्युदर मे अनवरत कमी आयी है। 1921-31, 1931-41, 1941-51, 1951-61, 1961-71 1971-81, 1981-91, मे क्रमश 31 23, 27 45, 19 21, 18 12, 14 22, 7 72 तथा 7 24 रही। इस क्रमिक गिरावट का प्रमुख कारण स्वास्थ्य सुविधाओं का तीव्र प्रसार है। इस अवधि मे सघन टीकाकरण, इत्यादि कार्यक्रमो द्वारा सक्रामक रोगों पर पूर्ण नियत्रण कर लिया गया है। **(चित्र 4 1)**

जनपद में ग्रामीण मृत्युदर 1901-11 मे 32 42 थी 1911-21 मे मृत्युदर 35 86 हो गयी क्योकि प्राकृतिक आपदाओं के कारण मृत्युदर मे वृद्धि हुई है। 1921 के बाद ग्रामीण मृत्युदर मे लगातार कमी आयी है। 1921-31, 1931-41, 1941-51, 1951-61, 1961-71, 1971-81, 1981-91 में ग्रामीण मृत्युदर क्रमश 34 27, 27 42, 24 25, 22 95, 19 32, 15 15 तथा 13 93 है जिसका प्रमुख कारण स्वास्थ्य सुविधाओं का विकास है। **(चित्र 4 1)**

नगरीय मृत्युदर 1901-11 मे 10 51 थी जो 1911-21 मे 13 10 हो गयी क्योंकि विपदाओं के कारण मृत्युदर मे वृद्धि हुई। 1921 के बाद मृत्युदर मे निरन्तर कमी आयी है। 1921-31, 1931-41, 1941-51, 1951-61, 1961-71, 1971-81, 1981-91

DISTRICT GHAZIPUR
BIRTH & DEATH RATE OF POPULATION
TOTAL
BIRTH DEATH RATE (1000)
BIRTH RATE
DEATH RATE
YEARS
URBAN
BIRTH DEATH RATE(1000)
BIRTH RATE
DEATH RATE
YEARS
RURAL
BIRTH/DEATH RATE(1000)
BIRTH RATE
DEATH RATE
YEARS
SAMPLE VILLAGE 2002
BIRTH DEATH RATE (1000)
BIRTH RATE
DEATH RATE
Ahirpurwa
Kishunpur
Thanipur
Dhuwarjun
Pawata
Shikarpur
Saraimuradali
Saadatpur
Hardia
Hurmujpur
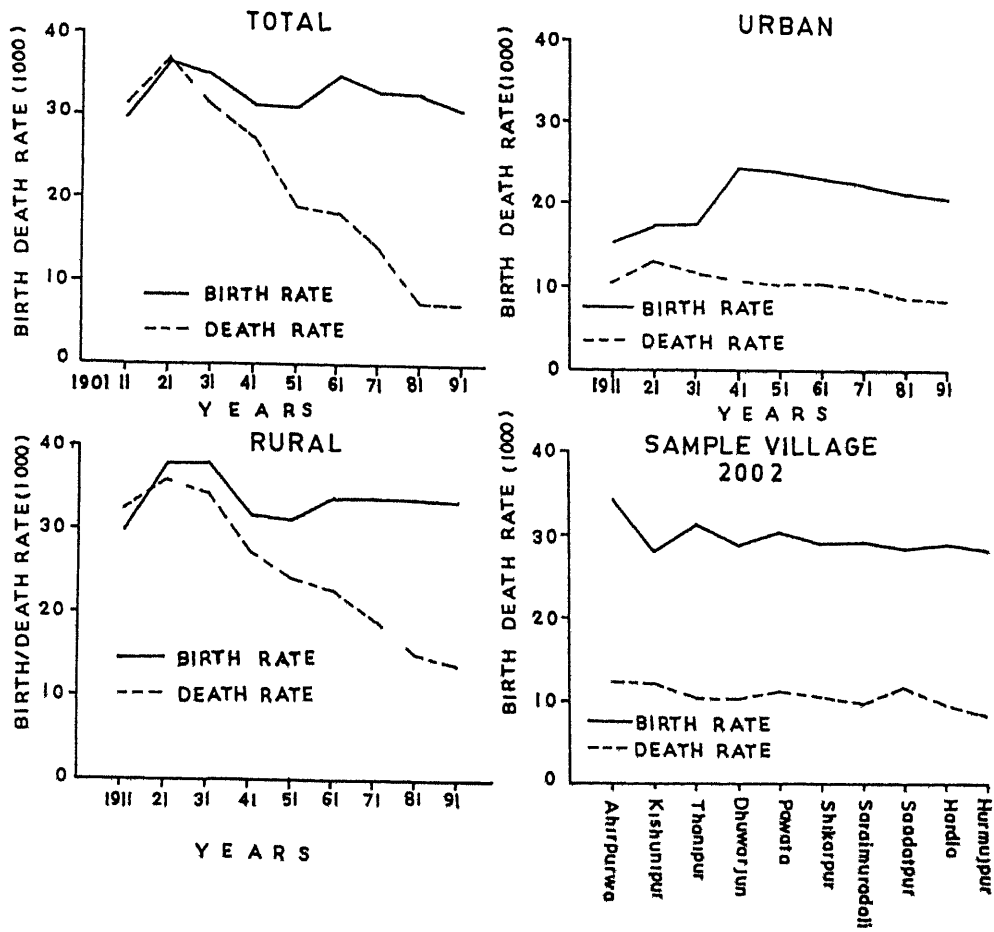
Fig. 4.1

मे नगरीय मृत्युदर क्रमश 10 98, 10 97, 10 49, 10 52, 10 21, 8 92 तथा 8 54 रही। **(चित्र सख्या 4 1)**

तालिका 4 3

सर्वेक्षित ग्रामो मे जन्मदर एव मृत्यु दर (2002)

ग्राम	जन्मदर	मृत्युदर
अहिरपुरवा	34 15	12 26
किशुनीपुर	27 98	12 15
थनईपुर	31 21	10 41
धुवार्जुन	28 95	10 25
पवटा	30 25	11 35
शिकारपुर	29 25	10 59
सराय मुरादअली	29 27	9 80
सआदतपुर	28 59	11 91
हरदिया	29 23	9 80
हुरमुजपुर	28 49	8 52

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

4 5 सर्वेक्षित ग्रामों में जन्म एवं मृत्यु दर–

सर्वेक्षित ग्रामो मे सबसे अधिक जन्मदर अहीरपुरवा (34 15) गाव मे है तथा सबसे कम किशुनीपुर मे (27 98) है। सबसे अधिक मृत्युदर अहीरपुरवा (12 26) तथा सबसे कम हुरमुजपुर मे 8 52 है। रेलमार्गों के सहारे स्थित गावो की जनसख्या वृद्धि अधिक होती है। (सिह सविन्द्र 2000) लेकिन हुरमुजपुर गाव के सामाजिक-आर्थिक विकास ने इस कारक को नगण्य कर दिया है सर्वेक्षित ग्रामों की जन्मदर के विवरण से स्पष्ट है कि जिन ग्रामो का सामाजिक आर्थिक विकास अधिक हुआ है वहा जन्मदर कम है परन्तु जिनका विकास कम है वहा जन्म दर अधिक है।

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि सामाजिक आर्थिक विकास की उन्नत अवस्था जन्मदर को विनियन्त्रित करती है इसीलिए जेनेवा कान्फेस में विकास सबसे बड़ा गर्भ निरोधक है का नारा दिया गया। (भूगोल के सिद्धान्त भाग II 2001) **(चित्र संख्या- 4 1)**

4 5 1 जाति एवं धर्मानुसार जन्मदर-

व्यक्तिगत सर्वेक्षण से प्राप्त आकड़ो के आधार पर विविध जाति-धर्म की जन्मदर मे वैभिन्य दृष्टिगोचर होता है। तालिका 4 4 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षित ग्रामो मे ब्राह्मणो, क्षत्रियो एव यादवो की अपेक्षा अन्य मे जन्म दर तुलनात्मक रुप से अधिक है। अनुसूचित जातियो मे अधिक जन्म दर का प्रमुख कारण सामाजिक आर्थिक भिन्नता है। स्वास्थ्य सबधी सुविधाओं ने इनके जन्मदर को प्रभावित किया है। हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानो मे जन्म दर अधिक है जिसके प्रमुख कारण बहुविवाह, दृढतर धार्मिक भोगाधिकार-मुसलमानो मे परिवार वृद्धि के प्रति अधिक उदारता पाई जाती है। (यादव हीरालाल 1997) जाति एव सम्प्रदाय विशेष की सामाजिक–सास्कृतिक परिस्थितिया, तथा परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रति लोगो की धारणा ने भी जन्म दर मे भिन्नता उत्पन्न की है। **(तालिका 4 4 चित्र 4 2 A)**

तालिका 4 4

जाति एव धर्म के अनुसार जन्मदर

		जन्मदर
जाति	ब्राह्मण	3 90
	क्षत्रिय	4 12
	यादव	4 56
	चमार	5 13
धर्म	हिन्दू	4 42
	मुस्लिम	5 02

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

4.5.2 शैक्षणिक स्तर के अनुसार जन्मदर-

शिक्षा का जनन प्रतिरूप पर अवश्यम्भावी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। **भारतीय राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण** द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया है कि इटरमीडिएट उत्तीर्ण स्त्री के 2 बच्चे, हाई स्कूल के 4 6 बच्चे, मिडिल स्कूल के 5 0 बच्चे तथा निरक्षर या कक्षा 5 उत्तीर्ण स्त्रियो के 6 6 बच्चों का औसत आता है। (एन0एस0एस0 1964)। इस सदर्भ में प्रो अमर्त्य सेन के विचार

ध्यातव्य है– महिला शिक्षा तथा जन्म दर के बीच सबध बिल्कुल स्पष्ट है यह सबध दूसरे देशो मे व्यापक तौर पर दिखाई देता है, और ताज्जुब नहीं कि भारत मे भी वैसा ही दिखाई पड़े। शिक्षित औरतो की बार-बार बच्चो के लालन-पालन मे फसने की अनिच्छा से जन्मदर पर असर पड़ता है। शिक्षा से सोचने समझने के दायरे का विस्तार होता है तथा परिवार नियोजन की जानकारी के प्रचार प्रसार मे भी मदद मिलती है। (नवभारत टाइम्स मार्च 2001) चित्र 4 2 B तथा तालिका 4 5 से स्पष्ट है कि शिक्षा का स्तर बढ़ने से जन्मदर कम हो रही है।

तालिका 4 5

शैक्षणिक स्तर के अनुसार जन्मदर

शैक्षणिक स्तर	जन्मदर
अशिक्षित	5 60
प्राथमिक	4 80
जूनियर	3 90
माध्यमिक	3 40
उच्च	2 90

स्त्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

4 5.3 आयु वर्ग के अनुसार जन्मदर-

जो बालाए छोटी आयु में विवाह करती हैं उनकी उत्पादकता शीघ्र प्रभावित होती है। फलत उन्हे अधिक बच्चे पैदा होने की सभावना रहती है। यू एन ओ द्वारा मैसूर के जनसख्या के अध्ययन में बताया गया कि ग्राम्य क्षेत्रों में 14-17 के मध्य जिन बालाओं की शादी हुई उनमें जन्मदर 5 9 बच्चे, परन्तु जिनके विवाह 19-21 वर्ष के मध्य हुए उनकी जन्मदर 4 7 बच्चे थी। सामान्यत भारतीय स्त्री की प्रजजन क्षमता 14-44 वर्ष तक है। यदि विवाह की आयु स्त्री के लिए 19 वर्ष कर दी जाये तो जन्मदर निश्चितत कम हो सकती है। सर्वेक्षित ग्रामों मे आयु वर्ग के अनुसार जन्मदर का विवरण तालिका 4 6 में प्रदर्शित है। तालिका से स्पष्ट है कि जनपद में जन्मदर 20-25 एवं 25-30 के मध्य सर्वाधिक है। 30 के बाद जन्मदर कम होती गयी है। **(चित्र 4 2 C)**

तालिका 4 6

आयु वर्ग के अनुसार जन्मदर 2002

आयुवर्ग	जन्मदर
15 से कम	1 10
15-19	2 15
20-24	3 12
25-29	2 42
30-34	1 85
35-39	1 23
40-44	0 82
45 से अधिक	0 17

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

4.5 4 आय वर्ग एवं आर्थिक स्तर के अनुसार जन्मदर-

जन्मदर एव सधृत आर्थिक-विकास स्तर परस्पर अनिवार्य रूप से सम्बद्ध है। सामान्यत उच्च आय वर्गों मे जन्मदर कम पाई जाती है तथा निम्न आय वर्गों मे अधिक होती है। जैसे जैसे सामाजिक आर्थिक विकास मे परिष्कार होता है जन्म दर कम होती है क्योकि आर्थिक विकास से बच्चो के मृत्यु का भय कम होता है। (सिंह डी0एन0 1997)

तालिका 4 7 मे आर्थिक स्तर के अनुसार जन्मदर का विवरण दिया गया है। सर्वेक्षित ग्रामो मे जिन परिवारों की आय 1000 से कम है उनकी जन्मदर 5 8, 2000 तक की मासिक आय वाले परिवारो की जन्म दर 5 1 तथा 4000 से अधिक आय वाले परिवारो की जन्म दर 2 8 है। **(तालिका 4.7 चित्र 4 2 D)**

तालिका 4 7

आय वर्ग एव आर्थिक स्तर के अनुसार जन्मदर 2002

मासिक आय वर्ग (रुपये)	जन्मदर
1000 से कम	5 8
1000-2000	5 1
2000-3000	4 5
3000-4000	3 3
4000 से अधिक	2 8

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

DISTRICT GHAZIPUR
SOCIO-ECONOMIC DETERMINANTS OF FERTILITY
RELIGION CASTE
A
MEAN FERTILITY
Hindu
Muslims
Brahaman
Rajput
Yadav
Chamar
EDUCATIONAL LEVEL
B
Illiteate
Primary
Middle
High School
High Edu
AGE GROUP
C
<15
15-19
20-24
25-29
30-34
35-39
40-44
> 45
MONTHLY INCOME
D
<1000
1000-2000
2000-3000
3000-4000
>000
OCCUPATON
E
Cultivator
Agri Labourer
Survice
Other Survice
(On the basis of personal sample survey 2002)
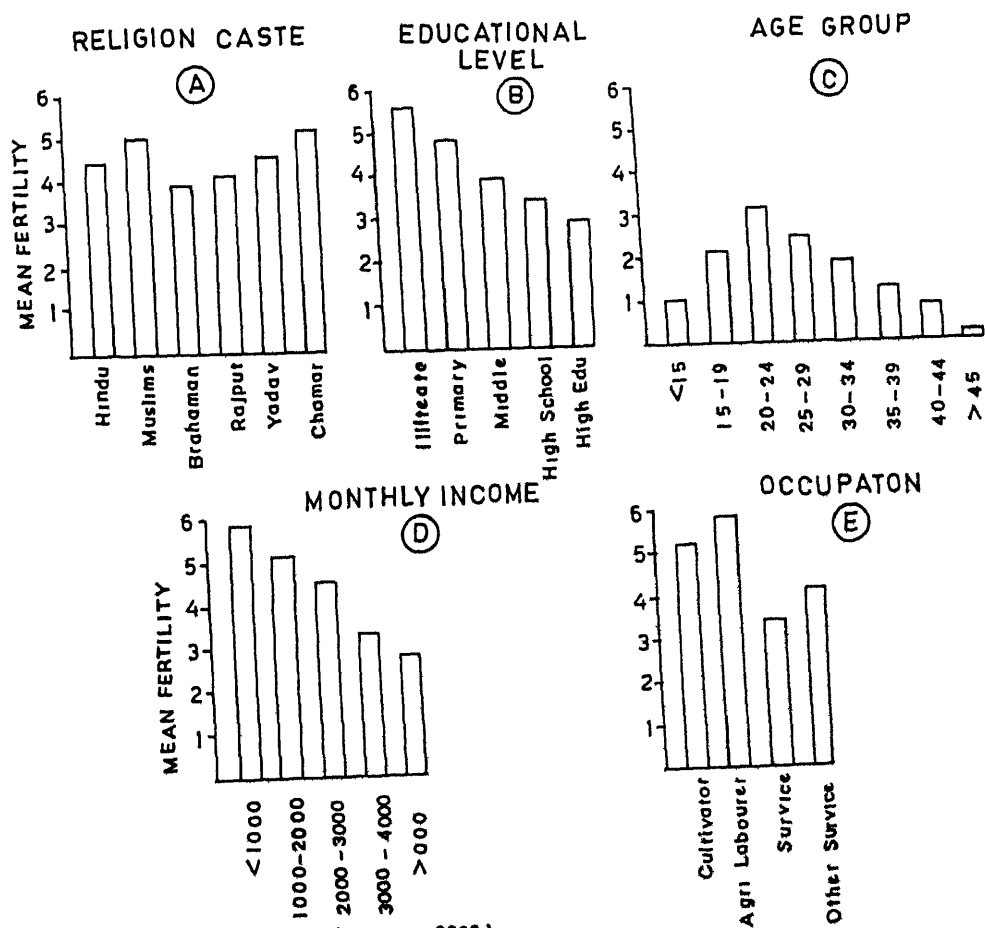
Fig. 4.2

4.5 व्यावसायिक संरचना के अनुसार जन्मदर-

व्यावसायिक सरचना के अनुसार जन्मदर मे अतर पाया जाता है। भारत मे किये गये कुछ अध्ययन इस तथ्य की पुष्टि करते है कि कृषको एव श्रमिक वर्ग के मध्य जन्म दर अधिक है। जबकि नौकरी पेशा एव अन्य सेवाओं मे लगे लोगो की जन्मदर कम है। (मजूमदार डी एम 1980) तालिका 4 8 से स्पष्ट है कि काश्तकार, कृषक मजदूर, नौकरी पेशा, एव व्यवसायी वर्ग की जन्म दर मे अतर है। सर्वेक्षित ग्रामो मे काश्तकार एव कृषक मजदूरो की जन्म दर क्रमश 5 2 एव 5 8 है, तथा नौकरी पेशा एव व्यवसायी वर्ग की जन्मदर क्रमश 3 4 एव 4 1 हे। (चित्र 4 2 E)

तालिका 4 8

व्यावसायिक सरचना के अनुसार जन्मदर 2002

व्यवसाय	जन्मदर
काश्तकार	5 2
कृषक मजदूर	5 8
नौकरी पेशा	3 4
व्यवसायी	4 1

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

उपरोक्त विश्लेषणो से स्पष्ट है कि सर्वेक्षित ग्रामो की जन्मदर, जातीय सरचना, धर्म, वैवाहिक स्तर एव आर्थिक स्तर से प्रभावित है। आज भी जनपद की कुछ जातियो यथा लुहार, कुम्भकार, गोड़ तथा अनुसूचित जातियों मे बाल- विवाह के कारण जन्मदर अधिक है परन्तु शिक्षा के विकास के साथ-साथ जन्मदर मे कभी हो रही है।

4.6 जनसंख्या स्थानान्तरण-

जनसख्या परिवर्तन के लिए उत्तर दायी तीनो तत्वों- जन्मदर, मृत्युदर तथा जनसख्या स्थानान्तरण मे स्थानान्तरण महत्वपूर्ण है। मानव वर्गों के आर्थिक, सामाजिक राजनैतिक या अन्य कारणो से एक स्थान, प्रदेश देश अथवा महाद्वीप में आव्रजन अथवा प्रव्रजन को जनसख्या स्थानान्तरण कहते हैं। स्थानान्तरण मात्र स्थान परिवर्तन ही नहीं, बल्कि किसी क्षेत्र के क्षेत्रीय तत्व तथा क्षेत्रीय सबधों को समझने का प्रमुख आधार है। (गोसल 1961) स्थानान्तरण द्वारा पृथ्वी पर

जनसख्या का वितरण तथ्यपरक जाता है। प्रवास (स्थानान्तरण) सास्कृतिक वितरण और सामाजिक एकता का यत्र है। (बोग 1959) (गारनियर) ने आव्रजन एव प्रव्रजन की ओर लोगो का ध्यान आकृष्ट कराया है। मानव इतिहास की भाति जनसख्या के स्थानान्तरण का इतिहास भी विश्व व्यापी रहा है। कदाचित् यदि हम कहे कि स्थानान्तरण ही ससार की जनसख्या के विकास का मूल है तो अत्युक्ति न होगी। ईसा से 1500 ई0 पूर्व मध्य एशिया से आर्यभारत मे आये। (श्रीवास्तव के सी 2000) यहूदी एव अरबी लोग उत्तरी अफ्रीका एव अरब से यूरोप मे जा बसे। ऐसा ही प्रवास हमारे आर्य पूर्वजो को मध्य एशिया से भारत लाया था। मध्यकाल मे अग्रेज एव फ्रासीसी उत्तरी अमेरिका एव आस्ट्रेलिया को प्रवासित हुए। तत्कालीन यूरोप के राष्ट्रो के निर्माण तथा उत्थान मे आवास-प्रवास के जातिगत सबधो की झाकी मिलती है। अमेरिका का विकास यूरोपीय स्थानान्तरण की निरन्तर धाराओं एव प्रतिधाराओं की ही देन है।

जनसख्या स्थानान्तरण, जनसख्या वृद्धि के एक प्रभाव्शाली कारक के रूप मे किसी क्षेत्र की जनसख्या वृद्धि, वितरण एव तद्नुरुप प्रतिरूप को प्रभावित करता है। स्थानान्तरण मे मानव का मात्र स्थान परिवर्तन ही सम्मिलित नही किया जाता वरन् यह क्षेत्र की स्थानिक सम्बद्धता एव तद्अन्य समझ का परिणाम होता है। जनसख्या स्थानान्तरण से नई सस्कृतियो का उदय, सस्कृतियो मे मिश्रण तथा सामाजिक सरचना मे परिवर्तन होता है।

4.7 स्थानान्तरण को प्रभावित करने वाले कारक-

जनसख्या स्थानान्तरण के कारको का विनिर्धारण सरल कार्य नही है, क्योकि जनसख्या स्थानान्तरण की पीछे विकर्षण तथा आकर्षण के कारक साथ-साथ क्रियाशील रहते है। दोनो मे कौन अधिक शक्तिशाली है यह निश्चित करना कठिन है। इन समस्त कारको को कतिपय जनाकिकीविदो ने आकर्षण एव प्रत्याकर्षण कारको के रूप मे विभक्त किया है। वस्तुत इन दो प्रधान कारकों के अतिरिक्त अन्य कारक भी प्रवासी के लिए महत्वपूर्ण होते है यथा सामूहिक सुरक्षा, जलवायु की अनुकूलता, धार्मिक स्वतत्रता, आवागमन के साधन तथा सूचना प्राप्ति की सुलभता आदि।

4.7.1 आकर्षण कारक-

किसी स्थान के लाभों से आकर्षित होकर सपन्न स्थानान्तरण प्रक्रिया आकर्षण कारक जन्य होती है। यथा शहरों में रोजगार के अवसर, शिक्षा, स्वास्थ्य मनोरजन, अधिक आय प्राप्ति के

अवसर, अच्छी जलवायु के प्रदेश, ईष्ट मित्रो का आकर्षण अादि से प्रेरित होकर व्यक्ति अपने स्वाभाविक निवास को छोड़कर चले जाते है।

4.7.2 प्रत्याकर्षण कारक-

प्रत्याकर्षण कारक का तात्पर्य उन परिस्थितियो से है जिनसे परेशान होकर कोई व्यक्ति अपने निवास स्थान को परिवर्तित करने के लिए बाध्य हो जाता है। जब व्यक्ति को गाव मे शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरजन, रोजगार सुरक्षा इत्यादि के अवसर सुलभ नही होते तो व्यक्ति अपना स्थान परिवर्तित कर देता है। ये कारक आर्थिक ही नही वरन् सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक भी हो सकते है। स्थानान्तरण का सीधा सबध सामाजिक–आर्थिक विकास मे असमानता से है। प्रवास निर्धारक उपरोक्त कारको को भली प्रकार स्पष्ट करने के लिए इन्हे आर्थिक, सामाजिक एव जनसाख्यिकीय कारको मे विभक्त किया गया है। (चान्दना 1997)

4.7 3 आर्थिक कारक-

प्रवास (स्थानान्तरण) मे अधिकाश आर्थिक उद्देश्य होते है। क्षेत्र विशेष की सामान्य आर्थिक दशा कृषि–भूमि की उपलब्धता, रोजगार के अवसर आदि आकर्षण के रूप मे होते है। ज्यादा पिछड़े हुए क्षेत्रो मे जनसख्या बढने से ग्रामीण क्षेत्रो मे आर्थिक मदी बढती है तथा लोगो को गैर कृषि कार्यों की ओर उन्मुख होना पड़ता है। (सिंह डी के 1993) सूचना क्राति ने स्थानान्तरण की इस प्रवृत्ति को बढ़ाया है।

4.7.4 सामाजिक कारक-

कतिपय सामाजिक रीतिरिवाजों के फलस्वरूप भी स्थानान्तरण होता है यथा- विवाह के बाद बालाओं का अपने पतिगृह जाना, इस स्थानान्तरण में केवल सामाजिक प्रथा का ही योगदान है। धार्मिक स्वतत्रता की भावना प्रवास को बढ़ावा देती है। भारी मात्रा में पिलग्रिम फादर्स का अन्ध महासागर के दूसरे छोर पर स्थानान्तरण इसी का सूचक है (गानियर 1969) द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व यहूदियों का प्रस्थान तथा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यहूदियो का विश्व के अनेक भागों से इजराइल आगमन धार्मिक भावना के प्रतिफल है।

अन्य सामाजिक नियंत्रकों में सामाजिक आर्थिक स्तर, सूचना तत्र, सास्कृतिक मेल मिलाप समाजोत्थान की इच्छा तथा राजनीति प्रमुखतम है। शिक्षा, सास्कृतिक आदान–प्रदान स्थानान्तरण

की सम्भावनाओं मे वृद्धि करते है। जहा धार्मिक एव जातीय बधन अधिक है वहा स्थानान्तरण सभावनाए क्षीण होती है जबकि जहा उच्च सामाजिक जागृति है वहा स्थानान्तरण अधिक होता है।

4 7 5 जनसांख्यिकीय कारक-

तीव्र जनसख्या वृद्धिदर क्षेत्र विशेष मे जनसख्या दबाव उत्पन्न करती है फलत जनसख्या –ससाधन अनुपात प्रभावित होता है। गगा मैदान की जनसख्या एव ससाधन सतुलन मे असमानता है परिणामत यहा की जनसख्या का प्रायद्विपीय पठार के खनिज उत्खनन केन्द्रो तथा खनिजो पर आधारित औद्योगिक केन्द्रो जमशेदपुर, भिलाई, राउरकेला, कटनी, इत्यादि मे यहा की जनसख्या का स्थानान्तरण हो रहा है। (ओझा एस एस 2001)

जनस्थानान्तरण के लिए तीन कारको को उत्तरदायी माना गया है- (ली0ई0एस0 1966)

(1) **धनात्मक कारक-** वे कारक जो जनसख्या को किसी क्षेत्र मे प्रवास के लिए आकृष्ट करते हैं धनात्मक कारक कहलाते हैं।

(2) **ऋणात्मक कारक-** वे कारक जो जनसख्या को अपने निवास स्थान से अन्य स्थान को प्रवास के लिए बाध्य करते है ऋणात्मक कारक कहलाते है।

(3) **अन्य कारक-** इसमे कतिपय वे सामान्य कारक सम्मिलित है जो सभी क्षेत्रो मे विद्यमान रहते हैं।

स्थानान्तरण नियत्रक उपरोक्त निर्धारक कारको के विवेचन से स्पष्ट है कि स्थानान्तरण की प्रक्रिया से सम्बद्ध कारको का विनिर्धारण अत्यत दुष्कर है। भिन्न-भिन्न स्तरो पर भिन्न-भिन्न कारक सक्रिय है। सक्षेप मे स्थानान्तरण उपरोक्त समस्त कारको का समेकित परिणाम है।

4 8 जनसंख्या स्थानान्तरण के प्रकार-

जनसख्या स्थानान्तरण एक खास आयु वर्ग का होता है। दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि अक्रियाशील आयुवर्ग की अपेक्षा क्रियाशील आयुवर्ग मे स्थानान्तरण अधिक होता है। क्योकि तरुण वर्ग बच्चो एवबूढ़ों की अपेक्षा अधिक स्थानान्तरण करते हैं। इस आयुवर्गीय असमानता मे कही स्त्रिया अधिक स्थानान्तरण करती हैं तो कहीं पुरुष (1) भारत मे पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था के कारण स्त्रियों का स्थानान्तरण विवाह के बाद पति-गृह हो जाता है। यह पूर्णत स्त्रीजन्य स्थानान्तरण कहलायेगा। कभी-कभी परिवार के मुखिया के साथ-साथ बच्चे व अन्य भी स्थानान्तरण करते हैं। व्यवसायी वर्ग अपने व्यवसाय के अनुरूप स्थानान्तरण करते हैं। यथा भूमिहीन कृषि मजदूर कृषकों की तुलना में अधिक स्थानान्तरण करते हैं। विकासशील विश्व

मे रोजगार के लिए शहरो की ओर स्थानान्तरण हो रहा है। गाजीपुर जनपद मे जनसख्या स्थानान्तरण वैवाहिक तथा रोजगार प्राप्ति के लिए गावो से शहरो की ओर हुआ है। वैवाहिक दृष्टि से स्त्रियो का स्थानान्तरण एव रोजगार की दृष्टि से युवको का स्थानान्तरण हुआ है।

स्थानान्तरण के निम्न प्रकार व्यवहृर्य है-

4 8.1 समय के आधार पर-

(1) दैनिक स्थानान्तरण।
(2) ऋत्विक स्थानान्तरण।
(3) दीर्घ कालिक स्थानान्तरण।

4 8.2 दूरी के आधार पर-

(1) अन्तर्महाद्वीपीय स्थानान्तरण।
(2) देशान्तरिक स्थानान्तरण।
(3) अर्न्तराष्ट्रीय स्थानान्तरण।
(4) स्थानीय स्थानान्तरण—
 (1) गाव से नगर की ओर।
 (11) नगर से नगर की ओर।
 (111) गाव से गाव की ओर।
 (1v) नगर से गाव की ओर।

4.8.3 प्रवृत्ति के आधार पर-

(1) आर्थिक स्थानान्तरण।
(2) वैवाहिक स्थानान्तरण।
(3) क्षेत्रीय एव (5) अन्य स्थानान्तरण।

4.9 स्थानान्तरण के वर्ग-

समाजशास्त्री पिटरसन (1969) ने स्थानान्तरण के चार वर्ग निर्धारित किये है-

4 9 1 आदिम स्थानान्तरण-

यह स्थानान्तरण पारिस्थितिकी दबाव का प्रतिफल है। इप वर्ग के स्थानान्तरण कर्ता ठीक वैसा ही पर्यावरण चाहते थे जैसा उन्होने छोड़ा था। ये स्थानान्तरण शिकार एव मत्स्य पकड क्षेत्रो की उपलब्धता के आधार पर होता था।

4.9.2 बलात प्रेरित स्थानान्तरण-

जब स्थानान्तण को उत्प्रेरित करने वाले कारक राज्य या सामाजिक सस्थाए होती है तो इस प्रकार का स्थानान्तरण होता है। 1930 ई0 मे नाजियो द्वारा विरोध करने वाली जनसख्या को बलपूर्वक हटाया गया।

4 9.3 स्वतंत्र स्थानान्तरण-

इस प्रकार के स्थानान्तरण में स्थानान्तरण कर्ता की इच्छा प्रबल होती है। 19 वी शताब्दी मे यूरोप से अन्वेषिकी स्थानान्तरण हुए। वर्तमान मे यह प्रभावहीन है।

4 9.4 अवांक्षित स्थानान्तरण-

अवाक्षित स्थानान्तरण लैटिन- अमेरिका तथा कैरेबियन सागरीय देशो की विशेषता है। यू एस ए , कनाडा, बेनेजुएला, अर्जेन्टीना, इत्यादि देशो मे बोलिबिया, ब्राजील, चीली, कोलम्बिया, एल्साल्वेडोर, मैक्सिको आदि से अवाक्षित स्थानान्तरण होता है। इस प्रवास वर्ग से जुड़ी चिंतनीय समस्या शरणार्थियों की है। यू एन रिफ्यूजीज नेशन द स्टडी प्राब्लम्स आफ माइग्रेशन की 1993 की रिपोर्ट के अनुसार इनकी सख्या 18 मिलियन थी। भारत मे पाकिस्तान से आने वाले घुसपैठियों ने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गभीर खतरा उत्पन्न कर दिया है।

भारत में बगलादेश से आने वाले चकमा शरणार्थियों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। जनगणना अधिकारियों के अनुसार बागलादेश से गैरकानूनी रूप से आने वालों की सख्या 1961-71 एवं 1971-81 में क्रमश 17,39,310 एव 5,59,006 थी (नवभारत टाइम्स नवम्बर 2000) विदेशी घुसपैठ रोकने के लिए ससद द्वारा 1983 में आई एम डी टी (इल्लीगल

माइग्रेन्ट्स डिटरमिनेश ट्राइब्यूनल) पारित किया गया। भारत के हितो की रक्षा के लिए इन घुसपैठियो एव शरणार्थियो पर प्रभावी रोक अनिवार्य है।

4.10 जनसंख्या स्थानान्तरण के सिद्धान्त-

वस्तुत व्यक्ति विशेष के प्रभाव एव व्यवहार को एक निश्चित सिद्धान्त मे बाध पाना दुष्कर है इसीलिए हम्फ्रे ने कहा है कि स्थानान्तरण अपने नियम विहीनता न कि नियम बद्धता केलिए कुख्यात है। आधुनिक भूगोल मे मात्रीकरण, विशिष्टीकरण, सिद्धान्त रचना, अनुप्रयोग तथा मॉडल निर्माण की प्रवृत्ति बढ रही है। जनसख्या भूगोल पर भी इसका प्रभाव अवश्यम्भावी है। इसी के परिणाम स्वरूप जनसख्या स्थानान्तरण से सम्बद्ध सिद्धान्त बनाये जा रहे है। जनस्थानान्तरण के सबध मे सिद्धान्त बनाने मे निम्न कठिनाइया है-

(1) जनसख्या एक गतिशील कारक है तथा तेजी के साथ परिवर्तित होती है।

(2) मनुष्य का व्यक्तिगत व्यवहार किसी सुनिश्चित सिद्धान्त से आबद्ध नही है क्योकि किसी तथ्य के पीछे मनुष्य के आचरण का विश्लेषण कठिन है।

(3) जनस्थानान्तरण के आकड़े जिस रूप मे प्राप्त होने चाहिए उस रूप मे प्राप्त नही होते है।

पृथ्वी पर मानव से विलग जीवो का वितरण मानव मे पूर्ववर्ती है परन्तु स्वाभाविक स्थानान्तरण जितना मानव का हुआ है उतना कदाचित किसी जीव का नही हुआ है। मानव आचरण की अनिश्चितता के बावजूद स्थानान्तरण से सबधित सिद्धान्तो का विकास करने मे विद्वानो का उत्साह कम नही हुआ है। आशा है कि यह प्रयास आगे भी जारी रहेगा। प्रारम्भ रैवेंस्टीन (1885) के शोधपत्र '**द लॉ ऑफ माइग्रेशन** से हुआ है (चाँदना आर0सी0 1997), बुगे डब्ल्यू0 तथा ली0ई0एस0 (1966) ने स्थानान्तरण से सबधित सामान्य सिद्धान्तो एव परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया। पिटरसन (1958) ने स्थानान्तरण प्रकारो का विवेचन उसके नियमो के विशेष सदर्भ मे किया। फ्रायर (1971) ने अपने शोध प्रबध 'इटरनल माइग्रेशन एड अर्बनाइजेशन में स्थानान्तरण प्रक्रिया में निवास दुबारा निर्धारित करने वाले व्यक्तिगत, समायोजनशील, सस्थागत, अनुकूलन, तथा सूचना प्रसारण कारकों पर बल दिया। इन्होंने इन कारको का परीक्षण मलेशिया पर किया जो अधिकाशत सत्य पाया गया। गेल (1973) ने रोसी के जीवन च्रक परिकल्पना की आलोचना की तथा स्पष्ट किया कि स्थानान्तरण निर्धारक घटकों मे सबध स्थापित किया जाना चाहिए। जानवन्यू स्टेवर्ट ने जनसख्या के स्थानान्तरण को न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण नियम के साथ

समाकृतिक सबध स्थापित किया जो 'ग्रैविटी मॉडल के नाम से जाना जाता है। इसके अनुसार दो नगरीय केन्द्रो के बीच स्थानान्तरण उनके जनसख्या का प्रतिफल होता है तथा उनकी बीच की दूरी के विलोम अनुपात मे होता है।

4 11 गाजीपुर जनपद में जनसख्या स्थानान्तरण-

जनसख्या स्थानान्तरण पर भौतिक एव सास्कृतिक कारको का प्रभाव निश्चितत पड़ता है परन्तु जनपद मे जन स्थानान्तरण पर सास्कृतिक कारको का प्रभाव सर्वाधिक है। मानव अब प्राकृतिक आपदाओं, अकाल, महामारी, बाढ आदि के साथ अशत सामज्ज्स्य स्थापित करने मे सक्षम हो गया है। मानव के लिए जीविकोपार्जन के साधनो का प्रबध सर्वोपरि है। आर्थिक सकट के समय जनसख्या किसी क्षेत्र विशेष मे स्थानान्तरित हो जाती है। जनपद मे 1904 एव 1917 मे महामारी के कारण बहुत से लोग अन्य जिलो मे जाने के साथ-साथ प्रदेश से बाहर चले गये। इसके बाद जनसख्या जन स्थानान्तरण आर्थिक एव सामाजिक कारको से प्रभावित हुआ है। जनपद की प्रव्रजित जनसख्या वाराणसी, आजमगढ, इलाहाबाद, कानपुर, मिर्जापुर, जौनपुर, बिहार, मध्य प्रदेश, पश्चिम बगाल, असम, गुजरात एव राजस्थान आदि प्रदेशो मे स्थानान्तरित हुई हैं। इसके अतिरिक्त अन्य देशो पाकिस्तान, मलाया, वर्मा, नेपाल, त्रिनिनाड- टोबैको, आदि देशो मे जनसख्या प्रव्रजन हुआ है। शिक्षा, विज्ञान तकनीकी आदान-प्रदान हेतु अधिकाश स्थानान्तरण वाराणसी, इलाहाबाद, लखनऊ, कानपुर इत्यादि शहरो की ओर हुआ है।

4 12 आव्रजन एवं प्रव्रजन-

आव्रजन एव प्रव्रजन जनसख्या स्थानान्तरण के प्रमुखतम आयाम है। एक दूसरे का अस्तित्व सम्मिलित स्वरूप से है। आव्रजन मे मानव का किसी देश, प्रदेश अथवा क्षेत्र मे आगमन होता है। भारत मे विभाजन के समय पाकिस्तान से हिन्दुओं का एव भारत से मुसलमानों का स्थानान्तरण आव्रजन का उत्तम उदाहरण है। जनपद में क्षेत्रीय आव्रजन--प्रव्रजन अधिक हुआ है। इसके अतिरिक्त वाराणसी, आजमगढ़, बलिया, इलाहाबाद, जौनपुर, मिर्जापुर, देवरिया, गोरखपुर, बस्ती, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, फैजाबाद आदि जिलों से जनसख्या का स्थानान्तरण हुआ है। कानपुर, मिर्जापुर, पश्चिम बगाल, मुबई ,दिल्ली एव पाकिस्तान, मलाया, वर्मा, नेपाल, त्रिनिनाड आदि स्थानों में जनपद से जनसख्या का स्थानान्तरण हुआ है। 1951 मे कुलियों का प्रव्रजन फिजी, मलेशिया मे हुआ है।

4 12 1 आव्रजन-

जनपद गाजीपुर मे सन् 1961 मे कुल आने वालो मे से 70 14 प्रतिशत गणना के जिले मे ही अन्यत्र पैदा हुए थे। जबकि राज्य के अन्य जिलो मे 22 56 प्रतिशत भारत के अन्य प्राततो मे 6 95 प्रतिशत तथा अन्य राष्ट्रो मे 0 35 प्रतिशत लोग पैदा हुए थे। 1971 मे गणना के जिले मे 70 59 प्रतिशत, राज्य के अन्य जिलो मे 22 36 प्रतिशत, भारत के अन्य प्रातो मे 7 01 प्रतिशत तथा अन्य देशो मे पैदा हुए लोगो का प्रतिशत 0 04 था। 1981 एव 1991 मे क्रमश

तालिका 4 9

जनसख्या आव्रजन

मद	1961	1971	1981	1991
1- गणना के जिले मे	242723	279664	329894	405566
अन्यत्र पैदा हुए	(70 13)	(70 59)	(69 32)	(68 55)
2- राज्य के अन्य	78079	88516	112268	143806
जिलो मे पैदा हुए	(22 56)	(22 36)	(23 60)	(24 31)
3- भारत के अन्य	24061	27780	33518	42059
प्रातो मे पैदा हुए	(6 95)	(7 01)	(7 04)	(7 1)
4- अन्य देशो मे	1222	190	174	118
पैदा हुए	(0 35)	(0 04)	(0 03)	(0 02)
योग	346085	396150	475854	591549

स्रोत- जिला जनगणना पुस्तिका 1961, 1971, 1981, 1991 उत्तर प्रदेश (सोशल एव कल्चरल टेबुल) (कल्चरल एव माइग्रेशन टेबुल) भारत, उत्तर प्रदेश द्वारा परिकलित। 1961-1991।

गणना के जिले मे अन्यत्र पैदा हुए लोग 69 32 एव 68 56 प्रतिशत, राज्य के अन्य जिलो मे पैदा हुए 23 60 एव 24 31 प्रतिशत , भारत के अन्य प्रातों मे पैदा हुए 7 04 एव 7 11 प्रतिशत, तथा अन्य देशों में पैदा हुए 0 03 एवं 0 02 प्रतिशत स्थानान्तरित होकर आये। **(तालिका 4 9)**

4 12.1 1 ग्रामीण जनसख्या आव्रजन- (1981 तथा 1991)

1981 मे कुल ग्रामीण जनसख्या का 71 02 प्रतिशत आव्रजन गणना के जिले मे ही हुआ था। जिसमे 93 20 प्रतिशत स्त्रियो तथा 6 80 प्रतिशत पुरुषो का हुआ था। राज्य के अन्य जिलो मे पैदा हुए लोगो का कुल आव्रजन 22 71 प्रतिशत जिसमे स्त्रियो का 90 12 एव पुरुषो का 9 38 प्रतिशत था। भारत के अन्य प्रान्तो मे पैदा हुए लोगो का कुल प्रतिशत 6 26 प्रतिशत था जिसका 91 72 प्रतिशत स्त्रिया एव 8 27 प्रतिशत पुरुष वर्ग का था। 1991 मे कुल आव्रजन का 70 25 प्रतिशत गणना के जिले मे ही पैदा हुए थे जिसमे स्त्रियो एव पुरुषो का प्रतिशत क्रमश 93 54 एव 6 46 प्रतिशत रहा।

तालिका 4 10

जनपद गाजीपुर ग्रामीण जनसख्या आव्रजन

मद	1981			1991		
	कुल	स्त्री	पुरुष	कुल	स्त्री	पुरुष
1 गणना के जिले मे	319725	297992	21733	421407	394184	27223
अन्यत्र पैदा हुए	(71 02)	(93 20)	(6 80)	(70 25)	(93 54)	(6 46)
2 राज्य के अन्य	102233	92135	1098	142349	128128	14221
जिलो मे पैदा हुए	(22 71)	(90 12)	(9 88)	(23 73)	(90 01)	(9 99)
3 भारत के अन्य	28220	25885	2335	36120	32634	3486
प्रान्तो मे पैदा हुए	(6 26)	(91 72)	(8 27)	(6 02)	(90 35)	(9 65)
योग-	450178	416012	34196	599868	554938	44930
	(100 00)	(92 40)	(7 60)	(100 00)	(92 51)	(7 49)

स्रोत- वही तालिका 4 9

राज्य के अन्य जिलो का ग्रामीण आव्रजन 23 73 प्रतिशत रहा जिसमें स्त्रियो का 90 01 एव पुरुषो का 9 99 प्रतिशत रहा। भारत के अन्य प्रान्तो मे पैदा हुए लोग 6 02 प्रतिशत, इसमे भी स्त्रियो का स्थानान्तरण अधिकतम रहा । **(तालिका 4 10)**

4.12.1.2 नगरीय जनसंख्या आव्रजन- (1981 तथा 1991)

सन् 1981 मे कुल नगरीय जनसख्या का 15 97 प्रतिशत आव्रजन हुआ, 1991 मे यह प्रतिशत 16 16 रहा है। जनपद की कुल आव्रजित नगरीय जनसख्या का 38 26 प्रतिशत गणना के जिले मे पैदा हुए थे जिसका 84 73 प्रतिशत स्त्री एव 15 27 प्रतिशत पुरुष थे।

1991 मे गणना के जिले मे पैदा हुए लोगो का आव्रजन 39 31 प्रतिशत (85 02 प्रतिशत स्त्री तथा 14 98 प्रतिशत पुरुष। 1981 मे राज्य के अन्य जिलो 40 48 प्रतिशत (77 30 स्त्री, 22 70 पुरुष) 1991 मे राज्य के अन्य जिलो से 39 19 प्रतिशत (88 35 प्रतिशत स्त्री एव 21 57 प्रतिशत पुरुष) भारत के अन्य प्रातो मे पैदा हुए लोगो का आव्रजन 1981 मे 21 36 प्रतिशत जो 1991 मे 21 57 प्रतिशत हो गया। (तालिका 4 11)

तालिका 4 11

जनपद गाजीपुर नगरीय जनसख्या आव्रजन 1981, 1991

	1981			1991		
मद	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री
गणना के जिले मे	9430	1440	7990	11319	1698	9623
अन्यत्र पैदा हुए	(38 26)	(15 27)	(84 73)	(39 31)	(14 98)	(85 02)
राज्य के अन्य जिलो	9978	2265	7713	11265	2430	8835
मे पैदा हुए	(40 48)	(22 70)	(77 30)	(39 12)	(21 57)	(78 43)
भारत के अन्य प्रातो	5242	1182	4060	6211	1374	4837
मे पैदा हुए	(21 26)	(22 54)	(77 45)	(21 57)	(22 12)	(77 88)
कुल	24650	4887	19763	28795	5511	23284
	(100 00)	(19 82)	(80 17)	(100 00)	(19 14)	(80 86)

स्रोत- वही तालिका 4 9

4.13 ग्रामीणों की आव्रजित जनसंख्या-

4.13.1 ग्रामीण से ग्रामीण-

ग्रामीण आव्रजन का 1981 मे गणना के जिले मे ही अन्यत्र पैदा होने वालों मे 94 90 प्रतिशत जनसख्या ग्राम से ग्राम मे ही आयी थी, जबकि 1991 मे यह 94 31 प्रतिशत रही है। जबकि राज्य के अन्य जिलों में पैदा हुए लोगों मे से 1981 में 91 57 प्रतिशत एव 1991 मे 92 19 प्रतिशत ग्राम से ग्राम में तथा भारत के अन्य प्रातो में पैदा हुए लोगो में से 1981 मे 85.11 प्रतिशत एव 1991 में 84 75 प्रतिशत ग्रामीण से ग्रामीण आव्रजन हुआ है। (तालिका 4.12)

DISTRICT GHAZIPUR
URBAN MIGRATION PATTERN 1991
IMMIGRATION
INDIA
U P
IN PER CENT
1 00
10 00
20 00
0 10
1 00
10 00
20 00
500 0 500
Km
50 0 50
Km
EMIGRATION
INDIA
U P
IN PER CENT
1 00
5 00
15 00
30 00
0 50
3 00
10 00
20 00
>20
500 0 500
Km
50 0 50
Km
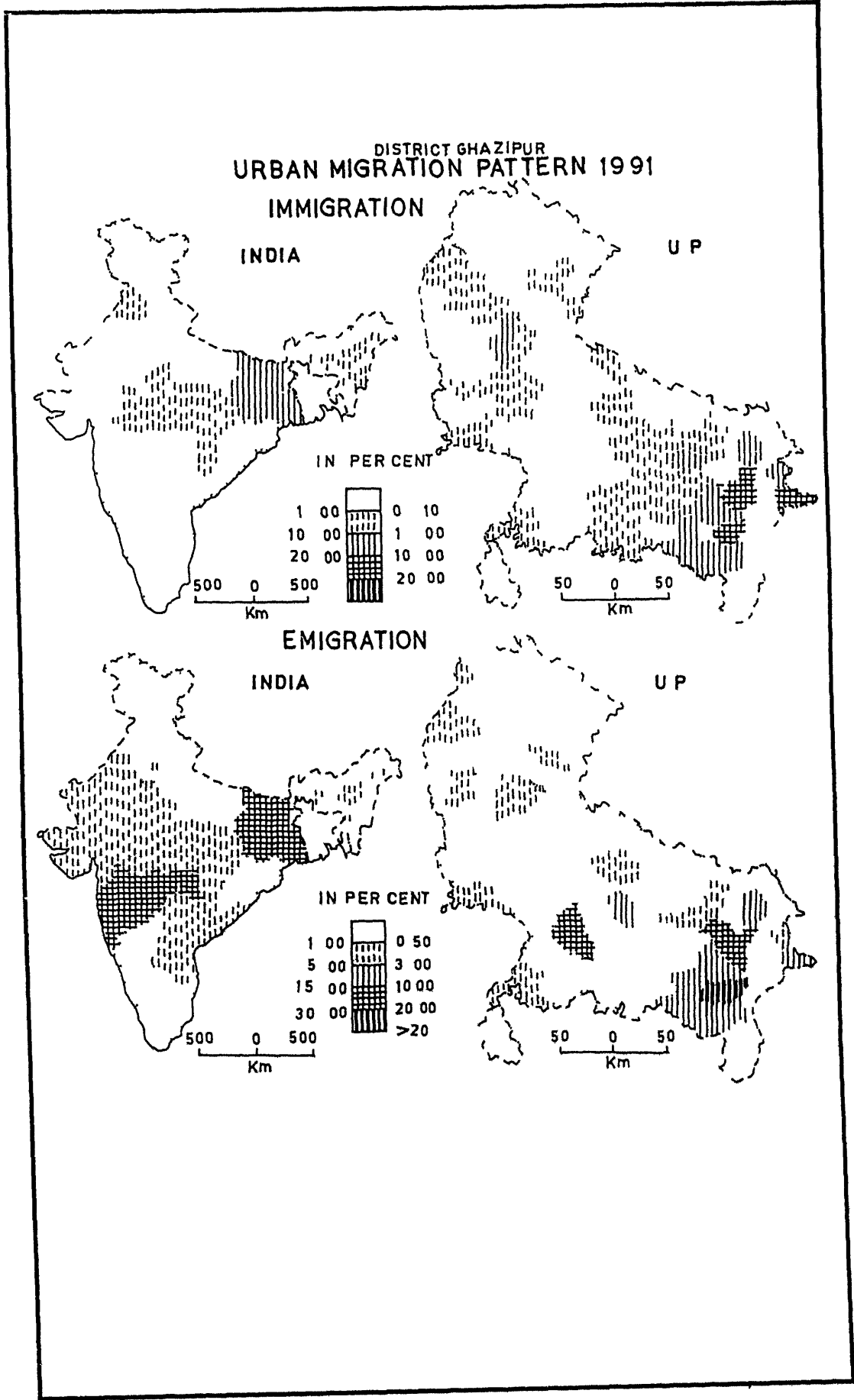
Fig. 4.3

तालिका 4 12

जनपद गाजीपुर ग्रामीणो की आव्रजित जनसख्या

	1981			1991		
	कुल	ग्रामीण से नगरीय	ग्रामीण से ग्रामीण	कुल	ग्रामीण से नगरीय	ग्रामीण से ग्रामीण
गणना के जिले मे	319725	16300	303425	441047	25096	415951
अन्यत्र पैदा हुए	(71 02)	(5 10)	(94 90)	(72 31)	(5 69)	(94 31)
राज्य के अन्य	102233	8619	93614	136260	10642	125618
जिलो मे पैदा हुए	(22 70)	(8 43)	(91 57)	(22 36)	(7 81)	(92 19)
भारत के अन्य	28220	4200	24020	32632	4972	27655
प्रातो मे पैदा हुए	(6 26)	(14 88)	(85 11)	(5 35)	(15 25)	(84 75)
योग	45178	29119	421059	609940	37691	572249
	(100 00)	(6 47)	93 53	(100 00)	(6 18)	(93 82)

स्रोत- वही तालिका 4 9

4.13.2 ग्रामीण से नगरीय-

गणना के जिले में ही अन्यत्र पैदा होकर आने वालो का 5 10 प्रतिशत ग्रामीण से नगरीय जनसख्या का आव्रजन 1981 मे हुआ तथा 1991 मे यह प्रतिशत 5 69 प्रतिशत रहा। राज्य के अन्य जिलो मे पैदा होने वाले कुल लोग जो इस जिले मे आये उसका 1981 मे प्रतिशत 8 43 था, जो 1991 मे 7 81 प्रतिशत रहा। जबकि भारत के अन्य प्रातो से ग्रामीण आव्रजन का 1981 मे 14 88 एव 1991 मे 15 25 प्रतिशत रहा है। कुल ग्रामीण आव्रजन का 1981 मे 93 53 प्रतिशत, एव 1991 मे 93 82 प्रतिशत ग्रामीण से ग्रामीण तथा ग्रामीण से नगरीय 6 47 एव 6 18 प्रतिशत हुआ है। (**तालिका 4 12**)

4 14 नगरीय आव्रजित जनसंख्या-

4.14 1 नगरीय से नगरीय-

1981 मे गणना के जिले मे ही अन्यत्र पैदा होने वालो का कुल आव्रजन 38 25 प्रतिशत था जो 1991 मे 40 15 प्रतिशत रहा। 1981 मे कुल आव्रजन का 34 27 प्रतिशत नगरीय से नगरीय तथा भारत के अन्य प्रातो से आये कुल लोगो मे से 43 54 प्रतिशत नगरीय से नगरीय आव्रजन हुआ जबकि राज्य के अन्य जिलो से आये कुल लोगो मे से 52 54 प्रतिशत था।

1991 मे गणना के जिले मे अन्यत्र पैदा होने वालो के आव्रजन का 40 76 प्रतिशत नगरीय से नगरीय, राज्य के अन्य जिलो से आये लोगो का 54 25 प्रतिशत नगरीय से नगरीय एव भारत के अन्य प्रातो से आये हुए लोगो का 46 27 प्रतिशत रहा। (**तालिका 4 13**)

तालिका 4 13

जनपद गाजीपुर नगरीय आव्रजित जनसख्या

मद	1981			1991		
	नगरीय से ग्रामीण	नगरीय से नगरीय	कुल	नगरीय से ग्रामीण	नगरीय से नगरीय	कुल
गणना के जिले मे अन्यत्र पैदा हुए	6197 (65 72)	3232 (34 27)	9429 (38 25)	7846 (59 24)	5398 (40 76)	13244 (40 15)
राज्य के अन्य जिले में पैदा हुए	4736 (47 46)	5243 (52 54)	9979 (40 48)	5707 (45 75)	6768 (54 25)	12475 (37 82)
भारत के अन्य प्रातो मे पैदा हुए	2959 (56 45)	2282 (43 54)	5241 (21 26)	3904 (53 73)	3363 (46 27)	7267 (22 03)
योग	13892 (56 35)	10757 (43 64)	24649 (100 00)	17413 (52 79)	15573 (47 21)	32986 (100 00)

स्रोत- वही तालिका 4 9

4 14.2 नगरीय से ग्रामीण-

1981 मे गणना के जिले मे ही अन्यत्र से आने वाल, की कुल जनसख्या का 65 72 प्रतिशत नगर से गाव मे, राज्य के अन्य जिलो मे पैदा होकर जनपद मे आने वाली कुल जनसख्या का 47 46 प्रतिशत नगर से गाव मे तथा भारत के अन्य प्रातो मे पैदा होकर जनपद मे आने वाली कुल जनसख्या का 56 45 प्रतिशत नगर से गाव मे आयी थी। 1991 मे गणना के जिले से आने वाले 59 24 राज्य के अन्य जिलो से आने वालो का 45 75 तथा भारत के अन्य प्रातो से 53 73 प्रतिशत जनसख्या नगर से गाव मे आयी। **(तालिका 4 1 3)**

4.1 5 जनपद में भारत के अन्य प्रांतों से ग्रामीण आव्रजन–

सर्वाधिक बिहार प्रान्त से आव्रजन हुआ है (97 13) जबकि असम, आन्ध्रप्रदेश, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उडीसा, राजस्थान, पश्चिम बगाल तथा दिल्ली से न्यून मात्रा मे आव्रजन हुआ है। **(परिशिष्ट 4 1)**

4.1 6 भारत के अन्य प्रातों से नगरीय आव्रजन-

जनपद मे नगरीय आव्रजन भी बिहार (58 25 प्रतिशन) से हुआ है। इसके अतिरिक्त असम से 3 10 प्रतिशत पश्चिम बगाल से 29 93 प्रतिशत नगरीय आव्रजन हुआ हैं। इसके अतिरिक्त हरियाणा, महाराष्ट्र, राजस्थान, उडीसा आदि प्रातो से अल्प आव्रजन हुआ है। **(परिशिष्ट 4 2)**

4.1 7 ग्रामीण प्रव्रजन-

1981 मे कुल ग्रामीण प्रव्रजन का 72 72 प्रतिशत गणना के ही जनपद मे अन्यत्र हुआ था जिसका 91 54 स्त्रियो का तथा 8 45 प्रतिशत पुरुषो का था। 1991 मे कुल 73 62 प्रतिशत का 93 15 प्रतिशत स्त्रियो का तथा 6 85 प्रतिशत पुरुषो का प्रव्रजन गणना के ही जनपद मे अन्यत्र हुआ है। इसी प्रकार 1981 मे कुल ग्रामीण प्रव्रजन का 21 16 प्रतिशत राज्य के अन्य जिलो मे पैदा हुए लोगो का हुआ है। जिसका 92 42 प्रतिशत स्त्रियो का तथा 7 57 प्रतिशत पुरुषो का हुआ था। 1991 मे 21 26 प्रतिशत का 91 12 एव 8 88 क्रमश स्त्रियो एव पुरुषो का रहा है। भारत के अन्य प्रातो मे पैदा हुए लोगो का कुल प्रव्रजन मे 6 08 (1981)

एव 5 10 प्रतिशत (1991) रहा है। इसमे भी स्त्रियो का प्रतिशत पुरुषो से अधिक है। **(तालिका 4 14)**

तालिका 4 14

जनपद गाजीपुर मे ग्रामीण जनसख्या प्रव्रजन

	1981			1991		
मद	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री
गणना के जिले मे	291535	24650	266885	429264	29405	390859
अन्यत्र पैदा हुए	(72 72)	(8 45)	(91 54)	(73 62)	(6 85)	(93 15)
राज्य के अन्य	84850	6430	78420	123963	11008	112955
जिलो मे पैदा हुए	(21 16)	(7 57)	(92 42)	(21 26)	(8 88)	(91 12)
भारत के अन्य	24370	1530	22840	29737	1701	28036
प्रातो मे पैदा हुए	(6 08)	(6 28)	(93 72)	(5 10)	(5 17)	(94 28)
अन्य राष्ट्रो मे	140	80	60	117	65	52
पैदा हुए	(0 03)	57 14	(42 85)	(0 02)	(55 97)	44 03)
योग	400895	32690	368205	583081	45072	538009
	(100 00)	(8 15)	91 84	(100 00)	(7 73)	(92 27)

स्रोत- वही तालिका 4 9

4 18 नगरीय प्रव्रजन-

1981 मे कुल नगरीय प्रव्रजन का 25 54 प्रतिशत गणना के जिले मे ही हुआ है जिसमे 77 85 प्रतिशत स्त्रिया एव 22 14 प्रतिशत पुरुषो का था। 1991 मे कुल 23 47 प्रतिशत का 78 25 स्त्रियो का एव 21 75 प्रतिशत पुरुषो का हुआ है। राज्य के अन्य जिलो मे पैदा हुए लोगो का कुल प्रव्रजन 44 20 प्रतिशत (1981) था जिसमे 64 82 प्रतिशत स्त्रियो एव 35 10 प्रतिशत पुरुषो का था। 1991 मे 45 01 प्रतिशत का 66 21 प्रतिशत स्त्रियो का एव 33 79 प्रतिशत पुरुषो का रहा है। 1981 मे भारत के अन्य प्रातो मे पैदा हुए लोगो का नगरीय प्रव्रजन 29 83 प्रतिशत था जिसमे स्त्रियो का 52 20 प्रतिशत एव पुरुषो का 47 80 प्रतिशत था, 1991 मे कुल प्रव्रजन 31 02 का 55 01 प्रतिशत स्त्रियो एव 44 99 प्रतिशत पुरुषों का रहा है। जनपद के कुल प्रव्रजन (1991) मे 34 34 प्रतिशत पुरुषो एव 65 66 प्रतिशत स्त्रियो का योगदान है। **(तालिका 4 15)**

(तालिका 4 15)

जनपद गाजीपुर नगरीय जनसख्या प्रव्रजन

मद	1981			1991		
	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री
गणना के जिले मे अन्यत्र पैदा हुए	4765 (25 54)	1055 (22 14)	3710 (77 86)	5963 (23 47)	1297 (21 75)	4665 (78 25)
राज्य के अन्य जिलो मे पैदा हुए	8245 (44 20)	2900 (35 17)	5345 (64 82)	11436 (45 01)	3864 (33 79)	7571 (66 21)
भारत के अन्य प्रातो मे पैदा हुए	5565 (29 83)	2660 (47 80)	2905 (52 20)	7881 (31 02)	3546 (44 99)	4335 (55 01)
अन्य राष्ट्रो मे पैदा हुए	80 (0 43)	35 (43 75)	45 (56 25)	128 (0 51)	54 (42 27)	74 (57 73)
योग	18665 (100 00)	6650 (35 64)	12005 (64 35)	24408 (10 00)	8725 (34 34)	16683 (65 66)

स्रोत- वही तालिका 4 9

4 19 ग्रामीण प्रव्रजित जनसंख्या-

4 19 1 ग्रामीण से ग्रामीण-

1981 मे कुल ग्रामीण प्रव्रजन का 96 22 प्रतिशत गणना के ही जिले मे ग्रामीण से ग्रामीण हुआ है। 1991 मे यह प्रतिशत 93 89 रहा है। राज्य के अन्य जिलो मे कुल ग्रामीण प्रव्रजन का 95 16 (1981) प्रतिशत ग्राम से ग्राम एव 1991 मे 94 12 प्रतिशत रहा है। भारत के अन्य प्रातो मे पैदा हुए लोगो का ग्राम से ग्राम प्रवजन 1981 मे 96 59 प्रतिशत था जो 1991 मे 95 28 प्रतिशत रहा है। **(तालिका 4 16)**

4 19.2 ग्रामीण से नगरीय-

जनपद मे ही गणना के जिले मे अन्यत्र पैदा हुए कुल ग्रामीण प्रव्रजन का ग्रामीण से नगरीय प्रव्रजन 1981 मे 3 77 एव 1991 मे 6 11 प्रतिशत रहा। राज्य के अन्य जिलो मे पैदा

हुए कुल ग्रामीण प्रव्रजन का ग्रामीण से नगरीय 1981 मे 4 83 एव 1991 मे 5 88 प्रतिशत रहा। भारत के अन्य प्रातो मे कुल ग्रामीण प्रव्रजन का 3 97 (1981) एव 4 72 प्रतिशत (1991) ग्रामीण से नगरीय रहा है। **(तालिका 4 16)**

तालिका 4 16

जनपद गाजीपुर ग्रामीण प्रव्रजित जनसख्या

	1981			1991		
मद	**ग्रामीण से नगरीय**	**ग्रामीण से ग्रामीण**	**कुल**	**ग्रामीण से नगरीय**	**ग्रामीण से ग्रामीण**	**कुल**
गणना के जिले मे अन्यत्र पैदा हुए	10995 (3 77)	280540 (96 22)	291535 (72 73)	2[illegible]114 (6 11)	355178 (93 89)	378292 (72 01)
राज्य के अन्य जिलो मे पैदा हुए	4100 (4 83)	80750 (95 16)	84850 (21 16)	6951 (5 88)	111249 (94 12)	118200 (22 50)
भारत के अन्य प्रातो मे पैदा हुए	830 (3 40)	23540 (96 59)	24370 (6 07)	1309 (4 72)	26428 (95 28)	27737 (5 28)
अन्य राष्ट्रो मे पैदा हुए	—	—	140 (0 30)	—	—	1104 (0 21)
योग	15925 (3 97)	384830 (96 00)	400895 (100 00)	30102 (5 73)	495231 (94 27)	525333 (100 00)

स्रोत- वही तालिका 4 9

4.20 नगरीय प्रव्रजित जनसंख्या-

4 20 1 नगर से नगर-

1981 मे कुल नगरीय प्रव्रजन का 25 57 प्रतिशत गणना के ही जिले मे अन्यत्र होता था जिसका 23 40 प्रतिशत नगरीय से नगरीय होता था। 1991 मे कुल नगरीय प्रव्रजन का (25 12 प्रतिशत) का 23 11 प्रतिशत गणना के ही जिले मे अन्यत्र पैदा हुए लोगो का नगरीय से नगरीय प्रव्रजन रहा है। 1981 मे राज्य के अन्य जिलो मे पैदा हुए लोगो का कुल प्रव्रजन

DISTRICT GHAZIPUR
RURAL MIGRATION PATTERN 1991
IMMIGRATION
INDIA
U P
IN PER CENT
0 10
1 00
10 00
20 00
0 10
1 00
10 00
20 00
500 0 500
Km
50 0 50
Km
EMIGRATION
INDIA
U P
IN PER CENT
0 50
3 00
30 00
0 10
1 00
10 00
20 00
>20
500 0 500
Km
50 0 50
Km
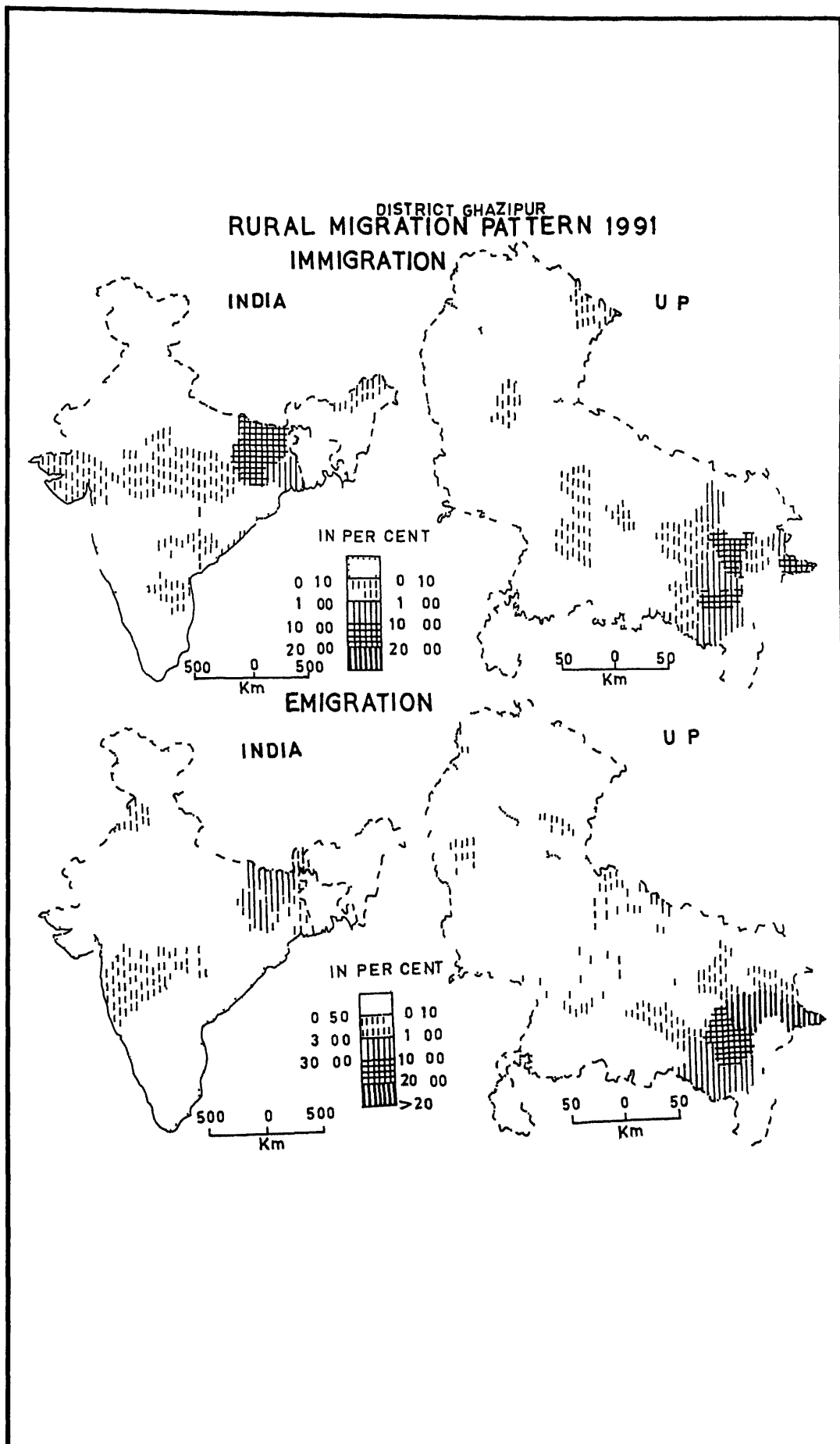
Fig. 4 4

(44 24) मे 45 90 प्रतिशत था, 1991 (46 01) मे यह प्रतिशत 47 65 प्रतिशत रहा। भारत के अन्य प्रातो मे नगरीय केन्द्रो से जितना कुल प्रव्रजन होता है उनकी 20 40 प्रतिशत (1981), 19 24 (1991) नगरो से नगरो को ही होता है। 1991 मे कुल नगरीय प्रव्रजन का 21 72 प्रतिशत नगर से नगर रहा है। **(तालिका 4 17)**

4 20 2 नगरीय से ग्रामीण प्रव्रजन-

गणना के जिले मे अन्यत्र कुल नगरीय प्रव्रजन का 1981 मे 76 60 प्रतिशत नगर से गाव, 1991 मे 76 89 प्रतिशत, राज्य के अन्य जिलो मे होने वाले कुल नगरीय प्रव्रजन का 54 10 प्रतिशत (1981) एव 52 35 प्रतिशत (1991) रहा है। भारत के अन्य प्रातो मे होने वाले कुल नगरीय प्रव्रजन का 74 60 (1981) तथा 80 76 प्रतिशत (1991) नगरीय से ग्रामीण होता है जबकि कुल नगरीय प्रव्रजन का 1991 मे 78 28 प्रतिशत नगरीय से ग्रामीण रहा है। **(तालिका 4 17)**

तालिका 4 17

नगरीय प्रव्रजित जनसख्या 1981, 1991

	1981			1991		
मद	**ग्रामीण से से ग्रामीण**	**नगरीय से नगरीय**	**कुल**	**ग्रामीण से ग्रामीण**	**नगरीय से नगरीय**	**कुल**
गणना के जिले	3650	1115	4765	4745	1427	6172
मे अन्यत्र पैदा हुए	(76 60)	(23 40)	(25 57)	(76 89)	(23 11)	(25 12)
राज्य के अन्य	4460	3785	8245	5918	5387	11305
जिलो मे पैदा हुए	(54 10)	(45 90)	(44 24)	(52 35)	(47 65)	(46 01)
भारत के अन्य	4430	1135	5565	5675	1352	7027
प्रातो मे पैदा हुए	(74 60)	(20 40)	(29 86)	(80 76)	(19 24)	(28 60)
अन्य राष्ट्रो मे	—	—	60	—	—	66
पैदा हुए			0 32			0 28)
योग	12540	6035	18635	1933	5337	24570
	(79 60)	(32 38)	(100 00)	78 28)	(21 72)	(100 00)

स्रोत- वही तालिका 4 9

4.21 भारत के अन्य प्रांतों मे ग्रामीण प्रव्रजन-

जनपद गाजीपुर से भारत के अन्य प्रातो मे सर्वाधिक ग्रामीण प्रव्रजन बिहार प्रात मे 97 00 प्रतिशत हुआ है। जबकि अन्य प्रातो यथा आन्ध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, पजाब, हरियाणा, दिल्ली, पश्चिम बगाल मे न्यूनतम ग्रामीण जनसख्या प्रव्रजित हुई है। (**परिशिष्ट 4 3**)

4 22 भारत के अन्य प्रांतों में नगरीय प्रव्रजन-

अन्य प्रातो मे नगरीय प्रव्रजन मे सर्वाधिक पश्चिम बगाल 30 90 प्रतिशत हुआ है जो विशेषत कलकत्ता महानगर के लिए है, इसके अतिरिक्त बिहार मे 28 90 प्रतिशत, अन्य प्रातो मे महाराष्ट्र 23 36 प्रतिशत गुजरात, उड़ीसा, झारखड, राजस्थान, इत्यादि मे यहा की जनसख्या प्रव्रजित हुई है। (**परिशिष्ट- 4 4**)

4 23 प्रदेश के अन्य जिलों से ग्रामीण आव्रजन-

प्रदेश के अन्य जिलों से कुल ग्रामीण आव्रजन का सर्वाधिक आजमगढ जनपद से 34 27 प्रतिशत, जबकि बलिया से 32 99 प्रतिशत, वाराणसी से 20 27, जौनपुर से 6 76 प्रतिशत, मिर्जापुर से 1 18, बस्ती से 1 05 प्रतिशत आव्रजन हुआ है। शेष जिलो से अल्प ग्रामीण आव्रजन हुआ है। (**परिशिष्ट 4 5**)

4 24 प्रदेश के अन्य जिलों से नगरीय आव्रजन-

प्रदेश के अन्य जिलो से कुल नगरीय आव्रजन का सर्वाधिक वाराणसी 28 72 प्रतिशत, आजमगढ, 21 94 प्रतिशत, बलिया 19 99 प्रतिशत, जौनपुर से 7 01 प्रतिशत, इलाहाबाद से 3 24 प्रतिशत, गोरखपुर से 2 82 प्रतिशत तथा मिर्जापुर से 3 58 प्रतिशत नगरीय आव्रजन हुआ है। अन्य जनपदो से अत्यल्प नगरीय आव्रजन हुआ है। (**परिशिष्ट 4 6**)

4.25 प्रदेश के अन्य जिलों में ग्रामीण प्रव्रजन-

जनपद मे अन्य जिलो मे सर्वाधिक ग्रामीण प्रव्रजन आजमगढ मे 29 31 प्रतिशत है बलिया मे 20 45 प्रतिशत, जौनपुर मे 9 16, प्रतिशत, वाराणसी मे 15 57 प्रतिशत एव इलाहाबाद मे 5 23 प्रतिशत ग्रामीण प्रव्रजन हुआ है। शेष जिलो मे ग्रामीण प्रव्रजन प्रतिशत अल्प है। (**परिशिष्ट** 4 7)

4 26 प्रदेश के अन्य जिलो मे नगरीय प्रव्रजन-

जनपद से अन्य जनपदो मे होने वाले नगरीय प्रव्रजन का सर्वाधिक वाराणसी मे 27 00 प्रतिशत हुआ है। इसके अतिरिक्त आजमगढ मे 11 21 प्रतिशत, कानपुर मे 10 12 प्रतिशत, इलाहाबाद मे 7 32 प्रतिशत, मिर्जापुर मे 7 11 प्रतिशत, जौनपुर मे 3 41 प्रतिशत, गोरखपुर मे 5 13 प्रतिशत एव लखनऊ मे 5 25 प्रतिशत नगरीय प्रव्रजन हुआ है। अन्य जिलो मे यह प्रतिशत अत्यल्प है। (**परिशिष्ट** 4 8)

REFERENCES

1 Archana Kumarı and Mukherjı S ``Male Mıgratıon And Regıonal Dısaparıtıes ın Bıhar" Vol 43, Dec (1997) N G S I Varanası P 316

2 Boque D (1969) ``Prıncıple of Demography" New York John Wıley and Sons Ltd

3 Boque D `Internal Mıgratıon' In O Duncan and Houser (eds) the Study of Populatıon an Inventory and Apprasal Chıcago Unı Press

4 Bhoogole ke Sıdhant Bhage-2 NCERT P 124

5 Chandna R C (1997) ``Jansankya Bhoogol" Kalyanı Publıshers P 96, 160

6 Gosal G S (1961) Internal Mıgratıon ın Indıa"- A Regıonal Analysıs Indıan Geographıcal Journal Vol 36 P 160

7 Garnıer Buajeu (1966) `Geography of Populatıon' Longman London P 217

8 Indıan Statıstıcal Instıtute Natıonal sample Survey 16th Round June 1960-61 Table Wıth Notes on Famıly Plannıng Calcutta 1964

9 Lee E S (1966) `Theory of Mıgratıon' Demography, Vol 3 P P (47-57)

10 Majumdar D M (1980) `Ek Auoduogık Shahar Ka Samajık Contoor" ``Kanpur" Shıvlal Agrawal and Co A gara P 160

11 Ojha S S (2001) ``Bharat Ka Bhugole" Bhaugolıc Adhyayan Sansthan Govındpur Allahabad P 141

12 Panda B P (1995) ``Jansankya Bhoogole" M P Hındı Academy Bhopal P 142

13 Smıta (1983) fertılıty Correlates of Urban Populatıon A Case Study of U P Campus Resıdence M Phıl Dıssertalıon Punjab Unıversıty P 71

14 Srıvastava K C (2000) ``Prachın Bharat Ka Itıhas Tatha Sanskrıtı" P 66

15 Sıngh Savındra (2000) `Paryavaran Bhoogole" Prayag Pustak Bhavan Unıversıty Road Allahabad P 463

16 Sıngh D K (1993) ``Gramın Jansankya Ka Shaharon Kı Or Palayan" Geoscıence Journal Vol 8 Part I, II Jan-July 1993 N G S I B H U Varanası P 46

17 Sıngh D N (1997) Rapıd Populatıon Growth and Sustaınable Development wıth Partıcular Reference to Developıng countrıes N G S I B H U Vol 43(1) March 1997 P 19

18 U N O (1985) The Mysore Populatıon Study

19 Wong W Lee E S `General Theory of Movement Populatıon Geography A Reader"

20 Yadav H L (1997) ``Jansankya Bhoogole" Vasundhara Prakashan Gorakhpur P 11

21 Yadav Rana P S (1997) Populatıon study of Sadat Block Dıstrıct Ghazıpur U P Dıssertatıon Worke for M A B H U P 26

अध्याय 5

जनांकिकी संरचना

जनसख्या सम्बन्धी ज्ञान की कामना मानव हृदय मे उसके उद्भव काल से ही रही है वस्तुत इसके प्रारम्भिक प्रयास अक्रमबद्ध एव अवैज्ञानिक थे। जनाकिकी का वैज्ञानिक अध्ययन विज्ञान एव तकनीक के विकास का ही प्रतिफल है। वर्तमान विश्व की चुनौतियो मे जनसख्या की समस्या मानवता की सबसे बडी एव महत्वपूर्ण समस्या बन गयी है। ऐतिसाहिक विकास का सचालक मानव स्वय बढती जनसख्या के चलते बोझ साबित हो रहा है। साथ ही विकास के पथ पर मानव जनसख्या से उत्पन्न प्रश्नो के घेरे मे कैद हो गया है। उपरोक्त सदर्भ मे जनसख्या का अध्ययन सर्वाधिक महत्व का बन गया है। जनसख्या सरचना का अध्ययन क्षेत्र विशेष के सम्यक् एव तर्क सगत भौगोलिक ज्ञान के लिए विशेष महत्वपूर्ण होता है क्योकि इससे क्षेत्र विशेष की प्रमुख विशेषताओं का पूर्ण आकलन हो जाता है। (सिह एस एन 1970)। जनसख्या सरचना भविष्य की जनसख्या वृद्धि तथा विकास क्षमताओं एव सभावनाओं को प्रभावित करती है। यह जनसख्या वृद्धि को सुनिश्चित एव प्रभावित करने वाले कारको मे प्रमुख होती है। (ओझा आर 1983) इससे स्थान विशेष के सामाजिक आर्थिक एव जनाकिकीय स्वरूप का स्पष्ट ज्ञान होता है। (चान्दना आर सी 1997)

जनाकिकी सरचना मे जनसख्या का अध्ययन निम्न रुपो मे किया जाता है-

(1) दो क्षेत्रो की जनाकिकी विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन।

(2) जनसाख्यिकीय सरचना का अध्ययन कर तद्नुरूप विकास योजनाओं का निर्माण एव क्रियान्वयन।

(3) सिविल रजिस्ट्रेशन से जन्म-मृत्यु के आकड़े अनुलब्ध होने पर जनगणना से प्राप्त आयु एव लिग के आकड़े प्राप्त कर विश्लेषण किया जा सकता है।

(4) जनाकिकी सरचना के अध्ययन से जनसख्या के सामाजिक सरचना के अध्ययन से जनसख्या के सामाजिक आर्थिक अवस्था के अध्ययन की सामग्री प्राप्त हो जाती है।

जनसख्या सरचना की समग्र विशेषताओं को ध्यातव्य करते हुए जनाकिकीय सरचना के अन्तर्गत जनसख्या के गुण, लिग, आयु, शिक्षा, धर्म, भाषा, व्यवसाय, वैवाहिक स्तर आदि गवेषणीय बिन्दुओं का अध्ययन किया गया है।

5 1 लिग सरचना-

सामाजिक आर्थिक विकास मे यौन या लिग अनुपात की महत्वपूर्ण भूमिका के कारण जनसख्या भूगोल मे इसका अध्ययन अपरिहार्य होता है। (यादव हीरालाल 1997) लिग अनुपात किसी क्षेत्र की अर्थ व्यवस्था का सूचक है तथा प्रादेशिक विश्लेषण के लिए अत्यत लाभदायक तत्व है। (फ्रैकलिन 1956) लिग अनुपात का प्रभाव जनसख्या वृद्धि, विवाह-दर, व्यावसायिक सरचना पर पडता है। (ट्रिवार्था जी टी 1969) के अनुसार यह न केवल स्थल रूप का महत्वपूर्ण लक्षण है अपितु यह अन्य जनसाख्यिकीय तत्वो को महत्वपूर्ण ढग से प्रभावित करता है। अत क्षेत्रीय स्थल रूप के विश्लेषण का यह एक अतिरिक्त माध्यम बन सकता है।

किसी निश्चित जनसख्या मे पुरुष एव स्त्रियो के अनुपात को लिगानुपात अथवा यौनानुपात कहते है। (पत जे सी 1983) विभिन्न देशो के जनगणना विभाग यौन सरचना को एक दूसरे के समानुपातिक रूप मे ही व्यक्त करते है वस्तुत अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसके प्रदर्शन की कोई सर्वमान्य विधि नही है- सामान्यत निम्न तीन रूपो मे इस अनुपात का अध्ययन होता है (हीरालाल यादव 1997)—

(i) प्रति 100 या 1000 स्त्री/पुरुष पर पुरुषो/स्त्रियो की सख्या।

(ii) स्त्री या पुरुष कुल जनसख्या के प्रतिशत रूप मे।

(iii) इकाई के दशमलव रूप मे पुरुषो या स्त्रियो का अनुपात।

यू एस ए मे प्रति 100 स्त्रियो पर पुरुषो की सख्या तथा न्यूजीलैड मे प्रति 100 पुरुषो पर स्त्रियो की सख्या के रूप मे लिंगानुपात की गणना की जाती है। सोवियत रूस मे प्रतिशत रूप मे यौन अनुपात ज्ञात करते है। भारत मे प्रति 1000 पुरुष पर स्त्रियो की सख्या के रुप मे लिगानुपात दर्शाते है।

तालिका 5 1

विश्व के प्रमुख देशो का लिगानुपात

देश	प्रति हजार पुरुषो पर स्त्रियो की सख्या	देश	प्रति हजार पुरुषो पर स्त्रियो की सख्या
समस्त विश्व	986	पाकिस्तान	938
इण्डोनेशिया	1004	बाग्लादेश	953
चीन	944	भारत	933
जापान	1041	रूस	1140
नाइजीरिया	1016	स रा अ	1029
		ब्राजील	1025

स्रोत- भारत की जनगणना 2001 पृष्ठ 24

जनपद मे 1901-2001 के लिंगानुपात का विवरण तालिका 5 2 मे विवरित है—

तालिका 5 2

लिगानुपात (प्रति हजार पुरुषो पर स्त्रियो की सख्या)

वर्ष	जनपद		उत्तर प्रदेश		भारत	
	कुल	वृद्धि	कुल	वृद्धि	कुल	वृद्धि
1901	1053	—	938	—	972	
1911	996	-57	916	-18	969	-08
1921	958	-38	908	-08	955	-09
1931	951	-07	903	-05	950	-05
1941	972	21	907	04	945	-05
1951	1000	28	908	-01	946	01
1961	1020	20	907	-01	941	-05
1971	977	-43	876	-31	930	-11
1981	988	11	882	06	934	04
1991	957	-31	876	-06	929	-05
2001	974	17	998	+22	933	04

स्रोत- जिला जनगणना पुस्तिका 1951, 1961, 1971, 1981, 1991, एव जनगणना पुस्तिका भारत उत्तर प्रदेश 1991 एव भारत की जनगणना 2001 एव उत्तर प्रदेश की जनगणना 2001 से परिकलित।

जनपद गाजीपुर मे 1901 से 2001 तक के लिगानुपात से स्पष्ट होता है कि 100 वर्षों मे यह घटता बढता रहा है। यही स्थिति कतिपय विभिन्नताओं के साथ उत्तर प्रदेश मे भी पाई जाती है। लेकिन पूरे देश मे लिगानुपात जनपद तथा प्रदेश से भिन्न है। केवल 1951 मे वृद्धि हुई है, इसके अतिरिक्त 1971 तक निरन्तर घटता रहा है। 1981 एव 2001 मे लिगानुपात मे वृद्धि हुई है।

जनपद मे सबसे कम लिगानुपात 1931 मे 951 तथा सबसे अधिक लिगानुपात 1901 मे 1053 था। जनपद मे 1911 मे प्रति हजार पुरुषो पर स्त्रियो की सख्या 996 थी जो 1921 मे घटकर 958 हो गयी। 1931 मे घटकर 951 हो गयी जिसका प्रमुख कारण 1925 का दुर्भिक्ष तथा 1927 की महामारी थी जिससे बहुत से पुरुष अपने परिवारो की सेवा हेतु परदेश से घर आ गये थे। पुन इनके बाहर चले जाने से 1941 मे लिगानुपात मे वृद्धि हो गयी। तदुपरान्त 1951 एव 1961 मे आर्थिक सामाजिक तथा राजनैतिक आत्म निर्भरता, स्वास्थ्य सबधी सुविधाओं के विकास के फलस्वरूप मृत्यु दर मे कमी तथा अधिकाश लोगो द्वारा अपने नौकरी स्थान पर परिवार साथ न रखने के कारण स्त्रियो की सख्या प्रति हजार पुरुषो पर 1000 एव 1020 हो गयी। 1971 एव 1981 मे यह 977 एव 988 रही तथा 1991 मे 957 रही। जनपद की लिंगानुपात की घटती बढती दरो का मुख्य कारण पुरुष वर्ग जीविकोपार्जन के लिए जनपद से बाहर जाना व आना है। 2001 मे जनपद का लिगानुपात कम रहा। जनपद और प्रदेश के लिगानुपात से यदि तुलना की जाय तो यह स्पष्ट है कि जनपद का लिगानुपात प्रदेश से सर्वदा अधिक रहा है। **(तालिका 5 2, चित्र 5 1)**

5 2 लिगानुपात का क्षेत्रीय वितरण-

विकास खड स्तर पर लिंगानुपात मे 1981 की अपेक्षा 1991 मे कमी आयी है। सर्वाधिक कमी सैदपुर विकास खड मे हुई है तथा सबसे कम कमी कासिमाबाद विकास खड मे हुई है। 1991 के लिंगानुपात के क्षेत्रीय वितरण मे जनपद मे अति निम्न श्रेणी (प्रति हजार पुरुषो पर 970 से कम स्त्रिया) मे कुल 11 विकास खड आते हैं जिसमे देवकली 969, मरदह मे 954, गाजीपुर 915, करण्डा मे 956, कासिमाबाद 954, बाराचँवर 955, मुहम्मदाबाद 927, भावरकोल 957, जमानिया 948, रेवतीपुर 939 तथा भदौरा मे 938 स्त्रिया प्रति हजार पुरुषो पर रही जबकि 1981 मे इस श्रेणी मे केवल 3 विकास खड आते थे जिसमे गाजीपुर, मुहम्मदाबाद एव रेवतीपुर विकास खड थे।

निम्न श्रेणी (970-990) के अन्तर्गत 1991 मे 8 विकास खड आते है जिसमे जखनिया 990, सैदपुर 972 तथा बिरनो 979 है। 1981 मे इस श्रेणी मे 5 विकास खड आते थे, जिसमे भावरकोल, कासिमाबाद, बाराचवर, जखनिया एव भदौरा आते थे। **मध्यम श्रेणी**

(990-1010) मे मनिहारी एव सादात विकास खण्ड आते है जिसके लिगानुपात क्रमश 997 एव 1005 है, 1981 मे इस श्रेणी के अन्तर्गत करण्डा, मरदह, तथा देवकली विकासखड आते थे। जनपद मे 1981 मे सर्वाधिक लिगानुपात मनिहारी विकास खड मे (1041 स्त्रिया, 1000 पुरुष) तथा सबसे कम गाजीपुर विकास खड मे (960 स्त्रिया, 1000 पुरुष) था जबकि 1991 मे सर्वाधिक लिंगानुपात सादात मे 1005 तथा सबसे कम गाजीपुर विकास खड मे (915 स्त्रिया, 1000 पुरुष) रहा। **(तालिका 5 3 , चित्र 5 1)**

तालिका 5 3

जनपद गाजीपुर विकास खड वार लिगानुपात

(प्रतिहजार पुरुषो पर स्त्रियो की सख्या)

विकास खड	लिगानुपात	
	1981	1991
जखनिया	1036	990
मनिहारी	1041	997
सादात	1037	1005
सैदपुर	1023	972
देवकली	1006	969
बिरनो	1011	979
मरदह	999	954
गाजीपुर	960	915
करण्डा	994	956
कासिमाबाद	978	954
बाराचवर	984	955
मुहम्मदाबाद	964	927
भावरकोल	989	957
जमानिया	971	948
रेवतीपुर	965	939
भदौरा	976	938

स्रोत- प्राथमिक जनगणना सार पुस्तिका 1981,1991

लिगानुपात का उपरोक्त विश्लेषण इस तथ्य की ओर इगित करता है कि प्रति हजार पुरुषो पर घटती हुए स्त्रियों की सख्या में वृद्धि के लिए सकारात्मक कदम उठाने की जरूरत है। सामाजिक कार्यकर्ताओं के अनुसार इस घातक प्रवृत्ति को रोकने के लिए धार्मिक, सामाजिक, नैतिक तथा
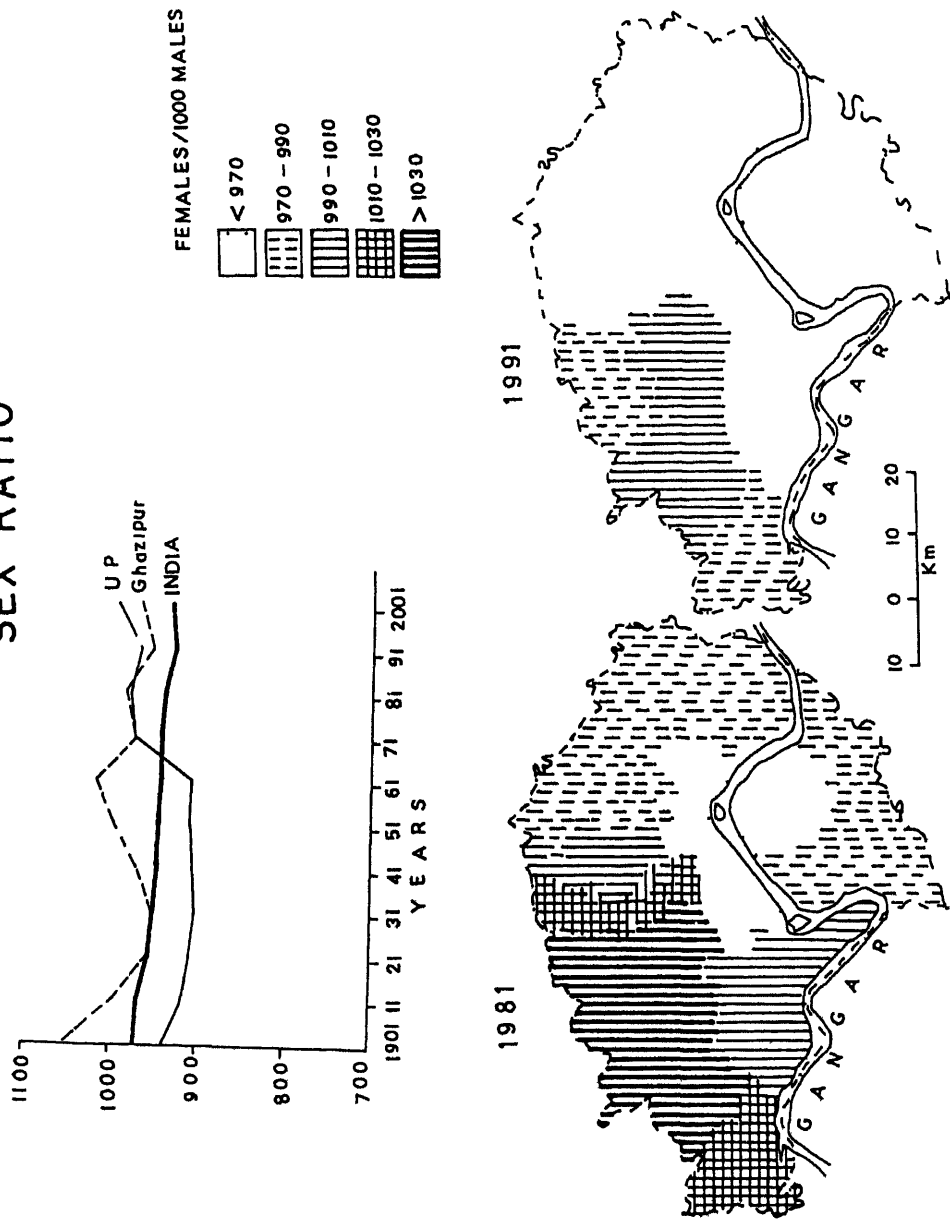
कानूनी स्तर पर प्रयास करने होगे। दहेज की कुप्रथा लड़के के नाम पर वश चलाने की परम्परा, सपत्ति उत्तराधिकार कानून तथा महिलाओं के प्रति सकीर्ण नजरिया आदि को बदलना होगा। सरकार को बालिकाओं की शिक्षा स्वास्थ्य तथा पोषण पर विशेष ध्यान देते हुए इस दिशा मे सक्रिय पहल करनी चाहिए।

हाल ही मे सर्वोच्च न्यायालय ने कुल 11 राज्यो पजाब, हरियाणा, दिल्ली, बिहार, उत्तर प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, आध्र प्रदेश, केरल, राजस्थान और पश्चिम बगाल के स्वास्थ्य सचिवो तलब कर भ्रूण परीक्षण पर प्रभावी रोक लगाने का निर्देश दिया। भ्रूण हत्या के बढते मामले तथा इसके परिणाम स्वरूप देश मे घटते लिंगानुपात के खतरे को देखते हुए सरकार द्वारा प्रसव पूर्व लिग निर्धारण व बालिका भ्रूण हत्या अधिनियम को प्रभावी ढग से लागू करने के लिए निम्न कदम उठाये जाने चाहिए।

(1) सभी चिकित्सालयो मे यह सूचना लिखी जाये कि यहा भ्रूण परीक्षण नही होता।

(2) अल्ट्रासाउण्ड मशीनो का पजीकरण किया जाये।

(3) राजनैतिक दबाव आने पर परिवार कल्याण विभाग को सूचित किया जाये।

(4) जनमानस को यह बोध कराया जाय कि लडके-लडकी समान है ऐसी स्वीकारोक्ति आपका सामाजिक एव नैतिक दायित्व है।

5.3 आयु–संरचना-

किसी भी क्षेत्र की जनसख्या के वास्तविक अध्ययन के लिए उस क्षेत्र की जनसख्या को उम्र के अनुसार वर्गीकृत करके अध्ययन करना आवश्यक होता है। आयु, जनसख्या की सरचना को समझने का सबसे महत्वपूर्ण एव आवश्यक पक्ष है जिसके आधार पर भविष्य मे जनसख्या का अनुमान तथा विद्यमान आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है। (यादव हीरालाल 1997) आयु मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। एक व्यक्ति किस उम्र मे स्कूल जाता है, श्रमशक्ति मे प्रवेश करता है, मताधिकारी बनता है, विवाह करता है, कार्यशील होता है आदि ऐसे महत्वपूर्ण विषय है, जिनकी जानकारी आयु सरचना के आधार पर ही सभव है। आयु सरचना से मृत्यु दरे एव विवाह दरे प्रभावित होती है। इससे आर्थिक एव व्यावसायिक ढाचे का ज्ञान होता है। सक्षेप मे आयु सरचनाके निम्न पक्ष है-

(1) आयु सरचना किसी जनसख्या मे आश्रितो के अनुपात को बतलाती है।

(2) आयु संरचना के अध्ययन से श्रम शक्ति की औसत आयु, नयी प्रविधि सीखने, नये परिवर्तनो को आत्मसात् करने एव परिश्रम की क्षमता को निर्धारित करती है।

(3) आयु सरचना सामाजिक क्रिया-कलापो का मार्गदर्शन करती है।

(4) आयु सरचना विवाह पद्धति को प्रभावित एव निर्धारित करती है।

(5) आयु सरचना मृत्यु दर को भी निर्धारित करती है, जिस समाज मे बच्चे और वृद्धो की सख्या अधिक होती है। वहॉ मृत्युदर अधिक तथा जहॉं युवा वर्ग की सख्या अधिक होगी वहॉं मृत्युदर कम होगी।

(6) आयु सरचना किसी देश के राजनैतिक चिन्तन को प्रभावित करती है।

(7) आयु सरचना विश्लेषण से बच्चो युवको तथा वृद्धो की सख्या का आनुपातिक वितरण ज्ञात होता है जिससे भावी योजनाओं के क्रियान्वयन मे सहायता मिलती है।

अध्ययन क्षेत्र की सपूर्ण जनसख्या मे सबसे अधिक प्रतिशत 9 वर्ष से कम उम्र के बच्चो का है। 1981 मे सम्पूर्ण जनसख्या मे यह प्रतिशत 30 00 है, जिसमे बालको एव बालिकाओं का प्रतिशत क्रमश 30 90 एव 29 09 है। 1991 मे सम्पूर्ण प्रतिशत 29 56, जिसमे बालक एव बालिकाओ का प्रतिशत 29 96 एव 29 15 रहा। 10-19 आयु वर्ग का कुल प्रतिशत 21 35 जिसमे पुरुष एव महिलाओ का प्रतिशत क्रमश 22 32 एव 20 58 था। 1991 मे यह प्रतिशत कुल 20 82, महिलाओं एव पुरुषो का 20 26 एव 21 35 प्रतिशत रहा। 20-29 एव 30-39 आयु वर्ग का प्रतिशत 1981 एव 1991 मे क्रमश 13 73, 14 28, 11 29 एव 11 66 प्रतिशत था। 40-49 आयु वर्ग मे जनसख्या का कुल प्रतिशत 1981 मे 9 17 जिसमे पुरुषो एव स्त्रियो का 8 85 एव 9 50 है। 1991 मे इसमे ह्रास हुआ है जो 9 10 प्रतिशत है, यहा भी स्त्रियो का प्रतिशत पुरुषो से अधिक है। 1981 एव 1991 मे 50-59 आयु वर्ग की जनसख्या 6 43 एव 6 25 प्रतिशत है, यहा महिलाओं का प्रतिशत पुरुषो से कम है जो क्रमश 6 15 (पुरुष) एव 5 90 (महिला) है। 60 वर्ष से अधिक जनसख्या का प्रतिशत 1981 मे 6 60 जिसमे पुरुषो एव महिलाओं का प्रतिशत 8 36 एव 4 85 है। 1991 मे 60 वर्ष से अधिक जनसख्या का प्रतिशत 7 70 है, जिसमे पुरुषो एव महिलाओं के प्रतिशत मे 1981 की अपेक्षा न्यून अतर है यह प्रतिशत 8 29 (पुरुष) एव 7 10 (महिला) है।

जनसख्या के आयु वर्ग के उपरोक्त प्रारूप से स्पष्ट होता है कि जैसे-जैसे आयु वर्ग की श्रेष्ठता बढती जाती है जनसख्या के प्रतिशत मे ह्रास होता जाता है। यह ह्रास प्रत्येक आयु वर्ग मे भिन्न भिन्न है। **(परिशिष्ट 5 1 चित्र सख्या 5 2)**

5 3.1 ग्रामीण आयु–संरचना-

ग्रामीण क्षेत्रों की आयु सरचना मे 1981 मे 0-9 आयु वर्ग की जनसख्या 30 37 प्रतिशत थी तथा 1991 मे यह जनसख्या 28 28 प्रतिशत रही। 1981 में 10-19 आयु वर्ग

की जनसख्या 21 95 एव 1991 मे 19 63 प्रतिशत रही। 20-29 एव 30-39 आयु वर्ग की जनसख्या 1981 एव 1991 मे क्रमश 12 77, 13 69, 10 54 एव 10 08 प्रतिशत रही। 20-29 आयु वर्ग की जनसख्या कम होने का कारण जीविकोपार्जन के लिए लोगो का नगरीय क्षेत्रो मे प्रव्रजन है।

40-49 आयु वर्ग के लोगो का प्रतिशत 1981 एव 1991 मे क्रमश 8 97 एव 8 69 प्रतिशत था। 50-59 आयु वर्ग का प्रतिशत 1981 एव 1991 मे क्रमश 6 75 एव 5 98 था। 60 से अधिक आयु वर्ग का प्रतिशत 1981 मे 7 55 एव 1991 मे 7 44 प्रतिशत रहा।

5 3 2 नगरीय–आयु-सरचना-

जनपद की ग्रामीण एव नगरीय आयु सरचना के विभिन्न आयु वर्गों मे अतर दिखाई देता है। यह अन्तर 29 वर्ष से कम एव 60 वर्ष से अधिक आयु वर्गों मे अधिक है। 40-49 आयु वर्ग मे भी यह अतर अधिक है। 1981 एव 1991 मे 0-9 एव 10-19 आयु वर्ग की नगरीय जनसख्या का प्रतिशत क्रमश 27 79, 28 51, 23 00 एव 23 67 प्रतिशत रही। 20-29 एव 30-39 आयु वर्ग की जनसख्या 15 27, 15 02, 11 63 एव 12 26 प्रतिशत थी। 40-49 एव 50-59 आयु वर्गों की नगरीय जनसख्या प्रतिशत क्रमश 1981 एव 1991 मे क्रमश 9 04, 6 13 एव 5 58 प्रतिशत रही। 60 से अधिक आयुवर्ग का प्रतिशत 1981 एव 1991 मे क्रमश 6 50 एव 5 95 प्रतिशत रहा। **(तालिका 5 5 चित्र 5 2)**

तालिका 5 4

जनपद गाजीपुर आयु-सरचना (प्रतिशत)

आयु- वर्ग	1981		1991	
	ग्रामीण	नगरीय	ग्रामीण	नगरीय
0-9	30 37	27 79	28 28	28 51
10-19	21 95	23 00	19 63	23 67
20-29	12 77	15 26	13 69	15 02
30-39	10 54	11 63	11 08	12 26
40-49	08 97	09 61	08 69	09 04
50-59	06 75	06 13	05 98	05 58
60+	07 55	06 50	07 44	05 95

स्रोत- जिला जनगणना हस्त पुस्तिका 1981, 1991

DISTRICT GHAZIPUR
AGE-SEX STRUCTURE OF POPULATION
1981 (TOTAL)
1991 (TOTAL)
AGE GPOUP
AGE GROUP
MALE
FEMALE
60+
50 59
40 49
30 39
20 29
10 19
0-9
40 30 20 10 0
0 10 20 30
0 10 20 30 40
IN PER CENT
RURAL & URBAN(1981)
RURAL & URBAN(1991)
50-59
40-49
30-39
20-29
10-19
RURAL
URBAN
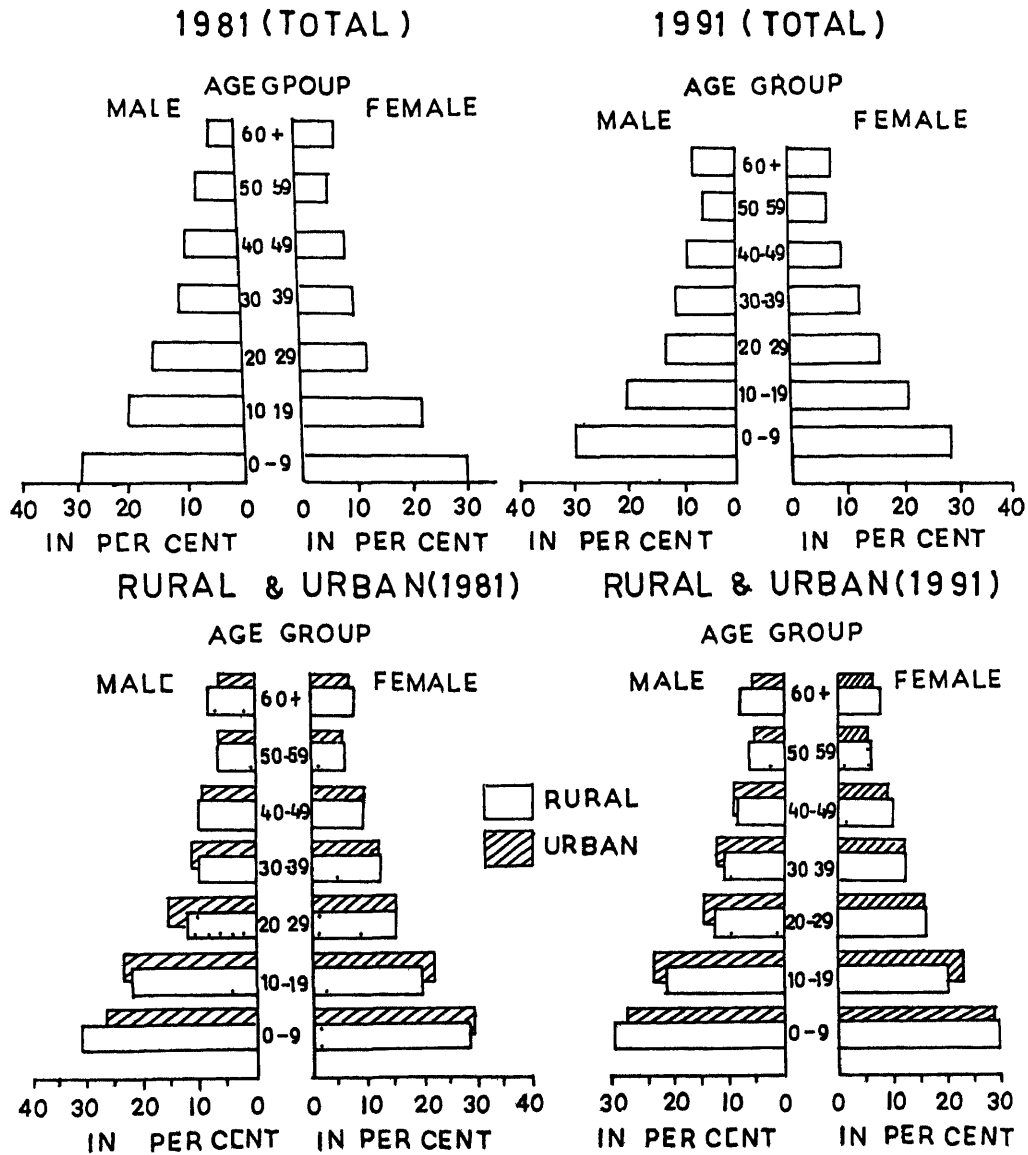
Fig. 5.2

आयु सरचना के उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि जनपद मे बाल आयु वर्ग जनसख्या का अधिक होना जनपद को प्रथम या द्वितीय जनाकिकी सक्रमण अवस्था मे होने को इगित कर रहा है।

5 4 जनसंख्या का संरचनात्मक अनुपात-

मुख्यतया किसी भी क्षेत्र की जनसख्या की आयु एव लिगानुपात, वैवाहिक स्तर, कार्यशील जनसख्या, जनसख्या, वृद्धि, वितरण एव घनत्व प्रतिरूपो पर निर्भर करता है। जनपद की जनसख्या विश्लेषण को पूर्ण रूपेण स्पष्ट करने केलिए वयस्क अनुपात, आयुदर सूचकाक तथा निर्भरता अनुपात ज्ञात किया गया है।

5.4 1 वयस्क अनुपात-

20-60 वर्ष के लोगो की जनसख्या को वयस्क की श्रेणी मे रखा जाता है। यह वह अनुपात होता है जो सपूर्ण जनसख्या मे वयस्क जनसख्या के प्रतिशत से सबध रखता है। जनपद म 1971-1981 एव 1991 का वयस्क अनुपात निम्न सूत्र से ज्ञात किया गया है-

$$\text{सूत्र व अ} \quad \frac{\text{क}}{\text{ख}} \times 100$$

व अ = वयस्क अनुपात

क = जनपद की वह जनसख्या जो 20-60 वर्ष के मध्य हो।

ख = जनपद की सपूर्ण जनसख्या

जनपद के सपूर्ण जनसख्या के वयस्क अनुपात मे 1971 से 1981 मे कमी हुई है लेकिन 1991 मे वृद्धि हुई है। ग्रामीण वयस्क अनुपात मे 1971 मे तुलना मे 1981 मे कमी हुई है, जबकि नगरीय वयस्क अनुपात मे 1971 से 1991 तक निरन्तर वृद्धि हुई है जिसका प्रमुख कारण ग्रामीण वयस्क जनसख्या का नगरीय केन्द्रो की ओर स्थानान्तरण है। (**तालिका 5 5**)

तालिका 5 5

जनपद गाजीपुर मे वयस्क अनुपात

(प्रतिशत मे)

मद	1971	1981	1991
सपूर्ण जनपद	41 31	41 28	41 38
ग्रामीण	41 32	41 27	41 24
नगरीय	34 82	38 36	41 43

5 4 2 निर्भरता अनुपात-

कार्यरत जनसख्या के ऊपर भार स्वरूप जनसख्या के मापक को जनसख्या का निर्भरता अनुपात कहते है। (त्यागी एन 1982) जनपद गाजीपुर मे निर्भरता अनुपात 1971 के बाद निरन्तर कम हुआ है। यह 1971 मे 142 99 था जो 1991 मे 140 34 हो गया। निर्भरता अनुपात मे सर्वाधिक ह्रास शहरी क्षेत्रो मे हुआ है। निर्भरता अनुपात मे ह्रास इस बात का सूचक है कि वयस्क लोगो पर निर्भर लोगो की सख्या कम हो रही है। प्रति 100 लोगो पर निर्भर लोगो की सख्या से सदर्भित निर्भरता अनुपात (तालिका 5 6) का परिकलन निम्न सूत्र की सहायता से किया गया है-

$$\text{निर्भरता अनुपात} = \frac{\text{अ} + \text{ब}}{\text{स}} X100$$

अ = जनपद मे 20 वर्ष की आयु से कम उम्र के बच्चे।

ब = जनपद मे 60 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्ति।

स = जनपद के 20-60 वर्ष के मध्य के व्यक्ति।

तालिका 5 6

जनपद गाजीपुर निर्भरता अनुपात

(प्रतिशत)

मद	1971	1981	1991
सपूर्ण जनपद	142 00	141 00	140 34
ग्रामीण	141 96	141 84	140 90
नगरीय	174 02	158 41	122 55

स्रोत- जिला जनगणना हस्तपुस्तिका सोशल एड कल्चरल टेबुल 1971, 1981 एव जनपद साख्यिकी पत्रिका 2000

5 4.3 आयु दर सूचकांक-

आयु दर सूचकाक द्वारा बच्चो एव वृद्धो का अनुपात ज्ञात किया जाता है। गाजीपुर जनपद की जनसख्या का आयुदर सूचकाक निम्न सूत्र से परिकलित किया गया है-

$$\text{निर्भरता अनुपात} = \frac{\text{म1}}{\text{न1}} X100$$

म1= जनपद की 60 वर्ष से अधिक लोगो की जनसख्या।

न1= 20 वर्ष से कम उम्र के लोगों की सख्या।

तालिका 5 7

जनपद गाजीपुर आयुदर सूचकाक

मद	1971	1981	1991
सम्पूर्ण जनपद	15 92	15 58	15 28
ग्रामीण	16 10	15 71	15 60
नगरीय	15 78	13 64	12 80

तालिका 5 7 से स्पष्ट है कि सपूर्ण जनपद का आयु दर सूचकाक 1971 मे 15 92 था जो 1991 मे 15 28 हो गया। इसी प्रकार ग्रामीण जनसख्या का आयुदर सूचकाक 16 10 से 15 60, एव नगरीय 15 78 से 12 80 हो गया। तालिका से यह भी स्पष्ट होता है उद्यमशील जनसख्या का प्रतिशत किचित ही बढा है। वही 20 वर्ष से कम एव 60 वर्ष से अधिक जनसख्या का दबाव बढ रहा है। ग्रामीण क्षेत्र मे 1981, 1991 मे अल्प कमी वस्तुत शुभ सकेत है, लेकिन जब तक अकार्यशील जनसख्या (20 वर्ष से कम) का दबाव कम नही होगा तब तक सामाजिक आर्थिक विकास मे द्रुत गति नही आयेगी।

5 5 वैवाहिक स्तर-

जनसख्या की वैवाहिक स्थिति-अविवाहित-विवाहित, विधवा और विधुर व्यक्तियो के अनुपात को इगित करता है। इन अनुपातो को आयु सरचना और यौनानुपात दोनो ही प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते है, किन्तु सामाजिक सस्थाओं एव आर्थिक दशाओं का भी समान प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार किसी जनसख्या की वैवाहिक स्थिति कभी भी स्थिर नही रहती। दुर्भाग्यवश वैवाहिक स्थिति की भौगोलिक विभिन्नता को प्रदर्शित करने वाले अध्ययन कम ही हुए है। (यादव हीरालाल 1997)

विवाह, पृथक्करण, तलाक एव वैधव्य आदि जनाकिकीय घटनाये जनसख्या विकास को प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित करती है। इसका प्रजनता एव स्थानान्तरण से प्रत्यक्ष सबध है किन्तु मृत्यु क्रम से अप्रत्यक्ष। विवाह पुनरुत्पादन ईकाई का प्रारम्भिक बिन्दु है, क्योकि इसका मुख्य उद्देश्य बच्चो को ससार मे लाकर उनके स्वावलबी बनने तक उनके पालन-पोषण का ध्यान रखना है जिससे मानव जाति की निरन्तरता बनी रहे।

वैवाहिक सरचना जनसख्या की एक ऐसी महत्वपूर्ण सामाजिक विशेषता है जो जनाकिकी तथ्यो को अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित करती है विभिन्न जनसख्या समूहो मे अलग-अलग आर्थिक और सामाजिक स्तर के कारण वैवाहिक सरचना भी अलग-अलग होती है। भारत के सदर्भ में यह सत्य है कि अपेक्षाकृत निम्न सामाजिक स्तर के कारण अल्प वयस्को का विवाह हो जाता है जबकि उच्च शैक्षणिक स्तर और विकसित अर्थव्यवस्था वाले समूहो मे अपेक्षाकृत अधिक आयु मे विवाह

DISTRICT GHAZIPUR
MARITAL STATUS
1971
AGE GROUPS
70 +
60-69
50-59
40-49
30-39
20-29
10 - 19
0 - 9
100 80 60 40 20 0
MALE (%)
0 20 40 60 80 100
FEMALE (%)
1981
AGE GROUPS
MALE (%)
FEMALE (%)
1991
AGE GROUPS
MALE (%)
FEMALE (%)
UNMARRIED
MARRIED
WIDOWED DIVORCED AND OTHERS
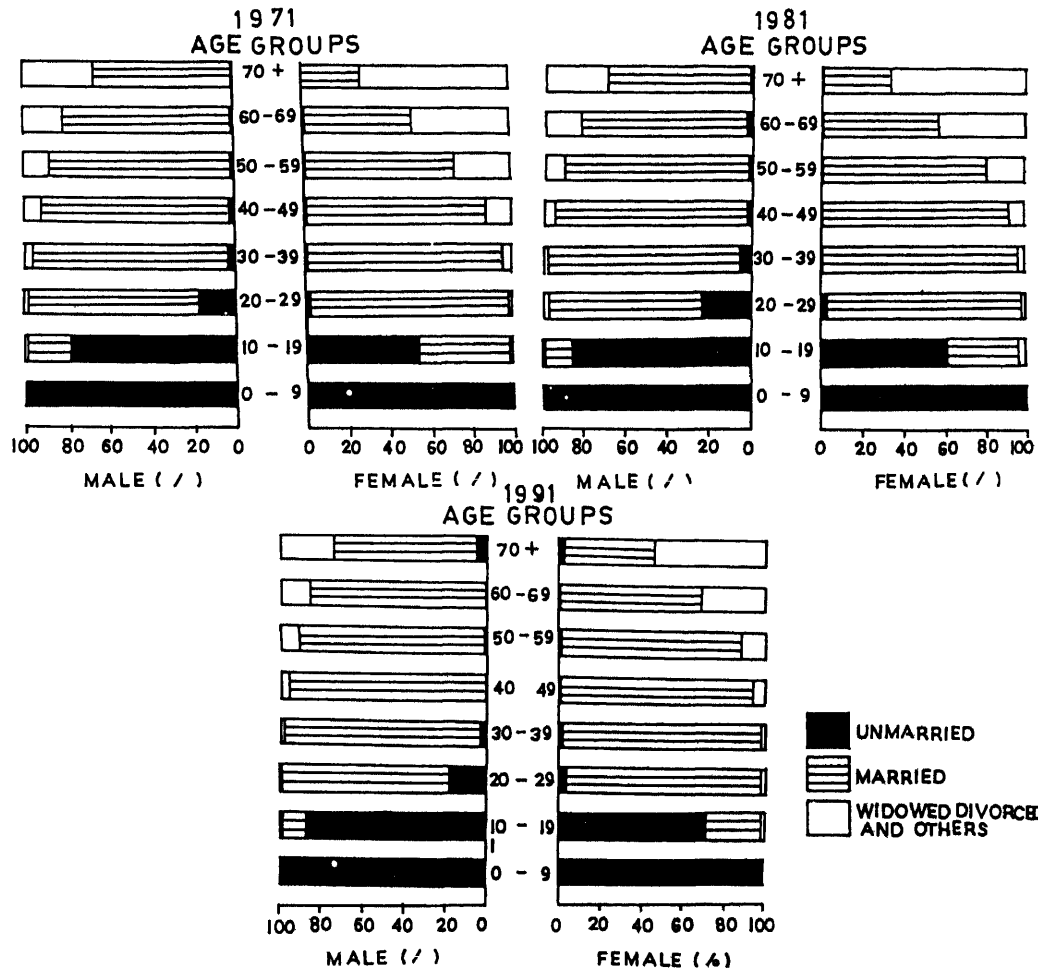
Fig. 5.3

होता है। क्षेत्रीय आधार पर भी विभिन्न वर्गों मे वैवाहिक सरचना अलग-अलग होती है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव प्रजननता पर पडता है जिस समाज मे विवाहित स्त्रियो की सख्या सर्वाधिक है वहा जन्मदर भी उच्च है जबकि जनसख्या मे अपेक्षाकृत कम विवाहित स्त्रियो और पुरुषो दोनो मे जो विवाहित है उनमे मृत्युदर कम है जबकि अविवाहित-विधवा और तलाक प्राप्त लोगो मे मृत्यु दर अधिक है।

भारत मे विवाह सामान्यत कम उम्र मे ही हो जाता है। कम उम्र मे विवाह, निम्न जीवन स्तर एव अल्प विकसित सामाजिक अव सरचना के कारण होता है। किन्तु उत्तरोत्तर सामाजिक आर्थिक विकास (साक्षरता एव उच्च जीवन स्तर) के फलस्वरूप कम उम्र मे विवाह की आवृत्ति निरन्तर कम हो रही है।

सन् 1971 मे 0-9 आयु वर्ग मे अविवाहित पुरुष एव स्त्रियो का प्रतिशत 100 है। 10-19 आयु वर्ग मे अविवाहित स्त्री-पुरुष क्रमश 54 86 एव 78 24 प्रतिशत है। इस आयु वर्ग मे विवाहित पुरुष एव स्त्री क्रमश 21 74 एव 44 85 प्रतिशत थे। विधवा, विधुर का प्रतिशत 0 14 एव 0 06 प्रतिशत तथा तलाक शुदा पुरुष स्त्री 0 01 एव 0 01 प्रतिशत थे। अविवाहित पुरुष, स्त्रियो का सबसे कम प्रतिशत 30-90 आयु वर्ग मे है जो क्रमश 3 38 एव 0 26 प्रतिशत है, इसी आयु वर्ग मे विवाहित पुरुष एव स्त्रियो का प्रतिशत सर्वाधिक 93 22 एव 95 05 प्रतिशत है। विधवा/विधुर का सर्वाधिक प्रतिशत 60-69 आयुवर्ग मे 21 43 एव 49 36 प्रतिशत है। स्पष्ट है कि इस आयुवर्ग मे पुरुषो की मृत्युदर सर्वाधिक है। **(परिशिष्ट 5 2 चित्र 5 3)**

सन् 1981 मे 0-9 आयुवर्ग मे सभी स्त्री-पुरुष अविवाहित है। 10-19 आयु वर्ग मे अविवाहित पुरुष, स्त्री 85 23 एव 62 16 प्रतिशत थे। जबकि इस आयुवर्ग मे विवाहित पुरुष, स्त्रियो का प्रतिशत 14 63 एव 34 10 था। सर्वाधिक विवाहित पुरुष स्त्रियो का प्रतिशत 30-39 आयुवर्ग मे क्रमश 93 21 एव 96 62 प्रतिशत था। विवाहित स्त्रियो का प्रतिशत 20-29 आयु वर्ग मे 95 47 प्रतिशत था उम्र की ज्येष्ठता मे वृद्धि के साथ-साथ पुरुषो व स्त्रियो दोनो ही वर्गों मे यह प्रतिशत विधवा/विधुर होने तथा तलाक होने आदि के कारण कम होता जाता है। विधवा/विधुर का सबसे कम प्रतिशत 10-19 आयुवर्ग मे एव सर्वाधिक 70 से अधिक उम्र मे है। **(परिशिष्ट 5 3 चित्र 5 3)**

सन् 1991 मे सर्वाधिक अविवाहित पुरुष-स्त्री 0-9 आयुवर्ग मे 100 प्रतिशत है। 10-19 आयु वर्ग मे अविवाहित पुरुष, स्त्री 87 19 एव 71 09 प्रतिशत रहे। 1981 की तुलना मे 10-19 आयु वर्ग की स्त्रियो मे वैवाहिक प्रतिशत कम हुआ है जो विकसमान सामाजिक अवसरचना का प्रतिफल है। 20-29 आयुवर्ग के पुरुष-स्त्रियो मे विवाहितो का प्रतिशत क्रमश 81 88 एव 96 84 है। 20-29 एव 30-39 आयुवर्ग में स्त्रियो की बढती वैवाहिक प्रतिशतता विवाह के प्रति लोगों की परिवर्तित मनोदशा का सूचक है। जीवन सभाव्यता मे वृद्धि के कारण

विधवाओं का प्रतिशत 70 से अधिक आयु वर्ग मे सर्वाधिक है। विधुरो की तुलना मे विधवाओं का अधिक होना पुरुष-स्त्री विवाह आयु मे अतर का होना है। **(परिशिष्ट 5 4, चित्र 5 3)**

5 6 साक्षरता-

मानव ससाधन राष्ट्रीय निधि का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। मानवीय कुशलता एव ज्ञान के विकास हेतु साक्षरता एक अनिवार्य तत्व है। मानव शास्त्रीय दृष्टिकोण से साक्षरता जनसख्या का एक ऐसा सामाजिक पक्ष है जिसके आधार पर सामाजिक विकास का मापदड निश्चित किया जाता है। साक्षरता का गरीबी उन्मूलन, मानसिक एकाकीपन का समाप्तिकरण, शातिपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सबधो के निर्माण तथा जनसाख्यिकीय प्रक्रिया की स्वतत्र क्रियाशीलता मे भारी योगदान है। (चाँदना, सिद्धू 1980) किसी भी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था, सामाजिक विकास का साक्षरता पर अवश्यम्भावी प्रभाव होता है। (महापात्रा ए सी 1998) प्राथमिक वर्ग से सम्बद्ध अर्थ व्यवस्था वाले क्षेत्रो मे न्यून साक्षरता पायी जाती है। जिस परिवार के रहन सहन का स्तर उत्कृष्ट होता है, उसमे बच्चो की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसके विपरीत निम्न रहन-सहन स्तर वाले परिवारो मे साक्षरता की दर निम्न होती है क्योकि ये साधन विहीन होते है तथा परिवार के बालक, वृद्ध, स्त्री पुरुष कार्य करके अपना तथा परिवार का भरण पोषण करते है। 1951, 1961, 1971 की जनगणना मे साक्षरता दर की गणना करते समय पाच वर्ष या उससे ऊपर की आयु के व्यक्तियो को सम्मिलित किया गया है। जबकि 1981, 1991 तथा 2001 की जनगणना मे साक्षरता दर के लिए 7 वर्ष या उससे अधिक आयु के व्यक्तियो को सम्मिलित किया गया है अर्थात् 7 वर्ष से कम आयु के सभी बच्चो को निरक्षर माना गया है चाहे वे किसी भी स्तर की शिक्षा ग्रहण किये हो। 2001 की जनगणना मे उस व्यक्ति को साक्षर माना गया है जो किसी भाषा को पढ लिख अथवा समझ सकता है, साक्षर होने के लिए यह जरूरी नही है कि व्यक्ति ने कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त की है या कोई परीक्षा पास की है। (भारत की जनगणना 2001)।

नगरो की अर्थव्यवस्था गावो की तुलना मे भिन्न होती है। नगरो मे शिक्षा के अधिक अवसर मिलते है। जो साक्षर लोगो के लिए ही सम्भव है। जिन देशो का जितना अधिक नगरीकरण हुआ है उनकी साक्षरता तद्नुरुप अधिक है। परिवार की आर्थिक स्थिति इसमे महत्वपूर्ण योगदान देती हे।

समाज मे स्त्रियो की दशा का साक्षरता पर अनुकूल एव प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है क्योकि विकासशील तथा पिछड़े राष्ट्रो एव मुस्लिम देशो मे स्त्रियों के निम्न सामाजिक स्तर के कारण उनमे पहले से ही अल्प साक्षरता रही है। इसके विपरीत ईसाई समुदाय मे स्त्रियो की उच्च साक्षरता सपूर्ण साक्षरता परिदृश्य को प्रभावित करती है। हमारे देश मे वर्तमान मे महिला साक्षरता एव विकास पर पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा हैं। इसी परिप्रेक्ष्य मे वर्ष 2001 को नारी सशक्तीकरण वर्ष के रुप मे मनाना महिलाओं के प्रति बदलते दृष्टिकोण का द्योतक है। देश के विभिन्न भागो मे राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, आपरेशन ब्लैक बोर्ड, शिक्षा आपके द्वारा (राजस्थान), स्कूल चलो अभियान (उत्तर प्रदेश) आदि महिला साक्षरता के विकास मे सकारात्मक योगदान करेगे, इसमे सशय नही।

नगरो मे अनेक प्रकार की शिक्षण सस्थाओं की अधिकता होने के कारण शिक्षा प्राप्ति की सुविधाए अधिक रहती है, इसलिए वहा साक्षरता अधिक पाई जाती है। गावो मे इस प्रकार की सस्थाए कम है या दूर-दूर है इसके अतिरिक्त आर्थिक दशाए ग्रामीण साक्षरता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। इसीलिए सरकार प्रत्येक गाव मे शिक्षण सस्था खोलने के लिए सतत् प्रयत्नशील है। ससद के 93वे सविधान सशोधन विधेयक द्वारा 6-14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चो को नि शुल्क शिक्षा प्रदान करने की योजना है। इसके अतिरिक्त इस अनुच्छेद मे एक नया उपबध जोड़ा गया है जिसके अनुसार माता-पिता व अभिभावक का यह कर्तव्य होगा कि वे 6-14 वर्ष के बच्चो को शिक्षा का अवसर उपलब्ध कराये।

जनपद मे 1961 एव 1971 मे कुल साक्षरता 18 00 एव 20 14 प्रतिशत थी जब इस अवधि मे उत्तर प्रदेश की साक्षरता 21 70 एव 27 38 प्रतिशत थी। इन अवधियो मे जनपद एव उत्तर प्रदेश की साक्षरता राष्ट्रीय साक्षरता 28 30 एव 34 45 से कम है।

1981 मे जनपद की कुल साक्षरता 27 60 जिसमे पुरुष साक्षरता 41 50 एव स्त्री साक्षरता 13 60 थी। 1991 मे कुल साक्षरता 43 30 जिसमे पुरुष साक्षरता 61 40 एव महिला साक्षरता 24 40 प्रतिशत थी। 1991 मे ही उत्तर प्रदेश की कुल साक्षरता 41 60 एव राष्ट्रीय साक्षरता 52 19 प्रतिशत रही। 2001 मे जनपद की साक्षरता 60 06 प्रतिशत रही जो प्रदेश की साक्षरता 57 36 प्रतिशत से अधिक है। जनपद मे महिला साक्षरता 44 39 एव पुरुष साक्षरता 75 45 प्रतिशत रही। अनुसूचित जातियो मे जागरुकता मे वृद्धि के साथ ही साक्षरता पर सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। **(तालिका 5 8)**

तालिका 5 8

साक्षरता प्रतिशत

वर्ष	जनपद			उत्तर-प्रदेश			भारत		
	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री
1961	18 00	28 90	7 20	21 70	31 50	10 50	28 30	40 40	15 35
1971	20 14	30 70	9 30	27 38	38 87	14 42	34 45	45 96	21 97
1981	27 60	41 50	13 60	33 30	45 09	21 06	43 67	56 37	29 75
1991	43 30	61 40	24 40	41 60	51 40	29 70	52 19	64 20	29 20
2001	60 06	75 45	44 39	57 36	70 23	42 98	65 38	75 85	54 16

स्रोत- जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 1961, 1971, 1981 एव साख्यिकी पत्रिका 2000 तथा उत्तर प्रदेश एव भारत की जनगणना 1991 प्राविजनल पापुलेशन टोटल्स 2001, उत्तर प्रदेश एव भारत

5 7 साक्षरता का स्थानिक वितरण प्रारुप-

जनपद गाजीपुर मे साक्षरता का अध्ययन विकास खण्ड स्तर पर करने के लिए साक्षरता को 5 00 प्रतिशत के अन्तराल पर विभाजित करके किया गया है। इससे स्थानीय शैक्षिक सुविधाओं के ज्ञान प्राप्ति मे सहायता मिलती हे।

साक्षरता के अति निम्न वर्ग मे 1971, 1981 एव 1991 मे कोई विकासखण्ड नही थे।

साक्षरता के निम्न वर्ग (15-20 प्रतिशत) मे 1971 मे 8 विकास खण्ड थे, यथा- मरदह 18 30, सैदपुर 18 20, देवकली 18 60, सादात 17 80, जखनियाँ 15 50, मनिहारी 19 70, कासिमाबाद 17 10 एव बाराचँवर 19 40 आते थे। 1981 एव 1991 मे साक्षरता मे उत्तरोत्तर वृद्धि के कारण इस वर्ग मे कोई विकास खण्ड नही था।

साक्षरता के मध्यम वर्ग (20-25 प्रतिशत) 1971 मे इस वर्ग मे 5 विकास खड थे जो करण्डा 24 00, बिरनो 21 90, मुहम्मदाबाद 22 40, भावरकोल 21 10 तथा जमानिया 22 10 आते थे। 1981 मे इस वर्ग मे 6 विकास खड- बिरनो 21 11, मरदह 23 73, जखनिया 22 04 मनिहारी 22 29, कासिमाबाद 21 25 तथा बाराचँवर 22 50 प्रतिशत आते थे। 1991 मे इस वर्ग मे कोई विकास खड नही था।

साक्षरता के मध्यम उच्चवर्ग (25-30 प्रतिशत) मे 1971 मे कोई विकास खड नही था, 1981 मे इस वर्ग मे 6 विकास खड आते थे जो करण्डा 28 40, सादात 29 00, मुहम्मदाबाद 26 52 भावरकोल 27 84, सैदपुर 26 93, देवकली 26 27 तथा जमानिया 28 25 प्रतिशत थे। 1991 मे इस वर्ग मे कोई विकास खड नही थे।

साक्षरता के उच्च वर्ग (30 प्रतिशत से अधिक) मे 1971 मे कोई विकास खड नही था। 1981 मे इस वर्ग मे 3 विकास खड आ गये यथा गाजीपुर 34 56 प्रतिशत, भदौरा, 33 35 तथा रेवतीपुर 32 50 प्रतिशत आ गये। 1991 मे इस वर्ग मे सभी 16 विकास खड आते हैं- जखनिया 38 00, मनिहारी 38 60, सादात 39 30, सैदपुर 42 70, देवकली 41 00, बिरनो 39 10, मरदह 37 03, गाजीपुर 39 40, करण्डा 46 90, कासिमाबाद 38 40, बाराचँवर 37 30, मुहम्मदाबाद 40 70, भावरकोल 45 60, जमानिया 44 10, रेवतीपुर 45 90 तथा भदौरा 49 40 प्रतिशत। **(परिशिष्ट 5 5, 5 6, 5 7 तालिका 5.9, चित्र 5 4)**

DISTRICT GHAZIPUR
LITERACY RATE
1971
1981
1991
GANGA R
AS PERCENTAGE OF TOTAL POPULATION
> 40
35 – 40
30 – 35
25 – 30
20 – 25
<20
10 0 10 20
Km
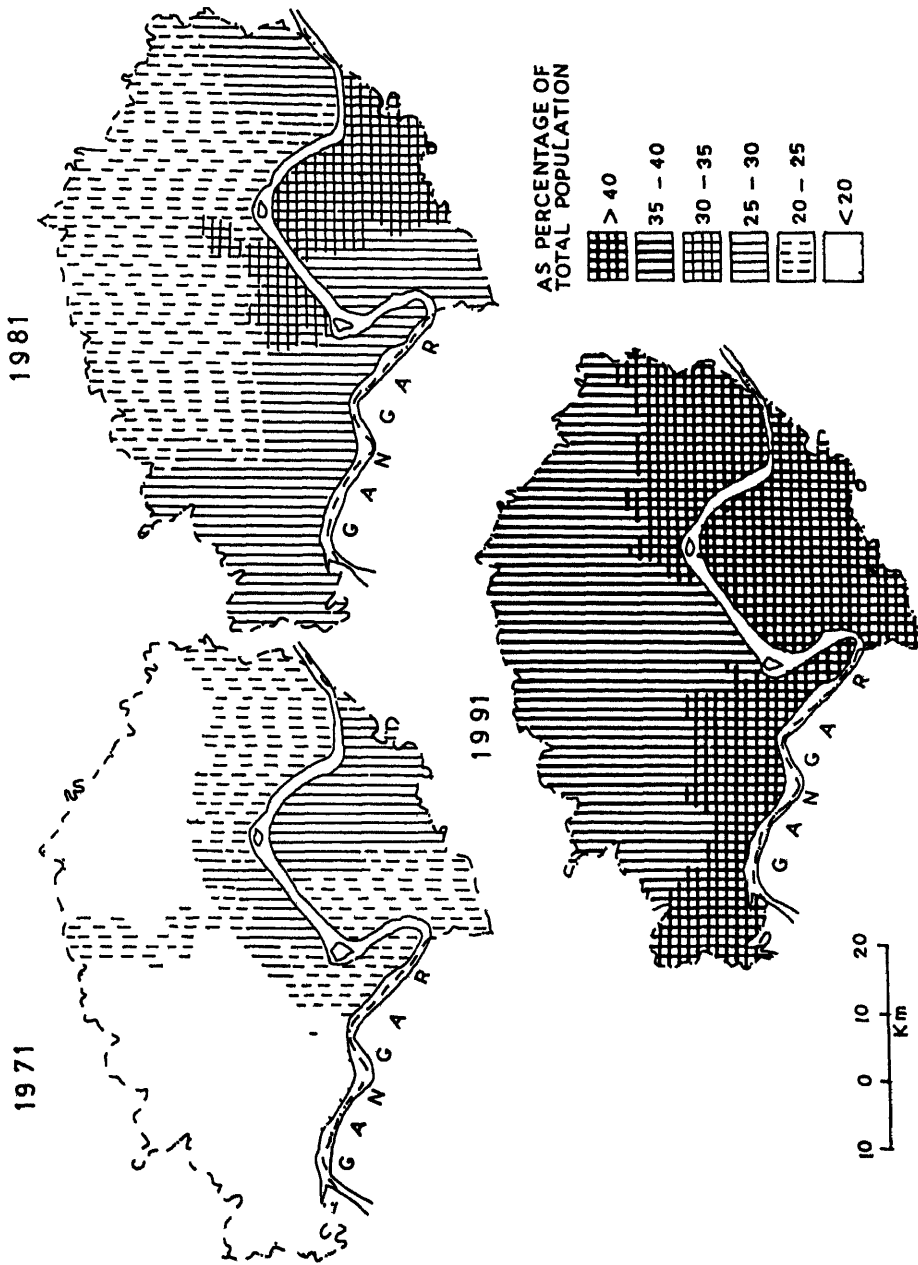
Fig. 5.4

तालिका 5 9

जनपद गाजीपुर साक्षरता

	विकास खडो की सख्या		
वर्ग प्रतिशत	1971	1981	1991
15 से कम	—	—	—
15-20	8	—	—
20-25	5	7	—
25-30	3	6	—
30 से अधिक	—	3	16

5 7 1 पुरुष साक्षरता का वितरण प्रारुप-

जनपद गाजीपुर मे 1961, 1971, 1981, 1991 एव 2001 मे पुरुष साक्षरता क्रमश 28 90, 30 70, 41 50, 61 40 तथा 75 45 प्रतिशत रही है। पुरुष साक्षरता का विकास खड स्तर पर वितरण प्रारुप पाच विभिन्न वर्गों मे विभाजित कर स्पष्ट किया गया है-

पुरुष साक्षरता के **अतिनिम्न वर्ग मे (30 प्रतिशत से कम)** 1971 मे आठ विकास खड आते थे यथा मरदह 28 70, सैदपुर 28 30, देवकली 28 40, सादात 29 10, जखनिया 24 50, मनिहारी 28 40, कासिमाबाद 24 00 प्रतिशत तथा बाराचवर 28 70 प्रतिशत थे। जबकि 1981 एव 1991 मे इस वर्ग मे जनपद का कोई विकास खड नही रहा इसका कारण साक्षरता मे उत्तरोत्तर वृद्धि है।

निम्न साक्षरता वर्ग (30-35 प्रतिशत) मे 1971 मे पाच विकास खड आते थे जो करण्डा 33 40, बिरनो 34 40, मुहम्मदाबाद 30 40, भावरकोल 30 20 तथा जमानिया 34 00 प्रतिशत थे। 1981 मे इस वर्ग मे केवल कासिमाबाद विकास खड था तथा 1991 मे इस वर्ग मे जनपद का कोई भी विकास खड नही था।

मध्यम वर्ग (35-40 प्रतिशत) मे 1971 मे कोई विकास खड नही था जबकि 1981 मे 6 विकासखड सम्मिलित हो गये यथा बिरनो 35 76, मरदह 38 18, मुहम्मदाबाद 35 97, मनिहारी 36 18, जखनिया 35 93 तथा भावरकोल 38 58 प्रतिशत थे। 1991 मे इस वर्ग में कोई विकास खड नहीं था।

मध्यम उच्च वर्ग (40-45 प्रतिशत) मे 1971 में इस वर्ग मे 3 विकासखड थे यथा गाजीपुर 40 00 रेवतीपुर 43 30 तथा भदौरा 42 40 प्रतिशत आते थे। 1981 मे इस वर्ग में कुल 6 विकास खड थे यथा सादात 43 86, सैदपुर 42 77, देवकली 41 46, जमानिया

DISTRICT GHAZIPUR
MALE LITERACY
1971
1981
1991
GANGA R
AS PERCENTAGE OF TOTAL POPULATION
>60
50 - 60
40 - 50
30 - 40
<30
10 0 10 20
Km
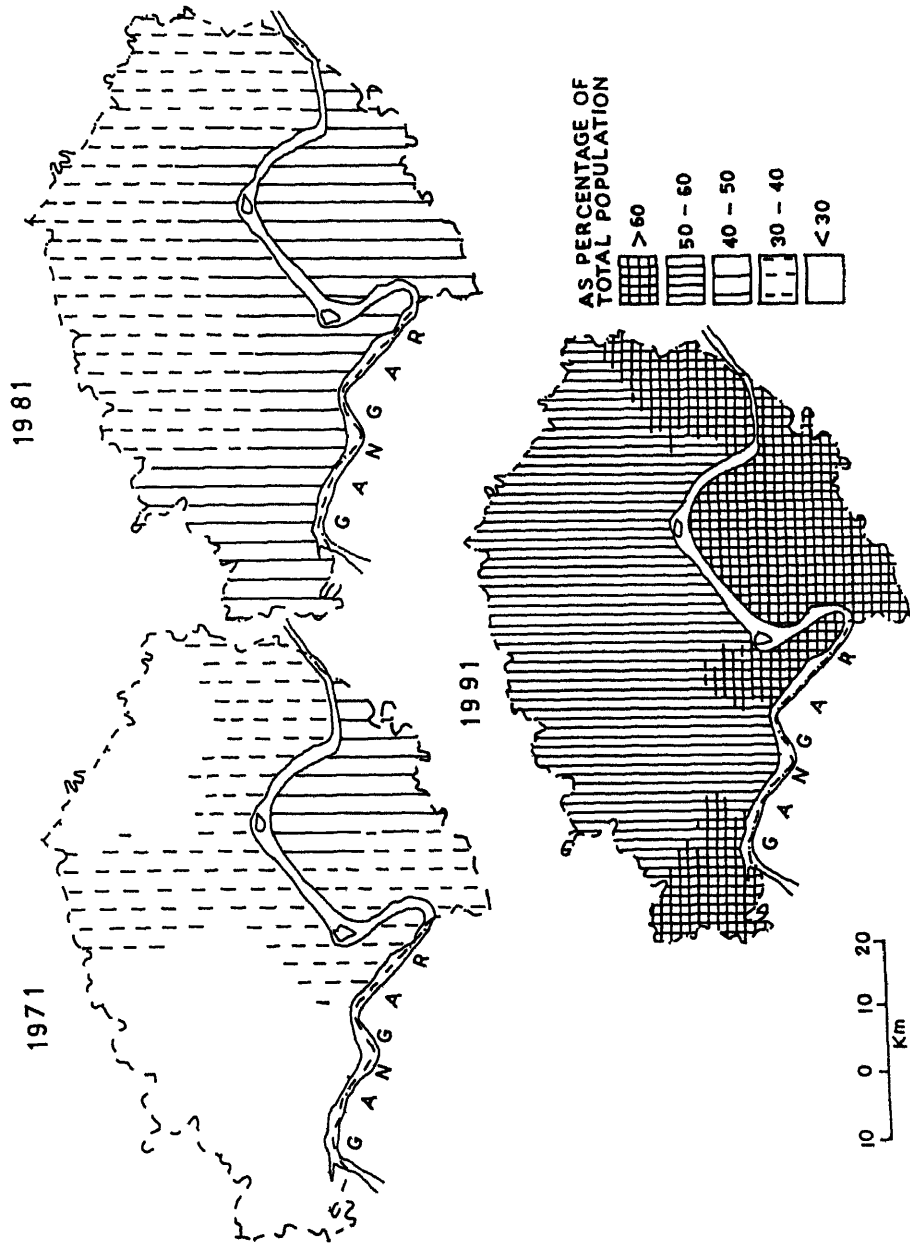
Fig. 5.5

42 57, रेवतीपुर 46 95 तथा भदौरा 47 37 प्रतिशत थे। 1991 मे इस वर्ग मे कोई विकास खड नही था।

उच्च वर्ग (45 से अधिक) मे 1971 मे इस वर्ग मे जनपद का कोई भी विकास खड इस वर्ग मे नही था 1981 मे इस वर्ग मे कुल 3 विकास खड आते थे। 1991 मे इस वर्ग मे जनपद के सभी विकास खड आते थे। जखनिया 56 50, मनिहारी 57 50, सादात 58 30 सैदपुर 62 60, देवकली 59 60, बिरनो 58 20, मरदह 55 20, गाजीपुर 58 70, करण्डा 66 80, कासिमाबाद 56 30, बाराचवर 54 30, मुहम्मदाबाद 59 00, भावरकोल 62 90 जमानिया 63 90, रेवतीपुर 63 30 तथा भदौरा मे 67 10 प्रतिशत पुरुष साक्षरता रही। **(परिशिष्ट 5 5, 5 6, 5 7 तालिका 5 10 चित्र 5 5)**

तालिका 5 10

जनपद गाजीपुर पुरुष साक्षरता

	विकास खण्डों की सख्या		
वर्ग प्रतिशत	**1971**	**1981**	**1991**
30 से कम	8	—	—
30-35	5	1	—
35-40	—	7	—
40-45	3	5	—
45 से अधिक	—	3	16

5 7 2 स्त्री साक्षरता का वितरण प्रारुप-

जनपद मे स्त्री साक्षरता धीमी प्रगति के साथ निरन्तर बढती गयी है जो 1961, 1971, 1981, 1991 एव 2001 मे क्रमश 7 20, 8 40, 13 63, 24 40, एव 44 39 प्रतिशत रही।

अतिनिम्न (3 प्रतिशत से कम) साक्षरता 1971, 1981, 1991 मे किसी भी विकास खड मे नहीं रही।

निम्न साक्षरता (3-6 प्रतिशत) वर्ग मे 1991 मे 3 विकास खड थे, यथा, जखनिया 5 80, सादात 4 80 तथा देवकली 6 00 प्रतिशत रहे। जबकि 1981 एव 1991 मे जनपद का कोई भी विकास खण्ड इस वर्ग मे नही था।

मध्यम वर्ग (6-9 प्रतिशत) की साक्षरता वर्ग मे 1971 मे पाँच विकास खण्ड- मरदह 7 90, सैदपुर 6 40, देवकली 6 00, मनिहारी 6 10 तथा कासिमाबाद 8 10 प्रतिशत थे। 1981 में इस वर्ग मे 4 विकास खण्ड- बिरनो 8 60, जखनियाँ 8 63, मनिहारी 8 95 एव

कासिमाबाद 8 70 प्रतिशत सम्मिलित थे। 1991 मे इस वर्ग जनपद का कोई भी विकास खड नही ग्हा।

मध्यम उच्च वर्ग (9-12 प्रतिशत) की स्त्री साक्षरता मे 1971 मे 6 विकास खड - गाजीपुर 11 40, करण्डा 9 70, बिरनो 9 10, मुहम्मदाबाद 9 80, बाराचवर 9 50 तथा जमानिया 9 00 प्रतिशत थे। 1981 मे स्त्री साक्षरता के इस वर्ग मे जनपद के पाच विकास खड, मरदह (9 00, सैदपुर 11 45, देवकली 11 19, मुहम्मदाबाद 10 60 तथा बारचवर 10 55 प्रतिशत इस वर्ग मे सम्मिलित थे। 1991 मे इस वर्ग मे कोई विकास खड नही था।

स्त्री साक्षरता के **उच्च वर्ग (12-15 प्रतिशत)** मे 1971 तीन विकास खड भावरकोल 12 60, भदौरा 14 40 तथा रेवतीपुर 12 20 प्रतिशत थे। 1981 मे इस वर्ग मे दो विकास खड करण्डा 13 46 एव सादात 14 66 प्रतिशत सम्मिलित थे। 1991 मे इस वर्ग मे कोई भी विकास खड नही था।

स्त्री साक्षरता के **अति उच्च वर्ग (15 प्रतिशत से अधिक)** मे 1971 मे कोई भी विकास खड नही था, जबकि 1981 मे इस वर्ग मे 4 विकासखड सम्मिलित हो गये यथा गाजीपुर 20 32, भावरकोल 16 99, भदौरा 19 00 एव रेवतीपुर 17 52 प्रतिशत थे। 1991 मे जनपद के सभी विकास खड इस साक्षरता वर्ग मे सम्मिलित हो गये। 1991 मे सर्वाधिक स्त्री साक्षरता भदौरा विकास खड मे 30 70 प्रतिशत एव सबसे कम मरदह विकास खड मे 18 70 प्रतिशत रही। अन्य विकास खडो मे सादात 20 90, मनिहारी 19 90, सैदपुर 22 90, देवकली 21 90, बिरनो 19 90, जखनिया 19 30, गाजीपुर 18 70, करण्डा 18 70, कासिमाबाद 26 60, बाराचँवर 19 60, मुहम्मदाबाद 20 90, भावरकोल 27 60, जमानिया 23 40 तथा रेवतीपुर मे 27 70 प्रतिशत स्त्री साक्षरता रही **(परिशिष्ट 5 5, 5 6, 5 7 चित्र 5 6 तालिका 5 11)**

तालिका 5 11

जनपद गाजीपुर स्त्री साक्षरता

	विकास खडो की सख्या		
साक्षरता वर्ग	**1971**	**1981**	**1991**
3 से कम	—	—	—
3-6	3	—	—
6-9	4	5	—
9-12	6	5	—
12-15	3	2	—
15 से अधिक	—	—	16

DISTRICT GHAZIPUR
FEMALE LITERACY
1971
1981
1991
GANGA R
AS PERCENTAGE OF TOTAL POPULATION
> 25
20 – 25
15 – 20
10 – 15
< 10
10 0 10 20
Km
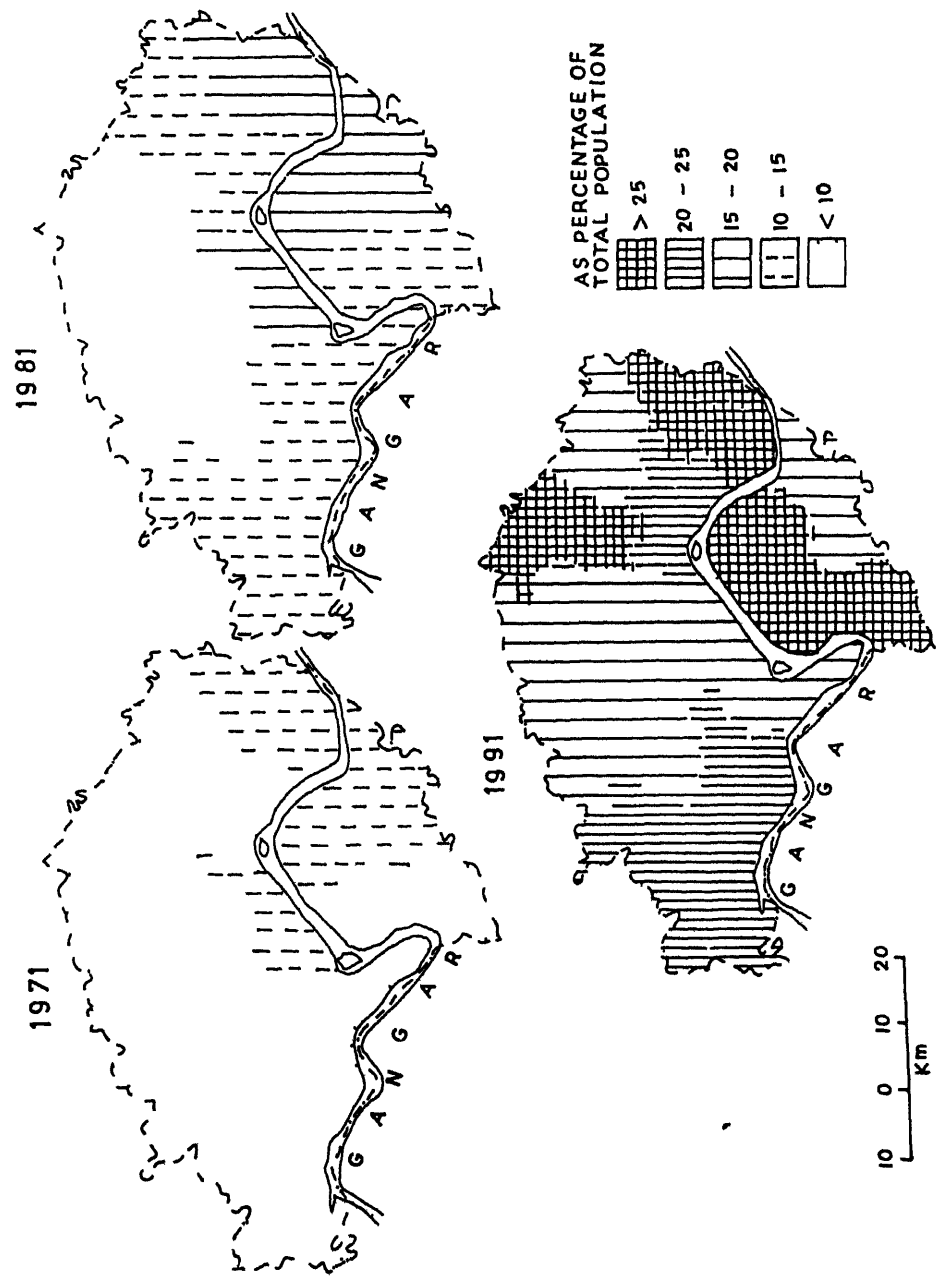
Fig. 5.6

5 8 ग्रामीण एव नगरीय साक्षरता-

विकासशील देशो मे ग्रामीण एव नगरीय क्षेत्रो की साक्षरता मे महत्वपूर्ण अतर पाया जाता है क्योकि गावो की तुलना मे शहरो की सामाजिक सरचना विकसित होती है, एव वहा शिक्षा सुविधाए भी पर्याप्त होती है। जनपद मे ग्रामीण साक्षरता का प्रतिशत 1961, 1971, 1981, 1991 एव 2001 मे क्रमश 17 1, 19 06, 25 95, 41 5, एव 47 40 प्रतिशत रही। इन्ही जनगणना वर्षों मे नगरीय साक्षरता 39 26, 42 90 46 97, 65 60 तथा 61 66 प्रतिशत रही। नगरीय क्षेत्रो की अधिक साक्षरता का मुख्य कारण शिक्षा केन्द्रो की सुविधा उच्च आर्थिक एव सामाजिक स्तर, इसके विपरीत ग्राम्याचलो मे अल्प सुविधाए एव यह सोचना कि जब तक बालक पढेगा तब तक धनोपार्जन करेगा। वस्तुत राजनीतिक, सामाजिक जागरुकता एव सरकारी नीतियो के कार्यान्वयन से ग्रामीण साक्षरता मे उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। (**तालिका 5 12**)

तालिका 5 12

जनपद गाजीपुर ग्रामीण एव नगरीय साक्षरता

मद	1961	1971	1981	1991	2001
ग्रामीण	17 10	19 06	25 95	41 50	47 10
नगरीय	39 29	42 90	46 97	65 60	61 66

स्त्रोत- प्राथमिक जनगणना डिस्ट्रिक्ट सेन्सस हैण्डबुक 1961, 1971, 1981, 1991 एव प्राविजनल पापुलेशन टोटल्स 2001 सीरीज 10 पेपर 1, 2001।

5.9 आयु वर्गानुसार साक्षरता-

2001 की मतगणना के अनुसार 7 वर्ष से कम उम्र की सम्पूर्ण जनसख्या को निरक्षर मान लिया गया है, परन्तु वस्तु स्थिति ऐसी नही है, आधुनिक समाज मे बच्चे 5 वर्ष तक लिखना एव बोलना जानने लगे है। शहरो एव नगरीय केन्द्रो मे पब्लिक विद्यालयो मे धनोपार्जनहेतु लोग के जी 1 एव के जी 2 कक्षाओ मे अल्प आयु बच्चो का प्रवेश लेते हैं, यद्यपि इसका सकारात्मक एव नकारात्मक दोनो पक्ष है एक ओर तो बच्चो की मेधा का विकास होता है वही दूसरी ओर अल्प वय मे ही उन्हे बाल्यावस्था को स्वाभाविक मनोरमता से किचित दूर ले जाकर भारवान्वित कर दिया जाता हैं। सन् 1971 म जनपद मे 10-14 आयु वर्ग में सर्वाधिक 44 47 प्रतिशत साक्षर है, जिसमे पुरुष 57 45 एव महिला 22 63 प्रतिशत साक्षर है। 1981 मे इस आयु वर्ग मे 45 68 प्रतिशत साक्षर थे जिसमे पुरुष 66 32 एव महिला 24 37 प्रतिशत थी। 1991 मे इस आयु

वर्ग मे कुल साक्षरता 61 16 प्रतिशत जिसमे पुरुष 76 89 एव महिला 44 14 प्रतिशत साक्षर रही। इसके बाद के आयु वर्गो मे यह प्रतिशत घटता गया है। सरकारी नीतियो के कार्यान्वयन से किशोर एव नवयुवक समुदाय अधिक साक्षर है जबकि वृद्ध एव प्रौढ समुदाय तत्कालीन परिस्थितियो मे अधिक साक्षर नही हो पाया था। सन् 1971 मे 5-9 आयु वर्ग मे 15 10 प्रतिशत लोग साक्षर थे जिसमे 19 68 प्रतिशत पुरुष तथा 9 40 प्रतिशत स्त्रियाँ साक्षर थी। 1981 मे इस आयु वर्ग की कुल साक्षरता 16 45 प्रतिशत थी जिसमे पुरुष 22 23 प्रतिशत, स्त्रियॉ 10 45 प्रतिशत थी। 1991 मे 5-9 आयु वर्ग मे कुल साक्षरता 23 61 प्रतिशत रही जिसमे 28 77 प्रतिशत पुरुष एव 17 95 प्रतिशत स्त्रिया साक्षर रही। 15-18 आयु वर्ग मे 1971 मे कुल साक्षरता 39 85 थी जिसमे पुरुष 61 07 एव स्त्रियो की 18 14 प्रतिशत रही। इस आयु वर्ग मे 1981 मे 44 63 प्रतिशत साक्षरता थी जिसमे पुरुष 65 02 एव स्त्रियो की 24 12 प्रतिशत थी। 1991 मे इस आयु वर्ग की कुल साक्षरता, पुरुष साक्षरता एव महिला साक्षरता क्रमश 59 58, 78 88 तथा 37 95 प्रतिशत रही। 35 वर्ष से अधिक आयु वर्ग की 1971 मे साक्षरता 15 19 थी जिसमे पुरुष 25 58 तथा स्त्रियाँ 4 10 प्रतिशत साक्षर थी। 1981 मे इस आयु वर्ग मे 16 28 प्रतिशत साक्षर थे जिसमे 28 23 प्रतिशत पुरुष एव 3 67 प्रतिशत स्त्रियाँ थी। 1991 मे इस आयु वर्ग की साक्षरता 28 85 प्रतिशत थी, जिसमे पुरुष साक्षरता 46 48 प्रतिशत तथा स्त्रियो की साक्षरता 7 90 प्रतिशत रही। (**परिशिष्ट 5 8, चित्र 5 7**)

5.10 अनुसूचित जाति/जनजाति साक्षरता-

जनपद गाजीपुर मे 1971 म अनुसूचित जाति, जनजाति की साक्षरता 11 78 प्रतिशत थी। सर्वाधिक साक्षरता गाजीपुर तहसील मे 14 91 प्रतिशत रही, सबसे कम सैदपुर तहसील मे 6 59 प्रतिशत थी। मुहम्मदाबाद एव जमानियाँ मे साक्षरता 7 78 एव 10 55 प्रतिशत थी। 1981 मे अनुसूचित जातियो म सर्वाधिक साक्षरता गाजीपुर तहसील मे 17 90 प्रतिशत थी। सैदपुर मे 15 64 मुहम्मदाबाद 13 83 एव जमानिया 15 81 प्रतिशत साक्षरता थी। 1991 मे कुल साक्षरता 22 36 प्रतिशत रही। गाजीपुर तहसील मे साक्षरता 22 86, सैदपुर 18 67, मुहम्मदाबाद 22 85 एव जमानिया में 22 36 प्रतिशत रही। अनुसूचित जातियाँ भारतीय समाज मे अछूत मानी जाने के कारण समाज की मुख्य धारा मे देर से सम्मिलित हुई फलत सामान्य जातियों एव इनके बीच साक्षरता मे अन्तर होना स्वाभाविक है (महोपात्रा 1998)। सरकार द्वारा नीतियो का कार्यान्वयन एव वर्तमान मे इनमे आयी सामाजिक एव राजनीतिक जागरुकता से इनके साक्षरता मे उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। (**तालिका 5 13**)

तालिका 5 13

जनपद गाजीपुर अनुसूचित जाति/ जनजाति साक्षरता

तहसील	साक्षरता (प्रतिशत मे)		
	1971	1981	1991
कुल	11 78	15 78	22 36
गाजीपुर	14 91	17 90	22 86
सैदपुर	6 59	15 64	18 67
जखनियाँ *	—	—	—
मुहम्मदाबाद	7 78	13 83	22 85
जमानियाँ	10 55	15 81	25 04

* सैदपुर तहसील की सीमा मे परिवर्तन कर 1995 मे जखनियाँ तहसील अस्तित्व मे आई इसकी साक्षरता सैदपुर तहसील मे सम्मिलित है।

स्रोत- जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 1971, 1981, 1991

5.11 शैक्षिक स्तर-

सन् 1971 मे कुल 20 14 प्रतिशत लोग शिक्षित थे जिसमे 43 55 प्रतिशत लोग बिना किसी शैक्षिक स्तर के शिक्षित थे। अर्थात उन्होने कोई औपचारिक शिक्षा नही ग्रहण की थी। जबकि कुल साक्षर व्यक्तियो के 29 89 प्रतिशत लोग प्राइमरी तक शिक्षित थे जिसमे पुरुष 21 98 एव महिला 7 81 प्रतिशत थे। 14 45 प्रतिशत जूनियर हाई स्कूल तक, जिसमे पुरुषो एव महिलाओ का प्रतिशत क्रमश 12 85 एव 1 60 था। हाईस्कूल तक साक्षर व्यक्तियो का प्रतिशत 10 95 जिसमे पुरुषो एव महिलाओ का प्रतिशत 10 13 एव 0 82 था। स्नातक एव उससे अधिक लोगो का प्रतिशत 1 14 था। 1981 मे कुल जनसख्या का 27 77 प्रतिशत लोग साक्षर थे जिसमे 34 60 बिना किसी शैक्षिक स्तर के, 28 64 प्रतिशत प्राइमरी तक जिसमे महिलाओ का प्रतिशत 10 66 प्रतिशत था। 16 27 प्रतिशत जूनियर हाई स्कूल तक, 16 91 प्रतिशत हाईस्कूल तक जिसमे पुरुषो एव स्त्रियो का प्रतिशत क्रमश 14 96 एव 1 95 प्रतिशत था। स्नातक एव उससे अधिक का प्रतिशत 3 42 था। 1991 मे सम्पूर्ण जनसख्या की 43 30 प्रतिशत साक्षरता रही जिसमे बिना शैक्षिक स्तर के शिक्षित लोगो का प्रतिशत 30 23 प्रतिशत रहा, प्राइमरी तक शिक्षित लोगो का प्रतिशत 23 10 प्रतिशत जिसमे पुरुषो एव महिलाओ का प्रतिशत क्रमश 14 44 एव 8 66 प्रतिशत जूनियर हाई स्कूल तक 19 70 जिसमे पुरुषो एव महिलाओ का प्रतिशत 14 53 एव 5 17 प्रतिशत रहा। हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त लोगो का प्रतिशत 21 83 रहा जिसमे पुरुषो एव महिलाओ का प्रतिशत 17 85 एव 3 98 प्रतिशत रहा। स्नातक एव उससे अधिक लोगो का
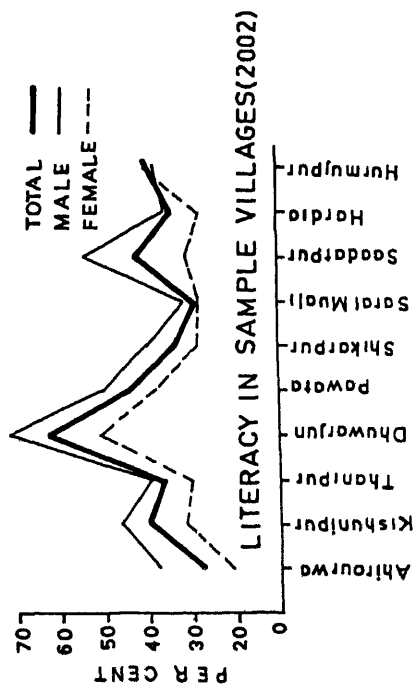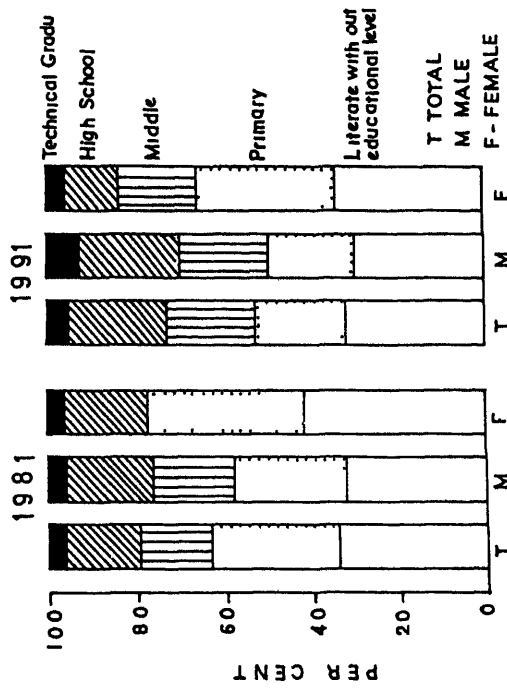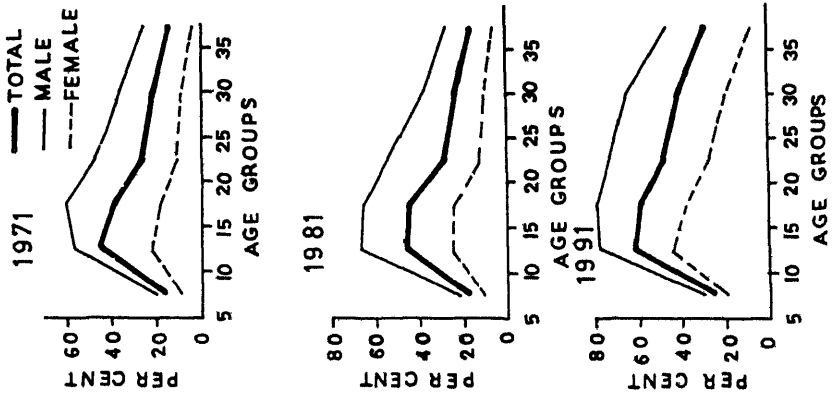
प्रतिशत 4 64 प्रतिशत रहा जिसमे पुरुषो एव महिलाओ का प्रतिशत क्रमश 3 99 एव 0 65 प्रतिशत रहा। (**परिशिष्ट 5 9 चित्र 5 7**)

तालिका 5 14

सर्वेक्षित ग्रामो मे साक्षरता प्रतिशत (2002)

ग्राम	साक्षरता प्रतिशत		
	कुल	पुरुष	स्त्री
अहीरपुरवा	26 52	37 92	20 41
किशुनीपुर	39 14	45 55	31 21
थनईपुर	35 19	39 09	30 81
धुवार्जुन	61 94	72 22	30 31
पवटा	43 70	49 32	37 86
शिकारपुर	33 33	39 69	28 48
सरायमुरादअली	29 49	30 36	28 48
सआदतपुर	43 23	54 71	31 18
हरदिया	34 11	35 71	28 75
हुरमुजपुर	39 26	38 54	40 11

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

5 12 सर्वेक्षित ग्रामो में साक्षरता प्रतिशत-

सर्वक्षित ग्रामो मे सर्वाधिक साक्षरता धुवार्जुन गाँव मे 61 94 प्रतिशत है जबकि सबसे कम अहीर पुरवा मे 26 52 प्रतिशत है। सबसे अधिक पुरुष साक्षरता धुवार्जुन मे 72 22 प्रतिशत एव सबसे कम सरायमुरादअली मे 30 36 प्रतिशत है। सर्वाधिक महिला साक्षरता हुरमुजपुर ग्राम मे 40 11 प्रतिशत है जबकि न्यूनतम अहीरपुरवा मे 20 41 प्रतिशत है। (**चित्र 5 7, तालिका 5 14**)

साक्षरता के उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि जनपद मे शैक्षिक सुविधा की उपलब्धि, उसकी गुणवत्ता तथा जनसख्या द्वारा उसके उपयोग सेसम्बन्धित शैक्षिक विकास मे पर्याप्त विषमता है। शैक्षिक विकास एव नियोजन को राष्ट्रीय विकास प्रक्रिया का अभिन्न अग मानते हुए शिक्षा के प्रसार एव आधुनिकीकरण के लिए शिक्षानीति क्रियान्वित की जा रही है। औपचारिक शिक्षा के साथ ही प्रौढ़ एव सतत् शिक्षा, पत्राचार पाठ्यक्रम, एव दूरस्थ शिक्षा के कार्य क्रमो को सुदृढ किया

जा रहा है। कमजोर वर्गों, पिछड़े क्षेत्रो तथा महिलाओ की शिक्षा पर विशेष ध्यान और शिक्षण कार्य हेतु विविध स्तरो पर उच्च प्राविधिकी के प्रयोग पर विशेष बल दिया जा रहा है। शैक्षिक विकास स्तर मे क्षेत्रीय विषमता कमोवेश सामाजिक आर्थिक विकास के भूवेन्यासिक आयाम से सम्बद्ध होती है। शैक्षिक प्रगति आर्थिक विकास प्रक्रिया को गति प्रदान करती है, अत आर्थिक विकास एव शैक्षिक सस्थानो के विकास की महती आवश्यकता है।

5 13 व्यावसायिक संरचना-

मनुष्य द्वारा जीविकोपार्जन हेतु किया जाने वाला कार्य उसका व्यवसाय कहलाता है। जनसख्या की व्यवसायिक सरचना उसके आर्थिक विशेषताओ को स्पष्ट करती है। इससे देश की अर्थव्यवस्था एव उसके आर्थिक विकास का पता चलता है। इसके अध्ययन से ही ज्ञात होता है कोई देश कृषि प्रधान, पशुपालन अथवा उद्योग प्रधान अर्थव्यवस्था वाला है। व्यक्ति की व्यावसायिक स्थिति, उसके विचार, सामाजिक दृष्टिकोण, व्यक्तित्व तथा राजनैतिक सम्बद्धता को प्रकट करता है।

व्यवसायिक सरचना का अध्ययन जनसख्या की आर्थिक सरचना के ज्ञान हेतु अत्यन्त आवश्यक है। व्यवसाय देश की परिष्कृति एव आर्थिक विकास पर निर्भर करता है। उदाहरणत इग्लैण्ड एव वेल्स मे 40,000 व्यवसायो का उल्लेख मिलता है जबकि भारत मे 1000 व्यवसाय ही जनगणना अधिकारियो द्वारा पाये गये है। (सिह एम बी एव दूबे के के 2001) जनसख्या समबन्धी अध्ययन मे कार्यशील जनसख्या को जानना आवश्यक है। सम्पूर्ण जनसख्या को दो भागो मे विभाजित किया जाता है—

(1) कार्यरत जनसख्या

(2) अकार्यरत जनसख्या

कार्यरत जनसख्या के अन्तर्गत उन लोगो को शामिल किया गया है, जो किसी व्यवसाय, उद्योग, एव नौकरी आदि मे लगे हैं। इसके विपरीत अकार्यरत जनसख्या मे उन लोगो को सम्मिलित किया जाता है जो किसी प्रकार का उत्पादक कार्य नही करते जैसे- बच्चे, वृद्ध, निराश्रित आदि। चिकित्सालयो, अनाथाश्रमो तथा जेलों मे रहने वाले व्यक्तियो को अकार्यरत जनसख्या मे सम्मिलित किया जाता है।

भारत मे जनगणना वर्ष 1901 मे 46 61 प्रतिशत लोग कार्यरत थे। 1931 मे इनका प्रतिशत 46 92, 1951 मे 39 10, 1961 में 42 97, 1971 मे 33 06, 1981 मे 33 45 एव 1991 मे 37 68 प्रतिशत था। कार्यरत जनसख्या मे कमाधिक्य होता रहा है। **(तालिका 5 15)**

तालिका 5 15

कार्यरत जनसख्या (प्रतिशत)

वर्ष	कार्यरत जनसख्या	वर्ष	कार्यरत जनसख्या
1901	46 61	1971	33 06
1931	46 92	1981	33 45
1951	39 10	1991	37 68
1961	42 97		

स्रोत- सेन्सस ऑफ इण्डिया प्राविजनल पापुलेशन टोटल्स, वर्कर्स एण्ड देयर डिस्ट्रीब्यूशन पेपर 3 ऑफ 1991

तालिका 5 15 से स्पष्ट है कि 1961 के बाद कार्यरत जनसख्या मे कमी आयी, इसका कारण जनसख्या मे वृद्धि से रोजगार के अवसरो का सीमित होना है। 1981 मे कार्यशील जनसख्या का अनुमान लगाने के लिए समस्त जनसख्या को दो भागो मे बाँट दिया गया- पूर्णकालकि एव सीमातिक, जिन लोगो ने वर्ष मे 6 माह तक काम किया उन्हे सीमातिक कहा गया 1981 मे पहली बार सीमान्तिक कहा गया 1981 मे पहली बार सीमान्तिक शब्द का प्रयोग किया गया (यादव राना पी0 एस0 1997)

जनपद गाजीपुर मे आयु वर्ग एव क्रियाशीलता मे शत- प्रतिशत सहसम्बन्ध स्थापित न होने के कारण कार्यरत जनसख्या की अपेक्षा अकार्यरत जनसख्या अधिक है। फलत निर्भरता अनुपात भी अधिक है।

तालिका 5 16

जनपद गाजीपुर कार्यरत-अकार्यरत जनसख्या (प्रतिशत)

वर्ष	कार्यरत जनसख्या	अकार्यरत जनसख्या
1961	35 42	64 56
1971	29 59	70 41
1981	27 43	72 57
1991	27 01	72 99

स्रोत जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 1961, 1971, 1981 एव जनपद साख्यिकी पत्रिका 2000

5.14 जनपद गाजीपुर में कार्यरत एवं अकार्यरत जनसंख्या-

जनपद मे कार्यरत जनसख्या एव अकार्यरत जनसख्या के विश्लेषण से स्पष्ट है कि रोजगार के अवसर तो बढे है परन्तु जनसख्या की अत्यधिक वृद्धि के कारण अकार्यरत जनसख्या भी तद्नुरूप बढी है। 1971 मे कार्यरत एव अकार्यरत जनसख्या का प्रतिशत क्रमश 27 43 एव 72 57 प्रतिशत था। 1991 मे यह 27 01 एव 72 99 प्रतिशत रहा है। इसमे ग्रामीण क्षेत्रो के मौसमी मजदूर, खेतो मे काम करने वाले, ईंट भट्ठो पर काम करने वाले तथा कुछ विद्यार्थी भी जो पढाई के साथ अन्य कार्य भी करते है, सम्मिलित है।

प्राथमिक व्यवसाय मे लगे लोग, कृषि, वन मत्स्यपालन, पशुपालन, आदि आते हैं जो विकास के प्रथम चरण से सम्बद्ध है। द्वितीयक व्यवसाय भारी मशीन, निर्माण उद्योग वाले क्षेत्र विकसित अर्थव्यवस्था वाले क्षेत्रो मे आते है। ये विकास के द्वितीय चरण मे आते है। इसमे कृषि पर आधारित उद्योग तीव्र गति से विकसित होते है। भारतीय जनसख्या मे 1981 मे कृषको का प्रतिशत 46 30 1991 मे यह प्रतिशत 40 80 रहा। 1981 मे खेतिहर मजदूर जनसख्या का प्रतिशत 26 30 एव 1991 मे 26 09 प्रतिशत रहा। उद्योग एव निर्माण कार्य मे लगे लोगो का प्रतिशत 9 6 एव 11 96 प्रतिशत रहा। **(तालिका 5 17)**

तालिका 5 17

भारतीय जनसख्या के व्यवसायिक ढाँचे मे परिवर्तन (प्रतिशत)

व्यवसाय	1971	1981	1991
कृषक	52 80	46 30	40 81
खेतिहर मजदूर	16 70	26 30	26 09
उद्योग एव निर्माण कार्य	10 10	9 60	11 96
अन्य	20 40	17 90	21 14

स्रोत– वही, तालिका 5 15

5.15 जनपद गाजीपुर की व्यवसायिक संरचना-

व्यवसायिक सरचना सामान्यतया क्षेत्र के विकास स्तर एव मिट्टी तथा अन्य ससाधनो पर जनसख्या के दबाव का द्योतक है। गाजीपुर जनपद में प्राथमिक व्यावसायिक वर्ग के अन्तर्गत कृषि

सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। कृषि अत्यन्त जटिल व्यवसाय हे। इसमे एक तरफ तो कुछ ऐसे देश शामिल है जो पूँजीकृत कृषि करते है, जो यन्त्रीकृत है, जहाँ आधुनिक सुविधाए है एव कृषि पूर्णत नवीनतम प्रविधियो पर आधारित है। (सिह जे 1996) दूसरी तरफ कतिपय अविकसित एव अल्प विकसित क्षेत्रो की कृषि है जहाँ कृषक मिट्टी से जुडा होता है एव जीवन निर्वाह के लिए कृषि करता ह तथा पुराने कृषि यन्त्रो से खेती करता है।

व्यावसायिक सरचना सामान्यतया क्षेत्र के विकास स्तर एव मिट्टी तथा अन्य ससाधनो पर जनसख्या के दबाव का घोतक है। जनपद के कृष्य क्षेत्रो की सामाजिक सरचना मे विभिन्नताए है। जनपद मे कुछ कृषको के पास अपनी निजी भूमि होती है, जिस पर वे स्वय खेती करते है। दूसरे ऐसे भी कृषक है जो कृषि तो करते है परन्तु भूमि पर उनका कोई स्वामित्व नही होता। प्रथम प्रकार के कृषक बाहर के मजदूरो के द्वारा अथवा स्वय इस कार्य को सम्पन्न करते है, बाहर के वे मजदूर होते है जो दैनिक मजदूरी पर कार्य करते हैं किन्तु ये अस्थाई होते है। जनपद मे कार्यरत की अपेक्षा अकार्यरत जनसख्या अधिक है। चार जनगणना वर्षो 1961, 1971, 1981 एव 1991 मे सर्वाधिक कार्यरत जनसख्या 1961 मे 35 42 प्रतिशत थी। तदुपरान्त यह निरन्तर घटती गयी है जो 1971 मे 29 60, 1981 मे 27 43 तथा 1991 मे यह बढकर 29 20 प्रतिशत हो गयी है। 1981 एव 1991 मे सीमातिक कर्मकरो की सख्या भी सम्मिलित है।

गाजीपुर जनपद मे अकार्यरत जनसख्या का प्रतिशत 1961 से 1981 तक बढा है 1961 मे यह 64 56 प्रतिशत था जो 1981 मे 72 57 प्रतिशत हो गया तथा 1991 मे घटकर 70 79 प्रतिशत रहा। इस अल्प कमी का मुख्य कारण कतिपय रोजगार अवसरो की वृद्धि है। जनपद की कार्यरत जनसख्या को चार व्यवसायिक वर्गो मे बाँटा गया है- कृषक, कृषक मजदूर, उद्योग एव निर्माण तथा अन्य। अन्य के अन्तर्गत पशुपालन, जगल लगाना, वृक्षारोपण, खान खोदना, व्यापार तथा वाणिज्य, यातायात सग्रहण एव सचार को सम्मिलित किया गया है। जनपद की सर्वाधिक जनसख्या कृषक है। कृषको का सर्वाधिक प्रतिशत 1961 मे 62 63 था जो 19991 मे निरन्तर कम होकर 53 17 प्रतिशत हो गया। सर्वाधिक कृषक मजदूर 1971 मे 30 52 प्रतिशत रहे, जो 1961, 1981 एव 1991 मे क्रमश 16 52, 19 60 एव 25 95 प्रतिशत थे। उद्योग एव निर्माण कार्य मे लगे लोगो का प्रतिशत 1961 में 8 22, 1971 मे 6 50, 1981 मे 4 25 एव 1991 मे 5 32 प्रतिशत रहा। अन्य व्यवसाय मे लगे लोगो का प्रतिशत 1961 मे 12 60, 1971 मे 11 46, 1981 मे 22 64 एव 1991 मे अन्य व्यवसाय मे लगे लोगो का प्रतिशत 15 56 प्रतिशत था। इस वर्ग मे लगे लोगो की प्रतिशत वृद्धि का मुख्य कारण पशुपालन, वृक्षारोपण एव व्यापार आदि मे रोजगार अवसरों की वृद्धि है। **(तालिका 5 18)**

तालिका 5 18

जनपद गाजीपुर मे व्यवसायिक सरचना (प्रतिशत)

व्यवसाय	1961	1971	1981	1991
कार्यरत जनसख्या	35 42	29 60	27 43	29 20
कृषक	62 63	51 52	52 51	53 17
कृषक-मजदूर	16 22	30 52	19 60	25 95
उद्योग एव निर्माण कार्य मे लगे लोग	8 22	6 50	4 24	5 32
अन्य कार्य	12 60	11 46	22 64	15 56
अकार्यरत जनसख्या	64 56	70 40	72 57	70 79

स्रोत– जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 1961, 1971, 1981 एव 1991

5 16 कार्यरत जनसंख्या का वितरण प्रतिरूप-

जनपद मे कार्यरत जनसख्या का प्रतिशत 1961 मे 35 42 था, 1971, 1981 मे यह प्रतिशत क्रमश 29 60 एव 27 43 था। 1991 की जनगणना के अनुसार सीमातिक कार्यरत सहित कुल कार्यरत जनसख्या 29 20 प्रतिशत रही। कार्यरत जनसख्या के आधार पर जनपद के विकास खण्डो को 4 वर्गो मे विभक्त किया गया है- **(तालिका 5 19)**

तालिका 5 19

कार्यरत जनसख्या का श्रेणीगत वितरण

श्रेणी	कार्यरत जनसख्या का प्रतिशत	विकास खण्डो की सख्या		
		1971	1981	1991
अति निम्न	25 से कम	--	01	01
निम्न	25-30	09	12	07
मध्यम	30-35	07	03	08
उच्च	35 से अधिक	--	--	--

कार्यरत जनसख्या के **अतिनिम्न वर्ग (25 प्रतिशत से कम)** मे 1971 मे कोई विकास खण्ड नही था। 1981 मे भदौरा विकास खण्ड (24 00 प्रतिशत) इस वर्ग में आ गया। 1991 मे भी यही विकास खण्ड (17 98 प्रतिशत) था।

DISTRICT GHAZIPUR
WORKING POPULATION
1981
G A N G A R
AS PERCENTAGE OF TOTAL POPULATION
> 30
27 - 30
24 - 27
< 24
1991
G A N G A R
10 0 10 20
Km
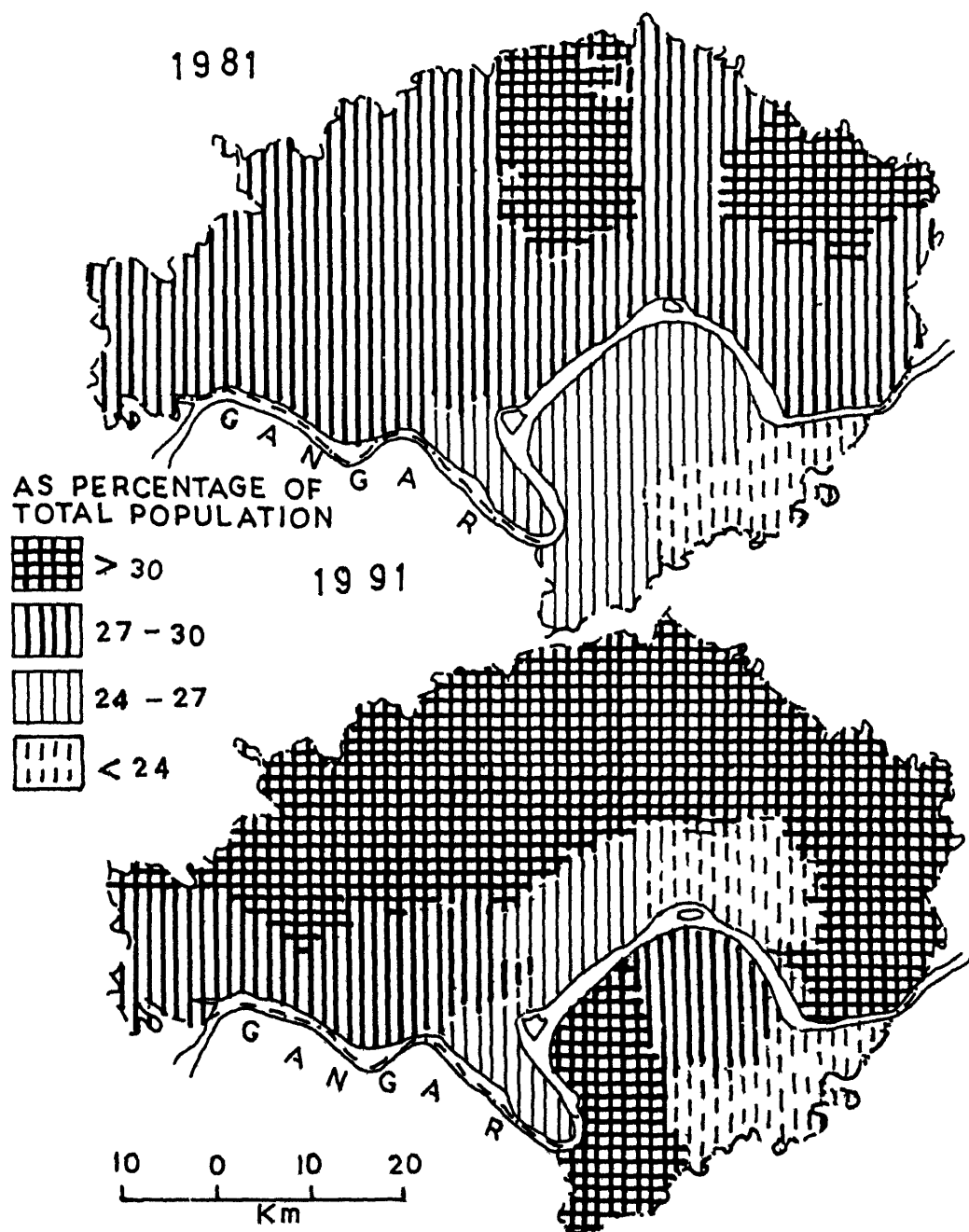
Fig. 5.8

निम्न वर्ग (25 से 30 प्रतिशत) मे 1971 एव 1981, 1991 मे क्रमश 9, 12 तथा 7 विकास खण्ड थे। 1971 मे 9 विकास खण्ड - गाजीपुर 19 09, जखनियाँ 27 91, बिरनो 29 28, सैदपुर 26 33, देवकली 29 69, करण्डा 27 27, मनिहारी 28 90, भदौरा 27 53, रेवतीपुर 28 77 थे। 1981 मे इस वर्ग मे 12 विकास खण्ड - गाजीपुर 28 96 करण्डा 25 90, सैदपुर 27 00, देवकली 27 16, सादात 27 54, जखनियाँ 27 09, मनिहारी 27 68, मुहम्मदाबाद 28 05, भाँवरकोल 28 01, कासिमाबाद 28 08, जमानियाँ 26 38 एव रेवतीपुर 26 92 प्रतिशत थे। 1991 मे इस वर्ग मे 7 विकास खण्ड रहे यथा- जखनियाँ 28 47 सैदपुर 28 53, देवकली 28 39, गाजीपुर 25 40, करण्डा 29 35, मुहम्मदाबाद 28 46 तथा रेवतीपुर 29 64 प्रतिशत रहे।

मध्यम वर्ग (30-35 प्रतिशत) मे 1971 मे 7 विकास खण्ड थे- मरदह 30 59, सादात 31 06ए मुदम्मदाबाद 34 45, भाँवरकोल 30 78, कासिमाबाद 31 19, बाराचँवर 33 90 एव जमानियाँ 30 07 प्रतिशत। 1981 मे इस वर्ग मे 3 विकास खण्ड - बिरनो 30 15, मरदह 31 54 एव बाराचँवर 30 55 थे। 1991 मे इस वर्ग मे 8 विकास खण्ड रहे यथा - मनिहारी 31 16, सादात 30 33, बिरनो 32 33, मरदह 31 57 कासिमाबाद 30 30, बाराचँवर 30 05, भाँवरकोल 30 32 तथा जमानियाँ 30 59 प्रतिशत रहे। रोजगार की तुलना मे अधिक जनसख्या वृद्धि के कारण कार्यरत जनसख्या के **अति उच्च वर्ग (35 से अधिक)** मे 1971, 1981 एव 1991 मे कोई विकास खण्ड नही था। **(परिशिष्ट 5 10, 5 11, 5 12 चित्र 5 8)**

5.16 1 कृषकों का वितरण प्रतिरूप-

जनपद की कार्यरत जनसख्या मे कृषक सर्वाधिक है। 1961, 1971, 1981 एव 1991 मे इनका प्रतिशत क्रमश 62 63, 51 52, 53 51 एव 53 17 प्रतिशत था। जनसख्या मे तीव्र वृद्धि तथा भूमि मे कोई सुधार न होने के कारण, तथा भरण पोषण हेतु अन्य व्यवसायो- मत्स्यपालन, व्यापार, एव अन्य सीमातिक कार्यों की ओर आकर्षण से कृषको के प्रतिशत मे कमी आयी है।

सन् 1971 मे जनपद के कृषको के प्रतिशत 51 52 से अधिक प्रतिशत वाले विकास खण्डो की सख्या 8 थी यथा- सैदपुर 62 60, मरदह 55 57, बिरनो 56 84, गाजीपुर 60 57, देवकली 72 39, जखनियाँ 67 80, मनिहारी 66 45 तथा कासिमाबाद 55 25

प्रतिशत। शेष विकास खण्डो मे कृषको का प्रतिशत जनपद से कम था यथा भदौरा 38 00, रेवतीपुर 40 69, जमानियाँ 43 46, भाँवरकोल 40 24, मुहम्मदाबाद 48 67, बाराचँवर 46 24, करण्डा 48 46 तथा सादात 50 56 प्रतिशत थे।

1981 मे जनपद के सभी विकास खण्डो मे सर्वाधिक कृषक मनिहारी विकास खण्ड मे 71 57 तथा सबसे कम रेवतीपुर विकास खण्ड 40 13 प्रतिशत थे। सात विकास खण्डो मे कृषको का प्रतिशत जनपद के कृषक प्रतिशत से कम रहा यथा- करण्डा 52 99, मुहम्मदाबाद 53 28, भाँवरकोल 40 81, बाराचँवर 49 45, जमानियाँ 51 83, भदौरा 45 78 एव रेवतीपुर 40 13 प्रतिशत थे। शेष 9 विकास खण्डो मे कृषको का प्रतिशत जनपद से अधिक था जिसमे कासिमाबाद 62 09, जखनियाँ 69 59, मनिहारी 71 57, सादात 71 20, सैदपुर 59 50, देवकली 64 41, बिरनो 65 38, गाजीपुर 54 58 तथा मरदह 66 77 प्रतिशत थे।

1991 मे सर्वाधिक कृषक सादात विकास खण्ड मे 65 27 प्रतिशत एव सबसे कम रेवतीपुर विकास खण्ड मे 38 11 प्रतिशत रहे। 1991 मे जनपद के प्रतिशत 53 17 से अधिक कृषको का प्रतिशत जनपद के 8 विकास खण्डो मे रहा यथा- जखनियाँ 62 60, मनिहारी 61 57, सादात 65 27, सैदपुर 57 00, देवकली 62 35, बिरनो 57 05, गाजीपुर 53 35 तथा मरदह 60 32 प्रतिशत रहे। शेष 8 विकासखण्डो मे कृषको का प्रतिशत जनपद के प्रतिशत से कम रहा जिसमे करण्डा 50 00, कासिमाबाद 51 50, बाराचँवर 47 84, मुहम्मदाबाद 48 18, भाँवरकोल 38 44, जमानियाँ 45 73, रेवतीपुर 36 26 तथा भदौरा 38 11 प्रतिशत रहे। **(परिशिष्ट 5 10, 5 11, 5 12 चित्र 5 9A)**

5 1 6 2 कृषक मजदूरो का वितरण प्रतिरूप-

कृषक मजदूरो से अभिप्राय उन ग्रामीण मजदूरो से है जो कृषि मे मजदूरी का कार्य करते है और जिनमे से अधिकाश के पास कोई भूमि नही होती है। गाँव मे इनकी दशा वास्तव मे दयनीय है। इन मजदूरो के आर्थिक, सामाजिक जीवन का अध्ययन करने से ग्रामीण क्षेत्रो मे फैली हुई बेकारी व अर्द्ध-बेकारी, गरीबी, निम्न जीवन स्तर कृषि पर जनसख्या का भार आदि का आसानी से ज्ञान हो जाता है। (मुकर्जी आर एन 1998)

कृषक मजदूर जनपद की कार्यरत जनसख्या मे द्वितीय स्थान पर है। 1971 मे कृषक मजदूरो का सर्वाधिक प्रतिशत भाँवरकोल विकास खण्ड मे 44 75 प्रतिशत एव सबसे कम देवकली विकास खण्ड मे 15 79 प्रतिशत था। 1971 मे गाजीपुर 20 05, बिरनो 28 02,

DISTRICT GHAZIPUR
OCCUPATIONAL STRUCTURE
CULTIVATORS
A
1981
1991
IN PER CENT
>70
65–70
60–65
55–60
<55
GANGA R
AGRICULTURAL LABOURERS
B
1981
1991
IN PER CENT
>40
30–40
20–30
10–20
<10
GANGA R
10 0 10 20
Km
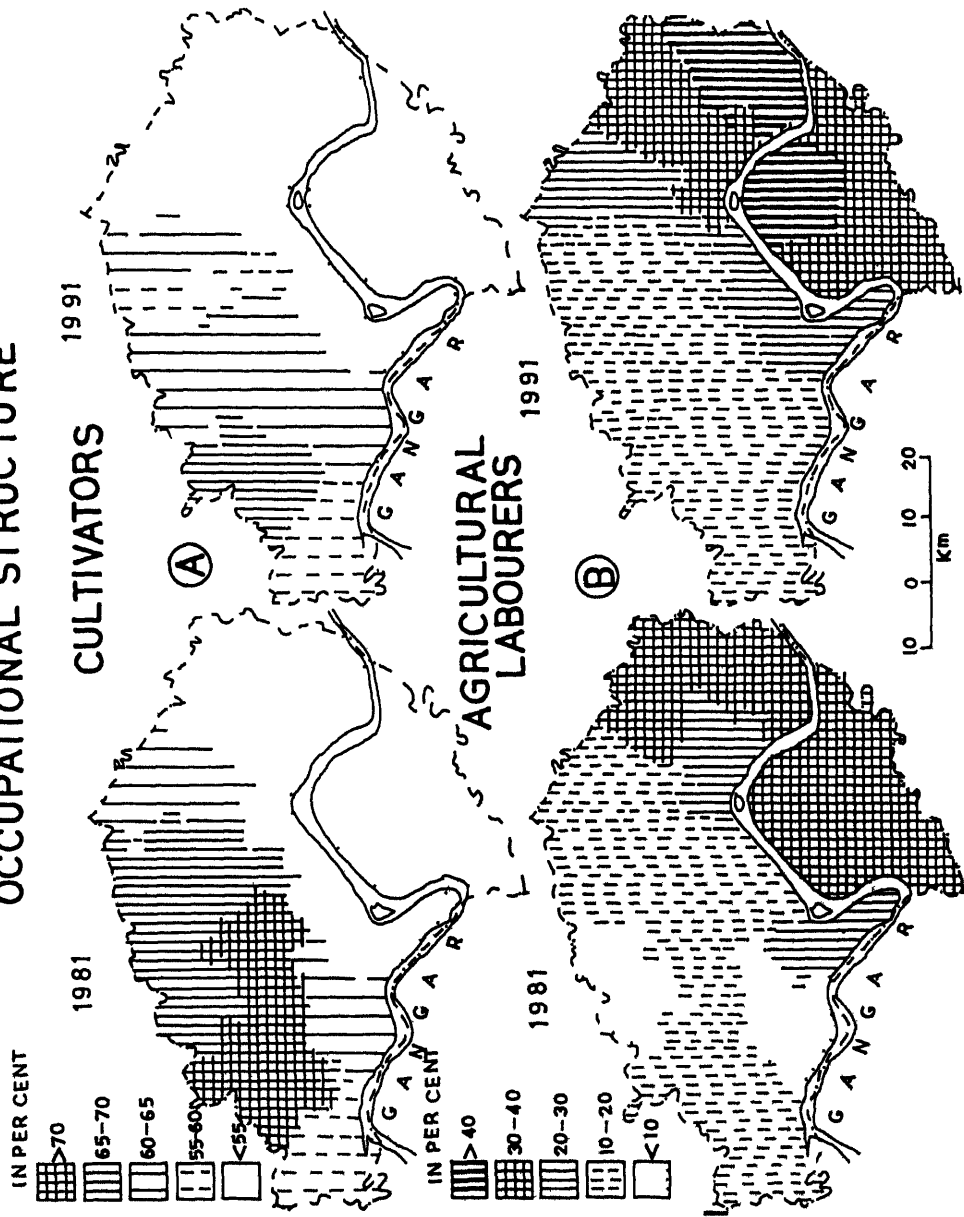
Fig. 5.9

सेदपुर 23 79, जखनियाँ 21 00, मनिहारी 20 64, एव कासिमाबाद मे 30 51 प्रतिशत कृषक मजदूर थे, जो जनपद के कृषक मजदूरो के प्रतिशत से कम है तथा करण्डा 32 13, मरदह 32 12, सादात 31 17, मुहम्मदाबाद 35 94, बाराचँवर 42 92, जमानियाँ 36 67, भदौरा 40 80, एव रेवतीपुर 43 48 प्रतिशत जनपद के कृषक मजदूरो (30 52 प्रतिशत) के प्रतिशत से अधिक है।

वर्ष 1981 मे सर्वाधिक कृषक मजदूर भाँवरकोल विकास खण्ड (39 09 प्रतिशत, जो जनपद के प्रतिशत 19 60 से बहुत अधिक) तथा सबसे कम जखनियाँ विकास खण्ड मे 7 18 प्रतिशत कृषक मजदूर थे। मनिहारी 12 09, सादात 10 53, सैदपुर 12 85, देवकली 9 29, बिरनो 12 92, गाजीपुर 13 57, मरदह 11 80, करण्डा 20 63, कासिमाबाद 16 64, बाराचँवर 30 08, मुहम्मदाबाद 24 69, जमानिया 35 88, रेवतीपुर 38 87, तथा भदौरा मे 33 32 कृषक मजदूर थे।

1991 मे सबसे अधिक कृषक मजदूर रेवतीपुर विकास खण्ड मे 47 27 प्रतिशत जनपद के कृषक मजदूरो के प्रतिशत (25 95 प्रतिशत) से अधिक है। सबसे कम कृषक मजदूर जखनियाँ विकास खण्ड मे 11 99 प्रतिशत रहे। मनिहारी 16 09, सादात 17 73, सैदपुर 18 06 देवकली 13 67, बिरनो 13 15, गाजीपुर 22 80, भरदह 13 13, करण्डा 23 22, कासिमाबाद, 29 76, बाँराचँवर 31 75, मुहम्मदाबाद 32 88, भाँवरकोल 47 06 जमनियाँ 36 87 तथा भदौरा मे 39 63 प्रतिशत कृषक मजदूर थे। (**परिशिष्ट 5 10, 5 11, 5 12 चित्र 5 9B**)

5 16.3 उद्योग एवं निर्माण कार्य में लगे व्यक्तियो का वितरण प्रतिरुप-

कार्यरत जनसख्या का तीसरा प्रमुख वर्ग उद्योग एव निर्माण कार्य मे सलग्न जरसख्या का है। जनगणना वर्ष 1971, 1981 एव 1991 मे क्रमश 6 50, 4 25 एव 5 32 प्रतिशत जनसख्या उद्योग एव निमार्ण कार्य मे लगी थी। 1971 मे उद्योग एव निर्माण कार्य मे लगे व्यक्तियो का सर्वाधिक प्रतिशत सादात विकास खण्ड मे 7 80 प्रतिशत था तथा सबसे कम देवकली विकास खण्ड में 3 23 प्रतिशत था। 1971 मे गाजीपुर मे 6 32, करण्डा मे 6 27, बिरनो मे 5 63 मरदह मे 5 16, सैदपुर मे 6 40 जखनियाँ मे 4 45, मनिहारी मे 4 45, मुहम्मदाबाद मे 5 58, भाँवरकोल मे 4 45, कासिमाबाद मे 7 36, बाराचँवर मे 3 95, जमानियाँ मे 6 39, भदौरा मे 7 00, एव रेवतीपुर मे 6 17 प्रतिशत व्यक्ति उद्योग तथा निर्माण कार्य मे लगे थे।

DISTRICT GHAZIPUR
OCCUPATIONAL STRUCTURE
HOUSEHOLD INDUSTRIES
A
1981
1991
IN PER CENT
>6 00
5 00 - 6 00
4 00 - 5 00
3 00 - 4 00
<3 00
OTHER WORKERS
B
IN PER CET
> 21
18 – 21
15 – 18
12 – 15
<12
GANGA R
10 0 10 20
Km
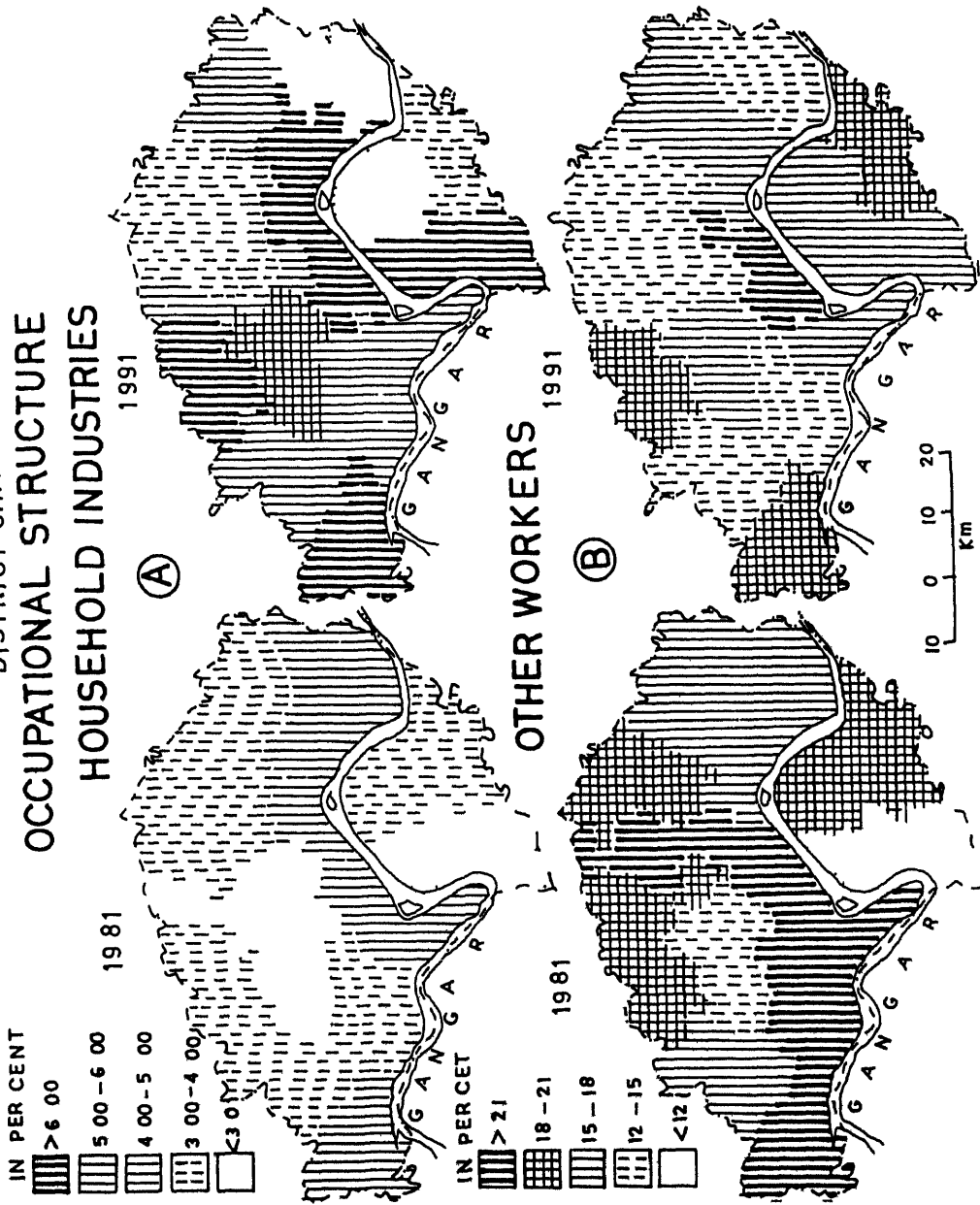
Fig. 5.10

1981 मे उद्योग एव निर्माण कार्य मे सर्वाधिक प्रतिशत करण्डा विकास खण्ड मे 4 95 प्रतिशत एव सबसे कम जमानियाँ विकास खण्ड मे 1 50 प्रतिशत थे। जनपद के 4 विकास खण्ड- गाजीपुर 4 80, करण्डा 4 95, मुहम्मदाबाद 4 50 तथा भाँवरकोल 4 27 प्रतिशत जनपद से अधिक उद्योग एव निर्माण कार्य मे लगे व्यक्तियो का प्रतिशत रखते थे।

1991 मे सर्वाधिक उद्योग एव निर्माण कार्य मे लगे व्यक्तियो का प्रतिशत गाजीपुर विकास खण्ड मे 13 94 प्रतिशत तथा सबसे कम रेवतीपुर मे 2 71 प्रतिशत रहा। जनपद के 5 विकास खण्ड जनपद से अधिक उद्योग एव निर्माण कार्य मे लगे लोगो का प्रतिशत रखते है यथा- जखनियाँ 6 47, सैदपुर 6 88, गाजीपुर 13 94, मुहम्मदाबाद 9 02 तथा जमानियाँ मे 6 83 प्रतिशत व्यक्ति उद्योग एव निर्माण कार्य मे लगे थे। शेष 11 विकास खण्ड जनपद के प्रतिशत से कम प्रतिशत वाले रहे यथा- मनिहारी 5 24, सादात 4 45, देवकली 4 71, बिरनो 4 01, मरदह 3 88, करण्डा 4 96, कासिमाबाद 3 70, बाराचँवर 4 11, भाँवरकोल 2 37, रेवतीपुर 2 71 तथा भदौरा 3 84 प्रतिशत रहे। (**परिशिष्ट 5 10, 5 11, 5 12 चित्र 5 10 A**)

5 16 4 अन्य व्यवसायों में लगे व्यक्तियों का वितरण प्रतिरूप-

चतुर्थ एव अन्तिम वर्ग अन्य व्यवसायो मे सलग्न जनसख्या का है। 1971, 1981 एव 1991 के जनगणना वर्षों मे अन्य व्यवसायो मे लोगो का प्रतिशत क्रमश 11 46, 22 64 एव 15 56 प्रतिशत था। जनसख्या मे वृद्धि के साथ-साथ अन्य व्यवसाय मे लगी जनसख्या का प्रतिशत 1981 तक बढा है, क्योकि जनसख्या मे उत्तरोत्तर वृद्धि के फलस्वरूप अधिकाश जनसख्या अन्य व्यवसायो मे सलग्न होती गयी। 1991 मे अन्य व्यवसायों मे लगी जनसख्या के प्रतिशत मे कमी आयी है, इसका कारण लोगो का रोजगार की तलाश मे अन्यत्र चले जाना, एव आई बेरोजगारी की व्यापकतर दशाए हैं। अन्य व्यवसायो मे लोगो का प्रतिशत 1971 मे सर्वाधिक भदौरा विकास खण्ड मे 14 20 प्रतिशत था एव सबसे कम जखनियाँ मे 6 75 प्रतिशत था। गाजीपुर में 13 04, करण्डा मे 13 14, बिरनो मे 9 51, मरदह मे 7 15, सैदपुर मे 7 20, देवकली मे 8 57, सादात में 9 93, मनिहारी मे 6 94, मुहम्मदाबाद मे 9 80, भाँवरकोल में 8 47 कासिमाबाद में 6 88, बाराचँवर मे 6 87, जमानियाँ मे 13 48 एव रेवतीपुर में 9 65 प्रतिशत व्यक्ति अन्य व्यवसायो मे सग्लग्न थे।

1981 मे सर्वाधिक व्यक्ति गाजीपुर विकास खण्ड म 27 29 प्रतिशत एव सबसे कम जमानियाँ मे 10 79 प्रतिशत जो जनपद के प्रतिशत 22 64 से क्रमश अधिक एव कम है। जनपद से अधिक प्रतिशत वाले विकास खण्ड मरदह 28 32 तथा सेदपुर 23 35 थे। अन्य सभी विकास खण्ड जनपद के प्रतिशत से कम थे।

1991 मे अन्य व्यवसायो मे लगे व्यक्तियो का सर्वाधिक प्रतिशत गाजीपुर विकास खण्ड मे 22 00 एव सबसे कम सादात विकास खण्ड मे 13 90 प्रतिशत रहा। जनपद के 8 विकास खण्ड जनपद के प्रतिशत 15 56 से अधिक व्यक्तियो का प्रतिशत रखते है- जखनियाँ 19 06, मनिहारी 16 91, सैदपुर 18 13, करण्डा 17 29, बाराचँवर 15 82, मुहम्मदाबाद 16 57 तथा भदौरा 20 23 प्रतिशत रहे। शेष विकास खण्डो मे अन्य व्यवसाय मे लगे लोगो का प्रतिशत जनपद के प्रतिशत से कम रहा यथा- सादात 13 23, देवकली 13 90, बिरनो 14 67, मरदह 14 43, कासिमाबाद 14 21, भाँवरकोल 14 01, जमानियाँ 15 45 तथा रेवतीपुर 15 12 प्रतिशत रहे। **(परिशिष्ट 5 10, 5 11, 5 12, चित्र 5 10 B)**

5 17 नगरीय केन्द्रों की व्यावसायिक संरचना-

कार्यरत जनसख्या- जनगणना वर्ष 1981 मे कार्यरत जनसख्या को दो श्रेणियो मे विभाजित कर दिया गया मुख्य कर्मकर एव सीमातिक कर्मकर। 1991 मे जनपद के नगरीय केन्द्रो मे सर्वाधिक मुख्य कर्मकर बहादुरगज 25 79 प्रतिशत तथा सबसे कम गाजीपुर मे 21 77 प्रतिशत रहे। जबकि सर्वाधिक सीमातिक कर्मकर बहादुरगज मे 2 54 एव न्यूनतम 0 07 प्रतिशत गाजीपुर नगरपालिका मे रहे।

कृषको का वितरण- 1991 मे सर्वाधिक कृषक जगीपुर नगरपालिका मे 20 95 एव न्यूनतम गाजीपुर मे 4 25 प्रतिशत रहे। इसी प्रकार सैदपुर मे 14 15, सादात में 19 62, मुहम्मदाबाद मे 10 21, बहादुरगज मे 13 32, जमानियाँ मे 16 74 एव दिलदारनगर मे कृषको का प्रतिशत 5 94 रहा।

कृषक मजदूर- सर्वाधिक कृषक मजदूरों का प्रतिशत जमानियाँ मे 11 89 एव सबसे कम गाजीपुर नगरपालिका मे 1 68 प्रतिशत रहा। अन्य नगर केन्द्रो मे सैदपुर 11 29, सादात 4 67, जगीपुर 5 95, मुहम्मदाबाद 8 55, बहादुरगज 8 58 तथा दिलदार नगर मे कृषक मजदूरो का प्रतिशत 8 46 रहा।

उद्योग एव निर्माण कार्य- 1991 की जनगणनानुसार उद्योग एव निर्माण मे लगे व्यक्तियो का सर्वाधिक प्रतिशत बहादुरगज मे 45 09 तथा सबसे कम दिलदारनगर मे 11 51 प्रतिशत रहा। जबकि सैदपुर 18 39, सादात 27 89, गाजीपुर 18 63, जगीपुर 18 41, मुहम्मदाबाद 17 95, बहादुरगज 45 09 तथा जमानियाँ मे 16 85 प्रतिशत व्यक्ति उद्योग एव निर्माण कार्य मे सलग्न रहे।

अन्य व्यवसाय मे कार्यरत जनसख्या- अन्य व्यवसायो मे लगे व्यक्तियो का सर्वाधिक प्रतिशत गाजीपुर नगर पालिका मे 75 09 एव सबसे कम बहादुरगज मे 23 95 प्रतिशत रहा। सैदपुर मे 55 10, सादात मे 51 85, जगीपुर मे 44 32, मुहम्मदाबाद मे 63 70 बहादुर गज मे 23 95, जमानियाँ मे 52 78 तथा दिलदार नगर मे 72 68 प्रतिशत जनसख्या अन्य व्यवसायो मे सग्लग्न थे। नगरीय केन्द्रो मे प्राथमिक कार्य गौण होता है फलत इस वर्ग मे जनसख्या का प्रतिशत अधिक होता है। **(परिशिष्ट 5 13)**

5.18 सर्वेक्षित ग्रामों की व्यवसायिक संरचना-

सर्वेक्षित ग्रामो मे सबसे अधिक कार्यरत जनसख्या थनईपुर ग्राम मे 38 36 प्रतिशत तथा मबसे कम हुरमुजपुर गाँव मे 30 21 प्रतिशत है। कृषक जनसख्या का सबसे अधिक प्रतिशत शिकारपुर ग्राम मे 64 36 एव सबसे कम किशुनीपुर ग्राम मे 44 56 प्रतिशत है। कृषक मजदूर सर्वाधिक सरायमुरादअली मे 36 12 एव सबसे कम हुरमुजपुर गाँव मे 12 01 प्रतिशत है। उद्योग एव निर्माण कार्य मे लगे लोगो का सर्वाधिक एव न्यूनतम प्रतिशत क्रमश सआदतपुर 14 25 एव किशुनीपुर 5 82 प्रतिशत है। अन्य व्यवसायो मे लगे लोगो का सर्वाधिक प्रतिशत थनईपुर मे 20 34 एव न्यूनतम सरायमुरादअली मे 9 54 प्रतिशत रहा। **(तालिका 5 20, चित्र 5 11)**

सर्वेक्षित ग्रामो का मुख्य व्यवसाय कृषि है, कृषक तथा कृषक मजदूर दोनो मिलकर कार्यरत जनसख्या का 70 प्रतिशत से अधिक भाग आवरित करते है। अधिकाश कृषक परम्परावादी है एव खाद्यानो की ही कृषि करते हैं। अत इनके विकास हेतु सिचाई व्यवस्था मे सुधार बहुफसली कृषि, एव जनसख्या वृद्धि की तीव्र वृद्धि को रोकने के लिए परिवार कल्याण कार्यक्रमो का प्रभावी क्रियान्वयन करने की महती आवश्यकता है।

DISTRICT GHAZIPUR
OCCUPATIONAL STRUCTURE OF SAMPLE VILLAGES
Shikarpur
Hurmujpur
Saadatpur
Ahirpurwa
Thanaipur
Hardia
Dhuwarjun
Pawata
RIVER
GANGA
Saraimuadali
Kishunipur
Cultivators
Agricultural Labourers
Household Industries
Others
8 0 8
Km
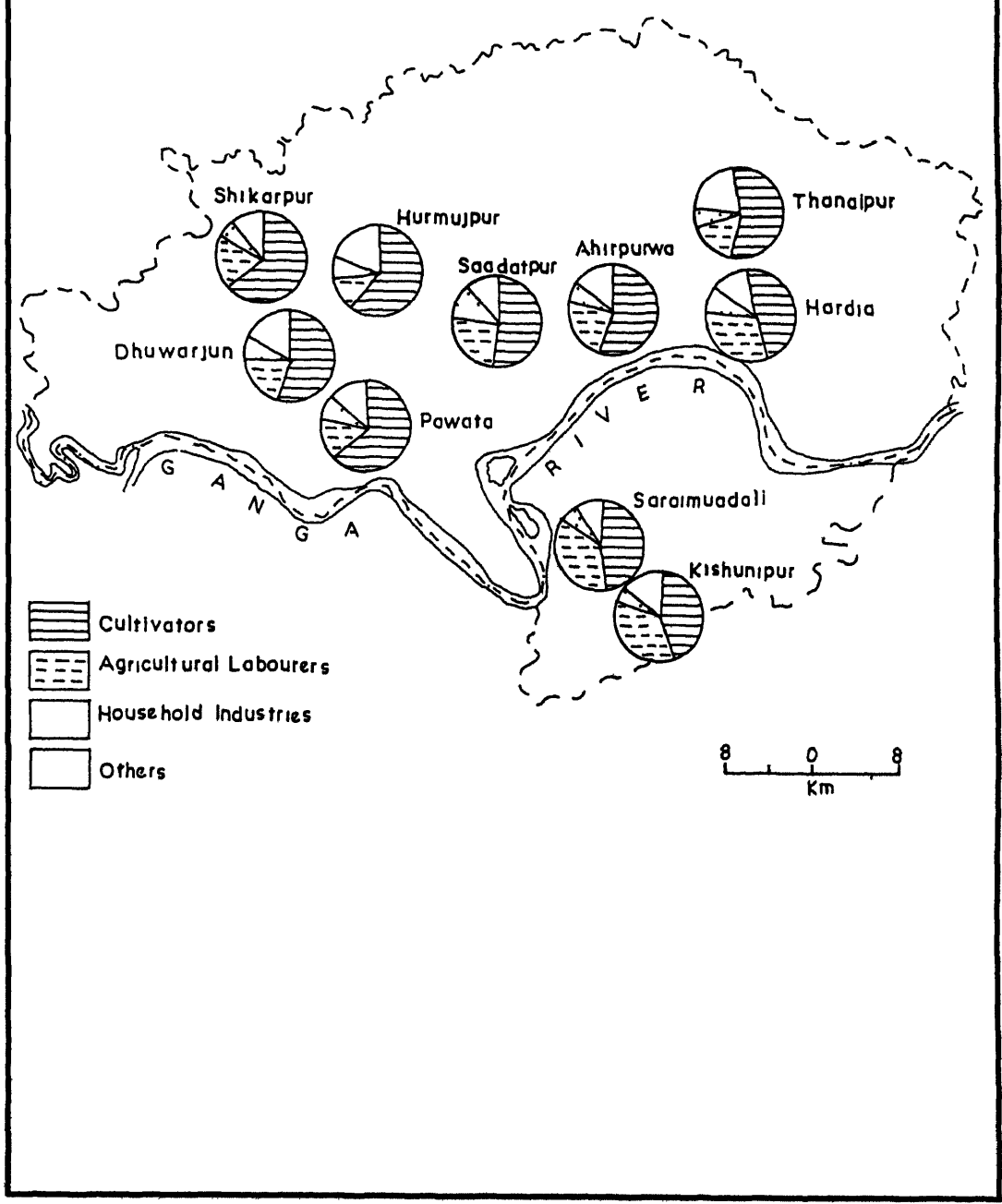
Fig. 5.11

तालिका 5 20

सर्वेक्षित ग्रामो मे व्यवसायिक सरचना (प्रतिशत) 2002

ग्राम	कार्यरत जनसख्या	कृषक	कृषक मजदूर	उद्योग एव निर्माण कार्य	अन्य व्यवसाय	अकार्यरत जनसख्या
अहिरपुरवा	35 72	55 28	23 80	6 73	14 21	64 28
किशुनीपुर	36 39	44 56	35 37	5 82	14 28	63 61
थनईपुर	38 36	55 98	16 78	6 88	20 36	61 64
धुवार्जुन	33 77	54 75	20 23	8 34	16 68	66 23
पवटा	34 33	63 46	14 85	8 71	12 97	65 72
शिकारपुर	36 18	64 36	19 87	5 87	10 00	63 82
सरायमुरादअली	35 87	47 35	36 12	7 01	9 54	64 13
सआदतपुर	32 05	51 85	21 79	14 25	12 14	67 95
हरदिया	33 54	46 86	31 92	8 56	12 65	66 46
हुरमुजपुर	30 21	61 78	12 01	7 52	18 70	69 89

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

REFERENCES

1 Chandana R C (2001) ``Population Geography" (in Hindi) Kalyani Publishers New Delhi P 181

2 Chandana R C and Sidhu M S (1980) Introduction to Population Geography" Kalyani Publications New Delhi P 98

3 Franklin S H (1956) ``The Pattern of Sex Ratio in Newzealand" ``Economic Geography" Vol 32

4 Mohapatra A C Nazarene V M (1998) ``Litracy And The Poor Study of Selected Slum of Shillong National Geographical Journal of India N G S I, B H U vol 44 (1-4) March Dec 1998 P 12

5 Mishra J P (2001) Censces of India 2001 (In Hindi) Sahitya Bhawan Publications Agra P 17

6 Mukerjee R N and Kulshrestha G C (1998) "Indian Rural Sociology" Prakash Book Dipot Bada Bazar Bareilly P 187

7 Ojha R (1983) ``Jansankhya Bhoogol" Pratibha Prakashan Kanpur P 172

8 Pant J C (1983) `Janankikee' Goyal Publishing House Subhash Nagar Meerut PP 338-339

9 Singh S N (1970) ``Demographic Structure of Surrounding Area of Varanasi City UTTAR BHARAT Bhugol Patrika Vol VI No 1 June P 63

10 Singh M B and Dubey K K (2001) "Population Geography" Rawat Publications Jaipur P 206

11 Singh J (1996) ``Economic Geography" (In Hindi) Gyanodya Prakashan Gorakhpur P 241

12 Trewartha G T (1969) ` A Geography of Populatıon World Pattern ' Johan Wıley and Sons New Yoık

13 Tyagı N (1982) "A Geographıcal Study of Hıll Resorts of U P Hımalaya" Ph D Thesıs Unıversıty of Gorakhpur P 151

14 Yadav H L (1997) `Jansankhya Bhoogol' Vasundhara Prakashan Gorakhpur pp 167, 168, 177 195

15 Yadav Rana P S (1997-98) Populatıon Study of Sadat Block Dıstrıct Ghazıpur U P Dısseıtatıon Work For Masteı of Aıts ın Geography B H U P 49

अध्याय 6

परिवार कल्याण कार्यक्रमः संगठन एवं कार्यप्रणाली

निरन्तर बढती जनसख्या एव सीमित ससाधनो मे सामज्जस्य स्थापित करने के लिए जनसख्या नियत्रण आवश्यक है, जिस प्रकार शरीर के लिए आवश्यकता से कम तथा अधिक भोजन दोनो हानिकारक हैं, उसी प्रकार देश के त्वरित आर्थिक विकास हेतु समुचित जनसख्या का होना आवश्यक है। विकासशील राष्ट्र जनसख्या विस्फोट की अवस्था से गुजर रहे है फलत परिवार कल्याण कार्यक्रम की स्वीकारोक्ति अनिवार्य हो गयी है। 'परिवार कल्याण कार्यक्रम एक कल्याणकारी योजना है जिसका उद्देश्य व्यक्ति की उन्नति, परिवार की भलाई समाज का सुधार तथा देश की उन्नति करना है। (कौल एच एन , ओझा आर 1983) परिवार का चतुर्दिक विकास तभी सम्भव है जब शिशु के गर्भ मे आने से पूर्व ही ध्यान दिया जाये इसीलिए गर्भधारण तथा गर्भिणी के भारतीय शास्त्रो मे वर्णित व्यवस्था पर ध्यान दिया जाये। जब गर्भवती स्त्री के गर्भावस्था के समय तथा बाद मे प्रसव तथा प्रसव के बाद रोगो के सरक्षण की उचित व्यवस्था आयरन फोलिक एसिड इत्यादि दवाइया रक्ताल्पता से बचाने के लिए समय पर मिलेगी तभी माताओं और बच्चो को सुखी रखा जा सकता है। यही आधार भूत तथ्य है। यह सर्वविदित है कि प्रभावसाली ढग से लागू किये गये परिवार कल्याण कार्यक्रमो से प्राप्त लाभ, विनियोग की मात्रा से अधिक होते है। (यादव हीरालाल 1997) 'परिवार कल्याण कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य न सिर्फ मनुष्य की सख्या को कम, अधिक या स्थिर रखना होता है, प्रत्युत ससार की बढती हुई जनसख्या के बड़े भाग के लोगो के जीवन की गुणवत्ता मे वृद्धि का प्रयास करना होता है। (अग्रवाल एस एन 1978)

6.1 भारत में परिवार कल्याण कार्यक्रम का इतिहास-

भारत में परिवार कल्याण कार्यक्रम बहुत पुराना नही है। सन् 1916 मे प्यारे किशन वात्तल ने जनसख्या वृद्धि तथा सदर्भित परिणामों का विवरण देते हुए अपनी पुस्तक 'द पापुलेशन प्राब्लम आफ इडिया' प्रकाशित की। 1925 मे प्रो रघुनाथ सी कार्वे ने महाराष्ट्र में 'सतति निग्रह चिकित्सालय' स्थापित किया। कदाचित् किसी को कल्पना भी नही रही होगी कि सतति निग्रह का यह अभिनव प्रयोग कालान्तर में राष्ट्रव्यापी आदोलन का रूप ले लेगा। तदुपरान्त (चेन्नई) में 'नव

माल्थसवादी सघ' की स्थापना की गयी। 11 जून 1930 मे मैसूर (कर्नाटक) मे शासन द्वारा ससार की प्रथम 'बर्थ कण्ट्रोल क्लिनिक' की स्थापना की गयी जो भारत के लिए गर्व का विषय रहेगा। सन् 1930 से ही देश के शिक्षित जनमत ने परिवार कल्याण के विचार का स्वागत किया। सन् 1933 मे मद्रास सरकार ने अपनी प्रेसीडेसी मे सतति निग्रह चिकित्सालय प्रारम्भ किया। इसी वर्ष 'आल इडिया वीमेस कान्फ्रेस लखनऊ मे सतति निग्रह के सबध मे प्रस्ताव पारित किया। वर्ष 1935 मे इडियन नेशनल काग्रेस जिसके अध्यक्ष प जवाहरलाल नेहरू थे, एक राष्ट्रीय योजना समिति की स्थापना की इस समिति ने परिवार कल्याण कार्यक्रम की आवश्यकता स्वीकार करते हुए इसे योजना का अभिन्न अग बना दिया। 'अखिल भारतीय महिला सभा' के विशेष निमत्रण पर परिवार कल्याण कार्यक्रम की विशेषज्ञा श्रीमती मार्गरेट सेगर 1935-36 मे भारत आयी। उनका कथन था कि- 'रिप्रोडक्शन इज ए प्रिविलेज नॉट ए राइट' अपने सतति निग्रह के कार्यक्रम के व्यापक अनुभवो के आधार पर परिवार कल्याण को लोकप्रिय बनाने की सलाह दी। सितम्बर 1935 मे 'फेमिली हाइजीन' सबधी अध्ययन हेतु एक समिति का गठन किया गया। डा एस पी पिल्लई ने जो सतति निग्रह के प्रबल समर्थक थे, सन् 1936 मे कई स्थानो पर प्रशिक्षण केन्द्रो की स्थापना की। सन् 1938 मे अखिल भारतीय काग्रेस के अध्यक्ष नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे परिवार कल्याण कार्यक्रम का समर्थन किया। सन् 1939 मे रैना साहब ने उज्जैन मे एक 'मातृ सेवा मदिर' प्रारम्भ किया। 1940 मे श्री पी एन सप्रू 'कौसिल आफ स्टेट्स' मे बर्थ कण्ट्रोल क्लिनिक चलाये जाने का प्रस्ताव रखा जो बहुमत से पारित हुआ। इसी समय 'फेमिली प्लानिग लदन' की ओर से श्रीमती रीना दत्त ने भारत का भ्रमण किया। 1940 मे ही बबई (मुम्बई) मे 'भगिनी समाज सतति निग्रह चिकित्सा केन्द्र' को सम्मिलित करते हुए 'स्टडी एण्ड प्रमोशन हाइजीन समिति', ने 'फेमिली प्लानिंग सोसाइटी' के रूप मे कार्य प्रारम्भ किया। सन् 1943 मे 'हेल्थ सर्वे एण्ड डेवलपमेट' कमेटी की स्थापना की गयी जिसके अध्यक्ष श्री जोसेफ भोर थे। सन् 1946 मे इस समिति ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसमे केवल माताओं और बच्चो के स्वास्थ्य की दृष्टि से परिवार कल्याण के अपनाये जाने के सबध मे सुझाव दिये गये।

राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने जनसख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याओं के समाधान में अपने विचार व्यक्त किये। तथा परिवार कल्याण की आवश्यकता को स्वीकार किया। सन् 1948 मे श्रीमती धन्वतरी रामाराव की अध्यक्षता मे 'भारतीय परिवार नियोजन सघ', की स्थापना की गयी। भारत वर्ष मे इस दिशा मे यह एक अग्रगामी कदम था। सन् 1951 मे 'योजना आयोग' ने परिवार कल्याण के महत्व को ध्यान मे रखकर एक विशेष समिति का गठन किया इस समिति की अध्यक्षा डा सुशीला नायर थीं। इसके सदस्य डा आर ए गोपाल स्वामी, डा ज्ञानचन्द्र एव डा ए सी बसु

थे। इसके अतिरिक्त इसकी महत्वपूर्ण सदस्या श्रीमती धन्वन्तरी राय थी। इस समिति ने अध्ययन का जो लेखा-जोखा प्रस्तुत किया, उसमे बढती हुई जनसख्या समस्या पर गहन चिंता व्यक्त करते हुए परिवार कल्याण कार्यक्रम सबधी महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये। इसी काल मे 'प्लाट पेरेण्ट हुड' के माने हुए अमेरिकी विशेषज्ञ डा अब्राहम स्टोन भारत वर्ष आये और उन्होने 'रिदिम विधि' के आधार पर देश के दिल्ली, मैसूर, पश्चिम बगाल आदि राज्यो मे पाच केन्द्रो की स्थापना की। इन केन्द्रो मे महिलाओं के लिए 'रिदिम विधि' अथवा सुरक्षित प्रसव काल सबधी प्रशिक्षण प्रारम्भ किया गया।

सन् 1953 मे 'पापुलेशन कौसिल' के नियत्रण पर दो विशेषज्ञ डा फ्रेक नाइस्टीन एव डा ल्युनावामगार्टनर भारतीय जनसख्या सबधी समस्या पर सलाह देने हेतु आये इनके सुझाव पर 'परिवार कल्याण अनुसधान एव कार्यक्रम समिति' ने यह सुझाव सर्वानुमति से लिया कि अपने देश मे परिवार कल्याण कार्यक्रम तत्काल प्रारम्भ किया जाना आवश्यक है। इसके लिए दो उप समितियो का गठन भी किया गया। इस समिति ने अपनी पहली ही बैठक मे इस बात पर बल दिया कि परिवार कल्याण कार्यक्रम सतति निग्रह अथवा दो बच्चो के जन्म के बीच उचित अतर तक ही न सीमित रखा जाय, जहा तक सभव हो सके समाज मे परिवार की ईकाई को उचित स्थान प्राप्त होना चाहिए जिससे व्यक्ति को विकास का पूर्ण अवसर मिले, उसकी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो तथा प्रत्येक सदस्य स्वस्थ शिक्षित तथा समृद्ध बन सके। इन सभी पहलुओं को ध्यान मे रखकर कार्यक्रम की रूपरेखा बनायी जानी चाहिए।

6.2 परिवार कल्याण कार्यक्रम की आवश्यकता-

भारत मे भारी जनसख्या वृद्धि तथा परिवारो के बढते आकार को देखते हुए परिवार कल्याण कार्यक्रम आवश्यक है। भारत मे यह परिवार आकार 12 3 करोड़ परिवारो के सदर्भ में औसत परिवार आकार 5 5 का आता है। अर्थात् एक परिवार मे औसतन 4 बच्चे हैं। (यादव हीरालाल 1997) यह परिवार आकार उच्च जन्मदर एव निम्न मृत्युदर का प्रतिफल है। यदि जन्मदर मे कमी नही लाई गयी तो, देश में जनसख्या की तीव्र वृद्धि को रोका नही जा सकता। इस हेतु सतति निरोध की उचित विधियों को अपनाना आवश्यक है। पाश्चात्य देशों मे दीर्घकाल से ही परिवार कल्याण कार्यक्रम उनके जीवन का अभिन्न अग बन गया है। परिवार कल्याण कार्यक्रम की आवश्यकता का विश्लेषण परिवार कल्याण के विविध पक्षों के माध्यम से किया गया है—

6.2 1 आर्थिक पक्ष-

आर्थिक कारणो के आधार पर जन्मदर मे ह्रास आना आवश्यक है, किसी क्षेत्र का आर्थिक विकास उन्नत होता है तो जनसख्या की वृद्धि दर कम होती है इसीलिए जेनेवा कान्फ्रेस में 'विकास सबसे अच्छा गर्भ निरोधक है', का नारा दिया गया था। जनसख्या तभी कम हो सकती है जब प्रत्येक दम्पत्ति परिवार कल्याण कार्यक्रम द्वारा अपने बच्चो की सख्या सीमित करने का प्रयास करे। बालको के शिक्षा, स्वास्थ्य एव पोषण की समुचित व्यवस्था करे।

भारत की पहली तीन पचवर्षीय योजनाओं मे कुल राष्ट्रीय आय मे औसत वार्षिक वृद्धि दर 3 8 प्रतिशत थी। इस अवधि मे प्रति व्यक्ति मे औसत वार्षिक वृद्धि 1 25 प्रतिशत रही। इसका तात्पर्य यह हुआ कि कुल राष्ट्रीय आय मे वृद्धि के आधे से भी अधिक भाग को जनसख्या वृद्धि ने अपहरित कर लिया। चतुर्थ पचवर्षीय योजनावधि मे राष्ट्रीय उत्पाद मे 3 3 एव प्रतिव्यक्ति आय मे केवल 1 1 प्रतिशत की वृद्धि रही। पाचवी पचवर्षीय योजना मे सकल राष्ट्रीय उत्पाद मे 5 2 प्रतिशत एव प्रति व्यक्ति आय मे 3 1 प्रतिशत वृद्धि रही। छठी पचवर्षीय योजना मे सकल राष्ट्रीय उत्पाद मे 5 2 एव प्रतिव्यक्ति आय मे 3 0 प्रतिशत वृद्धि दर प्राप्त की गयी। सातवी योजना मे यह वृद्धि क्रमश 5 एव 3 6 प्रतिशत वृद्धि दर रही तथा आठवी योजना मे सकल राष्ट्रीय उत्पाद की वृद्धि दर 6 8 प्रतिशत रही तथा नवी योजना का लक्ष्य 6 5 प्रतिशत है। दसवी पचवर्षीय योजना (1 अप्रैल 2002- 31 मार्च 2007 तक) के दृष्टिकोण पत्र मे 8 प्रतिशत विकास दर का लक्ष्य रखा गया है। राष्ट्रीय आय मे वृद्धि की अल्प प्रवृत्ति से, एव तीव्रगति से बढती हुई जनसख्या ने बेरोजगारी तथा खाद्य समस्या को गभीर बना दिया है। 87 प्रतिशत परिवार केवल जीवन निर्वाह के बराबर आय पाते है। अत रहन-सहन का स्तर अत्यन्त शोचनीय है। तेजी से बढती जनसख्या के कारण आवास की समस्या शोचनीय होती जा रही है। आर्थिक विकास की गति को तीव्र करने, खाद्य तथा बेरोजगारी की समस्याओं का समाधान करने के लिए परिवार कल्याण कार्यक्रमो द्वारा जनसख्या की तीव्र वृद्धि को रोकना होगा।

6.2.2 सामाजिक पक्ष-

परिवार व समाज तथा राष्ट्र के हित एक दूसरे से पृथक नही है। 'हैवलाव एलिस' के शब्दों मे 'विवाह करने का अधिकार सतान उत्पन्न करने के अधिकार का पूरक नहीं है क्योंकि विवाह करने का अच्छा या खराब प्रभाव उन्हीं दो व्यक्तियों पर पड़ता है, जिनमे यह गठबधन हुआ है।

राज्य पर इसका विशेष प्रभाव नही पडता। 'परन्तु सन्तानोत्पत्ति का सीधा प्रभाव समाज पर पड़ता है। क्योकि भावी सताने भावी समाज का निर्माण करती है'। परिवार कल्याण का उद्देश्य केवल परिवार के आकार को सीमित करना नही है, वरन् युवक युवतियो का विवाह, पितृत्व अथवा मातृत्व के योग्य बनने, काम सबधी शिक्षा, विवाह सबधी सलाह आदि देना है। अत परिवार कल्याण से महत्वपूर्ण सामाजिक उत्थान होगा, विशेष रूप से महिलाए बच्चा पैदा करने की मशीन एव वासना की तुष्टि का साधन मात्र ही नही समझी जायेगी, अभी तक यह नारी जीवन की दु खद समझ का ही परिणाम है कि आर्थिक–सामाजिक, राजनीतिक और शिक्षा सुविधाओं के मामले मे सवैधानिक समानता की गारण्टी के बावजूद इनकी साक्षरता 54 16 है। स्त्री साक्षरता मे वृद्धि होने से स्त्रिया सामाजिक कार्यक्रमो मे भाग लेती है जिसका परिवार कल्याण कार्यक्रम पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

6.2.3 नैतिक पक्ष-

परिवार कल्याण कार्यक्रम मात्र कुछ जानकारी एव दुष्परिणामो को समझ लेने से ही पूर्णता को नही प्राप्त होगा। अपितु प्रत्येक व्यक्ति की यह नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए कि वह सतति निग्रह के आधुनिक तरीको का प्रयोग कर परिवार के आकार को छोटा करे।

6 2.4 राजनैतिक पक्ष-

लोकतत्रीय योजना की एक बड़ी बाधा है अनिवार्यता या जोर जबर्दस्ती का अभाव। इसीलिए एक ओर जहा चीन जैसे देश मे 'प्रति दपत्ति एक बच्चा' का सिद्धान्त लागू करके, जनसख्या के आकार को नियन्त्रित करने मे बहुत बड़ी सफलता मिली है। हम अपनी नौ पचवर्षीय योजनाओं मे से किसी एक में भी सामान्य जन्मदर के निर्धारित लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सके। मध्य प्रदेश अपनी जनसख्या नीति लागू करने वाला प्रथम राज्य है तथा महाराष्ट्र दूसरा मध्य प्रदेश की जनसख्या नीति मे पचायत प्रतिनिधियों को दो बच्चों से अधिक होने पर पदमुक्त करने का प्रावधान, महाराष्ट्र मे तो तीन बच्चो वाले दम्पतियो के राशन कार्ड भी न बनाने के निर्देश दिये गये हैं। लेकिन विधायकों एव सासदो के लिए ऐसे प्रावधान क्यो नहीं? यह नीति निर्माताओं के पूर्वाग्रह का ज्वलन्त प्रमाण है। अत परिवार कल्याण कार्यक्रम की अनिवार्यता सबके लिए अनिवार्य बनायी जाये।

6.2 5 स्वास्थ्य पक्ष-

बच्चो के समुचित पालन पोषण, माताओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए परिवार कल्याण कार्यक्रम आवश्यक है। भारत मे प्रसव के दौरान एक लाख मे से 407 माताओं की मृत्यु हो जाती है (भारत 2000)। परिवार कल्याण कार्यक्रम के अन्तर्गत आर सी एच कार्यक्रम मे सुधार कर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो पर रेफरेल यूनिटे तय कर प्रजनन सुविधाये प्रदान कर इस समस्या से मुक्ति पाई जा सकती है। इसके अतिरिक्त कानूनी गर्भपात, जन्म से पहले लिंग निर्धारण पर रोक, गर्भनिरोधको की सामाजिक बिक्री, प्रजनन तथा बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम परिवार कल्याण कार्यक्रम की आवश्यकता को महत्वपूर्ण बनाते है।

6.3 परिवार कल्याण कार्यक्रम में बाधाए-

परिवार कल्याण कार्यक्रम को अपेक्षित सफलता नही मिल पा रही है तथा लक्ष्य की तुलना मे उपलब्धिया कम है। हाल के वर्षों मे यह कार्यक्रम प्रशासको, योजनाकारो, तथा जनसख्या विशेषज्ञो के लिए बहस का विषय रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि परिवार कल्याण को विशेष प्रमुखता दी जाये एव जनमानस का पूर्ण सहयोग लिया जाये। क्योकि जनता के सहयोग के बिना कोई भी योजना पूर्ण नही हो सकती। परिवार कल्याण कार्यक्रम मे धार्मिक, नैतिक, आर्थिक एव अल्प साक्षरता विशेषत महिला साक्षरता मुख्य बाधाए है। (खरे पी सी 1985)

6 3.1 धार्मिक बाधाएं-

ससार के प्रमुख धर्म उपदेशक, धर्म गुरु, सतति-निरोध को एक अधार्मिक कृत्य कहकर विरोध करते हैं। हिन्दू धर्म के अनुसार मनुष्य जीवन का सार परम पुरुषार्थ की प्राप्ति मे ही निहित है। परम पुरुषार्थ की प्राप्ति जीवन के चार लक्ष्यो की प्राप्ति के बाद होती है। ये चार लक्ष्य ही पुरुषार्थ है। मनुष्य को इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु जीवन के चार आश्रमो ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एव सन्यास से होकर गुजरना पड़ता है। हिन्दू धर्म शास्त्रों मे जहा एक ओर अधिक सतान उत्पन्न करने को कहा गया है, वहीं कुछ धर्मग्रन्थों जैसे ऋग्वेद तथा युजुर्वेद मे इस बात का भी उल्लेख है कि एक निश्चित सीमा के पश्चात् अधिक सतान नहीं होनी चाहिए। हिन्दू धर्म सतति निरोध का विरोध नही करता है, यदि हम आज भी हिन्दू धर्मानुसार आश्रम व्यवस्था से जीवन यापन करे तो सभवत परिवार कल्याण की समस्या स्वत हल हो जायेगी।

मुस्लिम सम्प्रदाय मे भी यह भ्रम विद्यमान है कि परिवार कल्याण मजहब के खिलाफ है। इस्लाम धर्म मे कहा गया है कि जब खुदा के बदे शादी करते है तो वे इस्लाम धर्म मे अर्द्ध पारगत हो जाते है। इस्लाम मे अल्लाह को यह कहते हुए बताया गया है कि विवाह करो तथा वश वृद्धि करो, ताकि अन्य जातियो की अपेक्षा अपनी जाति को तथा मुझे गौरव प्राप्त होसके। दिल्ली की इस्लामिक रिसर्च सोसाइटी, ने मुसलमानो मे परिवार कल्याण को लोकप्रिय बनाने के लिए 'खानदानी मसूबा बदी कुरान' और 'हरीश की रोशनी', शीर्षक से उर्दू मे एक पुस्तिका प्रकाशित की है, जिसमे मुसलमानो की इस धारणा का खडन किया गया है कि परिवार कल्याण उनके धर्म के विरूद्ध है। इस पुस्तिका मे परिवार कल्याण को कुरान सम्मत सिद्ध किया गया है।

परिवार कल्याण या सतति निरोध के बारे मे रोमन कैथोलिक धर्म का विरोध दसवे पोप पायस के विवाह के सबध मे जारी किये गये पत्र के आधार पर है। पोप पायस ने सन् 1930 मे विवाह के सबध मे यह पत्र जारी किया था। इस पत्र मे कहा गया है कि गर्भाधान की प्राकृतिक क्रिया को जान बूझकर विभिन्न उपायो द्वारा रोकना उसका विरोध करना ईश्वर तथा प्रकृति के नियम के विपरीत है, और जो लोग यह कृत्य करते हैं, वे भयकर पाप करते है।

इस प्रकार रोमन कैथोलिक धर्मावलम्बी परिवार को गर्भ निरोध के विभिन्न साधनो द्वारा नियोजित करना अपराध समझते है फिर भी यह सत्य है कि रोमन कैथोलिक धर्म का विरोध परिवार कल्याण के गर्भ निरोधक साध्य से नही है अपितु साधन से है, अर्थात् वे लोग गर्भाधान को वैज्ञानिक साधनो से रोककर परिवार कल्याण करने के पक्ष मे नही है। उन्हे साध्य के रूप मे परिवार कल्याण से कोई विरोध नही है। वास्तव मे रोमन कैथोलिक धर्मालम्बी परिवार कल्याण को नैतिक स्वास्थ्य तथा आर्थिक दृष्टिकोण से आवश्यक समझते है। किन्तु इस कार्य हेतु गर्भ-निरोध के वैज्ञानिक साधनो की अपेक्षा आत्मसयम का सहारा लेना उचित समझते हैं।

6 3.2 नैतिक बाधाए-

सतति निरोध के बारे मे यह आम धारणा है कि यह कृत्य अनैतिक है। नैतिकता सदाचार एव शील सबधी मनुष्य की आस्थाए प्रत्येक युग मे परिवर्तित तथा विकसित होती गयी हैं, मनुष्य के नैतिक सिद्धान्त इस बात पर निर्भर करते हैं कि इनसे समाज का हित होता है या नहीं मनुष्य की आवश्यकताए बदल गयी हैं। परिणामत हमारे नैतिक मूल्यो मे भी परिवर्तन हुआ है। भारत मे सतीप्रथा, बहुपत्नी प्रथा, तत्कालीन समाज में उचित लगती थी लेकिन आज वे हेय समझी जाती है। भले ही सतति निरोध को आज कुछ व्यक्ति अनैतिक कहे, किन्तु यह निर्विवाद है कि यह प्रक्रिया सामाजिक दृष्टि से उपयोगी है, इसलिए आज नही तो कल लोग इसे नैतिक कहेंगे।

6 3 3 सामाजिक बाधाएं-

कतिपय आलोचको द्वारा यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि परिवार कल्याण द्वारा समाज मे यौन–दुराचार फैलेगा। परिणाम स्वरुप हमारा सामाजिक सगठन छिन्न-भिन्न होने लगेगा, चूकि सतति-निरोध द्वारा नये बच्चे के आगमन का भय नही रहेगा। इसलिए युवक- युवतियो मे चारित्रिक दुराचार बढेगा। वस्तुत भारतीय समाज मे यह भावना भी लुप्त हो रही है कि परिवार मे अधिक लोगो के रहने से परिवार अधिक शक्तिशाली होता है। पुरातन समाज मे सुधार एव कल्याण परिवार के कर्तव्य थे, पर अब वे राष्ट्र के कर्तव्य बन गये है। जो आगे चलकर परिवार कल्याण कार्यक्रम मे साधक होगा। इसलिए यह बात निश्चित सत्य है कि आधुनिक समाज प्राचीन रूढियो को परिवर्तित कर रहा है।

6 3.4 आर्थिक बाधाएं-

समाज वैज्ञानिको द्वारा किये गये अध्ययनो से यह निष्कर्ष निकलता है कि निम्न आय वाले लोगो के अधिक बच्चे होते हैं, अपेक्षाकृत उनके जो उच्च आय वाले होते है। इसलिए परिवार कल्याण के कार्यक्रम निम्न आय वाले लोगो तक पहुचाये जाने चाहिए। फलत जनसख्या वृद्धि राष्ट्र के विकास के अनुकूल होगी।

6 3 5 निम्न साक्षरता-

निम्न साक्षरता विशेषत महिलाओं की निम्न साक्षरता का जनसख्या वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी के लिए हायर सेकेण्डरी तथा इटरमीडियट तक की शिक्षा महिलाओं के लिए अत्यत आवश्यक है, क्योंकि इसी अवस्था के बाद लड़किया प्रजनन के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकती हैं। जो लड़किया पढती हैं उनका विवाह देर से होना स्वाभाविक है। अत साक्षरता हेतु दृढ़ प्रयास करने की आवश्यकता है जिससे परिवार कल्याण कार्यक्रम सकारात्मक सफलता की ओर अग्रसर हो।

देश मे परिवार कल्याण कार्यक्रम में अन्य बाधाए भी हैं जैसे राजनीतिक सीमाए जिनके अन्तर्गत कार्यक्रम चलाया जाता है, दोषपूर्ण कार्यक्रम नीति जिसमे आपरेशन पर अनावश्यक जोर, चिकित्सा कर्मचारियों पर आत्मनिर्भरता आदि। इसके अतिरिक्त प्रचार के साधनों में कमी, गर्भ

निरोधको की अज्ञानता, स्वास्थ्य गिरने की मिथ्या डर आदि। स्त्रियो की साक्षरता बढाने, प्राथमिक स्वास्थ्य तथा लोगो की न्यूनतम आवश्यकताओं की व्यवस्था जैसे चुने हुए कार्यक्रम राजनीतिक प्रतिबद्धता के साथ चलाये जाये। साथ ही ऐसी स्त्रियो के लिए मातृ-शिशु स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रम सेवाओं पर ध्यान दिया जाये। जन्म आधारित परिवार कल्याण कार्यक्रम का जन्मदर पर अधिक कारगर असर पड़ने की सभावना है।

6.4 प्रथम पंचवर्षीय योजना एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम-

परिवार कल्याण कार्यक्रम की सिफारिश करते हुए प्रथम योजना मे कहा गया कि- उत्पादकता की दर उस सीमा तक कम करने से ही जनसख्या पर नियत्रण किया जा सकता है जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं के अनुसार जनसख्या को एक स्तर तक रखने के लिए आवश्यक है, जब बड़े पैमाने पर जनता परिवार सीमित रखने की आवश्यकताओं को समझे तभी यह कार्य हो सकता है। परिवार कल्याण की आवश्यकता का मुख्य कारण परिवार के स्वास्थ्य और कल्याण का ही विचार है। माता को स्वस्थ रखने तथा बच्चो को उचित पालन पोषण के लिए परिवार सीमित रखना अथवा बच्चो के जन्म के बीच काफी अतर रहना आवश्यक तथा वाछनीय है। इसलिए इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु सम्पन्न किये जाने वाले कार्य जनस्वास्थ्य कार्यक्रम का ही अग होना चाहिए।

उक्तनीति के अनुसार प्रथम पचवर्षीय योजना काल मे ही एक विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया गया था। योजना आयोग के अनुसार परिवार-कल्याण के क्षेत्र मे सफलता दो बातो पर निर्भर करती है, प्रथम परिवार कल्याण के प्रति जनता मे सहानुभूति उत्पन्न करना और द्वितीय इस सबध मे उन्हे उचित परामर्श और साधन प्रदान करना, जो सर्वग्राह्य, मितव्ययी, कुशल और लाभदायक हो। प्रथम योजनाकाल मे केन्द्रीय सरकार ने परिवार कल्याण के लिए 65 लाख रुपये व्यय करने का आयोजन किया था किन्तु वास्तविक व्यय केवल 18 5 लाख रुपये ही हुए। यह धनराशि जनसख्या की विशालता एव विकट समस्या की दृटि से अत्यत कम थी। इस योजना में निम्न बातो पर विशेष महत्व दिया गया-

(1) देश मे तीव्र जनवृद्धि के वैज्ञानिक कारणो को पता किया जाय।

(2) उन विधियों की खोज की जाय जिनके माध्यम से भारतीय जनता में परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रति जागरुकता पैदा की जाये।

(3) प्रजनन सबधी तथ्यों को ज्ञात कर उसके नियमन के कारगर उपायो का पता लगाना।

(4) शिक्षा के प्रचार द्वारा जनता मे परिवार कल्याण कार्यक्रम और उसकी आवश्यकता की अनुभूति को जाग्रत करना।

(5) स्वास्थ्य सेवाओं को परिवार कल्याण कार्यक्रम का अग बनाकर, परिवार कल्याण परामर्श केन्द्रो की सुविधा से जनता को परिवार कल्याण की सलाह दी जाये विशेषत ऐसी माताओं को जिनका स्वास्थ्य खराब है या अधिक सतानोत्पत्ति के कारण जो अधिक सन्तानोत्पत्ति के लिए उपयुक्त नही है।

(6) देश के विभिन्न भागो व समुदायो की सामाजिक सास्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक स्थिति का पता कर तद्नुरुप परिवार कल्याण की विधि अपनाने का सुझाव देना। साथ ही पुनरूत्पादन के सबध मे उनकी मनोवृत्ति क्या है इसका अध्ययन किया जाये।

इस प्रकार प्रथम पचवर्षीय योजना परिवार कल्याण कार्यक्रम की प्रारम्भिक तैयारी तथा जानकारी की अवधि रही। कुल मिलाकर 1956 तक 147 परिवार कल्याण क्लिनिक खोले गये। 126 नगरीय क्षेत्रो मे तथा 21 ग्रामीण क्षेत्रो मे खोले गये।

6.5 द्वितीय पंचवर्षीय योजना एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम-

द्वितीय पचवर्षीय योजना मे योजना आयोग ने जनसख्या नियन्त्रण को राष्ट्रीय कल्याण तथा राष्ट्रीय नियोजन की दृष्टि से आवश्यक समझा। योजना आयोग के अनुसार- 'राष्ट्रीय कल्याण एव राष्ट्रीय नियोजन के लिए भारत वर्ष की जनसख्या के आकार एव गुण दोनों का नियन्त्रण महत्वपूर्ण स्थान रखता है। परिवार कल्याण कार्यक्रम मे निम्न तथ्यो पर विशेष ध्यान दिया गया-

(1) परिवार कल्याण के सबध मे जनता को शिक्षित करना।

(2) परिवार कल्याण के सबध में जनता को परामर्श एव सहायता देने वाली सुविधाओं का प्रसार करना।

(3) कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए उचित एव पर्याप्त प्रशिक्षण केन्द्रो की स्थापना करना।

(4) जनसख्या की समस्याओं के सबध मे अनुसधान करना।

(5) जिन सस्थाओं को केन्द्रीय समिति द्वारा अनुदान तथा सहायता दी जाये उनके कार्यों का निरीक्षण किया जाये।

(6) विकास कार्य का प्रतिवेदन एव विवरण तैयार करना।

(7) एक सुसगठित केन्द्रीय सगठन की स्थापना करना।

परिवार कल्याण कार्यक्रम तथा जनसख्या सबधी समस्याओं के अध्ययन के लिए केन्द्रीय सरकार के अधीन एक परिवार नियोजन बोर्ड की स्थापना की गयी। यह बोर्ड कर्मचारियो के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण केन्द्रो की स्थापना भी करता है। द्वितीय योजना के अन्त मे परिवार कल्याण क्लिनिक की सख्या शहरी क्षेत्रो मे 827 तथा ग्रामीण क्षेत्रो मे 1379 हो गयी। अन्य परिवार कल्याण सेवाए 300 शहरी तथा 1886 ग्रामीण चिकित्सा तथा स्वास्थ्य केन्द्रो मे उपलब्ध कराई गयी। दिल्ली, कोलकाता, मुबई और त्रिवेन्द्रम मे जनसख्या अनुसधान केन्द्र स्थापित किये गये। दूसरी योजना के अत तक लगभग एक लाख बन्ध्याकरण करा लिया गया। इस योजना काल मे परिवार कल्याण कार्यक्रमो पर 5 करोड़ रुपये व्यय किये गये।

6.6 तृतीय पंचवर्षीय योजना एव परिवार कल्याण कार्यक्रम-

भारत मे परिवार कल्याण कार्यक्रम का सर्वाधिक प्रसार वस्तुत 1961 के बाद आरम्भ हुआ। 1961 की जनगणना के परिणामो ने सरकार तथा विचारशील व्यक्तियो को इस दिशा मे कार्य करने के लिए विवश कर दिया। इसके पूर्व की दो योजानाओं मे इस कार्यक्रम की विशेष प्रगति नही हुई। साथ ही विभिन्न समुदायो की विशेष प्रगति नही हुई। साथ ही विभिन्न समुदायो मे परिवार कल्याण के प्रति विशेष अभिरुचि भी नही थी और अनेक समुदायो के नेता राजनैतिक आधार पर कार्यक्रम का विरोध करते थे। जनसख्या वृद्धि दर को देखते हुए योजना आयोग ने परिवार कल्याण को राष्ट्रीय विकास कार्यक्रम का अभिन्न अग स्वीकार किया। परिवार कल्याण के लिए 27 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया तथा परिवार कल्याण को एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम का रूप दिया गया। योजना की कार्यनीति मे निम्न बातो का समावेश किया गया-

(1) शिक्षा के प्रसार द्वारा परिवार कल्याण कार्यक्रम के लिए अनुकूल सामाजिक वातावरण को तैयार करना।

(2) जनसख्या की सेवाओं के साथ-साथ परिवार कल्याण की सुविधाओं को सुलभ करना तथा कार्यक्रमो को क्रियान्वित करना।

(3) गर्भ नियन्त्रण की सामग्रियों का वितरण करना तथा जनसमुदाय को उपयोग -विधि समझाना।

(4) मेडिकल कालेजो तथा शिक्षण सस्थानो मे परिवार कल्याण की सुविधाए प्रदान करना।

(5) परिवार कल्याण कार्यक्रम के लिए स्थानीय नेताओं तथा अन्य सेवा सस्थाओं के सहयोग को प्राप्त करना।

(6) परिवार कल्याण सबधी आवश्यक सामग्री के उत्पादन मे वृद्धि करना।

(7) स्त्री शिक्षा का प्रसार करना तथा विलम्ब से विवाह को प्रोत्साहन देना।

तीसरी योजना मे अनुसधान का पहले से अधिक विस्तृत कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। अन्य पहलुओं सहित निम्न क्षेत्रो मे अनुसधान पर बल दिया गया-

(i) मानव उत्पत्ति सबधी अध्ययन तथा सन्तानोत्पत्ति के प्राकृतिक नियमो का अध्ययन।

(ii) अधिक कारगर एव उपयोग योग्य गर्भ निरोधक उपकरणो का विकास।

(iii) खाने योग्य उपयोगी गर्भ निरोधको का विकास तथा बन्ध्याकरण के बाद स्त्री-पुरुष के स्वास्थ्य की जाच तथा बाद मे पडने वाले प्रभाव का अध्ययन।

तृतीय योजना की उपलब्धि- तृतीय योजना मे परिवार कल्याण कार्यक्रम के विभिन्न कार्यक्रम विविध उपकरण तथा नवीन भाव जागरण के कारण 5 8 लाख लोगो ने परिवार कल्याण कार्यक्रम हेतु नसबदी करायी। परिवार कल्याण कार्यक्रम हेतु 27 करोड़ रुपये मे से 25 करोड़ रुपया विविध परिवार कल्याण कार्यक्रमो पर खर्च किया गया तथा 5075 परिवार नियोजन केन्द्रो की स्थापना की गयी तृतीय योजना की समाप्ति तक लगभग 15 लाख लोगो ने नसबदी करायी तथा 8 लाख स्त्रियो ने लूप लगवाये तथा 6 लाख लोगो ने अन्य परम्परागत विधिया यथा कण्डोम आदि का प्रयोग किया।

6 7 एक वर्षीय योजनाओं में परिवार कल्याण कार्यक्रम-

तृतीय पचवर्षीय योजना के बाद तथा चतुर्थ पचवर्षीय योजना के पूर्व 1966-1969 तक के लिए तीन एक वर्षीय योजनाए सचालित की गयी ताकि तृतीय योजना के अपूर्ण लक्ष्यो को पूरा किया जा सके। परिवार कल्याण कार्यक्रम को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए परिवार कल्याण कार्यक्रम मे और अधिक सक्रियता लाते हुए महत्वपूर्ण परिवर्तन किये गये। यथा–स्वास्थ्य मत्रालय को 'स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मत्रालय' मे परिवर्तित कर दिया गया। अब परिवार कल्याण विभाग को एक पृथक सचिव की देख रेख में रखा गया। केन्द्रीय व राज्य स्तर पर अनेक परिवार

कल्याण परिषदे स्थापित की गयी। इस अवधि मे कुल परिव्यय 8293 लाख रुपये था, लेकिन 7046 40 लाख रुपये व्यय किये गये। 1342 60 लाख रुपये 1966-67 मे, 2652 30 लाख रुपये 1967-68 मे तथा 3051 50 लाख रुपये 1968-69 मे व्यय किये गये। एक वर्षीय योजनाओं की महत्वपूर्ण उपलब्धिया निम्नवत थी-

(1) जहा स्वतत्र कल्याण केन्द्र नही थे, वही अस्पतालो, ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्रो तथा जच्चा-बच्चा घरो आदि मे व्यापक पैमाने पर इनकी शाखाए, परिवार कल्याण व जन्म नियन्त्रण सबधी उपचार, स्वास्थ्य सेवाए एव उपचार के लिए खोले गये।

(2) इस समय तक देश मे 10 जनसख्या अनुसधान केन्द्र तथा 14 परिवार कल्याण सचार केन्द्र तथा अनुसधान केन्द्र कार्यरत थे।

(3) लूप और बन्ध्याकरण की शल्य क्रिया की नि शुल्क सुविधाओं के साथ मजदूरी हानि, यात्रा व्यय तथा आर्थिक प्रोत्साहन दिया गया।

(4) बन्ध्याकरण आपरेशन जैसे स्थाई नियत्रण पर व्यापक पैमाने पर ध्यान दिया गया।

(5) लूप लगाने का व्यापक कार्यक्रम जो 1965 से ही आरम्भ था, उसमे तेजी लाई गयी। 1970 तक 31 लाख स्त्रियो को लूप लगाये गये।

(6) व्यापक प्रचार एव प्रदर्शनी का कार्य आरम्भ किया गया, 'हम दो हमारे दो', 'छोटा परिवार सुख का आधार', अगला बच्चा अभी नही , दो के बाद कभी नही, इत्यादि नारे सार्वजनिक स्थानो, रेलवे स्टेशनो, बस स्टैण्डो, चिकित्सालयो, वाहनो मे लगाये गये।

(7) कण्डोम व्यापारिक वितरण योजना को सपूर्ण देश मे तीन प्रमुख योजनाओं के द्वारा लागू किया गया-

A **व्यापारिक वितरण योजना-** सितम्बर 1968 से प्रारम्भ की गयी इस स्कीम के तहत व्यापारिक कपनियो के द्वारा उनके सेल्समैन, थोक विक्रेता आदि के द्वारा व्यापक पैमाने पर वितरण किये गये।

B **नि शुल्क पूर्ति योजना-** इसके द्वारा कण्डोम के साथ अन्य गर्भ निरोधक साधनों को, दम्पत्तियो को नि शुल्क वितरित किया गया। जेली क्रीम, ट्यूब, फोम टेबलेट डायाक्रम, गर्भाशय की टोपी आदि का नि शुल्क वितरण किया गया।

C **हिपो सोल्डर्स योजना-** 1969 से प्रारम्भ की गयी इस योजना द्वारा

3300 चयनित डाकघरो द्वारा नि शुल्क तथा 5 पैसे प्रति कण्डोम वितरित किये गये।

6 8 चतुर्थ पंचवर्षीय योजना एव परिवार कल्याण कार्यक्रम-

चतुर्थ योजना मे परिवार कल्याण कार्यक्रम अधिक सकारात्मक हुआ एव मुख्य लक्षण जन्मदर को 1978-79 तक 39 प्रति हजार से 23 प्रति हजार लाने का समयबद्ध लक्ष्य रखा गया। परिवार कल्याण कार्यक्रमो को अधिक महत्वपूर्ण बनाने के लिए इसके साथ मातृत्व व बाल स्वास्थ्य कार्यक्रमो को भी सम्मिलित किया गया। परिवार कल्याण कार्यक्रमो को तेजी से लागू करने के लिए कुछ सगठनात्मक परिवर्तन भी किये गये। स्वास्थ्य मत्रालय को स्वास्थ्य परिवार कल्याण मत्रालय का नाम दिया गया। चौथी योजना मे परिवार कल्याण कार्यक्रम पर लगभग 284 4 करोड रुपये व्यय किये गये। पूर्ण समग्रीकृत परिवार नियोजन व मातृत्व व शिशु स्वास्थ्य सेवाए उपलब्ध कराने के लिए सरकार आधारभूत ढाचा तैयार करने मे प्रयत्नशील हो गयी। राज्य सरकारो द्वारा परिवार कल्याण के राज्य सगठनो से उचित सपर्क स्थापित करने के लिए प्रादेशिक निदेशको सहित परिवार कल्याण कमिश्नरो की नियुक्ति की गयी। प्राविधिक सहायता के लिए केन्द्रीय परिवार कल्याण सस्थान स्थापित किया गया। 1971 मे एर्नाकुलम के वृहद कैम्प मे 31 दिनो मे 62 हजार बन्ध्याकरण के आपरेशन हुए।

इस योजना मे परिवार कल्याण पर परिव्यय की धनराशि 286 करोड की गयी। योजना के अत तक 87 लाख दम्पत्तियो की नसबदी की गयी तथा 60 लाख दम्पत्तियो को परिवार कल्याण के अन्य उपकरण उपलब्ध कराये गये। चतुर्थ योजना के अत तक 22826 ग्रामीण तथा 4326 शहरी परिवार कल्याण प्रशिक्षण केन्द्र कार्यरत थे।

6 9 पांचवी पंचवर्षीय योजना एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम-

इस योजना अवधि मे परिवार कल्याण कार्यक्रम पर 500 करोड़ रुपये व्यय किये गये। परिवार कल्याण कार्यक्रम मे आधारभूत परिवर्तन किये गये- न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम के अन्तर्गत 'परिवार कल्याण' तथा 'जनकल्याण सेवा' को समन्वित किया गया। इस योजना में शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा, बाल-आहार एव मातृत्व पोषण को परिवार कल्याण से सम्बद्ध किया गया। इस योजना के नवीन आयामो मे - आवश्यक परिवार, आर्थिक प्रलोभन, दण्ड प्रावधान एव गर्भपात बैधता थे।

6 10 आपाताकाल एव परिवार कल्याण कार्यक्रम (1976)-

1976 मे काग्रेस सरकार ने अनिवार्य बन्ध्याकरण विधान बनाने का निर्णय किया। 16 अप्रैल 1976 को भारत के ससद मे स्वास्थ्य परिवार नियोजन मत्रालय की अनुशसा पर राष्ट्रीय जनसख्या नीति घोषित की गयी। इसका मुख्य उद्देश्य जनसख्या वृद्धि दर को प्रभावकारी ढग से कम करना था जिसे छठी योजना के अन्त तक 25 प्रति हजार करना था किन्तु इस अनिवार्य बन्ध्याकरण का प्रभाव उत्तर भारत के हिन्दी भाषी राज्यो पर ही पडा दक्षिण भारत एव मध्य भारत पर इसका न्यूनतम प्रभाव द्रष्टव्य हुआ।

6 11 जनता सरकार एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम-

1977 के चुनाव मे परिवार कल्याण कार्यक्रम महत्वपूर्ण मुद्दा था जिसमे काग्रेस पार्टी की शर्मनाक पराजय हुई। इसने उत्तर भारत के बड़े प्रातो मे अपनी सरकारे खो दी जहा परिवार कल्याण कार्यक्रम तेजी से कार्यान्वित किये गये थे। 1977 मे केन्द्र मे जनता सरकार बनने के बाद परिवर्तित जनसख्या नीति लागू की गयी। 28 मार्च 1977 को ससद के सयुक्त अधिवेशन को सबोधित करते हुए तत्कालीन राष्ट्रपति डा नीलम सजीव रेड्डी ने कहा- 'परिवार कल्याण कार्यक्रम सम्पूर्णत स्वैच्छिक कार्यक्रम है, यह विस्तृत रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य, शिशु सुरक्षा, महिला कल्याण एव अधिकार का एक महत्वपूर्ण अग है। इसी वर्ष इसका नाम 'परिवार नियोजन' से परिवर्तित कर 'परिवार कल्याण कार्यक्रम' किया गया। 'परिवार कल्याण कार्यक्रम, नामकरण परिवार के समग्र विकास का अर्थावबोध कराता है।

6.12 छठी पंचवर्षीय योजना एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम-

जनवरी 1980 मे श्रीमती गाधी की सत्ता मे वापसी हुई, 20 सूत्रीय कार्यक्रम मे परिवार कल्याण कार्यक्रम को सम्मिलित नहीं किया गया लेकिन जनवरी 1982 मे घोषित 'नये बीस सूत्रीय कार्यक्रम' में इसे विशेष प्रावधानो के साथ सम्मिलित किया गया जिसमे इसे स्वैच्छिक आधार पर लागू किया जाना था। मार्च 1982 में 'जनसंख्या सलाहकार समिति' का गठन किया गया। इस योजना में कुल परिव्यय 1010 करोड़ था लेकिन वास्तविक व्यय 1,42,573 करोड़ रुपये हुआ। कार्यक्रम की सफलता के लिए सरकार ने परिवार कल्याण केन्द्रों पर अधिकाधिक स्त्री

कर्मचारियो की नियुक्तिया करने, ग्रामीण क्षेत्रो मे परिवार कल्यण सुविधाओं का विस्तार करने तथा बन्ध्याकरण कराने वालो की प्रोत्साहन राशि मे वृद्धि करने का निश्चय किया तथा सामान्य जनता यह अनुभव करने लगे कि परिवार कल्याण मे उसकी भलाई है।

6 13 सातवी पंचवर्षीय योजना एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम-

सातवी पचवर्षीय योजना मे परिवार कल्याण कार्यक्रम मे नीतिगत परिवर्तन हुआ, जनसख्या के विभिन्न क्षेत्रो मे लक्ष्य स्थापित करने का विस्तार हुआ। इस योजना मे निम्न विशिष्ट उद्देश्यो को पूरा करने का लक्ष्य रखा गया- (1) स्त्रियो की विवाह आयु सीमा 20 वर्ष करना।

(2) 42 प्रतिशत लक्षित दम्पत्तियो को परिवार नियोजन के अन्तर्गत लेआना तथा 'हम दो हमारे दो' नामक परिवार को प्रोत्साहन देना।

(3) गर्भवती महिलाओं तथा शिशुओं को टीकाकरण मे समाहित कर शिशु मृत्युदर को 90 प्रति हजार ले आना।

(4) अपरिष्कृत जन्म दर तथा मृत्युदर मे कमी करना, जिससे वे क्रमश 29 1 तथा 10 4 प्रतिहजार तक सीमित रहे।

(5) विभिन्न प्रकार के सामाजिक–आर्थिक कार्यक्रमो की सहायता से ऐसा वातावरण विकसित करना, जिससे उत्पादकता पर नियन्त्रण पाया जा सके।

(6) स्त्रियो की साक्षरता तथा उनके कार्य अवसरो मे सुधार करना।

(7) 11-15 वर्ष के सभी बच्चो को जनसख्या शिक्षा प्रदान करना, प्रौढ शिक्षा एव अन्य माध्यमो से शिक्षा देना।

उपरोक्त सभी उद्देश्यो की प्राप्ति जनता के सहयोग से प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया। सातवी पचवर्षीय योजना मे शोध का मुख्य विषय परिवार नियोजन की उस तकनीकी को रखा गया, जिसे लोग स्वीकार कर सके। सातवी योजना मे 1357 करोड़ रुपये सेवाओं एव आपूर्ति के लिए तथा 888 करोड़ रुपये मातृत्व एव शिशु कल्याण के लिए व्यय किया गया (भारत सरकार 1985)

6 14 आठवी पंचवर्षीय योजना एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम-

आठवी योजना मे परिवार कल्याण कार्यक्रम दृढ आधार पर कार्यान्वित किया गया। इसके लिए 3700 करोड़ रुपये के परिव्यय का लक्ष्य था लेकिन वास्तविक व्यय 2385 21 करोड़

रुपये रहा (भारत सरकार 1992-97) मानव विकास, स्वास्थ्य एव जनसख्या नियत्रण मुख्य प्राथमिक लक्ष्य निर्धारित किये गये।

इस योजना मे स्वास्थ्य एव मातृ-शिशु स्वास्थ्य विशेषाधिकार के परिप्रेक्ष्य मे लागू करने का लक्ष्य रखा गया। 'हेल्थ फार अण्डर प्रिविलेज्ड' फलक को सगत चेतना के साथ विकसित किया गया। यह तभी सभव है जब जनसमुदाय सकारात्मक प्रयास करे।

6.15 न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम (एम एन पी)-

6.15.1 ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यक्रम-

सातवी पचवर्षीय योजना मे ग्रामीण विकास को द्रुत करने एव ग्रामीण स्वास्थ्य मे आधार भूत विकास के लिए स्वास्थ्य उपकेन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, तीन स्तरीय स्वास्थ्य, कार्यक्रम कार्यान्वित किया गया। इस योजना के कार्यान्वयन मे भवनो, दवाओं की आपूर्ति, तथा अन्य साज–सामानो का अभाव प्रमुख समस्याए थी, जिन्हे आठवी योजना मे दूर कर ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यक्रम को गति प्रदान की गयी।

(1) स्वास्थ्य उपकेन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र का सगठन एव कार्यान्वयन किया गया।

(2) भौतिक सुविधाए यथा भवन निर्माण, कर्मचारी आवास आदि निर्मित किये।

(3) कर्मचारियो के रिक्त पदो को निश्चित समयावधि मे पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया तथा उनके प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था की गयी।

(4) आवश्यक दवाओं की आपूर्ति सुनिश्चित की गयी।

(5) न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम के जिला, राज्य एव राष्ट्रीय स्तर पर अनुश्रवण की व्यवस्था की गयी तथा स्वास्थ्य प्रबधन तत्र विकसित किया गया।

6.16 राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 1977-

28 अप्रैल 1977 को चुनाव के बाद जनता सरकार ने यह घोषणा कर दी कि परिवार कल्याण कार्यक्रम जोर जबरदस्ती समाप्त की जाये तथा दम्पत्ति को स्वैच्छिक चुनाव का अवसर दिया जाये। इस तथ्य को ध्यातव्य करते हुए 'परिवार नियोजन' का नाम 'परिवार कल्याण कार्यक्रम' किया गया। तत्कालीन प्रधानमत्री श्री मोरारजी देसाई के अनुसार 'जन्म नियन्त्रण

कार्यक्रम के अभाव मे विकास की सभी योजनाए बेकार हो जायेगी।' स्वास्थ्य मत्री ने वक्तव्य दिया कि परिवार कल्याण के लिए आवश्यक है कि जनता कार्यक्रम को समझे, अपने आप आकर्षित हो तथा अपने इच्छानुसार परिवार सीमित करने के उपाय अपनाये। राष्ट्रीय जनसख्या नीति की प्रमुख विशेषताए निम्न थी-

6 16 1 पूर्णत स्वैच्छिक नीति-

इस नीति मे यह व्यवस्था दी गयी कि कोई भी दम्पत्ति अपनी इच्छा एव आवश्यकतानुसार किसी विधि को अपना कर परिवार को सीमित रख सकता है। नसबदी कराने वाले दम्पत्तियो को उत्तम सेवा सुविधा उपलब्ध कराई गयी। परिवार कल्याण कार्यक्रम के अन्तर्गत लूप एव अन्य परिवार नियोजन के तरीको का लक्ष्य सरकार की ओर से अभि निर्धारित किया गया जबकि नसबदी का कोई लक्ष्य नही रखा गया।

6.16 2 प्रोत्साहन धन का प्रावधान-

नसबदी कराने वाले दम्पत्तियो को 70 रुपये प्रोत्साहन राशि सस्तुत की गयी। यह धनराशि नसबदी कराने वाले दम्पत्तियो पर होने वाले चिकित्सा व्यय के अतिरिक्त होगी।

6.16.3 बालिकाओं की शिक्षा एव जनसंख्या शिक्षा का प्रबंध-

विभिन्न शोध इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि लड़कियो की शिक्षा के साथ परिवार मे बच्चो की सख्या कम हो जाती है। इसका कारण स्त्री शिक्षा से बालिकाओं का विवाह देर से होना बताया जाता है। साथ ही बच्चो के जन्म तथा भरण-पोषण की जानकारी शिक्षित दम्पत्तियो को रहती है। इसे ध्यातव्य करते हुए प्रौढ शिक्षा एव स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया गया।

स्कूलो, कालेजो, विश्वविद्यालय में जनसख्या शिक्षा का प्रबध स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रम में सलग्न कर्मचारियों द्वारा किया गया। कर्मचारी जनसख्या वृद्धि द्वारा सामाजिक आर्थिक विकास पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों, जनसख्या नियन्त्रण के साधनों मातृ शिशु स्वास्थ्य इत्यादि की जानकारी जनता को देते हैं।

6 16 4 स्वैच्छिक संगठनों का सहयोग-

परिवार कल्याण कार्यक्रम को लोकप्रिय बनाने के लिए स्वैच्छिक सगठनो से सहयोग की अपील की गयी। जो सस्थाए इसमे धन दान के रूप मे देती थी उन्हे आयकर से मुक्त रखने का प्रावधान किया गया। सरकारी एव गैर सरकारी सस्थाओं से सहयोग मिल सके, इसके लिए इसे अन्तर्विभागीय कार्यक्रम बनाने पर जोर दिया गया।

6 16.5 केन्द्रीय सहायता एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम की उपलब्धि-

राज्य सरकारो की रुचि परिवार कल्याण कार्यक्रम की ओर बढाने के लिए केन्द्रीय सरकार से प्राप्त होने वाली वित्तीय सहायता का 8 प्रतिशत परिवार कल्याण कार्यक्रमो की उपलब्धियो से जोड़ दिया गया है। अर्थात् यह 8 प्रतिशत धनराशि राज्य सरकारो को तभी देय होगी जब परिवार कल्याण कार्यक्रम की उपलब्धि सतोष प्रद होगी।

6 16 6 विवाह की आयु में वृद्धि-

शारदा एक्ट के अनुसार लड़के एव लड़कियो के विवाह की आयु क्रमश 16 एव 15 वर्ष थी। 1977 की जनसख्या नीति मे भावी पीढियो को जनसख्या शिक्षा देने तथा दम्पत्ति के जीवन काल मे प्रजनन की अवधि मे कमी लाने के विचार से यह निर्णय लिया गया कि लड़के एव लडकियो के विवाह की आयु बढाकर क्रमश 21 एव 18 की जाय। इसके लिए एक अधिनियम बनाया गया तथा विवाह का पजीकरण अनिवार्य कर दिया गया। इस आयुवृद्धि से जन्मदर मे 8 से 12 प्रतिशत कमी का अनुमान लगाया गया।

6 16.7 अनुसंधान कार्य मे तेजी-

परिवार कल्याण कार्यक्रमों की विधियाँ अपनाने से दम्पत्ति की सतुष्टि हो सके, उसे किसी प्रकार का कष्ट न हो तथा अपनाने में कम से कम खर्च हो, इन सभी तथ्यों पर कार्यक्रम की सफलता निर्भर करती है। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर अनुसधान कार्य में तेजी लाने पर बल दिया गया। शोध सस्थाओं को वित्तीय सहायता देने का प्रावधान किया गया ताकि अधिक से अधिक शोध उपरोक्त तथ्यों से सन्दर्भित हों। दूसरी ओर यह भी अनुभव किया गया कि इन शोधों से 'कैफेटेरिया उपागम' को बल मिलेगा।

6 16 8 जनस्वास्थ्य रक्षक एवं दाई प्रशिक्षण योजना-

परिवार कल्याण कार्यक्रम के सुचारू कार्यान्वयन के लिए जनस्वास्थ्य रक्षक योजनान्तर्गत उन व्यक्तियो को चुना गया जिन्हे कार्यक्रम मे रुचि थी, जो जनता मे मान्य थे, गाँव के रहने वाले थे तथा निकट भविष्य मे तीन साल तक गाँव मे रहने वाले हो। इस योजना मे 5 लाख जन स्वास्थ्य रक्षको को नियुक्ति की गयी। ऐसे व्यक्तियो को तीन महीने का प्रशिक्षण दिया गया। तथा साधारण बीमारियो के इलाज के लिए दवाइयाँ दी गयी। जनस्वास्थ्य रक्षको को 50 रुपये प्रतिमाह वेतन दिया जाता है, वस्तुत वर्तमान समय मे यह धनराशि इतनी कम है कि परिवार कल्याण मे इनकी रुचि कम होती जा रही है आवश्यकता इस बात की है इनके पारिश्रमिक मे वृद्धि की जाय एव ग्रामीण स्वास्थ्य मे इनके योगदान को सुनिश्चित किया जाए।

दाई प्रशिक्षण योजना मे 5 लाख दाइयो को सफाई एव सुविधापूर्ण ढग से प्रसव की, प्रसव के बाद माँ-शिशु के देखरेख करने का प्रशिक्षण दिया गया। शिशुओं को रोग प्रतिरोधक टीके कब और कहाँ लगाये जायँ इसकी जानकारी भी दी गयी।

6.17 1981 में जनसंख्या नीति में किये गये कतिपय संशोधन एवं विशेष लक्ष्य-

केन्द्रीय स्वास्थ्य परिषद तथा केन्द्रीय परिवार कल्याण परिषद जून 1981 मे सम्पन्न अधिवेशन मे जनसख्या नीति के कार्यान्वयन के लिए कुछ विशेष लक्ष्य रखे गये जो निम्न है (मिथिलेश साहनी एन 1985)

(1) सन् 2000 तक जन्मदर एव मृत्युदर क्रमश 2 1 एव 9 प्रति हजार लाना।

(2) शिशु मृत्यु दर को 125 प्रति हजार से 2000 तक 60 प्रति हजार तक लाना।

(3) लोगों को छोटे परिवार के लाभ समझाना, तथा परिवार कल्याण साधनो की सुगम पहुँच सुनिश्चित करना।

(4) महिलाओं के शिक्षा, रोजगार पर विशेष ध्यान देकर उन्हे आत्मनिर्भर बनाना।

(5) परिवार कल्याण सलाहकार बोर्ड के गठन का सुझाव दिया गया, तथा चिकित्सकीय गर्भ समापन की सुविधाओं के विस्तार पर बल दिया गया।

(6) माताओं तथा शिशुओं को रोग प्रतिरोधक टीको की सुविधाए प्रदान करने की व्यवस्था की गयी।

(7) प्रत्येक राज्य द्वारा जन्मदर एव मृत्युदर के आँकडे पर यदि आवश्यक हो तो जिला स्तर पर सावधानी पूर्वक विचार किया जाए तथा आवश्यकतानुसार विशेष ध्यान दिये जाएँ।

(8) परिवार कल्याण कार्यक्रम अन्य सामाजिक कार्यक्रमो से पृथक नही है, इसे सभी पात्र दम्पत्तियो तक पहुँचाने के लिए दूसरे विकासात्मक उपायो के साथ सम्मिलित किया जाए। प्रशासन एव सचालन के सभी स्तरो पर परिवार नियोजन तथा मातृ एव शिशु स्वास्थ्य को प्राथमिक स्वास्थ्य परिचर्चा, साक्षरता स्थिति, युवाओं के कार्यकलापो एव अन्य दूसरे कार्यों के साथ जोड़ा जाए।

(9) पुरुषो के नशबन्दी आपरेशन के बारे मे फैली भ्रान्तियो एव गलत फहमियो को दूर करने तथा इसे लोकप्रिय बनाने के लिए प्रयास किये जाएँ।

(10) प्रत्येक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मे परिवार के साधनो का आवश्यकतानुरूप मूल्याकन किया जाए, तथा पहाडी एव रेगिस्तानी क्षेत्रो मे शिविर आवश्यकताओं का विशेष ध्यान रखा जाए।

6.18 1994 का काहिरा सम्मेलन एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम में आधारिक परिवर्तन

5 सितम्बर 1994 के अन्तर्राष्ट्रीय जनसख्या एव विकास सम्मेलन के बाद भारत सरकार ने परिवार कल्याण कार्यक्रम मे कतिपय आधारिक परिवर्तन किये -

(1) अलग-अलग गर्भ निरोधको के लक्ष्य निर्धारण को 1996 से समाप्त करने का निर्णय लिया गया।

(2) 15 अक्टूबर 1997 से एक व्यापक प्रजनन एव बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम लागू किया गया।

अलग-अलग गर्भ निरोधको के लक्ष्य निर्धारण को समाप्त करने का निर्णय निम्न कारणो से किया गया - (योजना अप्रैल 2002)

(1) इस लक्ष्य नीति मे उच्च अधिकारी यह निर्णय लेते थे कि किस प्रकार के गर्भ निरोधकों का प्रचार किया जाए, जिसमें प्रयोगकर्ता की अभिरुचि का ध्यान नहीं रखा जाता था।

(ii) लक्ष्य निर्धारित हो जाने पर स्वास्थ्य कर्मियो का उद्देश्य साख्यिकीय आकड़ो को प्राप्त करना होता है अनेक स्वास्थ्य कर्मी आकडो को बढा चढाकर बताये थे।

उपरोक्त कर्मियो को ध्यातव्य करते हुए राज्य सरकारो तथा विशेषज्ञो से गहन विचार विमर्श के बाद भारत सरकार ने अलग-अलग गर्भ निरोधको के लक्ष्य को समाप्त करने का निर्णय लिया गया तथा सम्पूर्ण देश मे लक्ष्यमुक्त नीति लागू की गयी। इस नीति की मुख्य विशेषताए एव उद्देश्य निम्नवत है -

(i) लक्ष्य मुक्त नीति का वास्तविक उद्देश्य जनसख्या को स्थिर करने मे पहले से अधिक प्रगति करने का है इसं परिवर्तित नीति को प्रारम्भ मे 'लक्ष्य नीति दृष्टिकोण' कहा गया, 1997 मे इसे 'सामुदायिक आवश्यकताओं पर आधारित दृष्टिकोण' कर दिया गया ताकि यह नीति को अधिक सकारात्मक ढग से परिलक्षित कर सके।

(ii) स्वास्थ कर्मियो मे नई सोच पैदा करने के लिए उन्हे पुन प्रशिक्षित किया गया ताकि उन्हे 'सामुदायिक आवश्यकताओं पर आधारित दृष्टिकोण' (सी एन ए) के अन्तर्गत ठीक से काम करने के लिए प्रेरित किया जा सके।

(iii) सी एन ए के दिशा निर्देश एक मैनुअल के रूप मे तैयार कर स्वास्थ्य कर्मियो को उपलब्ध कराये गये।

(iv) सी एन ए के अन्तर्गत फरवरी मार्च मे ए एन एम द्वारा अपने क्षेत्र के परिवारो, महिला स्वास्थ्य सघो, आगनबाड़ियो और पचायतो से विचार विमर्श कर अगले वर्ष के लिए आवश्यकताए तय की जाती है।

15 अक्टूबर 1997 से एक व्यापक कार्यक्रम 'प्रजनन एव शिशु स्वास्थ्य' (आर सी एच) लागू किया गया। आर सी एच को इस प्रकार परिभाषित किया गया है- "लोगो मे प्रजनन करने तथा अपनी प्रजनन शक्ति नियत्रित करने की शक्ति है। महिलाए गर्भावस्था एव प्रसव सुरक्षित रूप से पार कर सकती है, गर्भावस्था का, सुरक्षित माता एव जीवित शिशु के रूप मे सफल समापन होता है तथा दम्पत्ति गर्भाधान एव ससर्ग-जन्य रोगो के भय के बिना यौन सम्बन्ध रख सकते हैं।" प्रजनन तथा शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएँ निम्नवत है -

(1) पुरुषो तथा महिलाओं दोनो के लिए प्रजनन और मात्र तथा शिशु स्वास्थ्य के सभी कार्यकलापो का एकीकरण, सुरक्षित मातृत्व एव एकीकरण की जानकारी।

(2) जनसख्या स्थिर करने की प्रक्रिया मे लोगो की पसन्द व आवश्यकतानुसार गर्भनिरोधक साधनों को उपलब्ध कराना।

(3) लैगिक पहचान एक्ट 1994 के अनुसार गर्भस्थ शिशु का लिग पता करने पर पूर्णत प्रतिबन्ध की व्यवस्था की गयी।

(4) जमीनी स्तर पर कार्यक्रम को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए पचायती राज व्यवस्था को अधिकतम मदद करने का प्रावधान है ताकि वह योजना तैयार करने उसके कार्यान्वयन तथा उक्त सेवाओं का लाभ उठाने वाले व्यक्तियो की सतुष्टि सुनिश्चित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। नई जनसख्या नीति 2000 मे भी उपरोक्त प्रावधान किये गये है।

6 19 राष्ट्रीय एड्स नियन्त्रण कार्यक्रम-

'एक्वायर्ड इम्यूनो डिफिसिएशी सिंड्रोम' अर्थात् एड्स रोग 'ह्यूमन डिफिसिएशी वायरस' (एच आई वी) नामक विषाणु के कारण होता है। इस रोग का पता सर्वप्रथम अमरीका मे 1981 मे लगा था (भारत 2000)। 1986 मे जैसे ही एड्स के पहले मामले का भारत मे पता चला, एक राष्ट्रीय एड्स समिति का गठन किया गया ताकि देश मे एच आई वी सक्रमण की महामारी की स्थिति का जायजा किया जा सके। 1987 मे 'राष्ट्रीय एड्स नियन्त्रण कार्यक्रम' प्रारम्भ किया गया जिसमे मुख्य रूप से इस असाध्य रोग के बारे मे जागरूकता पैदा करने, रक्त जाच, तथा लोगो की आदतो के बारे मे पता करने पर बल दिया गया। 1992 मे स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मत्रालय के अन्तर्गत 'राष्ट्रीय एड्स नियन्त्रण सगठन' बनाया गया जिससे विश्व बैक से 8 4 करोड़ डालर के ऋण एव डब्ल्यू एच ओ द्वारा 15 करोड़ की तकनीकी सहायता द्वारा कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाया जा सके। चूँकि एच आई वी सक्रमण का मुख्य कारण रतिज रोग है अत इसे एड्स नियन्त्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया जिसमे यौन जन्य रोगो के बारे मे शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुसधान, रोगो के फैलाव और स्वास्थ्य तथा सामूहिक शिक्षा पर बल दिया गया। इस समय देश में मेडिकल कालेजों, जिलाम्युनिसिपल, स्वास्थ्य उपकेन्द्र स्तर पर 504 रतिज रोग क्लिनिक चलाये जा रहे हैं। उपलब्ध आँकड़ो के आधार पर एड्स से सम्बद्ध निम्न तथ्य हैं -

(1) सबसे अधिक सक्रमित लोग क्रमश महाराष्ट्र, तमिलनाडु एव मणिपुर में हैं।

(2) एड्स सक्रमण का प्रमुख कारण एक से अधिक के साथ लैंगिक सम्बन्ध, सक्रमित व्यक्ति का रक्त असक्रमित को चढाया जाना, तथा नशीले दवाओं के इन्जेक्शन लेना।

(3) एड्स से ग्रस्त 15-49 आयु वर्ग वालो मे 78 6 प्रतिशत पुरुष तथा 21 4 प्रतिशत महिलाए है।

राष्ट्रीय एड्स नियन्त्रण कार्यक्रम का दूसरा चरण 1999 मे पाँच वर्षों के लिए शुरू किया गया इसके दो मूल उद्देश्य है - भारत मे एच आई वी सक्रमण की विकास दर मे कटौती तथा भारत की एच आई वी से जूझने की क्षमता मजबूत करना। इस कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य निम्न है - (भारत 2002)

(i) सर्वाधिक जोखिम वाले समूहो को लक्ष्य करने मे प्राथमिकता (ii) आम जन समुदाय को बचाव की सावधानियाँ समझाना-यथा डिस्पिजिबल सिरिज युक्त इन्जेक्शन लेना, केवल अपने जीवन साथी के साथ ही लैंगिक सम्बन्ध रखना, कण्डोम का प्रयोग, जाँच के बाद रक्त चढाना, रक्त सुरक्षा तथा उचित रख-रखाव, (iii) एच आई वी से पीड़ित व्यक्तियो की कम कीमत पर चिकित्सा (iv) अन्तर्क्षेत्रीय सहयोग।

जुलाई 2002 मे वार्सिलोना मे 14वे अन्तर्राष्ट्रीय एड्स सम्मेलन के अनुसार अफ्रीकी देशो मे हर तीसरा वयस्क एच आई वी से सक्रमित है, पूरी दुनिया मे 80 लाख से ज्यादा एड्स के शिकार हैं, अफ्रीका के बाद भारत मे सबसे ज्यादा सक्रमण है। यहाँ वर्तमान मे 38 लाख एड्स के शिकार हैं। (नवभारत टाइम्स 13 जुलाई 2002) 1990 मे यह सख्या सिर्फ 4 लाख थी। स्वैच्छिक सस्थाए यह सख्या और अधिक बताती हैं। यह प्रवृत्ति खतरे का सकेत ही नही परिस्थिति की गम्भीरता को भी ज्ञापित करती है। इस मोर्चे पर हमे सरकारी तौर पर ही नही, सामाजिक स्तर पर भी कमर कस कर उतरना पड़ेगा। बार्सीलोना मे आशा की जो छोटी सी किरण नजर आई, वह है एड्स की रोकथाम के लिए नई दवाए खोजने के मामले मे हुई प्रगति, जिन्हे वैक्सीन की तरह प्रयोग किया जा सकेगा। ये दवाए अगले साल तक बाजार मे आयेगी। सवाल उठता है कि क्या यह गरीब तथा अशिक्षित लोगों के आर्थिक सामर्थ्य मे होगी?

6.20 राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000-

राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन सरकार ने राष्ट्रीय जनसख्या नीति 15 फरवरी 2000 को अनुमोदित की थी। इसे संसद के दोनों सदनो में वर्ष 2000 के बजट सत्र के दौरान स्वीकृत के लिए पटल पर रखा गया था। यह नीति सरकार की नागरिको के लिए स्वैच्छिक और सूचना के विकल्प पर आधारित है। इस नीति के अनुसार सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए जीवन मे गुणात्मक सुधार किया जाना आवश्यक ताकि मानव शक्ति समाज के लिए उत्पादक पूंजी में परिवर्तित हो सके। इस नीति के तीन उद्देश्य हैं। (भारत की जनगणना 2001)

6.20 1 तात्कालिक उद्देश्य-

गर्भ निरोधक उपायो के विस्तार हेतु स्वास्थ्य एव बुनियादी ढाँचे का विकास।

6 20 2 मध्य कालिक उद्देश्य-

सत् 2010 तक कुल प्रजननता दर को घटाना

6 20 3 दीर्घकालिक उद्देश्य-

सन् 2045 तक स्थायी आर्थिक विकास हेतु आवश्यक स्थिर जनसख्या के उद्देश्य की प्राप्ति।

6 20.4 सामाजिक एवं जनांकिकी लक्ष्य-

राष्ट्रीय जनसख्या नीति मे उपरोक्त उद्देश्यो की प्राप्ति हेतु निम्न सामाजिक जनाकिकी लक्ष्य भी घोषित किये गये है -

(1) बुनियादी प्रजनन तथा शिशु स्वास्थ्य सेवाओं, आपूर्तियो तथा आधार भूत ढाँचे से सम्बन्धित अपूर्ण आवश्यकताओं पर ध्यान देना।

(2) 14 वर्ष तक की विद्यालयी शिक्षा को मुक्त तथा अनिवार्य बनाना ध्यातव्य है कि 93वे सविधान सशोधन द्वारा इसे मौलिक अधिकार घोषित किया जा चुका है। प्रारम्भिक तथा माध्यमिक विद्यालय स्तरो पर छात्र और छात्राओं दोनो मे ही विद्यालय छोड़ने में 20 प्रतिशत तक कमी लाना। शिशु मृत्यु दर प्रति हजार पर 30 से नीचे लाना।

(3) मातृत्व मृत्यु दर 100000 प्रति जीवित जन्मो पर 100 से नीचे लाना।

(4) टीको द्वारा रोकथाम वाली बीमारियो के विरुद्ध सार्व भौमिक टीकाकरण लाना।

(5) कन्याओं के विवाह में देरी को प्रोत्साहित करना जो 18 वर्ष से पहले तथा 20 वर्ष के बाद करने को तरजीह देना।

(6) केन्द्र सरकार उन पचायतों को पुरस्कृत करेगी जो अपने क्षेत्र में रहने वाले लोगों को जनसख्या नियन्त्रण के उपाय को अधिकाधिक अपनाने के लिए प्रेरित करेंगे।

(7) इस नीति के अन्तर्गत बाल विवाह निरोधक अधिनियम तथा प्रसव पूर्व लिग परीक्षण तकनीकी निरोधक अधिनियम को कडाई के साथ लागू किया जायेगा।

(8) गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले उन परिवारो को पाच हजार रुपये की स्वास्थ्य बीमा की सुविधा दी जायेगी। जिनके सिर्फ दो बच्चे हो तथा बन्ध्याकरण करा लिया हो।

(9) 80 प्रतिशत प्रसव सस्थानो द्वारा तथा 100 प्रतिशत प्रसव प्रशिक्षित दाइयो द्वारा होना। जन्म, मृत्यु, विवाह तथा गर्भावस्था का 100 प्रतिशत पजीकरण कराना।

(10) एड्स के प्रसार को रोकना तथा प्रजनन अग सक्रमण तथा यौन सचारी रोगो तथा राष्ट्रीय एड्स नियन्त्रण सगठन के बीच अपेक्षाकृत अधिकाधिक एकीकरण को बढावा देना।

(11) टी एफ आर के प्रतिस्थापन स्तरो को प्राप्त करने हेतु छोटे परिवार के मानदण्डो को ठोस रूप से बढाना तथा सम्बन्धित सामाजिक क्षेत्र कार्यक्रमो के कार्यान्वयन को एकीकृत करना जिससे परिवार कल्याण कार्यक्रम एक जनकेन्द्रित कार्यक्रम बन सके।

6.20.5 राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग-

राष्ट्रीय जनसख्या नीति 2000 के कार्यान्वयन पर निगरानी तथा समीक्षा करने के लिए प्रधान मत्री की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय राष्ट्रीय जनसख्या आयोग का गठन किया गया है। इस आयोग मे केन्द्रीय परिवार कल्याण मत्री, अन्य सम्बन्धित केन्द्रीय मत्री तथा सभी राज्यो के मुख्यमत्री तथा केन्द्र शासित प्रदेशो के प्रशासक इसके सदस्य होगे। इनके अतिरिक्त जनसख्या विशेषज्ञो जन स्वास्थ्य विशेषज्ञो तथा गैर सरकारी सगठनो के प्रतिनिधियो को भी इस आयोग में शामिल करने का प्रावधान है।

6.20.6 राष्ट्रीय जनसंख्या स्थिरता कोष-

प्रधानमत्री श्री वाजपेयी ने वर्ष 2002 तक जनसख्या स्थिरता के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु अधिकार सम्पन्न कार्य समूह के गठन तथा सौ करोड़ की आरम्भिक पूँजी से 'राष्ट्रीय जनसख्या

स्थिरता कोष' की स्थापना की 22 जुलाई 2000 को घोषणा की उन्होने अबाध गति से बढती जनसख्या पर नियन्त्रण के लिए राष्ट्रीय अभियान प्रारम्भ करने पर जोर दिया। इसके लिए उन्होने राष्ट्रीय जनसख्या स्थिरता कोष मे कम्पनी क्षेत्र, उद्योग, व्यापारिक सगठनो एव आम जनता से योगदान करने का आह्वान किया जिससे जनसख्या स्थिरता कार्यक्रम को तेज किया जा के।

6.21 प्रजनन तथा बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम-

यह कार्यक्रम 15 अक्टूबर 1997 से प्रारम्भ हुआ था, जिलो को उनकी अशोधित जन्मदर तथा महिला साक्षरता दर के आधार पर ए (58), बी (184) तथा सी (263) श्रेणियो मे बाटा गाय। वर्ष 2001 मे इसकी समीक्षा की गयी कार्यक्रम मे वित्तीय आच्छादन, दाईयो के प्रशिक्षण, आरसीएच शिविरो, आरसीएच दूरवर्ती सेवाए प्रारम्भ कर कार्यक्रम को प्रभावी बनाने पर जोर दिया गया।

6.22 सार्वभौमिक टीकाकरण-(यूआईपी)-

सार्वभौमिक टीकाकरण का कार्यक्रम 1985 में चरणबद्ध तरीके से प्रारम्भ किया गया जिसका उद्देश्य इसे 1990 तक सभी जिलो तक पहुँचाना था। कार्यक्रम का उद्देश्य शिशुओं को बीसीजी, डीवीटी 3, ओपीबी 3 तथा खसरे के टीके लगाकर प्रसव एव प्रसव के बाद होने वाली बीमारियो से मातृ-शिशु की मृत्यु रोकना है। वर्ष 2000-2001 मे टीकाकरण से लाभान्वित जनसख्या का प्रतिशत 53 हो गया है। आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक मणिपुर, उ प्र बिहार मे टीको का प्रसार घट रहा है।

6.23 पल्स पोलियो अभियान-

1995 में इस अभियान के शुभारम्भ होने के बाद पोलियो मलाइटिस के उन्मूलन मे उल्लेखनीय प्रगति की गयी है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 0-5 वर्ष के शिशुओं को छह सप्ताह के अन्तराल से पोलियो टीके की बूँदे पिलाई जाती है। अब तक प्रत्येक चरण में औसत 16 करोड़ बच्चो का टीकाकरण किया गया है। पोलियो के फैलाव को रोकने के लिए अतिरिक्त चरण 2001 में चलाये गये फलत 1998 में 1934 पोलियो मामले सामने आये थे जो 2001 तक 43 रह गये। (भारत 2002)

6 24 दसवी पचवर्षीय योजना के दृष्टिकोण पत्र में परिवार कल्याण कार्यक्रम

(1 अप्रैल 2002-31 मार्च 2007) इस योजना मे 8 प्रतिशत विकास दर के लक्ष्य के साथ निर्धनता घटाने, प्राथमिक शिक्षा का दायरा बढाने, बाल मृत्यु एव प्रसूतिकाल मे मृत्युदर मे कमी, रोजगार मे वृद्धि, साक्षरता मे वृद्धि , स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता आदि को प्राथमिकता दी गयी है। परिवार कल्याण के निम्न प्रमुख लक्ष्य है -

(1) 2011 तक जनसख्या वृद्धि को 16 2 प्रतिशत करना।

(11) शिशु मृत्यु दर को 2007 तक 45 तथा 2012 तक 10 प्रति हजार जीवित जन्मो तक लाना।

(111) 2012 तक सभी गावो मे स्वच्छ पेय जल की व्यवस्था करना।

6.25 परिवार कल्याण कार्यक्रम का संगठन-

6.25.1 राष्ट्रीय स्तर पर परिवार कल्याण कार्यक्रम का संगठन-

राष्ट्रीय स्तर पर परिवार कल्याण कार्यक्रम की सरचना केन्द्रीय स्वास्थ्य एव परिवार कल्याण मन्त्रालय के अधीन परिवार कल्याण विभाग के रूप मे प्रारम्भ होती है। इस विभाग की दो शाखाए हैं प्रथम सचिवालयी या प्रशासनिक शाखा के अन्तर्गत दो विभाग है- नीति एव बजट विभा। केन्द्रीय सगठन मे सर्वोच्च पद पर सहायक सचिव (कमिश्नर) होता है। इसके अधीन सयुक्त सचिव एव कई अन्य उप सचिव होते हैं जो कार्यक्रम सचालन में अपना योगदान देते हैं।

तकनीकी विभाग में निम्न पाँच उपविभाग होते हैं -

(1) कार्यक्रम अनुश्रवण विभाग।

(2) तकनीकी कार्यान्वयन विभाग।

(3) मूल्याकन एव सूचना विभाग।

(4) शिक्षा एव सचार विभाग।

(5) मातृ-शिशु-स्वास्थ्य विभाग।

Organisation of Family Welfare Programme
Ministry of Health and Family Welfare
Department of Family Welfare (Additional Secretary)
Administrative Wing (Joint Secretary)
Technical Wing (Joint Secretary)
Policy Division (Dy Secretary)
Budget Division (Dy Secretary)
Programme Appraisal Division (Dy Secretary)
Technical Div (Dy Secretary)
Mass Education & Media Division (Dy Secretary)
Evaluation Divison (Dy Secretary)
Maternity and Child Health Divi (Dy Secretary)
Organisation of Family Wel Fare in State
State Cabinet Committe
State family Wel Fare (Council and Board)
Depasrtment of Health Services (Director of Health Service)
Action Implementation Committee
Directorate of Health Services (Director of Health Service)
State Family Wel Fare Bureau Additional Joint Departy Director of Health Services in Charge of M C H anf F P
Programme Section (Deputy Director)
Training Section (Deputy Director)
Demographic and Evaluation Section (Deputy Director)
Education and Information Section (Deputy Director)
M C H (Deputy Director)
Organisation of Family Wel Fare in a District State Directorate of Health Services Director of Health Service
State Family Wel Fare Bureau Dy Director of Health Services
District Action Implementation Committee
District Family Wel Fare BureauDistrict Family Welfare Officers
Administrative Division
Evaluation and Informatn Divi
Field operation and Evaluation Division
Organisation of Family Wel Fare at a Block District Health Organisation Chief Medical Officer of Health
District Family Wel Fare Bureau District Family Wel Fare Officer
District Health Officer
Primary Health Centre Medical Officer Asstt. Surgeon
Block Action Implementation Committee
Health Visitor
Block Extension Educator
Health Asstt.
Health Asst.
Health Asst.
Health Asst
ANM ANM ANM ANM ANM ANM ANM ANM ANM ANM ANM ANM ANM

Fig. 6.1

तकनीकी शाखा मे पाँच सहायक सचिवो सहित असिस्टेट कमिश्नर एव शोध अधिकारी होते है, जो अपने वरिष्ठ अधिकारियो को कार्यक्रम सचालन मे सहयोग देते है। (जगनाथम बी 1973) केन्द्रीय स्तर पर कार्यक्रम सगठन का मुख्य दायित्व सगठन की सस्थापना, नीतिगत व्यवस्था, कार्यक्रम योजना, बजट सहयोग, तकनीकी सुझाव, प्रचार एव सचार माध्यमो का सहयोग अभिनिर्धारण तथा विविध सहयोगी क्रियाओं की व्यवस्था करना है। (**चित्र सख्या 6 1**)

6 25 2 प्रादेशिक स्तर पर परिवार कल्याण कार्यक्रम का संगठन-

उ प्र मे परिवार कल्याण कार्यक्रम के सगठनात्मक ढाचे के सर्वोच्च पद पर विशेष सचिव होताहै। यह सुयोग्य चिकित्साधिकारी होता है जिसका चयन वरिष्ठता के आधार पर किया जाता है। कार्यक्रम का कार्यान्वयन निदेशक परिवार कल्याण कार्यक्रम, तथा परिवार कल्याण सेवाओं के अधीन होता है। यह परिवार कल्याण कार्यक्रम तथा स्वास्थ्य सेवाओं का सर्वोच्च अधिकारी होता है। कार्यक्रम के निम्न प्रमुख कार्य है -

(1) केन्द्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम के अधीन निर्देशित योजनाओं का क्रियान्वयन करना।

(2) कार्यक्रम के विस्तारण हेतु शैक्षिक एव सगठनत्मक सुविधाओं का विकास करने के लिए कार्यक्रम सचालित करना।

(3) परिवार कल्याण कार्यक्रम के सफल क्रियन्वयन हेतु तकनीकी की सुझाव देना।

(4) परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रगति का मूल्याकन एव अनुश्रवण अलग-अलग कार्यों के निष्पादन के लिए राज्य परिवार कल्याण कार्यक्रम का कार्यालय चार भागो मे विभक्त हैं -

(1) कार्यक्रम विभाग (11) प्रशिक्षण विभाग (111) जनाकिकी एव विकास विभाग (1v) मातृ–शिशु स्वास्थ्य विभाग। उ प्र परिवार कल्याण कार्यक्रम कार्यालय सहायक निदेशक परिवार कल्याण कार्यक्रम के अधीन होता है, इसके अधीन सयुक्त सचिव असिस्टेंट सचिव, सहायक सचिव, जनाकिकी विद, समाजशास्त्री, तथा साख्यिकीय अधिकारी तथा कई सहायक निदेशक होते है। (**चित्र सख्या 6 1**)

6.25.3 जिला स्तर पर परिवार कल्याण कार्यक्रम का संगठन-

जिला स्तर पर परिवार कल्याण कार्यक्रम का सगठन कार्यक्रम की सफलता में निर्णायक भूमिका निभाता है। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के समुचित कार्यान्वयन के

लिए यह सलाहकारी एव प्रशासनिक प्राधिकरण है। यह सगठन सी एच सी एव पी एच सी को गर्भ निरोधक उपकरणो, दवाइयो, की आपूर्ति सुनिश्चित करता है। मुख्य चिकित्साधिकारी जिले के परिवार कल्याण कार्यक्रम का सर्वोच्च अधिकारी होता है, इसके अधीन तीन सहायक मुख्य चिकित्साधिकारी होते हैं जिनका कार्य कार्यक्रम सचालन एव प्रगति रिपोर्ट देना होता है। यह कार्यक्रम का अधिशासी कार्यकारी होता है। जिला परिवार कल्याण कार्यक्रम के तकनीकी अधिकारियो मे परिवार कल्याण कार्यक्रम अधिकारी, सूचना अधिकारी, स्वास्थ्य निरीक्षक, साख्यिकी निरीक्षक, कम्प्यूटर शाखा मे फोटोग्राफर एव एक प्रोजेक्टर होता है। (**चित्र सख्या 6 1**)

6.26 परिवार कल्याण कार्यक्रम की विधिया-

वर्तमान समय मे परिवार कल्याण की विविध अवरोधक तथा सुधारक विधिया है। प्राचीन समय मे ब्रह्मचर्य, विलम्बित विवाह, विधवा विवाह पर रोक आदि अवरोधक विधियो का प्रचलन था। इस समय गर्भपात, बालहत्या आदि का भी प्रचलन था। आज के युग मे विभिन्न यात्रिक और रासायनिक विधाओं के प्रयोग से गर्भधारण को बिना काम-क्रिया पर नियन्त्रण से रोका जा सकता है। इन विधियो को दो भागो मे विभक्त किया जा सकता है-

6.26.1 स्थाई विधियां-

परिवार कल्याण की स्थाई विधियो मे बन्ध्याकरण ही ऐसी विधि है जिसे अपनाने के बाद गर्भ को स्थाई रूप से रोका जा सकता है।

6.26.1.1 महिला बन्ध्याकरण (ट्यूबेक्टोमी)-

महिला बन्ध्याकरण में आपरेशन करके फेलोपियन ट्यूब को बाध दिया जाता है जिससे न तो शुक्राणु डिम्ब तक पहुच पाते हैं और न डिम्ब ही डिम्बनलिका से बाहर आ पाता है। स्त्रियों का यह आपरेशन बच्चा होने के तीन चार दिन के भीतर कराना अधिक उपयुक्त होता है।

6.26.1.2 पुरुष बन्ध्याकरण (वेसेक्टोमी)-

पुरुष का बन्ध्याकरण शुक्राणु नली का कुछ भाग काटकर किया जाता है जिससे शुक्राणु जाने का रास्ता बद हो जाता है। वर्तमान समय में बिना चीरे की नसबदी लोकप्रिय होती जा रही

है 2001 मे 1,00,166 लोगो ने इस विधि से बन्ध्याकरण कराया। 2000-2001 मे कुल नसबदी 45 9 लाख हुई। (भारत 2002)

5 26 2 अस्थाई विधियो-

अस्थाई विधियो द्वारा दम्पत्ति जब तक चाहे गर्भ को स्थगित कर सकते है। इनका प्रयोग लैगिक सम्बद्ध स्थापना के पूर्व अथवा बाद मे किया जाता है। इनका प्रयोग छोडने के बाद गर्भ की सभावना पुन सभव हो जाती है। ये विधियाँ सामान्यत उन दम्पत्तियो द्वारा अपनाई जाती है जोबच्चा देर से चाहते हैं या दो बच्चो के बीच पर्याप्त अतर चाहते है। इन अस्थाई विधियो मे प्रमुख विधिया निम्न है-

1- कण्डोम, 2- डायाक्राम, 3- जेलीक्रीम, 4- ओरलपिल्स (खाने वाली गोलिया), 5- लूप निवेशन (आई यू सी डी), 6- रबर स्पज, 7- ग्राफेन वर्गरिग, 8- हाइड्रोजन पराक्साइड, 9- सेफ्टीनैक्स, 10, गर्भपात (एम टी पी), 11- आत्म-सयम एव सुरक्षित काल

6 26 2.1 कण्डोम-

प्रचलित अस्थाई विधियो मे कण्डोम का प्रयोग सर्वाधिक होता है। प्रयोगकर्ताओं का लगभग 95 प्रतिशत भाग इस विधि को अपनाता है। (सिंह एम बी 2001) गर्भ निरोधको की सामाजिक बिक्री के अन्तर्गत सरकार द्वारा इस पर 91 प्रतिशत सब्सिडी दी जाती है। इसका प्रयोग पुरुष द्वारा लैंगिक सम्बद्ध स्थापित करने से पूर्व किया जाता है, प्रयोग के बाद इसे सावधानी से निकालना चाहिए जिससे कि शुक्राणु स्त्री के जननाग मे प्रवेश न कर पाये। (ओझा आर 1983) 2000-2001 मे कण्डोम प्रयोगकर्ता भारत मे 151 7 लाख रहे (भारत 2002)।

6 26.2 2 महिला कण्डोम- (एफ सी)-

भारत में गर्भ निरोधकों का उत्पादन करने वाली सरकारी कपनी हिन्दुस्तान लेटेक्स लि (एच एल एल) महिलाओं के लिए पहली बार पाली यूरेथिन से निर्मित कण्डोम उत्पादित कर रहा है। इससे जहा गर्भधारण पर रोक लगेगी वहीं दूसरी ओर एड्स जैसे यौन सक्रमित रोगों से बचाव होगा। इसकी निम्न विशेषता है-

(1) महिला कण्डोम (एफ सी) एक छल्ला होता है जो महिला गुप्ताग के बाहर रहता है। एक छल्ला भीतर भी होता है जो उसे गुप्ताग की ग्रीवा मे अटकाए रखता है।

(2) इसे लैंगिक सपर्क से आठ घटे पहले डाला जा सकता है। अदर जाकर यह शारीरिक तापमान से अनुकूलित हो जाता है।

(3) महिला द्वारा एक बार धारण करने के बाद तीन बार लैगिक सबध बनाया जा सकता है।

एच एल एल शिकागो (यू एस ए) की फीमेल हेल्थ कपनी (एफ एच सी) के साथ मिलकर तीन स्तरीय परीक्षण कर रहा है। यह एकमात्र कपनी है जो एफ सी बनाती और उसका विक्रय करती है। एफ सी जारी करने की परियोजना को राष्ट्रीय एड्स नियन्त्रण सगठन, स्वास्थ्य एव परिवार कल्याण मत्रालय, विश्व स्वास्थ्य सगठन तथा यूएन एड्स द्वारा अनुमोदित किया जा चुका है। 2003 तक भारतीय बाजारो मे इस कण्डोम की उपलब्धता की सम्भावन व्यक्त की गयी हे। (चाणक्य सिविल सर्विसेज टुडे अक्टूबर 2002)।

6 26 2 3 ओरल पिल्स- (गर्भ-निरोधक गोलियां)-

गर्भ निरोधक गोलियो का स्त्रियो द्वारा सेवन करने पर गर्भ धारण की सभावना अत्यल्प रहती हे। इन गोलियो को मासिक चक्र (एम सी) प्रारम्भ होने के पाचवे दिन से लेना चाहिए तथा अनवरत 20 दिन तक 1 गोली प्रतिदिन खानी चाहिए। गर्भधारण करने के लिए इन गोलियो का सेवन बद कर देना चाहिए। 2000-2001 में इन गोलियो का सेवन करने वाली महिलाओं की सख्या 65 3 लाख रही।

6.26.2.4 लूप निवेशन (आई.यू.सी.डी.)-

भारत में लूप निवेशन का कार्य 1965 से प्रारम्भ हुआ। यह आंग्लभाषिक 'एस' से मिलता-जुलता प्लास्टिक से निर्मित होता है। महिला चिकित्सक द्वारा इसे गर्भाशय में लगाया जाता है, इससे गर्भ रहने की न्यूनतम संभावना रहती है। बच्चे की इच्छा होने पर इसे निकलवाया जा सकता। यह गर्भ नियन्त्रण की सर्वाधिक लोकप्रिय अस्थाई विधि हैं। 2000-2001 मे लूप प्रवेशन की संख्या 60 लाख रही। (भारत 2002)

6.26.2.5 गर्भपात (एम.टी.पी.)-

भारत मे गर्भपात के असुरक्षित तरीके अपनाने के कारण प्रतिवर्ष औसतन 12 5 प्रतिशत महिलाओं की मृत्यु होती है। महिलाओं को स्वास्थ्य सबधी इस जोखिम से बचाने के लिए गर्भ की चिकित्सकीय समाप्ति अधिनियम 1971 लागू किया गया जो अप्रैल 1972 से प्रभावी हुआ। इस अधिनियम के अनुसार महिलाए 20 हफ्ते की गर्भावस्था तक का गर्भपात करा सकती है। यदि चिकित्सकीय जाच से स्पष्ट हो गया हो गया हो कि गर्भस्थ शिशु विकृत है। बलात्कार के मामलो मे, तथा गर्भ निरोधक उपाय विफल हो गये हो तो कानूनी गर्भपात कराया जा सकता है। देश मे 9528 मान्यता प्राप्त गर्भपात केन्द्र है। देश मे प्रतिवर्ष 6 लाख गर्भपात कराये जाते है।

6 26.2.6 सुरक्षित काल-

सुरक्षित काल विधि एक मासिकचक्र से दूसरे मासिक चक्र (एम सी) के बीच कुछ दिन ऐसे होते हैं जिसमे लैगिक सम्बन्ध स्थापित करने पर गर्भधारण नही होता है। सामान्यत मासिक चक्र प्रारम्भ होने से 16 दिनो तक स्त्री ऋतुमयी तथा गर्भधारण करने योग्य होती है, शेष 14 दिनो म गर्भाधान की सभावना नहीं रहती। क्योकि गर्भाशय का मुह बद हो जाता है। लेकिन मासिक चक्र अनियमित होने पर सुरक्षित काल का निर्धारण दुष्कर है।

6.27 सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की जनसंचार इकाइयों की भूमिका-

लोगो को स्वस्थ मनोरजन प्रदान करने के साथ-साथ उनको राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम नीतियो के प्रति जागरुक बनाने में जनसचार की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह परिवार कल्याण कार्यक्रम को सफल बनाने के प्रयासों मे लोगो की मदद करता है।

6.27 1 दूरदर्शन-

जनसेवा प्रसारण के प्रति समर्पित दूरदर्शन भारत की राष्ट्रीय प्रसारण सेवा विश्व के सबसे बड़े स्थलीय प्रसारणों मे से एक है। इस समय दूरदर्शन के प्रमुख चैनल डी डी -1 तथा डीडी-2, 1042 स्थल ट्रासमीटरों के जरिये 87 प्रतिशत से अधिक लोगो द्वारा देखा जाता है। (भारत

2002) दूरर्शन पर परिवार कल्याण कार्यक्रम से सन्दर्भित विशेष विज्ञापन कार्यक्रम, नीतिगत विषय, एव गर्भनिरोधको के प्रचार से सम्बद्ध कार्यक्रम दिखाये जा रहे है। इन कार्यक्रमो का जनता के मनोभावो पर प्रभावी असर होता है तथा वे छोटे परिवार की अवधारणा को मानने लगे है।

6 27 2 आकाशवाणी-

आकाशवाणी केन्द्र से प्रत्येक महीने प्रमुख भाषाओं मे 12375 परिवार कल्याण कार्यक्रम प्रसारित किये जाते है। (भारत 2002) परिवार कल्याण कार्यक्रम के अन्तर्गत एड्स, गर्भनिरोधक, यौन रोगो, बाल सुरक्षा तथा सुरक्षित मातृत्व कार्यक्रम, बन्ध्याकरण आदि के बारे मे महत्वपूर्ण कार्यक्रम तथा सफलता की कहानिया भी नियमित प्रसारित की जाती है।

6.27.3 फिल्म प्रभाग-

फिल्म प्रभाग की स्थापना 1948 मे स्वतत्र भारत की उपलब्धियो को भारतीय रजत पटल पर रिकार्ड, प्रचारित तथा सरक्षित करने के लिए की गयी थी। परिवार कल्याण कार्यक्रम के सदर्भ मे जनता को कार्यक्रम की नितियो से जोड़ने का यह सशक्त माध्यम है। 'एक पते की बात' कार्यक्रम छोटे परिवार की भावना को विकसित करने के लिए प्रसारित किया जाता है। 15 मिनट की अवधि वाली फिल्म 'जन-जन के कल्याण का कार्यक्रम' परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रचार के लिए प्रसारित किया जाता है। फिल्म प्रभाग द्वारा 'पापुलेशन क्लाक' मातृशिशु कल्याण कार्यक्रम विवाह की सही उम्र इत्यादि कार्यक्रम समय-समय पर प्रसारित किये जाते हैं।

6.28 जनपद गाजीपुर में परिवार कल्याण कार्यक्रम की उपलब्धि-

जनपद गाजीपुर में परिवार कल्याण कार्यक्रम जनसख्या नीति के अभिन्न अग के रूप मे स्वीकृत है जिसका उद्देश्य परिवार का आकार छोटा करना तथा जीवन स्तर उठाकर सामाजिक आर्थिक विकास को द्रुत गति देना है। जनपद की जनसख्या वृद्धि की तीव्र गति को द्रष्टव्य करते हुए परिवार कल्याण कार्यक्रम की विधियों की उपलब्धि तालिका 6 1 तथा, चित्र 6 2 मे प्रदर्शित है।

तालिका 6 1

जनपद गाजीपुर परिवार कल्याण कार्यक्रम की उपलब्धि

	बन्ध्याकरण			आई यू सी डी			कन्डोम			ओरल पिल्स		
वर्ष	लक्ष्य	प्राप्ति	प्रतिशत	लक्ष्य	प्राप्त	प्रतिशत	लक्ष्य	प्राप्त	प्रतिशत	लक्ष्य	प्राप्ति	प्रतिशत
1990 91	13592	4874	35 85	26869	28282	105 25	25548	30303	118 60	3937	3157	80 18
1991 92	14310	5896	41 20	26397	16974	64 30	28290	29958	105 88	4289	5139	119 81
1992 93	10731	5414	50 45	27662	16008	57 87	30515	28760	94 07	5913	3443	58 22
1993 94	11539	6401	55 47	33658	33774	100 34	39824	39948	100 34	7139	7695	107 79
1994 95	10464	7111	67 95	37242	37684	101 18	7930	8145	102 71	46149	47721	103 40
1995 96	12358	7295	59 03	43931	36967	84 15	46149	56537	122 55	4348	9496	101 26
1996 97	9945	5604	56 35	40584	17495	43 84	44459	22850	51 40	10935	9242	84 52
1997 98	8916	6561	73 59	35665	37680	105 65	31207	31080	99 70	13374	13485	100 82
1998 99	9023	9050	100 29	37842	38972	102 98	35619	39412	100 64	15559	12177	77 94

स्रोत- जिला मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय जनपद गाजीपुर (2002)

6 28 1 बन्ध्याकरण-

सतति निरोध की स्थाई विधि का लक्ष्य 1990-91 मे लक्ष्य 13592 था लेकिन प्राप्ति 4974 (35 85 प्रतिशत) हुई। लक्ष्य से अधिक प्राप्ति 1998-99 मे 100 29 प्रतिशत रही। 1992 से 1997 तक प्राप्ति प्रतिशत क्रमश 41 20, 50 45, 55 47, 67 95, 59 03, 56 35 तथा 73 59 प्रतिशत रही। **(तालिका 6 1 , चित्र सख्या 6 2 A)**

6.28.2 लूप निवेशन (आई.यू.सी.डी)-

महिलाओं के लिए सतति निरोध की यह अस्थाई विधि है 1990-91 में इसका प्राप्ति प्रतिशत 105 25 प्रतिशत था। 1992 में 64 30, 1993 मे 57 87, 1996 में 84 95 प्रतिशत तथा 1994, 1995 तथा 1999 मे प्रतिशत प्राप्ति 100 से अधिक रही। **(तालिका 6.1 , चित्र संख्या 6 2 B)**

DISTRICT GHAZIPUR
ACHIEVEMENTS OF FAMILY WEL FARE TARGETS
(1990-91 TO 1998-99)
Ⓐ
STERILIZATION
INDEX
TARGETS
ACHIEVEMENTS
STERILIZATION IN(000)
PERIOD
Ⓑ
INTRA UTERINE CONTRACEPTIV DEVICE(I U C D)
I U C D IN(000)
PERIOD
Ⓒ
CONDOM
CONDOM IN(000)
PERIOD
Ⓓ
ORAL PILLS
PERIOD
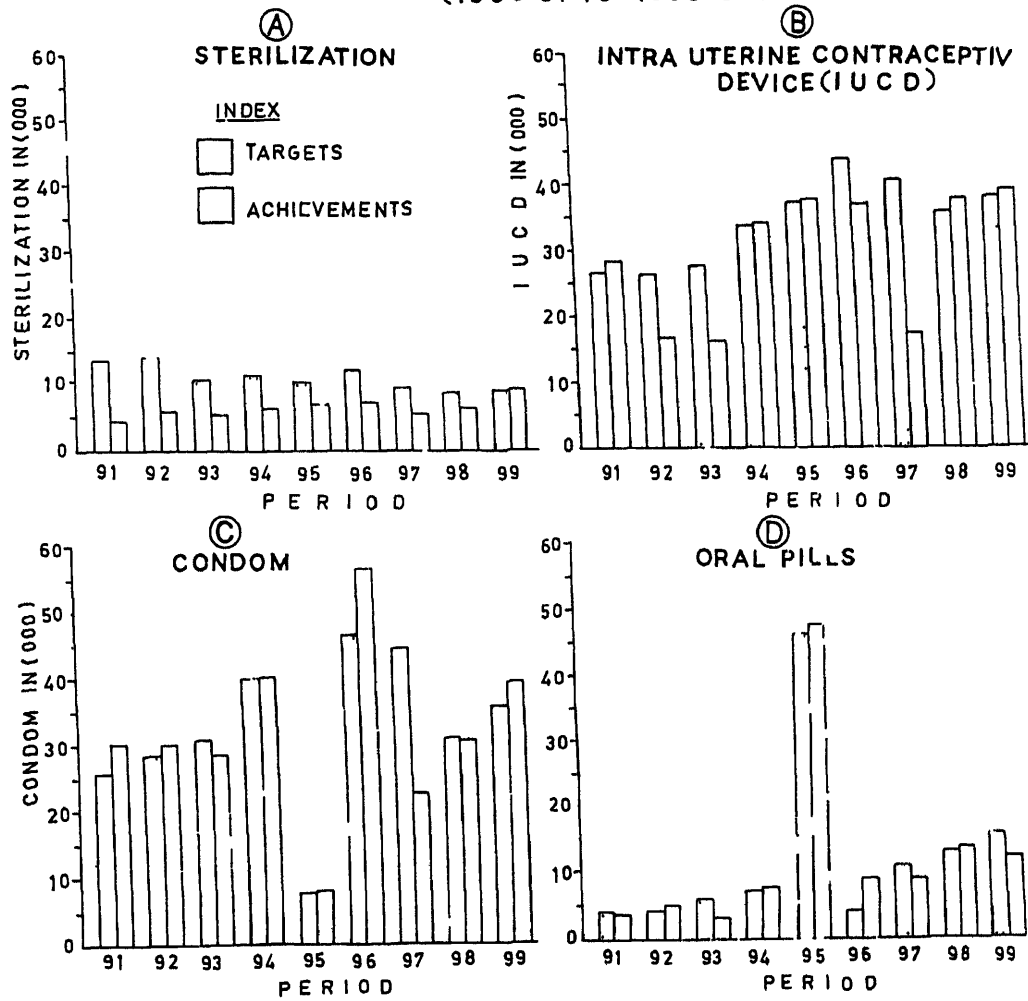
Fig. 6.2

6.28 3 कण्डोम-

पुरुषो द्वारा प्रयुक्त यह गर्भ निरोध की अस्थाई विधि है, जनपद मे 1991 से 1999 तक इसकी प्राप्ति प्रतिशता 1996, 1997, तथा 1998 को छोडकर प्रत्येक वर्ष 100 प्रतिशत से अधिक रही है। सर्वाधिक प्राप्ति 1991 मे 118 60 प्रतिशत रही तथा न्यूनतम 1996-97 मे 51 40 प्रतिशत रही, इसका प्रमुख कारण दम्पत्तियो द्वारा अन्य विधियो का अपनाया जाना है। **(तालिका 6 1 , चित्र सख्या 6 2 C)**

6 28.4 ओरल-पिल्स-

महिलाओं द्वारा खाने वाली गर्भ निरोधक गोलियो का प्राप्ति प्रतिशत जागरुकता बढने के साथ ही साथ बढता गया है। जहा प्राप्ति प्रतिशत 1990-91 मे 80 18 प्रतिशत था जो बढकर 1999 मे 100 82 प्रतिशत हो गया। **(तालिका 6 1 , चित्र सख्या 6 2 D)**

6.29 जनपद गाजीपुर में स्वास्थ्य सेवाएं-

भारत की कुल जनसख्या का लगभग 74 28 प्रतिशत भाग गावो मे निवसित है। ग्रामीण क्षेत्रो मे यातायात एव सचार साधनो की पर्याप्त व्यवस्था नही है तथा स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता सीमित है। ग्राम्य स्वास्थ्य के उन्नयन हेतु 1977 मे 'ग्रामीण स्वास्थ्य योजना' कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया था। इस योजना का मूलभाव 'जनता का स्वास्थ्य जनता के हाथो मे' है। ग्रामीण स्वास्थ्य सुधार मे प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो की भूमिका महत्वपूर्ण है। जनपद मे इस सस्था को केन्द्र बिन्दु मानकर ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यक्रम को ग्राम स्तर पर क्रियान्वित किया जा रहा है। यह एक ऐसी सस्था है जो एक क्षेत्र विशेष के लोगो को सर्वांगीण स्वास्थ्य सेवा प्रदान करती है। साथ ही क्षेत्र के विभिन्न स्वास्थ्य कार्यक्रमो को समन्वित रुप पे प्रस्तुत करती है। जनपद गाजीपुर मे 69 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 17 परिवार कल्याण एव मातृ शिशु कल्याण केन्द्र, 393 परिवार एव मातृ शिशु कल्याण उपकेन्द्र है। जनपद मे 17 एलोपैथिक चिकित्सालय, 44 आयुर्वैदिक चिकित्सा केन्द्र, 24 होम्योपैथिक चिकित्सालय तथा 10 यूनानी चिकित्सालय कार्यरत हैं। (समाज-आर्थिक समीक्षा 2000)

समाज आर्थिक समीक्षा 2000

तालिका 6 2

जनपद गाजीपुर मे स्वास्थ्य सेवाये 2000

स्वास्थ्य सेवाए	ग्राम में	1 किमी से कम	1-3 किमी	3-5किमी	5 किमी से अधिक
एलोपैथिक चिकि औषधालय	66	191	536	559	1231
आर्युवैदिक चिकि औषधालय	38	123	332	654	1436
यूनानी औषधालय	10	27	108	153	2285
होम्योपैथिक चिकि औषधालय	18	55	208	269	2023
परिवार एव मातृ शिशु कल्याण केन्द्र एव उपकेन्द्र	400	514	1000	570	109
प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	69	64	314	468	724

स्त्रोत- जनपद साख्यिकी पत्रिका 2000

6 29 1 एलोपैथिक चिकित्सालय-

तालिका 6 2 से स्पष्ट है कि जनपद मे एलोपैथिक चिकित्सालयो तथा औषधालयों की सख्या 66 है। इन केन्द्रो से गावो की दूरी का विश्लेषण करने से स्पष्ट हे कि 1 किमी से कम दूरी पर 191 गाव, 1-3 किमी की दूरी पर 636 तथा 3-5 किमी की दूरी पर 559, 5 किमी से अधिक दूरी पर 1231 गाव है। एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति सिद्ध ज्ञान एव तार्किक वैज्ञानिक मूल्यो पर आधारित है। यातायात एव सचार साध्नो की सुलभता, रोगो के प्रति परिवर्तन शील दृष्टिकोण के कारण लोग इस पद्धति को तेजी से अपना रहे है।

6 29.2 आयुर्वेदिक चिकित्सालय-

यह चिकित्सा पद्धति अत्यन्त प्राचीन चिकित्सा पद्धति है। ईसा की दूसरी सदी मे 'सुश्रुत' तथा 'चरक' नामक दो महान आचार्यों ने इस चिकित्सा पद्धति के माध्यम से रोगो के उपचार की

विधि बताई। 'सुश्रुत सहिता' मे मोतियाबिन्द, पथरी का शल्योपचार एव शल्य क्रिया के 121 उपकरणो का उल्लेख किया गया है। (शर्मा आर एस 1990) जनपद मे आयुर्वेदिक चिकित्सालयो तथा औषधालयो की सख्या 38 है। 1 किमी से कम दूरी पर 123, 1-3 किमी पर 332, 3-5 किमी पर 654 तथा 5 किमी से अधिक दूरी पर गावो की सख्या 1436 है। स्पष्ट है इन चिकित्सालयो की कम सख्या के कारण अधिक जनसख्या लाभान्वित नही हो पा रही है।

6.29 3 होमियोपैथिक चिकित्सालय-

यह चिकित्सा पद्धति प्राचीन ऋषियो एव हिप्पोक्रेट्स द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो पर आधारित है। डा हेनीमैन ने 1810 मे होमियोपैथी का धर्मग्रथ 'आर्गन आफ द रेशनल आर्ट आफ हीलिग' प्रकाशित की। डा जान मार्टिन द्वारा 1839 मे यह पद्धति भारत मे आई, इसे राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम मे 1974 मे शामिल किया गया। 1962 मे स्थापित औषधिकोष प्रयोगशाला का केन्द्र गाजियाबाद मे है। इस चिकित्सा पद्धति मे रोग लक्षणो तथा औषधि द्वारा उत्पन्न लक्षणो मे जितनी अधिक समानता होगी, इलाज उतना ही भली प्रकार होगा। सिम्पलेक्स प्रणाली पर आधारित यह चिकित्सा पद्धति एक बार मे एक रोग के उपचार की पक्षधर है। जनपद गाजीपुर मे होम्योपैथिक चिकित्सालयो तथा औषधालयो की सख्या 18 है। 1किमी से कम दूरी पर 55 गाव, 1-3 किमी पर 108 गाव, 3-5 किमी पर 153 तथा 5 किमी से अधिक पर 2285 गाव है। 5 किमी से अधिक दूरी पर स्थित गाँव इस चिकित्सा पद्धति से लाभान्वित नही हो रहे है।

6 29 4 पी एच सी, सी एच सी एव मातृ-शिशु कल्याण केन्द्र-

जनपद मे प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (पी एच सी) की सख्या 69 है, जिसमे 1 किमी से कम दूरी पर 64 गाव, 1-3 किमी की दूरी पर 314, 3-5 किमी पर 468 तथा 5 किमी से अधिक दूरी पर 724 गाव है। सभी को स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने हेतु प्रस्तावित मानक के अनुसार 30000 जनसख्या पर एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र एव 35 उपकेन्द्र होने चाहिए, इस आधार पर जनपद मे 32 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो की और आवश्यकता है तथा कुल 3557 उपकेन्द्र होने चाहिए जबकि विद्यमान उपकेन्द्र 400 है अत पविार कल्याण कार्यक्रम की सुचारू सफलता के लिए जनपद मे स्वास्थ्य सेवाओं की प्रबल आवश्यकता है।

REFERENCES

1 Agrawal S N (1978) ``Indıa's Populatıon Problems" Tata Mc Grow Hıll New Delhı P 192
Censas of Indıa 2001

2 Provısıonal Populatıon Totals/Sahıtya Bhawan Publıcatıons Agra PP 26-27

3 Chankya Cıvıl Servıces Today (Oct 2002)
Chankya I A S Academy Sarswatı Bhawan 6 Poorvı Marg Vasant Vıhar New Delhı P 135

4 Government of Indıa (1946) ``Health Survey and Development Commıttee Report" vol II New Delhı Government Publıcatıons P 487

5 Government of Indıa (1950) Plannıng Commıssıon Fırst Fıve Year Plan New Delhı P 473

6 Government of Indıa (1956) Plannıng Commıssıon Second Fıve Year Plan New Delhı P 427

7 Government of Indıa (1961) Plannıng Commıssıon Thırd Fıve Year Plan New Delhı P 483

8 Government of Indıa (1969) Plannıng Commıssıon Fourth Fıve Year Plan New Delhı PP 317

9 Government of Indıa (1980) Plannıng Commıssıon Sıxth Fıve Year Plan New Delhı P 240

10 Government of Indıa (1985-90) Plannıng Commıssıon Seventh Fıve Year Plan New Delhı vol II P 281

11 Government of Indıa (1992-97) Plannıng Commıssıon Eıght Fıve Year Plan P 225

12 Indıa 2002 (ın HIndı) Prakashan Vıbhag Mınıstary of Informatıon and Broad Castıng P 240

13 India Planning Commission (1992-97) Eight Five Year Plan New Delhi PP 322-323 vol II

14 India 2001 (in Hindi) Prakashan Vibhag Ministary of Information and Bioad Casting Government of India P 221-222

15 India 2002 (in Hindi) Prakashan Vibhag Ministary of Information and Broad Casting Government of India P 225

16 Ibid PP 285, 292, 307

17 Jagannadham V (ed) 1973 Family Planning in India Policy and Administrative" New Delhi P 83, 89, 90

18 Khare P C and Sinha V C (1985) ``Samajik Janankikee Avam Jan Swasthya" National Publishing House New Delhi PP 199-208

19 Kumar Mithilesh and Sahani N (1985) ``Jansankhya Shiksha Siddant Avam Tatva" Population Centre Indira Nagar Lucknow PP 137-141

20 Nav-Bhaiat Times (in Hindi) 12 Jul 2002

21 Ojha R (1983) `Jansankhya Bhogol" Pratibha Prakashan Kanpur P 333

22 Ibid 23

23 Piachin Bharat (1990) NCERT P 258

24 Socio-Economic Analysis (2000) (in Hindi) District Ghazipur (U P) P 32

25 Singh M B (2000) ``Population Geography" (in Hindi) Rawat Publications Jawahar Nagar Jaipur P 292

❑ अध्याय 7

परिवार कल्याण कार्यक्रम से सन्दर्भित अभिरूचियां एवं प्रभाव

विगत दो-तीन दशको मे व्यावहारिक रूप से ससार के विभिन्न देशो मे जीवन के प्रत्येक पक्ष परिवर्तित हुए है। तीव्र जनसख्या वृद्धि ने मानव के समाज-आर्थिक विकास को प्रभावित किया है परिणामत परिवार कल्याण कार्यक्रम राष्ट्र के विकास का स्वीकार्य कार्यक्रम बनता जा रहा है।

परिवार कल्याण कार्यक्रम की सफलता मे लोगो के मनोभावो एव अभिरूचियो की निर्णयात्मक भूमिका होती है। इस सन्दर्भ मे हमारी असफलता का मुख्य कारण रहा है कि कार्यक्रम ने लोगो के मनोभावो को प्रभावित करने मे केन्द्रीय भूमिका नही निभाई। ऐसा इसलिए हुआ कि साधारण व्यक्ति के बुद्धि वादी सिद्धान्त तथा नीति निर्धारको के सिद्धान्त मे विशेष सामाजिक-आर्थिक वातावरण के कारण बहुत अन्तर रहा। परिवार कल्याण कार्यक्रम ऊपर से थोपा जाय नौकर शाही के जाल मे फँसा हो सफल नही हो सकता। जन साधारण कार्यक्रम को तभी अगीकार करेगा जब वह सामान्य जन के बुद्धि सम्मत होगा। यदि एक बार ऐसा सम्भव हो तो वह स्वत उद्भूत व्यवस्था होगी। परिवार कल्याण कार्यक्रम की सफलता इस पर आधारित है कि उसे स्वत उदभूत व्यवस्था कैसे बनाया जाय। लोग जब कार्यक्रम के आधार भूत विचारो से सहमत होते है तो उसकी सफलता अवश्यम्भावी है।

7 1 परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रति अभिरूचियॉ-

भारतीय समाज मे परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रति अभिरूचि विभिन्न प्रकार के सामाजिक–सास्कृतिक कारको द्वारा अभिनियन्त्रित होती है। अध्ययन क्षेत्र की उच्च जनसंख्या वृद्धि मे इन कारको के महत्व को ध्यातव्य करते हुए व्यक्तिगत अध्ययन किया गया है। इन कारको का प्रभाव एव तद्नुरुप जनसख्या वृद्धि से भारत सहित अनेक विकासशील देश प्रभावित हैं। गर्भनिरोधको के प्रति जनमानस की अभिरूचियों एव सकल्पनाओ के अनुरूप ही परिवार कल्याण कार्यक्रम क्रियान्वित किये जाने चाहिए। परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियो को प्रभावित करने वाले प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष सामाजिक, आर्थिक, जनाकिकी, पारिस्थितिकी, स्वास्थ्य आदि

कारको का परीक्षण किया गया है। परस्पर अन्तर्सम्बन्धित इन कारको को तीन वर्गो मे विभक्त किया गया है।-

1 सास्कृतिक कारक।

2 सामाजिक-आर्थिक कारक।

3 जनाकिकी कारक।

7.2 सांस्कृतिक कारक-

परिवार कल्याण कार्यक्रम तथा गर्भनिरोधको की स्वीकार्यता मे सास्कृतिक कारको की निर्णयात्मक भूमिका होती है। धार्मिक पृष्ठभूमि, जाति व्यवस्था, पुत्र-महत्व आदि कारक परिवार कल्याण कार्यक्रम की सफलता एव असफलता के लिए उत्तरदायी होते हैं (अबुसालेह एस 1989) क्षेत्र मे हिन्दू एव मुस्लिम प्रमुख धार्मिक समुदाय है। हिन्दू धर्म की जातियो का अध्ययन तीन प्रमुख वर्गो मे विभक्त कर किया गया है—

सामान्य वर्ग- ब्राह्मण, राजपूत, भूमिहार, कायस्थ।

अन्य पिछड़ा वर्ग- यादव, सोनार, कोइरी, नोनिया (चौहान) पाल (गडेरिया), राजभर, चौरसिया (बरई), बनियाँ, लोहार, कुम्हार।

अनुसूचित जातियाँ- हरिजन (चमार), धरकार, धोबी, दुषाद, खटिक, खरवार, गोड पासी आदि।

7 2 1 परिवार के आकार के प्रति दृष्टिकोण-

परिवार के आकार को तीन वर्गो बडा, सतुलित तथा छोटा मे विभाजित कर उत्तरदाताओ के विचार को उद्घृत किया गया है। इस सन्दर्भ मे 500 उत्तरदाताओ के विचारो को लिया गया है। तालिका 7 1 से स्पष्ट है कि 12 40 प्रतिशत उत्तरदाताओ ने परिवार के आकार को बडा माना है।

सतुलित तथा छोटा परिवार को उपयुक्त बताने वालो का प्रतिशत क्रमश 37 80 तथा 49 98 है। अध्ययन क्षेत्र मे 189 उत्तरदाताओ ने 1-3 बच्चो के परिवार को छोटा कहा है, जबकि 60 उत्तरदाताओ ने 3-6 बच्चो वाले परिवार को छोटा परिवार कहा है। वस्तुत 15 लोगो ने 1 या दो बच्चो वाले परिवार को सतुलित या छोटा परिवार कहा 1 लोगो मे छोटे परिवार की भावना प्रबल हो रही है तथा लोग परिवार कल्याण कार्यक्रम से प्रभावित हुए हैं। (**तालिका** 7 1)

तालिका 7 1

परिवार के आकार के प्रति दृष्टिकोण

परिवार का	बच्चो की सख्या						उत्तरदाता	
आकार	1	2	3	4	5	6	सख्या	प्रतिशत
बड़ा	-	9	20	17	12	4	62	12 40
सतुलित	6	61	53	59	10	-	189	37 80
छोटा	33	90	66	51	9	-	249	49 89
योग	39	160	139	127	31	4	500	100 00

स्त्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

7.2.2 पुत्र के जन्म को वरीयता देने के कारण-

हिन्दू धर्मानुसार व्यक्ति को मुक्ति तभी मिलेगी जब कतिपय सस्कार उसके पुत्र द्वारा किये जाँय। 'मनु स्मृति' मे स्पष्ट कहा गया है कि जो व्यक्ति तीनो ऋणो (देव, पितृ, ऋषि) के बिना मोक्ष प्राप्ति की इच्छा रखता है वह नरक का अधिकारी होता है- (श्रीवास्तव के सी 2000)

'अनधीत्यद्विजो वेदाननुत्पाद्य तथा सुतान'।
अनिष्ट्वा चैव यज्ञैश्च मोक्षमिच्छन ब्रजत्यद्य ॥

हर्ष कालीन महाकवि वाणभट्टकृत 'कादम्बरी' मे कहा गया है- 'अपुत्राणा न सन्ति लोका शुभा।' भारतीय उत्पादकता के सन्दर्भ मे पुत्र प्राप्ति की कामना इतनी प्रबल है कि भले ही 5-6 पुत्रियो के बाद पुत्र हो लेकिन प्राप्ति अवश्य हो। फलत परिवार कल्याण कार्यक्रम असफल हो जाते है, इसे 'डिमोग्रैफिक फन्डामेन्टलिज्म' कहा गया, (बोस आशीष 1988)

तालिका 7 2

पुत्र के जन्म को वरीयता देने का कारण

कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
आमदनी के लिए	97	19 40
शक्ति के लिए	28	5 60
वशवृद्धि के लिए	206	41 25
बुढापे मे सहारे के लिए	139	27 80
पिण्डदान के लिए	10	2 00
अन्य	20	4 00

स्त्रोत- व्यक्ति सर्वेक्षण 2002

तालिका 7 2 से स्पष्ट है। कि 41 25 प्रतिशत उत्तरदाता पुत्र प्राप्ति वश वृद्धि के लिए आवश्यक समझते है। 19 40 लोग आय के लिए पुत्र प्राप्ति आवश्यक समझते है जिसमे दहेज की इच्छा प्रबलतम है। कुछ लोग यह मानते है पुत्र बढे होकर धन अर्जित कर उन्हे सुख प्रदान करेगे। 27 80 प्रतिशत उत्तरदाताओ का विचार है कि बच्चे वृद्धावस्था मे सहायक होगे। 5 60 उत्तरदाता मानते है कि पुत्र रहने पर परिवार की शक्ति प्रतिष्ठा बनी रहती है।

7.2 3 पुत्री के जन्म को वरीयता न देने के कारण-

पुत्री के जन्म को प्रश्रय न देने के कारणो मे दहेज की समस्या, विवाह की समस्या, पालन पोषण मे कठिनाई, विवाह के बाद ससुराल वालो की ओर से समस्या, तथा लोगो मे यह रुढिवादिता कि पुत्री विवाह के बाद ससुराल चली जायेगी जिस पर व्यय धनराशि बेकार चली जाती है इत्यादि है। उत्तरदाताओ द्वारा दिये गये उत्तर तालिका 7 3 मे प्रदर्शित है, 66 20 प्रतिशत उत्तदाताओ ने पुत्री के जन्म को वरीयता न देने का कारण दहेज बताया गया, जिससे समाज मे व्याप्त इस कुप्रथा की भयकरता का पता चलता है। इसके दूरीकरण के लिए दहेज कानूनो को सशक्त बनाने, एव समाज मे जागृति फैलाने की महती आवश्यकता है। 20 40 प्रतिशत लोगो ने पालन पोषण मे, तथा पढाई मे अधिक खर्च को वरीयता न देने का कारण बताया।

तालिका 7 3

पुत्री के जन्म को वरीयता न देने का कारण

कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
दहेज की समस्या	331	66 20
अधिक खर्च	102	20 40
रुढिवादिता	53	10 60
कोई उत्तर नही	12	2 40
अन्य	02	0 40
योग	500	100 00

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

विवाह मे बाधा आने की भय की मिथ्या भ्रान्ति के कारण ग्रामीण अपनी लड़कियो को डाक्टर के पास नहीं ले जाते (देवी गायत्री 1994) 10 60 प्रतिशत उत्तरदाताओ ने बताया कि लड़कियो की सामाजिक कर्मकाण्डो, वश वृद्धि एव प्रतिष्ठा के लिए कोई आवश्यकता नही होती।

कुछ ने बताया कि लड़कियाँ होने पर विवाह के लिए सदा मानसिक तनाव बना रहता है। 2 40 प्रतिशत ने कोई उत्तर नही दिया।

7.2.4 धर्म एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रति अभिरूचियाँ-

परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रति अभिरूचि निर्धारण मे धर्म एक महत्वपूर्ण कारक है। सन्तानोत्पत्ति को गर्भनिरोधको द्वारा मियन्त्रित करना अधार्मिक कृत्य कहा गया है। मुस्लिम धर्म मे गर्भ निरोधको द्वारा सन्तति निरोध 'कुरान' के विपरीत कहा गया है। इसमे कहा गया है कि ऐसी औरत से विवाह करो जो तुमसे मुहब्बत करे और खूब उत्पादक हो। (ओझा आर 1983)

अध्ययन क्षेत्र मे हिन्दू एव मुस्लिम प्रमुख धार्मिक समुदाय है, 500 उत्तरदाताओ मे से 457 (91 40 प्रतिशत) हिन्दू तथा 43 (8 6 प्रतिशत) मुस्लिम है। तालिका 7 4 से स्पष्ट है कि कुल परिवार कल्याण कार्यक्रम प्रयोगकर्ता 44 60 प्रतिशत है। हिन्दू धर्म मे कुल 44 60 तथा मुस्लिम धर्म मे 3 प्रतिशत प्रयोगकर्ता है। अन्य विधियो मे 17 04 प्रतिशत कण्डोम, 14 43 प्रतिशत आई यू सी डी तथा 18 83 प्रतिशत ओरल पिल्स प्रयोगकर्ता है। मुस्लिम समुदाय मे परिवार कल्याण कार्यक्रम की न्यून स्वीकार्यता उनके धार्मिक निर्देश के साथ ही साथ इस भावना पर भी आधारित है कि जितना सभव हो सके इस्लाम अनुयायियो की सख्या बढे। (खान एम ई 1979) **(तालिका 7 4, चित्र 7 1 A)**

तालिका 7 4

धर्म एव परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रति अभिरूचियाँ

धर्म	उत्तरदाताओ की सख्या	अप्रयोग कर्ता	प्रयोग कर्ता	नशबन्दी			कण्डोम	आई यू सी डी	गर्भ निरोधक गोलियाँ
				पुरुष	स्त्री	कुल			
हिन्दू	457	249	208	42	70	112	32	29	35
मुस्लिम	43	28	15	--	1	1	6	1	7
योग	500	272	223	42	71	113	38	30	42

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

7 2.5 जाति एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियॉ-

जाति सरचना परिवार कल्याण कार्यक्रम को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। उच्च जातियाँ आर्थिक रूप से सुदृढ होती है फलत उनमे परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रति रुझान अधिक होता है, अन्य पिछड़ी, अनुसूचित जातियो मे अशिक्षा, निर्धनता, अन्धविश्वास के कारण परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रति उपेक्षा भाव रहता है। अध्ययन क्षेत्र मे 26 25 प्रतिशत उत्तरदाता उच्च जाति के, 43 12 प्रतिशत अन्य पिछड़ी जाति के तथा 3 62 प्रतिशत अनुसूचित जातियो के है। कुल प्रयोग कर्ताओ मे 29 21 प्रतिशत ब्राह्मण, 44 प्रतिशत राजपूत, 46 02 प्रतिशत यादव 19 35 प्रतिशत अन्य पिछड़ी जातियाँ तथा 42 85 प्रतिशत अनुसूचित जातियो के है। तालिका 7 5 से स्पष्ट है कि कुल नशबन्दी मे सर्वाधिक प्रतिशत अनुसूचित जातियो का 57 14 एव अन्य पिछड़े वर्गो तथा ब्राह्मणो मे यह प्रतिशत 50 00 है। यादवो एव राजपूतो का प्रतिशत क्रमश 48 14 तथा 45 45 प्रतिशत है। निरोध, आई यू सी डी एव गर्भ निरोधक गोलियो का प्रयोग ब्राह्मणो मे 15, 15 एव 20 प्रतिशत, राजपूतो मे 24 25, 12 14, 18 98, यादवो मे 18 51, 9 87, 23 45, अनुसूचित जातियो मे यह प्रतिशत क्रमश 16 66 तथा 33 3 प्रतिशत है। **(तालिका 7 5 चित्र 7 1 B)**

तालिका 7 5

जाति एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियाँ

जाति	उत्तर दाताओ की सख्या	अप्रयोग कर्ता	प्रयोग कर्ता	नशबन्दी पुरुष	नशबन्दी स्त्री	नशबन्दी कुल	कण्डोम	आइ यू इ सी जी	गर्भ निरोधक गोलिया
ब्राह्मण	51	31	20	4	6	10	3	3	4
राजपूत	75	42	33	6	9	15	8	4	6
यादव	176	95	81	14	25	39	15	8	19
अ पि जातियाँ	31	25	6	1	2	3	1	--	2
अनुसूचित जातियाँ	147	84	63	15	21	36	11	5	11
योग	480	277	203	42	61	103	38	20	42

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

7.2.6 पुत्र महत्व एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम-

पुत्र की इच्छा सभी को रहती है, लेकिन अधिसख्य लोग अधिक पुत्र की कामना करते है। भारतीय समाज मे धार्मिक सामाजिक, आर्थिक तीनो ही दृष्टि से पुत्र आवश्यक समझा गया है। वेदो मे विवाहित स्त्री को 'पुत्रवती भव' कहकर आशीर्वाद दिया गया है। वह पिता का वश चलाता है, वृद्धावस्था का सहारा एव मरने के बाद श्राद्ध करता है। इन कारणो से लोग अपने परिवार का आकार पुत्र प्राप्ति की लालसा मे बढाते रहते है, भारत की जन्दर मे इस कारक का महत्वपूर्ण योगदान हे।

तालिका 7 6 से स्पष्ट है कि 4 प्रतिशत उत्तरदाता पुत्र-पुत्री मे कोई अन्तर नही समझते, 7 8 प्रतिशत एक पुत्र की, 32 प्रतिशत दो पुत्र की तथा 56 20 प्रतिशत तीन पुत्रो को महत्व देते है। पुत्र को कोई वरीयता न देने वाले 70 प्रतिशत परिवार कल्याण कार्यक्रम प्रयोगकर्ता है। जिसमे नशबन्दी 57 14, आई यू सी डी 7 14, कन्डोम 21 42 तथा ओरल पिल्स प्रयोगकर्ता 14 28 प्रतिशत है। एक पुत्र को वरीयता देने वाले 66 66 प्रतिशत परिवार कल्याण कार्यक्रम प्रयोगकर्ता है जिसमेसर्वाधिक नशबन्दी से 65 36 प्रतिशत सुरक्षित है। दो पुत्र को वरीयता देने वाले 60 62 प्रतिशत परिवार कल्याण कार्यक्रम प्रयोगकर्ता है जिसमे नशबन्दी 80 41, आई यू सी डी 7 21, कन्डोम 5 15 तथा गर्भ निरोधक गोलियो के प्रयोगकर्ता 7 21 प्रतिशत है। निम्न सामाजिक स्तर वाले 56 20 प्रतिशत उत्तरदाता शक्ति एव आमदनी के लिए न्यूनतम तीन पुत्रो को वरीयता देते है जिसमे कुल नशबन्दी 11 62 प्रतिशत ही है। **(तालिका 7.6, चित्र 7 1 C)**

तालिका 7 6

पुत्र-महत्व एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियाँ

पुत्र की वरीयता	उत्तर दाताओ की सख्या	अप्रयोग कर्ता	प्रयोग कर्ता	पुरुष	नशबन्दी स्त्री	कुल	कण्डोम	आइ यू सी डी	गर्भ निरोधक गोलियाँ
एक पुत्र को वरीयता	39	13	26	6	11	17	2	4	3
दो पुत्र को वरीयता	160	63	97	31	47	78	7	5	7
तीन पुत्र को वरीयता	281	195	86	3	7	10	20	26	30
कोई वरीयता नही	20	6	14	2	6	8	1	3	2

स्त्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

DISTRICT GHAZIPUR
CULTURAL DETERMINANTS OF FAMILY WEL FARE BEHAVIOUR
Non Adopters
Tubectomy
Vesectomy
I U C D
Condom
Oral Pills
A RELIGION
NO OF RESPONDENTS
500
400
300
200
100
0
Hindu
Muslim
B CASTE
NO OF RESPONDENTS
250
200
150
100
50
0
Brahman
Rajput
Yadav
S C
Other
C VALUE OF SON
NO OF RESPONDENTS
250
200
150
100
50
0
One Son
Two Son
Three Son or more
No Preference
D TYPES OF FAMILY
NO OF RESPONDENTS
350
280
210
140
70
0
0
Joint
Nuclear
(On the basis of personal sample survey 2002)
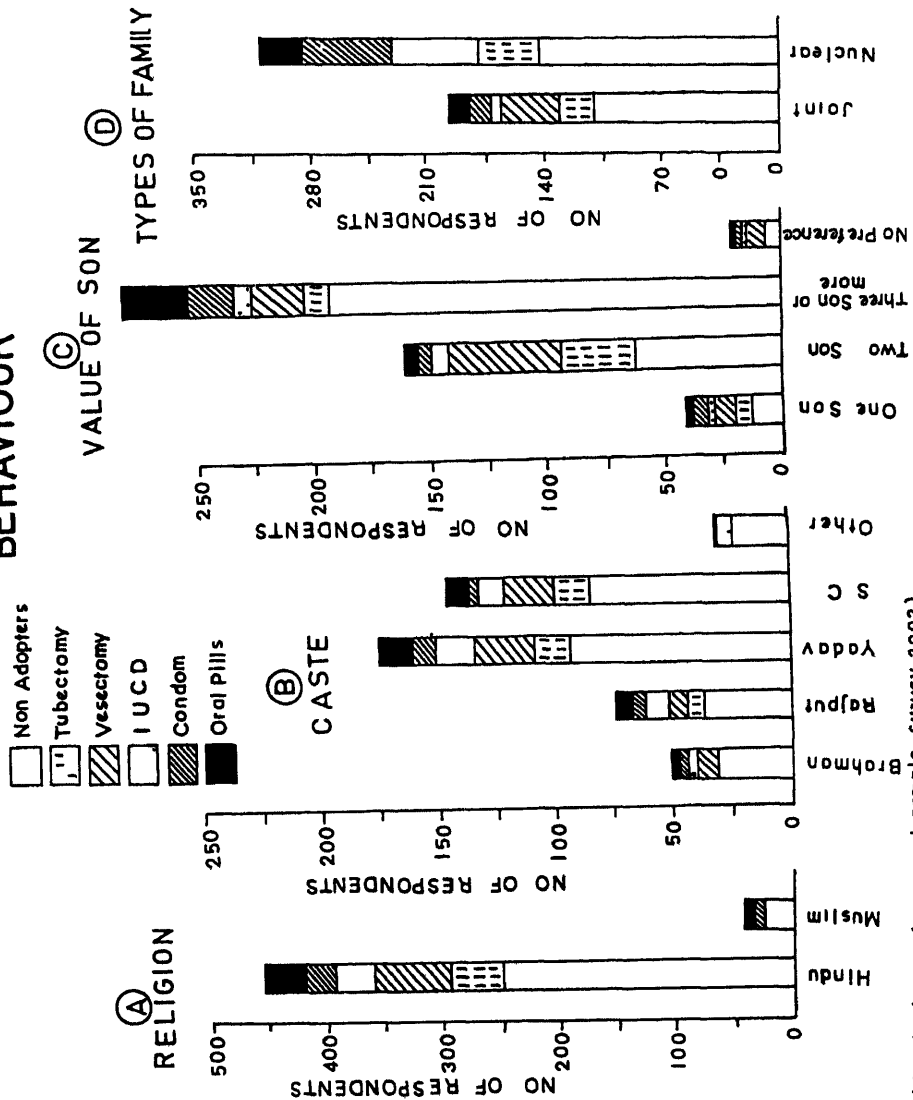
Fig. 7.1

7.2.7 परिवार के प्रकार एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रति अभिरूचियां-

परिवार कल्याण कार्यक्रम की स्वीकार्यता मे परिवार का प्रकार एक महत्वपूर्ण कारक है। एकाकी परिवार मे रहने वाले दम्पति परिवार के आकार को सीमित रखने के लिए स्वतन्त्र होते है जबकि सयुक्त परिवारो मे यह निर्णय परिवार के वरिष्ठ सदस्य करते है। तालिका 7 7 से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण उत्तरदाताओ मे 33 19 प्रतिशत सयुक्त तथा 66 80 प्रतिशत एकाकी परिवारो के परिवार कल्याण कार्यक्रम प्रयोगकर्ता है। सयुक्त परिवार मे 55 प्रतिशत लोगो ने नशबन्दी कराई है जिसमे महिला नशबन्दी का योगदान 36 25 प्रतिशत है। कन्डोम, आई यू सी डी तथा गर्भ निरोधक गोलियो के प्रयोगकर्ता क्रमश 11 25, 17 5 तथा 16 25 प्रतिशत है। एकाकी परिवारो मे कुल नशबन्दी 42 85 प्रतिशत जिसमे महिला नशबन्दी का योगदान 26 08 प्रतिशत है। एकाकी परिवारो मे कन्डोम, आई यू सी डी तथा गर्भनिरोधक गोलियो के प्रयोग कर्ता क्रमश 16 90, 13 04 तथा 20 42 प्रतिशत है। **(तालिका 7 7, चित्र 7 1 D)**

तालिका 7 7

परिवार के प्रकार एव परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रति अभिरूचिया

परिवार के प्रकार	उत्तर दाताओ की सख्या	अप्रयोग कर्ता	प्रयोग कर्ता	नशबन्दी पुरुष	नशबन्दी स्त्री	नशबन्दी कुल	कण्डोम	आइ यू सी डी	गर्भ निरोधक गोलिया
सयुक्त	197	117	80	15	29	44	09	14	13
एकाकी	303	142	161	27	42	69	21	24	29
योग	500	259	241	42	71	113	30	38	42

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

7.3 सामाजिक-आर्थिक कारक-

ऐतिहासिक रूप से अनेक भारतीय एव पाश्चात्य आनुभविक अध्ययन इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि सामाजिक-आर्थिक स्तर एव उत्पादकता मे मजबूत सम्बन्ध है। परिवार की आय, व्यवसाय, स्त्री शिक्षा का स्तर, स्त्रियों का सामाजिक स्तर आदि परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियो को प्रभावित करते है। निर्धनता के कारण गरीब पिता को यह आशा होती है कि उसके बच्चे उसकी आय मे बढोत्तरी करे। (सिह एम बी 2001)

ये अपने बच्चो को बुढापे का पेशन समझते है। फलत वे अधिक बच्चे पैदा करते है। गरीब व्यक्ति मनोरजन के साधनो का अभाव, अज्ञानता, अशिक्षा के के कारण दूरस्थ स्थित स्वास्थ्य केन्द्रो तक नही जा पाते तथा गर्भ निरोधको को नही अपनाते जिससे जनसख्या वृद्धि को प्रोत्साहन मिलता है।

7 3.1 व्यवसाय एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियॉ-

परिवार कल्याण कार्यक्रम विधियो के प्रयोग कर्ताओ पर व्यवसाय का वैयक्तिक प्रभाव पडता है। व्यवसाय सामाजिक आर्थिक स्तर के मापन का उत्तम सूचक है। उच्च आय वाले लोगो मे शिक्षा का उच्च स्तर पाया जाता है। व्यवसायी स्त्रियो को परिवार कल्याण कार्यक्रम की विधियो की अधिक जानकारी होती है। (कार्टराइट 1970) वे दम्पति जो कृषि एव अन्य परम्परागत व्यवसायो मे लगे है उनमे गर्भ निरोधको की निम्न स्वीकार्यता पायी है। इनके बच्चे अल्प आयु मे ही इनके कार्यों मे सहायता करते है। जिससे बड़े परिवार की भावना को प्रोत्साहन मिलता है। वर्तमान अध्ययन मे व्यवसाय को चार वर्गों मे विभक्त कर अध्ययन किया गया है- नौकरी, कृषि, मजदूरी, अन्य, इनमे लगे लोगो का प्रतिशत क्रमश 16 40, 50 20, 26 00 एव 7 40 है।

तालिका 7 8

व्यवसाय एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचिया

व्यवसाय	उत्तर दाताओ की सख्या	अप्रयोग कर्ता	प्रयोग कर्ता	पुरुष	नशबन्दी स्त्री	कुल	कण्डोम	आइ यू सी डी	गर्भ निरोधक गोलिया
नौकरी	82	26	56	5	9	14	5	12	25
कृषि	251	155	96	21	40	61	8	17	10
मजदूरी	130	81	49	14	17	31	10	5	3
अन्य	37	15	22	2	5	7	7	4	4
योग	500	277	223	42	71	113	30	38	42

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

तालिका 7 8 से स्पष्ट है कि परिवार कल्याण कार्यक्रम प्रयोग कर्ताओ मे सर्वाधिक प्रतिशत नौकरी करने वालो का 68 29 है तत्पश्चात् कृषि, अन्य एव मजदूरो का क्रमश 38 24, 59 45 एव 37 69 प्रतिशत है। नौकरी करने वालो मे कुल नशबन्दी 25 00 प्रतिशत जिसमे

महिला नशबन्दी का प्रतिशत 16 07, निरोध प्रयोगकर्ता 21 42, आई यू सी डी प्रयोगकर्ता 8 92 तथा गर्भ निरोधक गोलियो के प्रयोगकर्ता 44 64 प्रतिशत है। कृषि मे सलग्न प्रयोग कर्ताओ मे कुल नशबन्दी 63 54 प्रतिशत जिसमे महिला नशबन्दी 41 60 प्रतिशत है। ये उत्तरदाता 3 से अधिक बच्चे वाले है। इस व्यवसाय मे कण्डोम, आई यू सी डी तथा गर्भ निरोधक गोलियो के प्रयोग कर्ता क्रमश 17 70 प्रतिशत, 17 70 प्रतिशत तथा 10 41 प्रतिशत है। मजदूरी मे लगे उत्तरदाताओ मे 37 69 प्रतिशत परिवार कल्याण कार्यक्रम विधियो के प्रयोग कर्ता है जिसमे 63 26 प्रतिशत की नशबन्दी हो चुकी है जिसमे महिला नशबन्दी 34 69 प्रतिशत है। कण्डोम, आई यू सी डी तथा गर्भनिरोधक गोलियो के प्रयोग कर्ता क्रमश 10 20, 20 40 तथा 6 12 प्रतिशत है। अन्य व्यवसायो के प्रयोग कर्ताओ मे नशबन्दी 31 81 प्रतिशत, कण्डोम 18 18, आई यू सी डी 18 18 एव गर्भ निरोधको के प्रयोग कर्ता भी 18 18 प्रतिशत है। अन्य व्यवसायो मे उन व्यक्तियो को सम्मिलित किया गया है जो बेरोजगार है, दुकानदार, बढई एव कारीगर है। **(तालिका 7 8 एव चित्र 7 2 A)**

7.3.2 मासिक आय एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियां-

परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियो के निर्धारण मे परिवार की मासिक आय एक महत्वपूर्ण आर्थिक कारक है। कतिपय भारतीय अध्ययन इस तथ्य की ओर इगित करते है कि दम्पति का आर्थिक स्तर एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियो मे धनात्मक सयोजन पाया जाता है। यू एन ओ 1961 'पायनियरिंग मैसूर के जनसख्या अध्ययन' की रपट मे कहा गया कि 'आर्थिक स्तर एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियाँ धनात्मक रूप से सम्बद्ध है' उच्च आय वर्गो मे परिवार कल्याण कार्यक्रम की उन्नत विधियाँ प्रयोग की जाती हैं। उपरोक्त विवेचन इस तथ्य को प्रमाणित करते है कि 'विकास सबसे उत्तम गर्भ निरोधक है'। निम्न आय वर्गों मे बच्चे ही उत्पादक होते हैं क्योकि वे अल्पायु मे ही धनार्जन प्रारम्भ कर दते है लेकिन उच्च आय वाले दम्पति अपने बच्चो की शिक्षा, स्वास्थ्य एव पोषण पर पर्याप्त व्यय करते हैं फलत वे उपभोक्ता होते हैं। उपरोक्त सकल्पना का परीक्षण तालिका 7 9 मे विवरित है। मासिक आय को 5 वर्गों मे विभाजित किया गया है- 1000 से कम, 1000-2000, 2000-3000, 3000-4000 तथा 4000 से अधिक इन वर्गों मे उत्तरदाताओं का प्रतिशत क्रमश 26 40, 32 40, 10 6, 13 2 एव 17 2 प्रतिशत है, परिवार कल्याण कार्यक्रम प्रयोग कर्ताओ का प्रतिशत 1000 से

कम आय--वर्ग मे 38 6 प्रतिशत, 1000-2000 मे 26 54, 2000-3000 मे 64 15, 3000-4000 मे 55 22 तथा 4000 से अधिक आय-वर्ग मे प्रयोग कर्ताओ का प्रतिशत 67 40 है। सर्वाधिक नशबन्दी 1000 से कम आय-वर्ग मे है जिसमे महिला नशबन्दी का प्रतिशत 37 25 है। ये प्रयोगकर्ता बडे परिवार वाले है जो 3 या अधिक बच्चो के बाद बन्ध्याकरण कराये है। कण्डोम के सर्वाधिक प्रयोग कर्ता 3000-4000 आय-वर्ग मे एव न्यूनतम 2000-3000 आय--वर्ग मे क्रमश 29 72 प्रतिशत एव 11 76 प्रतिशत है। सर्वाधिक आई यू सी डी प्रयोग कर्ता 4000 से अधिक आय-वर्ग मे 18 96 प्रतिशत एव 1000 से कम आय-वर्ग मे 9 80 प्रतिशत है। सर्वाधिक गर्भ निरोधक गोलियो के प्रयोग कर्ता 4000 से अधिक आय वर्ग मे 32 75 प्रतिशत एव न्यूनतम 1000 से कम आय-वर्ग मे 7 84 प्रतिशत है। **(तालिका 7 9, चित्र 7 2 B)**

तालिका 7 9

मासिक आय एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियॉ

आयवर्ग	उत्तर दाताओ की सख्या	अप्रयोग कर्ता	प्रयोग कर्ता	नशबन्दी पुरुष	नशबन्दी स्त्री	नशबन्दी कुल	कण्डोम	आइ यू सी डी	गर्भ निरोधक गोलिया
1000 से कम	132	81	51	14	19	33	09	05	04
1000-2000	162	119	43	10	16	26	06	05	06
2000-3000	53	19	34	08	12	20	04	06	04
3000-4000	67	30	37	05	09	14	11	03	04
4000 से अधिक	86	28	58	05	15	20	08	04	19
योग	500	277	223	42	71	113	38	30	42

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

7.3.3 पति की शिक्षा एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियां-

शिक्षा का उत्पादकता दर पर निर्णायक प्रभाव पडता है। अशिक्षित व्यक्तियो के अधिक बच्चे तथा शिक्षित व्यक्तियो के कम बच्चे होते है। पति की शिक्षा एव परिवार कल्याण के प्रति अभिरूचियो को तालिका 7 10 मे प्रदर्शित किया गया है। 15 60 पत्नियो के पति अशिक्षित है। 13 40 प्रतिशत प्राथमिक स्तर तक, 17 00 प्रतिशत मिडिल, 19 60 हाईस्कूल, 24 20 इण्टरमीडिएट एव 10 20 प्रतिशत पति स्नातक या अधिक शिक्षा प्राप्त किये है। इन शैक्षिक वर्गो मे परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रयोग कर्ता क्रमश 16 66, 25 37, 60 00, 42 85, 47 93 तथा 82 35 प्रतिशत है।

तालिका 7 10

पति की शिक्षा एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियाँ

शैक्षिक स्तर	उत्तर दाताओ की सख्या	अप्रयोग कर्ता	प्रयोग कर्ता	नशबन्दी पुरुष	नशबन्दी स्त्री	नशबन्दी कुल	कण्डोम	आइ यू सी डी	गर्भ निरोधक गोलिया
अशिक्षित	78	65	13	05	08	13	--	--	--
प्राइमरी	67	50	17	05	10	15	--	--	02
मिडिल	85	34	51	08	17	25	09	07	10
हाईस्कूल	98	56	42	07	23	30	04	02	06
इण्टर-मीडिएट	121	63	58	16	10	26	10	11	11
स्नातक एव अन्य	51	19	42	01	03	04	08	10	06
योग	500	277	223	42	71	113	38	30	42

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

जिन उत्तरदाताओ के शिक्षा का स्तर उच्च है उनमे परिवार कल्याण कार्यक्रम विधियो के प्रयोग का स्तर उच्च है। अशिक्षित, प्राइमरी एव मिडिल स्तर के उत्तरदाताओ की नशबन्दी हो चुकी है, इन उत्तरदाताओ ने 2 या 3 बच्चो से अधिक होने पर नशबन्दी कराई है, जिसका प्रतिशत क्रमश 100, 88 23 एव 49 01 है। अशिक्षित लोगो मे अज्ञानता के कारण अन्य गर्भ निरोधको का प्रयोग नगण्य है। हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त प्रयोगकर्ताओं मे नशबन्दी 71 42 प्रतिशत, कण्डोम प्रयोगकर्ताओ का प्रतिशत 9 52, आई यू सी डी 4 76 एव गर्भ निरोधक गोलियो के प्रयोगकर्ता 14 28 प्रतिशत हैं। इण्टरमीडिएट स्तर तक शिक्षा प्राप्त लोगों की

नशबन्दी का प्रतिशत 44 82 है क्योकि ये अन्य विधियो का प्रयोग कर सीमित परिवार की भावना कापालन कर रहे है यही भावना स्नातको मे भी पाई गयी है। इण्टरमीडिएट शिक्षा स्तर तक के उत्तरदाताओ मे कण्डोम प्रयोगकर्ता 17 24 प्रतिशत एव आई यू सी डी तथा गर्भ निरोधक गोलियो के प्रयोग कर्ता 18 96 प्रतिशत है। स्नातक एव अन्य शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओ मे नशबन्दी कराने वालो का प्रतिशत 9 52 प्रतिशत जिसमे स्त्री नशबन्दी का प्रतिशत 7 14 प्रतिशत है तथा अन्य साधनो के प्रयोग कर्ताओ का प्रतिशत अधिक है जिसमे कण्डोम, आई यू सी डी एव गर्भ निरोधक गोलियो के प्रयोगकर्ता क्रमश 19 04, 23 80 एव 14 28 प्रतिशत है। (तालिका 7 10 एव चित्र 7 2 C)

7.3.4 पत्नी की शिक्षा एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचिया

शैक्षणिक स्तर तथा प्रजननता मे विलोम सह सम्बन्ध पाया जाता है, विशेषत स्त्रियो की शिक्षा इसमे अधिक सहायक है। भारत के 17 वे नेशनल सेम्पुल सर्वे से यह तथ्य सामने आया कि यदि स्त्री ने 12 वर्ष तक शिक्षा ग्रहण की है तो उसके 2 बच्चे, 10 वर्ष तक शिक्षा ग्रहण की है तो 5 बच्चे अशिक्षित होने की दशा मे 6 6 बच्चे । बी गार्नियर के अनुसार यू एस ए मे 4 वर्ष तक विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त स्त्री को औसतन 1 86 बच्चे, 3 06 या 4 82 बच्चे उन स्त्रियो के है जो कभी स्कूल नही गयी हैं। स्पष्टत स्त्रियो मे शैक्षिक स्तर उन्नत कर प्रजननता को कम किया जा सकता है, जागरुक होने पर वे स्वत ही छोटे परिवार को अपनाने लगती है।

तालिका 7 11

पत्नी की शिक्षा एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियाँ-

शैक्षिक स्तर	उत्तर दाताओ की सख्या	अप्रयोग कर्ता	प्रयोग कर्ता	नशबन्दी पुरुष	नशबन्दी स्त्री	नशबन्दी कुल	कण्डोम	आइ यू सी डी	गर्भ निरोधक गोलिया
अशिक्षित	199	134	65	17	23	40	07	11	07
प्राइमरी	124	78	46	12	17	29	06	,5	06
मिडिल	67	27	40	06	17	23	05	05	07
हाईस्कूल	54	23	31	05	09	14	07	04	06
इण्टर मीडिएट	41	13	28	02	05	07	06	05	10
अन्य	15	02	13	--	--	--	07	--	06
योग	500	277	223	42	71	113	38	30	42

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 20,02

DISTRICT GHAZIPUR
SOCIO-ECONOMIC DETERMINANTS OF FAMILY WEL FARE BEHAVIOUR
(A) OCCUPATION
(B) MONTHLY INCOME
(C) EDUCATIONAL STATUS (MALE)
(D) EDUCATIONAL (STATUS FEMALE)
Oral Pills
Condom
I U C D
Vesectomy
Tubectomy
Non Adopters
NUMBER OF RESPONDENTS
NO OF RESPONDENTS
Service
Cultivator
Labourer
Others
<1000
1000 2000
2000 3000
3000 4000
> 4000
Illiterate
Primary
Middle
High School
Intermediate
Graduate and Above
(On the basis of personal sample survey 2002)
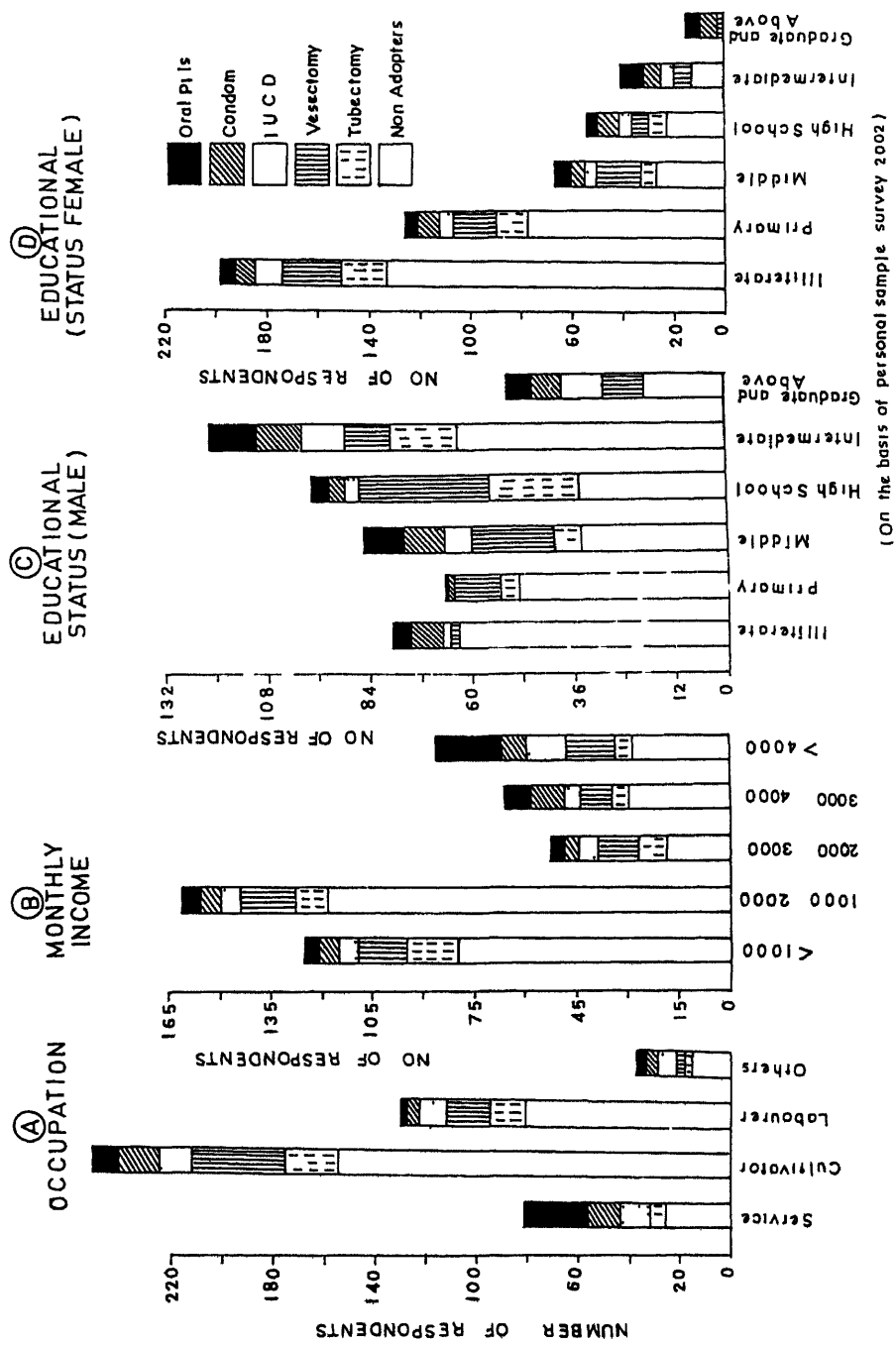
Fig 7 2

तालिका 7 11 से स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओ की 39 80 प्रतिशत पत्नियाँ अशिक्षित हे। प्राइमरी, मिडिल, हाईस्कूल, इण्डरमीडिएट, स्नातक एव अन्य मे क्रमश 24 80, 13 40, 10 80, 8 2 एव 3 0 प्रतिशत है। अशिक्षित उत्तरदाताओ मे 32 60 प्रतिशत परिवार कल्याण कार्यक्रम प्रयोग कर्ता है। इसमे कुल नशबन्दी 60 53 प्रतिशत जिसमे स्त्री नशबन्दी का प्रतिशत 35 38 है। कण्डोम, आई यू सी डी तथा गर्भ निरोधक गोलियो के प्रयोगकर्ता क्रमश 10 65, 16 92 एव 10 70 प्रतिशत है। अशिक्षित वर्ग मे नशबन्दी के अतिरिक्त अन्य विधियो के प्रयोग का मुख्य कारण इनके पतियो का शिक्षित होना है। प्राइमरी, मिडिल, हाईस्कूल, इण्डरमीडिएट एव स्नातक स्तरो पर प्रयोग कर्ताओ का प्रतिशत क्रमश 37 09, 59 70, 57 40, 68 29 एव 86 66 प्रतिशत है। सर्वाधिक नशबन्दी प्राइमरी एव मिडिल स्तर पर क्रमश 63 04 एव 52 27 प्रतिशत है। स्नातक एव अन्य स्तरो पर कोई नशबन्दी नही हुई है क्योकि ये उत्तरदाता कम उम्र वाले है जिन्हे 1 बच्चे है या नही है। हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट एव स्नातक स्तर पर परिवार कल्याण कार्यक्रम के अन्य विधियो का प्रयोग अधिक है क्योकि ये उत्तरदाता जागरुक है, ये दो बच्चो के बीच पर्याप्त अन्तर रखकर छोटे परिवार अपनाने की ओर उन्मुख हो रहे हैं। कण्डोम का प्रयोग सर्वाधिक स्नातक उत्तरदाताओ द्वारा किया गया है। आई यू सी डी का सर्वाधिक प्रयोग इण्टरमीडिएट स्तर पर 17 85 है क्योकि ये दो बच्चो के बाद दीर्घकालिक गर्भ-निरोध अपना रहे है। इसी प्रकार बच्चो मे अन्तर एव अभी सन्तान न होने पर भी इण्टरमीडिएट एव स्नातक स्तर पर गर्भ निरोधक गोलियो का प्रयोग क्रमश 35 71 एव 46 15 प्रतिशत है। **(तालिका 7 1 1 एव चित्र 7 2 D)**

7.4 जनांकिकी कारक-

अभिनव अध्ययन यह प्रमाणित करते है कि जनाकिकी कारको का परिवार कल्याण कार्यक्रम की सफलता पर अवश्यमभावी प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन मे परिवार कल्याण कार्यक्रम विधियो की स्वीकार्यता पर विवाह के समय दम्पति की आयु, अगीकरण के समय दम्पति की आयु, एव जीवित बच्चो की सख्या का परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियो से सन्दर्भित अध्ययन किया गया है-

7 4.1 विवाह के समय पति की आयु एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियां-

भारत के सन्दर्भ में यह सत्य है कि अपेक्षाकृत निम्न सामाजिक स्तर के कारण अल्प-वयस्को का विवाह हो जाता है, जबकि उच्च शैक्षणिक-स्तर और विकसित अर्थव्यवस्था वाले समूहो मे अपेक्षाकृत अधिक आयु मे विवाह होता है। (यादव एच एल 1997) विवाह की आयु

मे वृद्धि प्रजननता को कम करती है। विवाह के समय पुरुषो की आयु एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियो को तालिका 7 12 मे प्रदर्शित किया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि 55 20 प्रतिशत उत्तरदाताओ का विवाह 21 वर्ष की उम्र मे हो चुका है, 20-23 वर्ष की उम्र मे 29 40 प्रतिशत तथा 23 वर्ष से अधिक उम्र मे 17 40 प्रतिशत का विवाह हुआ है। कम उम्र मे विवाह उच्च प्रजनन दर को प्रदर्शित करता है। सर्वाधिक बध्याकरण 20-23 आयु वर्ग मे 61 53 प्रतिशत है एव न्यूनतम 23 वर्ष के बाद 23 72 प्रतिशत, कण्डोम के सर्वाधिक प्रयोगकर्ता 23 वर्ष से अधिक आयु वर्ग मे 32 20, एव आई यू सी डी 15 28 तथा गर्भ निरोधक गोलियो के 28 81 प्रतिशत प्रयोगकर्ता हैं। ये वे उत्तरदाता हैं जिनके पास एक या दो बच्चे है तथा वे बच्चो मे अतराल रखने के लिये इन विधियो का प्रयोग करते हैं। इन विधियो के न्यून प्रयोग कर्ताओ मे वह उत्तरदाता सम्मिलित है जो 40 वर्ष से अधिक हैं जो नशबन्दी से सुरक्षित है तथा कुछ अज्ञानता वश इन विधियो का प्रयोग नही करते।

तालिका 7 12

विवाह के समय पति की आयु एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियॉ

आयु	उत्तरदाताओ की सख्या	अप्रयोग कर्ता	प्रयोग कर्ता	नशबन्दी पुरुष	नशबन्दी स्त्री	कुल	कण्डोम	आई यू सी डी	गर्भ निरोधक गोलिया
21 से कम	276	164	112	26	41	67	11	19	15
20-23	147	95	52	10	22	32	8	02	10
23 से अधिक	87	28	59	06	08	14	19	09	17
योग	500	277	223	42	71	113	38	30	42

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

7 4 2 विवाह के समय पत्नी की आयु एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियॉ-

परिवार कल्याण कार्यक्रम के स्तर निर्धारक जनाकिकी कारको में विवाह के समय महिला की उम्र का नितान्त प्रभाव पड़ता है। अल्पायु मे विवाह होने पर बार-बार गर्भधारण के कारण मातृ-शिशु मृत्यु दर मे वृद्धि होती है। महिलाओ की विवाह आयु में वृद्धि के लिए उनकी शिक्षा, आधुनिक दृष्टिकोण, छोटे परिवार की महत्ता एव जन जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए।

प्रस्तुत अध्ययन मे इस सकल्पना का पता लगाया गया है कि क्या महिला की विवाह आयु मे वृद्धि से परिवार कल्याण कार्यक्रम पर सकारात्मक प्रभाव पडता है?

तालिका 7 13

विवाह के समय पत्नी की आयु एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियाँ

आयु-वर्ग	उत्तर-दाताओ की सख्या	अप्रयोग कर्ता	प्रयोग कर्ता	पुरुष	नशबन्दी स्त्री	कुल	कण्डोम	आइ यू सी डी	गर्भ निरोधक गोलिया
18 से कम	235	149	86	17	41	58	11	08	09
18-20	169	98	71	18	21	39	10	12	10
20 से अधिक	96	30	66	07	09	16	17	10	23
योग	500	277	223	42	71	113	38	30	42

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

तालिका 7 13 से स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओ मे से 47 प्रतिशत पत्नियो का विवाह 18 वर्ष से कम उम्र मे ही हो गया है। 33 80 प्रतिशत का 18 20 वर्ष की उम्र मे एव शेष का 20 वर्ष से अधिक उम्र मे विवाह हुआ है। इन आयु वर्गो मे परिवार कल्याण कार्यक्रम विधियो के प्रयोग कर्ताओ का प्रतिशत क्रमश 52 6, 57 9 एव 31 25 प्रतिशत रहा है। सर्वाधिक बन्ध्याकरण 18 वर्ष से कम उम्र मे विवाह होने वालो मे 60 40 प्रतिशत क्योकि कम उम्र मे विवाह होने पर इन्हे अधिक बच्चे पैदा करने का अवसर सुलभ हो जाता है, इनके औसत 4 से अधिक बच्चे है फलत ये अधिक सुरक्षित विधि का प्रयोग करते है। 18-20 आयु–वर्ग मे बन्ध्याकरण का प्रतिशत 54 92 जिसमे महिला बन्ध्याकरण 29 57 प्रतिशत है। इस आयु-वर्ग मे कण्डोम, आई यू सी डी तथा गर्भ निरोधक गोलियों के प्रयोगकर्ता क्रमश 14 08, 16 90 एव 14 08 प्रतिशत है। 20 से अधिक आयु-वर्ग मे नशबन्दी का प्रतिशत सबसे कम 24 24 एव अन्य विधियो के प्रयोग कर्ताओ का प्रतिशत सर्वाधिक है क्योकि इनके पास 1 या 2 बच्चे है तथा ये बच्चो मे अन्तराल के लिए दीर्घकालिक गर्भनिरोधको का प्रयोग कर रहे हैं। **(तालिका 7 13 चित्र 7 3 A)**

7 4.3 अंगीकरण के समय पति की आयु एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियॉ-

परिवार कल्याण कार्यक्रम की सफलता इस अवधारणा पर भी आधारित है कि गर्भ-निरोधको के प्रयोग के समय प्रयोगकर्ता की उम्र क्या थी। प्रयोग के समय यदि उसकी उम्र 40 या 50 वर्ष से अधिक थी तो कार्यक्रम की सफलता पर कोई विशेष प्रभाव नही पड़ता है। तालिका 7 14 मे पति की उम्र एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियो को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 7 14

अगीकरण के समय पति की उम्र एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियॉ

आयु वर्ग	उत्तर-दाताओ की सख्या	अप्रयोग कर्ता	प्रयोग कर्ता	नशबन्दी पुरुष	नशबन्दी स्त्री	नशबन्दी कुल	कण्डोम	आई यू सी डी	गर्भ निरोधक गोलिया
21-30	150	71	79	06	15	21	03	01	05
31-40	176	89	67	15	24	39	13	08	22
41-50	118	65	53	15	20	35	22	15	12
50 से अधिक	56	32	24	06	12	18	--	06	03
योग	500	277	223	42	71	43	38	30	42

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

तालिका 7 14 से स्पष्ट है कि 21-30, 31-40, 41-50 एव 50 से अधिक की आयु मे क्रमश 29 03, 52 47, 48 47 एव 27 88 प्रतिशत उत्तरदाता परिवार कल्याण कार्यक्रम विधियो के प्रयोग कर्ता है। सर्वाधिक 75 00 प्रतिशत नशबन्दी 50 से अधिक आयु वर्ग मे है क्योकि प्रोत्साहन राशि प्राप्त करने के लिए लोगो ने नशबन्दी कराई है। सबसे कम नशबन्दी 21-30 आयु वर्ग मे 26 58 प्रतिशत है। 31-40 एव 41-50 आयु वर्ग मे नशबन्दी का प्रतिशत क्रमश 58 20 एव 66 03 प्रतिशत है। सर्वाधिक कण्डोम प्रयोग कर्ता 21-30 आयु वर्ग मे है तथा आई यू सी डी एव गर्भ निरोधक गोलियो के प्रयोग कर्ता क्रमश 16 45 एव 18 98 प्रतिशत है। 31-40 आयु वर्ग मे नशबन्दी, कण्डोम, आई यू सी डी तथा गर्भनिरोधक गोलियो के प्रयोगकर्ता क्रमश 5 97, 4 47 एव 31 34 प्रतिशत हैं। 41-50 आयु वर्ग मे नशबन्दी

कराने वालो का प्रतिशत 66 03 है। कण्डोम आई यू सी डी, एव गर्भनिरोधक गोलियो के प्रयोग कर्ता क्रमश 7 54, 15 09 एव 11 32 प्रतिशत है। (**चित्र 7 3 B तालिका 7 14**)

7.4.4 अंगीकरण के समय पत्नी की आयु एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियॉ-

पत्नी की आयु एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियो को तालिका 7 15 एव चित्र 7 3 C मे प्रदर्शित किया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि 21 से कम, 21-30, 31-40 तथा 41-50 आयु वर्ग मे परिवार कल्याण कार्यक्रम विधियो के प्रयोग कर्ताओ का प्रतिशत क्रमश 29 03, 52 47, 48 46 एव 27 88 प्रतिशत है। सबसे अधिक नशबन्दी 41-50 आयु वर्ग की पत्नियो की हुई है (68 96 प्रतिशत) क्योकि इस उम्र मे उनके अधिक बच्चे हो गये होते है फलत वे कार्यक्रम से अधिक लाभान्वित होती है। अस्थाई गर्भ निरोधको के सर्वाधिक प्रयोगकर्ता 21 से कम आयु वर्ग मे हैं। क्योकि इन पत्नियो के पास कम बच्चे है तथा बच्चो के अन्तराल के लिए इन विधियो का प्रयोग करती है।

तालिका 7 15

अगीकरण के समय पत्नी की आयु एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियाँ

आयु वर्ग	उत्तर-दाताओ की सख्या	अप्रयोग कर्ता	प्रयोग कर्ता	नशबन्दी पुरुष	नशबन्दी स्त्री	नशबन्दी कुल	कण्डोम	आइ यू सी डी	गर्भ निरोधक गोलिया
21 से कम	31	22	09	--	--	--	03	01	05
21-30	202	96	106	21	42	63	13	08	22
31-40	163	84	79	12	19	30	22	15	12
41-50	104	75	29	09	11	20	--	06	03
योग	500	277	223	42	71	113	38	30	42

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

DISTRICT GHAZIPUR
DEMOGRAPHIC DETERMINANTS OF FAMILY WEL FARE BEHAVIOUR
A
WIFE S AGE AT MARRAGE (IN YEAR)
TUBECTOMY
VESECTOMY
I U C D
CONDOM
ORAL PILLS
NON ADOPTERS
B
AGE OF HUSBAND (IN YEAR)
C
AGE OF WIFE (IN YEAR)
D
SEX-COMBINATION OF LIVING CHILDREN
NO OF RESPONDENTS
< 18
18 - 20
> 20
21 - 30
31 - 40
41 - 50
> 50
<21
21 - 30
31 - 40
> 40
1M+NO F
NOM+1F
2M+NO F
2M+1F
1M+1F
3M+NO F
3M ≥ F
4M + 1F
4M ≥ 1F
5M < M
5M ≥ F
(On the basis of personal sample survey 2002)
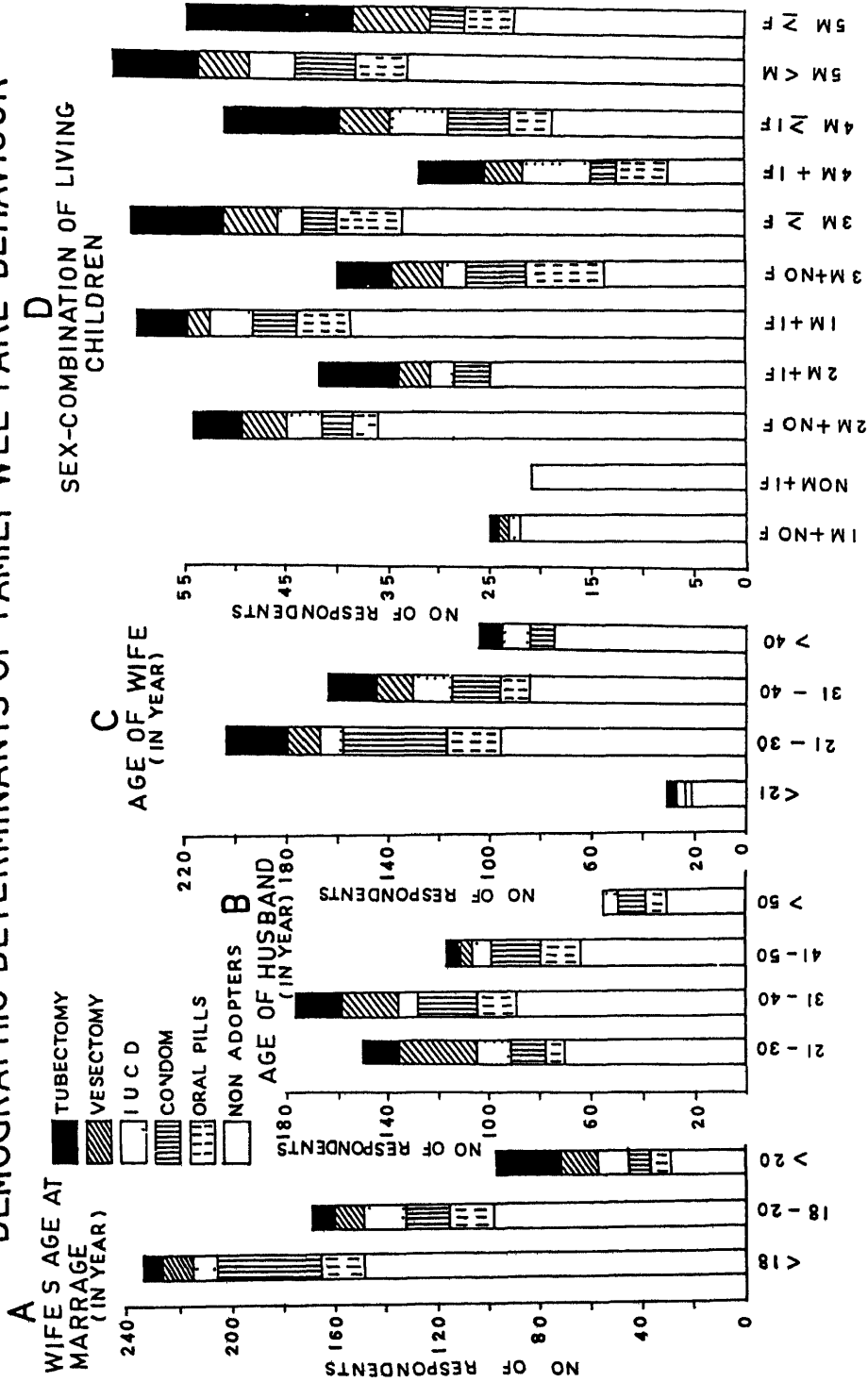
Fig 7 3

7 4.5 जीवित बच्चों की संख्या एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियाॅ-

अध्ययन क्षेत्र मे जीवित पुरुष बच्चो के साथ परिवार कल्याण कार्यक्रम का धनात्मक सम्बन्ध पाया गया है। तालिका 7 16 से स्पष्ट है कि जिन दम्पतियो के पास 4 पुरुष एव 1 स्त्री बच्चो का सयोजन है वे सर्वाधिक परिवार कल्याण कार्यक्रम विधियो को अपनाये है (78 12 प्रतिशत), इसके विपरीत जिनके पास 1 स्त्री शिशु है वे सभी अप्रयोगकर्ता है। इसी प्रकार जिनके पास 2 पुरुष एव 1 स्त्री बच्चे हैं उनमे प्रयोग कर्ताओ का प्रतिशत 40 47 है। जिन दम्पतियो के पास पर्याप्त लड़के एव लड़कियाँ है वे स्थाई गर्भ निरोधको के प्रयोगकर्ता है। जबकि जिनके पास अभी लड़के नही है वे अस्थाई विधियो को अपनाये हुए है। **(तालिका 7 16, चित्र 7 3 D)**

तालिका 7 16

जीवित बच्चो की सख्या एव परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियाँ

जीवित बच्चे पुरुष	स्त्री	उत्तर दाताओ की सख्या	अप्रयोग कर्ता	प्रयोग कर्ता	नशबन्दी पुरुष	नशबन्दी स्त्री	नशबन्दी कुल	कण्डोम	आइ यू सी डी	गर्भ निरोधक गोलियाँ
1	0	25	22	03	--	--	--	01	01	01
	0	21	21	--	--	--	--	--	--	--
2	0	54	36	18	04	06	10	03	03	01
2	1	42	25	17	03	08	11	03	02	01
1	1	59	39	20	02	05	07	04	04	05
3	0	40	13	27	05	06	11	06	02	08
कुल 3≥		60	34	26	05	09	14	03	02	06
4	1	32	07	25	04	05	09	03	07	05
4≥	4	51	18	33	05	12	17	06	06	04
कुल 5 <		62	33	29	07	08	15	06	03	05
कुल 5 ≥		54	27	27	07	12	19	03	00	05
योग		500	277	223	49	71	113	38	30	42

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

7.5 परिवार कल्याण कार्यक्रम न अपनाने के कारण-

'परिवार कल्याण कार्यक्रम' को न अपनाने के विभिन्न कारणो मे धार्मिक भावना, अधिक पुत्र प्राप्ति की इच्छा, अज्ञानता, स्वास्थ्य समस्या, एव बच्चो को ईश्वरीय वरदान समझना है। धार्मिक कारणो से 14 80 प्रतिशत उत्तरदाता गर्भनिरोधक विधियो को नही अपनाते इसमे अधिकाश मुस्लिम समुदाय के लोग है। स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणो एव गर्भ निरोधको के दुष्प्रभाव की मिथ्या डर के कारण क्रमश 9 47 एव 24 91 प्रतिशत लोग इन विधियो को नही अपानते है। 16 20 प्रतिशत लोगो मे जानकारी का अभाव पाया गया। 27 07 प्रतिशत उत्तरदाता कम पुत्रो के कारण गर्भनिरोधको का प्रयोग नही करते, इनमे अधिकाश अशिक्षित एव निर्धन उत्तरदाता है। तालिका 7 17

तालिका 7 17

परिवार कल्याण कार्यक्रम न अपनाने के कारण

कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
धार्मि प्रवृत्ति	41	14 90
स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या	27	9 74
अपनाने मे कठिनाई	69	24 91
कम लड़के	75	27 07
जानकारी नही	45	16 20
कोई उत्तर नही	20	7 20
योग	277	100 00

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2002

उपरोक्त विवचनो के आधार पर यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि लोग आज भी सर्वाधिक वरीयता पुत्र को ही दे रहे है, यह भ्रमात्मक धारणा है कि अधिक पुत्र होने पर कुछ के मर जाने पर भी कुछ जीवित तो रहेगे। एक पुत्र वाले कतिपय अशिक्षित उत्तरदाताओ द्वारा उन्ही की भाषा मे 'भइया एक आँख के कौन भरोसा' अर्थात कम से कम दो पुत्र तो होने ही चाहिए। अत स्वास्थ्य सेवाओं मे सुधार, स्त्री शिक्षा, वृद्धावस्था मे असुरक्षा की भावना कम करने सम्बन्धी कार्यक्रमो को सम्पूर्ण समर्पण एव ईमानदारी के साथ चलाया जाना चाहिए। जो लोग जानकारी के अभाव मे परिवार कल्याण कार्यक्रम से लाभान्वित नही हो रहे उन्हे ए एन एम एव सम्बद्ध कर्मचारियो द्वारा जानकारी दी जानी चाहिए।

REFERENCES

1 Abusaleh S (1989) ``Demography of Indıa" Journal of Indıan Assocıatıon Study of Populatıon vol 18 P1

2 Bose A (1988) ``Indıa's Quest for Populatıon Stabılısatıon Progress Pılfalls and Polıcy Optıons", Lecture Delıvered by Author at Bonn, Germany Quated ın Demography of Indıa vol 18 P 268

3 Cartwııght A (1970) ` Parents and Famıly Plannıng Servıces" Routledge and Kegan Poul London

4 Devı Gayatrı (1994) ``Gramın Parıvaron Maın Swasthya Parıcharya Ka Samaj Vagyanık Adhyayan" Classıcal Publıshıng Co New Delhı P 12

5 Khan M E (1979) ``Famıly Plannıng Among Muslıms ın Indıa" New Delhı Mankar Publıcatıons

6 Ojha R (1983) ``Populatıon Geography" (ın Hındı) Pratıbha Prakashan Kanpur P 324

7 Srıvastava K C (2000) Ancıent Indıan Hıstory and Culture (ın HIndı) Unıted Book Dıpot Unıversıty Road Allahabad P 167

8 Sıngh M B and Dubey K K (2001) Populatıon Geography" (ın Hındı) Rawat Publıcatıons Jaıpur P 274

9 Unıted Natıons (1961) Mysore Populatıon Study (ST/SOA/A/34) New York

10 Yadav H L (1997) ``Populatıon Geography" (ın Hındı) Vasundhara Prakashan Gorakhpur P 198

❑ **अध्याय 8**

जनसंख्या समस्या एवं नियोजन

मानव स्वयमेय महत्वपूर्ण ससाधन है, किन्तु इसकी अधिकता विविध समस्याओं का कारण बन गयी है। निरन्तर बढती जनसख्या आज देश की सबसे बडी समस्या है जिसे नियन्त्रित किये बिना सामाजिक न्याय, समानता और बेहतर जीवन स्तर के लक्ष्य को प्राप्त करना सम्भव नही है। वर्तमान विकास योजनाए बढती आवश्यकताओं की पूर्ति नही कर सकेगी। यदि जनसख्या वृद्धि की यही रफ्तार रही तो खाद्य, वस्त्र, आवास तथा पेय जल की समस्याए विकराल हो जायेगी। शिक्षा, चिकित्सा तथा रोजगार की समस्याए बढेगी। प्रत्येक वर्ष 66 हजार नये प्राथमिक स्कूल खोलने होगे, अनाज का उत्पादन बढाना होगा तथा प्रत्येक वर्ष कृषि क्षेत्र मे 30 लाख लोगो को तथा गैर कृषि क्षेत्र मे 50 लाख लोगो को रोजगार देना होगा। जनगणना 2001 के अनुसार भारत की जनसख्या एक अरब को पार कर चुकी है, इसके मद्देनजर केन्द्र सरकार द्वारा एक राष्ट्रीय जनसख्या आयोग का गठन किया जा चुका है, जिसका लक्ष्य 2045 तक जनसख्या को स्थिर कर देना है। वस्तुत जनसख्या समस्या कई स्तरो पर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन को प्रभावित कर रही है, इसके समाधान पर ही 21 वी सदी का स्वरूप निर्भर करेगा।

जनपद गाजीपुर की तीव्र गति से बढती जनसख्या, भूमि उपगोग मे अव्यवस्था, परम्परागत कृषि व्यवस्था, अशिक्षा एव तकनीकी अज्ञानता आदि इसके विकास मे बाधक है। भूमि ससाधन पर निरन्तर बढता जनभार न केवल खाद्य समस्या को जन्म देता है, अपितु आने वाली पीढियो को न्यूनतम जीवन स्तर व्यतीत करने को भी बाध्य कर रहा है।

8.1 जनसंख्या समस्याएं-

8 1 1 भूमि पर जनसंख्या का दबाव-

जनसख्या दबाव का तात्पर्य किसी क्षेत्र की जनसख्या एव उपलब्ध ससाधनो का अनुपात है। जनपद में बढ़ती हुई जनसख्या के फलस्वरूप भूमि पर जनसख्या दबाव बढता जा रहा है।

तालिका 8 1 से स्पष्ट हैकि 1961 मे प्रति व्यक्ति भूमि उपलब्धता 0 255 हेक्टेयर थी जो 2001 मे घटकर 0 111 हो गयी। इसी प्रकार कृषिगत क्षेत्रफल, शुद्ध बोई गयी भूमि, सकल बोई गयी भूमि, एक से अधिक बार बोई गयी भूमि, शुद्ध सिचित भूमि की उपलब्धता मे ह्रास का नैरन्तर्य बना हुआ है। खाद्यान्नो के अन्तर्गत प्रति व्यक्ति भूमि उपलब्धता मे उतार-चढाव देखने को मिल रहा है।

तालिका 8 1

प्रति व्यक्ति भूमि उपलब्धता (हेक्टेयर मे)

वर्ष	कुल भौगोलिक क्षेत्रफल	कृषिगत क्षेत्रफल	शुद्ध बोई गयी भूमि	सकल बोई गयी भूमि	एक से अधिक बार बोई गयी	शुद्ध सिचित भूमि	खाद्यान्नो के अन्तर्गत भूमि
1961	0 255	0 240	0 198	0 236	0 053	0 071	0 131
1971	0 219	0 215	0 176	0 212	0 052	0 079	0 152
1981	0 171	0 169	0 132	0 170	0 053	0 086	0 155
1991	0 138	0 136	0 108	0 138	0 052	0 070	0 144
2001	0 111	0 086	0 086	0 132	0 045	0 069	0 116

स्रोत- जिला जनगणना सार पुस्तिका 1961, 1971, 1981, 1991 एव साख्यिकी पत्रिका 2000 तथा प्राविजनल पापुलेशन टोटल्स 2001

भारत मे प्रतिव्यक्ति कृषि योग्य भूमि उपलब्धता 0 20 हेक्टेयर विश्व में 4 5 हेक्टेयर तथा जनपद मे 0 086 हेक्टेयर है जो जनपद मे अधिक जनसख्या दबाव का प्रमाण है। (क्रॉनिकल अप्रैल 2002) जनपद का जनसख्या घनत्व 2001 मे 903, उत्तर प्रदेश का 689 एव भारत का 324 रहा। स्पष्टत जनपद मे प्रात एव राष्ट्र की तुलना मे क्रमश 214 एव 579 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी अधिक हैं। जनपद के कृषि ससाधनो तथा जनसख्या के दबाव के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कार्यशील जनसख्या रोजगार एव भरण पोषण के लिए नगरो की ओर प्रस्थान कर रही है। फलत नगरों में जनाधिक्य की समस्या, तथा मलिनावासो की समस्या उत्पन्न हो रही हे।

8.1 2 जनसंख्या दबाव एवं खाद्य आपूर्ति-

जनपद में जनसंख्या दबाव मुख्यत कृषि ससाधनों पर निर्भर है। सन् 2011 एव 2021 में जनपद की जनसख्या हेतु क्रमश 7 137 एव 9 706 लाख मीटरी टन धान की आवश्यकता

होगी। दाल, हरी सब्जी, दूध, फल इत्यादि खाद्य पदार्थों की आवश्यकता का अनुमान तालिका 8 2 मे प्रदर्शित किया गया है। प्रो मुखर्जी के अनुसार 5 प्रौढ व्यक्तियो वाले परिवार के भरण पोषण के लिए 2 हेक्टेयर शुद्ध बोया गया क्षेत्र अनुकूल होता है जबकि जनपद मे 5 व्यक्तियो पर 2001 मे 0 345 हेक्टेयर शुद्ध बोया गया क्षेत्र उपलब्ध है जो उपरोक्त मान्यता के अनुसार कम है।

तालिका 8 2

खाद्य पदार्थ	प्रतिव्यक्ति आवश्यकता		कुल आवश्यकता (लाख मीटरी टनो मे)			
	प्रतिदिन (ग्राम)	प्रतिवर्ष (कुन्तल)	1991	2001	2011	2021
धान	480	1 75	4 233	5 342	7 137	9 706
दाल	70	0 255	0 616	0 777	1 030	1 ,412
हरी सब्जी	150	0 547	1 323	1 665	2 228	3 030
अन्य सब्जिया	150	0 547	1 323	1 665	2 228	3 030
दूध	250	0 912	1 321	2 783	3 712	5 052
अण्डा, मास, मछली	50	0 182	2 203	0 554	0 741	1 008
तिल एव वसा	40	0 146	0 439	0 445	0 594	1 008
चीनी तथा गुड	40	0 146	0 352	0 445	0 594	0 808
फल	50	0 182	1 20	0 54	0 741	1 008

8 1.3 तीव्र जनसंख्या वृद्धि-

अर्थ शास्त्र के जनक एडम स्मिथ ने 1776 मे अपनी पुस्तक 'वेल्थ आफ नेशन' मे जनसख्या को आर्थिक विकास के लिए लाभदायक माना क्योकि जनसख्या माग और पूर्ति का निर्णायक तत्व है। इस विचारधारा का समर्थन 'प्रो हैन्सन', 'लुइस', प्रो हर्षमेन, आदि अर्थशास्त्रियो किया। इसके विपरीत प्रो विलाई, प्रो आर्थर, प्रो सिगर आदि अर्थशास्त्रियो ने बताया कि बढती हुई जनसख्या, विकास पर बुरा प्रभाव डालती है तथा बोझ बनकर सामने आती है। (प्रतियोगिता दर्पण अक्टूबर 2000) उपरोक्त विचारधाराओं के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट है कि विकासशील देशो मे बढ़ती हुई जनसख्या आर्थिक विकास मे बाधक है। जनपद में 1901 मे कुल जनसख्या 8,57,830 थी जो 2001 मे 30,49,337 हो गयी। 1901 से 1951

की अवधि मे 2,43,102 की वृद्धि तथा 1951 से 2001 मे 19,48,405 की वृद्धि हुई इसका मुख्य कारण स्वास्थ्य सुविधाओं मे सुधार से मृत्युदर मे कमी आना है। जनपद मे 1951-61 के दशक मे 25 64, 1961-71, 1981-91 एव 1991-2001 मे जनसख्या की दशकीय वृद्धि क्रमश 14 58, 22 40, 25 01 तथा 25 82 प्रतिशत रही। इसी प्रकार नगरीय जनसख्या मे 1961-71, 1971-81, 1981-91 एव 1991-2001 मे क्रमश 52 80, 123 60, 15 57 एव 30 67 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। फलत कृषियोग्य भूमि का निवास के लिए अधिग्रहण, बढता हुआ भूमि मूल्य, पेयजल समस्या, प्रदूषण आदि समस्याए उत्पन्न हो रही है। ग्रामीण- नगरीय स्थानान्तरण से सामाजिक-आर्थिक सुविधाए कम हो रही है।

8 1.4 निर्भर जनसंख्या में वृद्धि-

जनपद गाजीपुर मे आयु–लिंग पिरामिड का आधार विकास शील देशो की भाति चौडा है तथा शीर्ष पतला जो जनसख्या में तीव्र वृद्धि के कारण है क्योकि शिशु-मृत्यु-दर मे ह्रास की अपेक्षा जन्मदर मे अल्प ह्रास हुआ है। जनपद मे जनसख्या का निर्भरता अनुपात 1971, 1981, 1991 मे क्रमश 142 00, 141 00 एव 140 34 प्रतिशत है। जनपद मे कार्यशील जनसख्या पर दवाब अधिक है फलत सामाजिक आर्थिक विकास अवरूद्ध हो रहा है।

8.1.5 निम्न लिंगानुपात-

2001 की जनगणनानुसार जनपद का लिगानुपात 974 है, जबक उत्तर प्रदेश एव भारत का लिगानुपात क्रमश 898 एव 933 है। यद्यपि यह प्रदेश एव देश के अनुपात से अधिक है लेकिन सन्तुलित नही है क्योकि लिगानुपात मे सन्तुलन जनाकिकी सरचना का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

8.1.6 अल्प साक्षरता-

अशिक्षा और निरक्षरता से न केवल उत्पादकता पर असर पड़ता है बल्कि इससे समाज की सास्कृतिक प्रगति और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग भी अवरूद्ध हो जाता है। सितम्बर 1984 मे मैक्सिको मे हुए 'विश्व जनसख्या सम्मेलन' मे साक्षरता को जनसख्या नियन्त्रण का एक प्रमुख अस्त्र स्वीकार किया गया। साक्षरता एक गुणात्मक तत्व है जो किसी क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास का द्योतक है। जनपद की साक्षरता 2001 मे 60 06 प्रतिशत है जिसमें पुरुष एव महिला

साक्षरता क्रमश 75 45 एव 44 39 प्रतिशत है। उत्तर प्रदेश की कुल, पुरुष एव महिला साक्षरता क्रमश 57 36, 70 23 एव 42 98 है तथा भारत की 65 38, 75 85 एव 54 16 है। जनपद मे पुरुष एव महिला साक्षरता मे पर्याप्त असतुलन है फलत निम्न जीवन स्तर, एव अनेक सामाजिक–आर्थिक समस्याओं का प्रादुर्भाव हो रहा है। अध्ययन क्षेत्र मे न्यून साक्षरता के प्रमुख कारणो मे साक्षरता के महत्व की अवहेलना, निम्न प्रति व्यक्ति आय, निम्न जीवन स्तर, एव अन्य समाज- आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याए है।

8.1 7 अल्पायु- विवाह-

1991 की जनगणना के अनुसार जनपद मे 10-19 आयुवर्ग मे 12 69 पुरुष एव 28 80 प्रतिशत स्त्रियाँ विवाहित है। अल्पायु मे विवाह का कारण सामाजिक, आर्थिक एव सास्कृतिक पिछड़ा पन है। जनगणना मे 9 वर्ष से कम आयु वर्ग को अविवाहित श्रेणी मे रखा गया है लेकिन चयनित गावो के सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि अभी भी कुम्हार, लोहार, गोड़ तथा अनुसूचित जातियो मे 9 वर्ष से कम उम्र मे विवाह हो रहे है। अल्पायु मे विवाह से अनुत्तम स्वास्थ्य एव मातृ-शिशु मृत्युदर मे वृद्धि होती है इसके अतिरिक्त अल्पायु से ही पारिवारिक उत्तरदायित्व वहन करने से मानसिक अवसाद एव आर्थिक कठिनाइया आती है।

8.1 8 व्यावसायिक असन्तुलन-

जनपद की कार्यरत जनसख्या 27 01 प्रतिशत है, प्रात की 29 22 प्रतिशत एव राष्ट्र की 37 68 प्रतिशत है। स्पष्ट है कि यह प्रात एव राष्ट्र की तुलना मे कम है। जनपद की कार्यरत जनसख्या मे कृषको का प्रतिशत 53 17 प्रतिशत है, कृषक मजदूरो का प्रतिशत 25 95 तथा उद्योग एव निर्माण कार्य मे लगे लोगो का प्रतिशत 5 32 एव अन्य कार्यों मे 15 56 प्रतिशत लोग लगे हैं। ये आकड़े जनपद को कृषि अर्थतत्रीय प्रमाणित करते है। जह उच्च जन्मदर के कारण रोजगार सम्भावनाए कम हो रही है। फलत लोग अन्य प्रातो एव नगरो की ओर पलायन कर रहे है।

8.1.9 अनुसूचित–जाति-

जनपद मे अन्य जातियो की अपेक्षा अनुसूचित जातिया सामाजिक आर्थिक स्तर मे अत्यन्त पिछड़ी है। जनपद में ये कम भूमि धारक एव कृषक मजदूरो के रूप मे है। इनके उत्थान हेतु विभिन्न कार्यक्रमों के बावजूद इनके सामाजिक तथा आर्थिक स्तर मे विकास हुआ है लेकिन अभी अपेक्षित

विकास की आवश्यकता है। अभी भी इनके लिए अधिक बच्चे धनोपार्जन का साधन माने जाते है।

8.2 जनपद का विकास–स्तर- (2001)-

जनपद के विकास स्तरो का निर्धारण तीस विभिन्न अवयवो को लेकर परिकलित कर किया गया है। विकास स्तरो के परिसीमन हेतु इन अवयवो की सहायता से मानक सख्याओं की गणना की गयी है। तदुपरान्त प्रत्येक विकास खण्ड औसत मानक सख्या के आधार पर मध्यमान एव मानक विचलन के द्वारा विकास स्तरो का निर्धारण किया गया है। जनपद का सबसे विकसित विकास खण्ड मुहम्मदाबाद एव सबसे पिछडा विकास खड भावरकोल है।

8 2.1 निम्न श्रेणी-

(95 से कम) के अन्तर्गत 5 विकास खड आते है यथा देवकली (91 90), कासिमाबाद (93 60), भावरकोल (77 90), जमानियाँ (89 90), रेवतीपुर (82 40) (परिशिष्ट 8 1)

8.2 2 मध्यम श्रेणी-

(95-110) इस श्रेणी मे जनपद के 8 विकास खड आते है। यथा मनिहारी (101 90), सादात (101 60), सैदपुर (105 40), बिरनो (109 60), मरदह (107 40), करण्डा (99 01), बाराचवर (95 80) तथा भदौरा (96 60) आते हैं। (परिशिष्ट 8 1)।

8.2.3 उच्च श्रेणी–

(110-120) इसमे जनपद के दो विकास खड जखनिया (110 60), एव गाजीपुर (115 00) आते हैं। (परिशिष्ट 8 1)

8.2.4 अति उच्च श्रेणी-

(120 से अधिक) के अन्तर्गत केवल एक विकास खड मुहम्मदाबाद 122 90 आता है। (परिशिष्ट 8 1)

8.3 परिवार कल्याण कार्यक्रम से सम्बद्ध समस्याए-

तीव्र जनसख्या जनसख्या वृद्धि, तज्जनित समस्याए एव उनके निदान सम्भवत हमारे सामने विद्यमान प्रश्नो मे अत्यत ज्वलन्त एव महत्वपूर्ण है। (गोष्ठी रिपोर्ट 1988) जनसख्या का अनवरत बढता दबाव, ससाधन ह्रास, पर्यावरणीय ह्रास एव निम्न विकास गति का कारण है। भारत के नीति निर्माताओं ने जनसख्या नियन्त्रण के महत्व को बहुत पहले ही 1951-52 मे ही पूर्ण रुपेण समझ लिया था। उत्तर-स्वतत्रता काल मे मृत्यु दर को स्वास्थ्य सुविधाओं मे सुधार से कम कर लिया गया तथा गर्भ निरोधको के प्रयोग से सदर्भित परिवार कल्याण कार्यक्रमो की असफलता एव उपस्थित सामाजिक आर्थिक समस्याओं के कारण जन्मदर नियन्त्रण पर अपेक्षित सफलता नही मिल पायी फलत जनसख्या विस्फोट से सधृत विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। परिवार कल्याण कार्यक्रम की सफलता सेवाओं की आपूर्ति, सरलतम पहुच एव गर्भ निरोधको की जानकारी पर निर्भर करती है। परिवार कल्याण कार्यक्रम विधियो की माग का अवबोध कर लोगो की जन्म नियन्त्रण एव छोटे परिवार के प्रति अभिरुचियो का पता लगाया जाये। (बोस ए 1998) परिवार कल्याण कार्यक्रम सेवाओं की आपूर्ति के निर्धारक कारको मे राजनीतिक इच्छाशक्ति, शैक्षिक स्तर, आधुनिक मान्यताओं की स्वीकार्यता प्रमुख है। जनपद मे परिवार कल्याण कार्यक्रम के कार्यान्वियन मे निम्न समस्याए है-

8 3.1 साधनों की अनुपलब्धता-

जनपद के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो पर दवाइयो, गर्भवती महिलाओं की,नियमित जाच इत्यादि सुविधाओं की पर्याप्त उपलब्धता नही है। इसके अतिरिक्त प्रसव के बाद जच्चा-बच्चा देखरेख की सुविधाओं के अभाव के कारण लोगो को इस हेतु शहर जाना पड़ता है। जनपद मे जनसख्या के अनुरूप अभी 32 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो की आवश्यकता है।

8 3 2 सीमित आर्थिक सहायता-

परिवार कल्याण कार्यक्रम की सफलता के लिए किये जा रहे खर्च को बढ़ाया जाये जिससे प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो पर उचित दवाइयों एव उपकरणो की व्यवस्था हो सके। प्रधानमत्री द्वारा जनसख्या कोष गठित किये जाने से इस क्षेत्र मे उपयुक्त सुधार की सभावना व्यक्त की जा रही है।

आर्थिक सहायता से सम्बद्ध प्रमुख समस्या कर्मचारियो के भ्रष्ट आचरण से भी सम्बद्ध है क्योकि जो भी धन प्रशासन द्वारा सस्तुत किया जाता है उसका अधिकाश भाग ये आपस मे बाट लेते है यही नही ये दवाइया भी बेच देते है। फलत ग्रामीण जनता लाभान्वित नही हो पाती।

8 3.3 आवासीय समस्या-

स्वास्थ्य केन्द्रो पर आवास की समस्या के कारण सेवाओं का उचित आदान-प्रदान नही हो पाता। कई स्वास्थ्य केन्द्रो पर डाक्टर, मिडवाइफ अन्य कर्मचारी इसलिए अनुपस्थित रहते है कि क्योकि उनको रहने की जगह ही नही है।

8 3 4 प्रशिक्षित कर्मचारियो की कमी-

परिवार कल्याण कार्यक्रम की सफलता बहुत कुछ कर्मचारियो की कुशलता एव उनके अनुभव पर आधारित है। इनकी अकुशलता, एव उपेक्षा से ग्रामीण जनता मे स्वास्थ्य एव परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रति भ्रम एव गलत धारणाए उत्पन्न हो गयी है। ये कार्यक्रम के प्रति जनमानस को प्रेरित करने मे असफल रहे है। लक्ष्य पूर्ति के लिए ये जनता को दिग्भ्रमित करते है फलत लोगो मे असतोष है जिसका कार्यक्रम की सफलता पर दूरगामी प्रभाव पडता है।

8.3 5 जन सहयोग एवं विज्ञापनों का अभाव-

ग्रामीण जनता मे अशिक्षा, परम्परागत दृष्टिकोण के कारण परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रति सकारात्मक रूझान का अभाव है। सर्वेक्षण मे 16 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं मे गर्भ निरोधको के प्रयोग मे जानकारी का अभाव बताया गया। सचार एव प्रसारण सुविधाओं मे विकास के बावजूद भी लोगो को परिवार कल्याण कार्यक्रम की महत्ता की जानकारी नहीं है अत व्यापक विज्ञापन सुविधाओं के विकास को कार्यान्वित किया जाना चाहिए।

8 3.6 कर्मचारियों की उदासीनता-

स्वास्थ्य परिवार कल्याण केन्द्रो पर कार्यरत कर्मचारी अपना कार्य निष्ठा एव पूर्ण समर्पण से नहीं करते, ये आकड़ो की पूर्णता मे ही अपने कार्य की पूर्णता समझते हैं। डाक्टरो की

उदासीनता उस समय देखी जा सकती है जब उनके द्वारा किये गये बन्ध्याकरण असफल हो जाते है। मिडवाइफे कतिपय सम्भ्रात परिवारो से सपर्क स्थापित करती है हरिजन बस्तियो मे तो कदाचित् ही जाती है, कभी-कभी तो जानकारी के अभाव मे ये इन लोगो से दवाओं के पैसे भी लेती है। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो के डाक्टर निजी प्रेक्टिस मे व्यस्त रहने के कारण जनता के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह नही करते है।

8 3.7 स्वास्थ्य कर्मियों का अधिक स्थानान्तरण-

स्वास्थ्य कर्मियो का बार-बार स्थानान्तकरण परिवार कल्याण कार्यक्रम की सफलता मे बाधक है क्योकि इन्हे ग्रामीण जनता से उचित सपर्क का अवसर नही मिल पाता। अधिक दूर के स्वास्थ्य कर्मियो को परिवहन साधनो के अभाव मे असुविधा होती है जिससे वे अनुपस्थित रहते है, परिवार कल्याण कार्यक्रम केन्द्रो पर इनके आवास की समुचित व्यवस्था नितान्त आवश्यक है।

8 3 8 जन स्वास्थ्य रक्षकों की उपेक्षा-

परिवार कल्याण कार्यक्रम की ग्रामीण जनता तक सुगम बनाने के लिए 1977-78 जनस्वास्थ्य रक्षक योजना प्रारम्भ की गयी थी, जिसमे ग्रामीण जनता को मुफ्त दवाइया आवटित करने, तथा परिवार कल्याण कार्यक्रम के अन्तर्गत मुफ्त गर्भ निरोधको का वितरण सुनिश्चित किया गया। लेकिन आज इन्हे कुछ भी नही दिया जाता केवल 50 रुपये प्रतिमाह पारिश्रमिक दिया जाता है। आवश्यकता इस बात की है कि इनसे उचित सेवाए ली जाये एव इनके पारिश्रमिक को बढाया जाये।

8 3.9 परिवार कल्याण कार्यक्रम विधियों की उपेक्षा-

परिवार कल्याण कार्यक्रम छोटे परिवार को प्रोत्साहन देने एव इस हेतु आवश्यक सुविधाए प्रदान करने के कार्यक्रम के रुप मे परिभाषित किया गया है। परिवार में अधिक जन्मो पर रोक लगाना एव सन्तानहीन दम्पत्तियो को आवश्यक चिकित्सा सुविधा प्रदान कर सन्तोनोत्पत्ति योग्य बनाना भी इस कार्यक्रम का लक्ष्य है लेकिन सामाजिक- सास्कृतिक उपेक्षा एव जनाकिकी उपेक्षा के कारण यह कार्यक्रम पूर्ण सफल नही हो पा रहा है।

8 3.10 सामाजिक उपेक्षा-

सामाजिक आधार पर यह कहा जाता है गर्भ निरोधको के प्रयोग से युवक-युवतियो का नैतिक पतन होगा क्योकि लैगिक सबध सामान्य बात हो जायेगी, फलत विवाह की पवित्रता नष्ट हो जायेगी। इन रूढिवादियो के कारण परिवार कल्याण कार्यक्रम सफल नही हो पा रहा है।

8 3.11 यौन-शिक्षा का अभाव एवं उसके प्रति अस्वस्थ दृष्टिकोण-

समाज वैज्ञानिक अध्ययनो से इस बात का पता लगाया जा चुका है कि जिस दम्पत्ति को विवाह के समय सेक्स एनाँटमी तथा प्रजनन प्रक्रिया का ज्ञान नही होता वे विवाहित जीवन के आरम्भिक काल मे इन बुनियादी तथ्यो को जानने की इच्छा नही करते परिणामत परिवार कल्याण कार्यक्रम असफल रहते है। यौन विषयो पर अधिक सकोच के कारण लैगिक सबध जैसी प्राकृतिक प्रक्रिया के प्रति सकोच एव अरूचि होने लगती है, अशिक्षित एव अल्प शिक्षित स्त्री-पुरुषो से इस विषय पर बात करना भी दुर्लभ होता है जिससे परिवार कल्याण कार्यक्रम मे बाधा आती है।

8.3 12 धार्मिक विरोध-

साधारणतया लोग सतान को ईश्वर की देन समझते है तथा उसमे किसी प्रकार का हस्तक्षेप स्वीकार नही करते। अधिकाश ग्रामीण जनता यह सोचती है कि जो पेट के साथ आता है वह उसे भरने के लिए अपने साथ दो हाथ एव दो पैर भी लाता है फलत अधिक बच्चे पैदा करना अभिशाप नही है। जिन दम्पत्तियो को सतान नही है उन्हे सामाजिक प्रतिष्ठा नही मिलती। कई धार्मिक सगठन परिवार कल्याण कार्यक्रम विधियो के प्रयोग का विरोध करते है।

8.3.13 पुत्र-महत्व-

अध्ययन क्षेत्र मे डिमोग्रैफिक फन्डामेटलिज्म की जडे अत्यन्त गहरी है, लोगो मे पुत्र प्राप्ति की भावना इतनी प्रबल है कि भले ही 6-7 पुत्रियाँ हो जाये लेकिन पुत्र प्राप्ति होनी चाहिए। परिणाम स्वरूप प्रजनन दर अधिक है तथा उच्च जनवृद्धि के कारण परिवार कल्याण कार्यक्रम असफल हो रहे हैं।

8 3.14 समाज में महिलाओं का स्तर-

समाज मे महिलाओं का स्तर परिवार कल्याण कार्यक्रम की सफलता मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योकि इनके स्तर से इनकी निर्णय क्षमता का अनुमान लगाया जा सकता है। अभिनव वर्षों मे शिक्षा, रोजगार, एव आय के अनेक क्षेत्रो मे महिलाओं की भूमिका बढ रही है जिससे उत्पादकता मे ह्रास आना अवश्यम्भावी है। जनपद मे साक्षरता एव लिगानुपात की वर्तमान स्थिति से इनकी श्रेष्ठ स्थिति का अनुमान नही होता है, 2001 की जनगणना के अनुसार महिला साक्षरता 44 39 प्रतिशत तथा लिंगानुपात 978 प्रतिहजार है।

8.3 1 5 अशिक्षा-

जनपद मे 40 प्रतिशत अशिक्षित जनसख्या है जिसमे महिला एव पुरुष अशिक्षित क्रमश 55 61 एव 24 55 है, अशिक्षित लोग बच्चे को ईश्वरीय देन समझते है गर्भ निरोधको के प्रयोग के प्रति इनमे जागरूकता का सर्वथा अभाव है जिसका परिवार कल्याण कार्यक्रम की सफलता पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है।

8 3 1 6 परिवार- व्यवस्था-

सयुक्त परिवारो मे बच्चे के पालन- पोषण एव देखरेख का उत्तर दायित्व केवल दम्पत्ति का न होकर अन्य सदस्यो यथा दादी, बुआ आदि का भी होता है। परिवार के आकार का निर्धारण वरिष्ठ सदस्यो द्वारा किया जाता है, जिससे उच्च प्रजननता के कारण परिवार कल्याण कार्यक्रम असफल हो जाते है। इसके विपरीत एकाकी परिवारो के दम्पत्ति पालन-पोषण की कठिनाई, एव अन्य कारणो से गर्भ निरोधको के प्रयोग द्वारा परिवार को सीमित रखते है।

8.4 जनसंख्या नियोजन-

जनपद गाजीपुर की जनसख्या एव उसकी आवश्यकताओं के मध्य अनुकूल सतुलन स्थापित करने के लिए निम्न तथ्यो का समावेश आवश्यक है। नियोजन से सम्बद्ध सुझाव निम्न है—

8 4.1 कृषि उत्पादन मे सुधार-

जनपद मे तीव्र गति से बढती जनसख्या के कारण कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग मे लाई गयी भूमि का क्षेत्रफल उत्तरोत्तर बढता जा रहा है। प्रतिवर्ष बढती हुई जनसख्या के भरण-पोषण हेतु प्रति हेक्टेयर कृषि मे उत्पादन वृद्धि पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। अधिक उपज देने वाली फसलो का उपयोग, फसल–चक्र का ज्ञान, विद्युत एव सिचाई सुविधाओं का विकास, बहु-फसल-चक्र एव गहन कृषि पद्धति के साथ भूमि की उर्वरता बनाये रखते हुए बढती जनसख्या का भरण-पोषण किया जाना चाहिए। भूमि पर जनसख्या के दबाव को कम करने के निमित्त मत्स्य पालन, मुर्गीपालन, सुअर पालन, भेड़पालन एव डेयरी उद्योग को विकसित किया जाना चाहिए। इसके लिए जनपद के ग्रामीण क्षेत्रो मे स्थानीय ससाधनो पर आधारित लघु, कुटीर, पारिवारिक उद्योगो का विकास किया जाना चाहिए। इन उद्योगो के लिए सरकार द्वारा ऋण एव सब्सिडी दी जानी चाहिए।

8.4.3 शैक्षिक स्तर में विकास-

शैक्षिक स्तर एव प्रजननता मे अत्यन्त घनिष्ठ सबध पाया जाता है। शिक्षित लोग जीवन स्तर को उच्च बनाने के लिए परिवार कल्याण कार्यक्रम कोअधिक महत्व देते है। मानव के सामाजिक- आर्थिक विकास के साथ ही साथ प्रजननता मे कमी आती है। अध्ययन क्षेत्र के सामाजिक, सास्कृतिक एव आर्थिक विकास मे निम्न साक्षरता बाधक है। स्त्री साक्षरता पर विशेष ध्यान देते हुए बेरोजगारी एव गरीबी निवारण हेतु रोजगार परक शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। बालिका शिक्षा के लिए विशेष योजनाए चलायी जानी चाहिए। साक्षर स्त्रियो परिवार कल्याण कार्यक्रम की सफलता मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अध्ययन क्षेत्र मे 12 वी तक शिक्षा मुफ्त की जानी चाहिए। प्रौढ़ शिक्षा एव आगनबाड़ी कार्यों की समीक्षा कर उसमे सुधार किया जाना चाहिए। गैर जिम्मेदार कर्मचारियों का तत्काल निष्कासन किया जाये।

8.4.4 आश्रित जनसंख्या भार में कमी-

यह समस्या, जनसख्या वृद्धि पर नियन्त्रण करके तथा जनपद मे रोजगार के अवसर उपलब्ध कराके बेरोजगारो को रोजगार प्रदान करके दूर की जा सकती है। कुटीर उद्योगों, लघु

उद्योगो एव कृषि पर आधारित उद्योगो का विकास करके भी आश्रित जनसख्या भार कम किया जा सकता है।

जनपद मे तेजी से बढती हुई जनसख्या के कारण जनसख्या एव अन्य ससाधनो के मध्य असतुलन की स्थिति पैदा होती जा रही है। जन्मदर, मृत्युदर की अपेक्षा अधिक है जो जनसख्या वृद्धि को प्रभावित करता है। जनपद के विकास खडो मे कार्यान्वित योजनाओं की उपलब्धियो का विश्लेषण, नियोजको के समक्ष एक जटिल प्रश्न है कि क्या इन योजनाओं का लाभ समाज के के निम्न वर्ग को मिल रहा है? सर्वेक्षण से यह तथ्य सामने आया है कि योजनाओं का लाभ इन लोगो को आशिक ही मिला है। सामाजिक पिछड़ापन, समस्याओं के प्रति उदासीनता, सगठनात्मक अभाव आदि आश्रित जनसख्या मे वृद्धि करते है। इन समस्याओं का निराकरण करके आश्रित जनसख्या भार मे कमी की जा सकती है।

8 5 परिवार कल्याण कार्यक्रम नियोजन-

अध्ययन क्षेत्र मे परिवार कल्याण कार्यक्रम की समस्याओं ने जनसख्या की तीव्र वृद्धि को भयावह बना दिया है जिससे जनसख्या एव ससाधनो के मध्य असतुलन की स्थिति बढती जा रही है। चिकित्सा एव स्वास्थ्य की दशाए भी चिन्तनीय है। आवास, पेयजल, की समस्या ने स्वास्थ्य, शिशु–मातृ-मृत्युदर को शोचनीय बना दिया है। जनसख्या वृद्धि निर्धनता की ही देन नही है, अपितु जनसख्या वद्धि ने निर्धनता को और अधिक बढा दिया है। निरक्षरता, शिशु मृत्युदर, बाल विवाह धार्मिक रूढियाँ आदि कारण परिवार कल्याण कार्यक्रम की सफलता मे अवरोधक है। स्वास्थ्य एव परिवार कल्याण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए निम्न सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे है-

1- गरीबी उन्मूलन के कार्यक्रमो को प्रभावी बनाकर निर्धनता उन्मूलन का सकल्पित प्रयास करना होगा जिससे लोगो के आय स्तर एव जीवन-स्तर मे अपेक्षित सुधार हो।

2- परिवार कल्याण कार्यक्रम एव स्वास्थ्य केन्द्रो की भूमिका का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाय तथा स्वास्थ्य केन्द्रो पर चिकित्सा, दवाइयो एव जाच की पर्याप्त सुविधाए विकसित की जाये। ग्रामीण जनता मे यह भयबना रहता है कि उनके सभी जीवित बच्चे जीवित नही रहेगे इसलिए वे परिवार कल्याण की स्थाई विधि नही अपनाते अत स्वास्थ्य सुविधाओं मे परिष्कार एव बढोत्तरी अनिवार्य है।

3- लोगो को पौष्टिक आहार के प्रति जागरुक बनाया जाय तथा हरे शाक-सब्जी एव फलो के उत्पादन को प्रोत्साहित किया जाये।

4- सक्रामक बीमारियो पर नियन्त्रण हेतु व्यापक जन-आन्दोलन चलाया जाये एव धार्मिक रूढियो पर कुठाराघात कर स्वस्थ सामाजिक वातावरण का विकास किया जाये। लड़कियो की बजाय लड़को को वरीयता देने सबधी सामाजिक मान्यता को समाप्त किया जाये।

5- परिवार कल्याण कार्यक्रम को सशक्त एव प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। बन्ध्याकरण के बाद सम्बद्ध स्त्री-पुरुषो के स्वास्थ्य पर ध्यान दिया जाये। पुरुष नसबदी को प्रभावी बनाने लिए इस भ्राति को दूर किया जाये कि नसबदी के बाद यौन-क्रियाओं मे कष्ट होते हैं।

6- सरकारी कर्मचारियो के लिए यह कानून बनाया जाये कि उनके अधिकतम दो बच्चे हो। परिवार कल्याण कार्यक्रम मे इनके योगदान को इनके चरित्र पजिका मे लिखा जाये तथा इन्हे पदोन्नति मे वरीयता दी जाये।

7- स्कूल, कालेजो तथा प्रौढ शिक्ष केन्द्रो मे जनसख्या शिक्षा एव परिवार कल्याण कार्यक्रम सम्बधी विशेष पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये जाये एव निश्चित अतराल पर उनका निरीक्षण किया जाये। अकर्मण्य कर्मचारियो/अधिकारियो को निलम्बित कर उनके विरूद्ध कठोर कार्यवाही की जाये।

8- बन्ध्याकरण कराने वालो की नि शुल्क चिकित्सा व्यवस्था की जाये एव प्रोत्साहन राशि को बढाकर 1500 रुपये किया जाये।

9- महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योकि इसका सीधा सबध परिवार कल्याण कार्यक्रम से है, साथ ही साथ इनकी आर्थिक स्थिति भी मजबूत की जानी चाहिए।

10- विभिन्न उत्पादो के लेबल पैकिग पर परिवार कल्याण कार्यक्रम का प्रतीक एव सदेश लिखना कानूनन अनिवार्य किया जाये तभी कार्यक्रम के प्रति राष्ट्रीय भावना का विकास होगा।

11- लड़के तथा लड़कियो की न्यूनतम वैवाहिक उम्र क्रमश 25 वर्ष एव 22 वर्ष की जानी चाहिए यदि इससे कम पर विवाह हो तो उनके अभिभावको को दण्डित किया जाये।

12- लोग दहेज को अभिशाप मानते है इसलिए भी पुत्र को अधिक महत्व देते है अत इस सामाजिक बुराई के उन्मूलन के लिए और कठोर कानून बनाये जाये।

13- स्त्रियो को पुरुषो के बराबर दर्जा दिया जाये क्योकि लगभग प्रत्येक वर्ग मे लोग तब तक बच्चा पैदा करते रहते है जब तक कि पुत्र न हो जाये। ऐसी लघु मानसिकता का निराकरण किया जाये।

14- ग्रामीण एव पिछड़े क्षेत्रो मे परिवार कल्याण कार्यक्रम का अधिक प्रचार-प्रसार किया जाये। तथा अनुकूल परिणाम मिलने पर वहा विकास कार्य किये जाये।

15- परिवार कल्याण कार्यक्रम को केवल स्वास्थ्य एव परिवार कल्याण मन्त्रालय का दायित्व न समझकर उसे जन-आदोलन के रूप मे चलाया जाना चाहिए, किन्तु इसमे जोर जबरदस्ती को बढ़ावा न दिया जाये, इससे लोगो मे असतोष उत्पन्न होता है तथा कार्यक्रम असफल हो जाता है, क्योकि यह पूरे सामाजिक-आर्थिक विकास एव रूपान्तरण का हिस्सा है। बेहतर स्वास्थ्य सुविधा के कारण जब शिशु मृत्युदर घटेगी, नई चेतना से जब लड़के-लड़की का भेद मिटेगा, महिलाए शिक्षित होगी तथा परिवार एव समाज मे उनकी स्थिति मजबूत होगी तो जन्म दर घटेगी तब निश्चित रूप से परिवार कल्याण कार्यक्रम स्वत उद्भूत प्रक्रिया बनेगा तथा सफल होगा।

REFERENCES

1 Bose A (1989) ``Demographic India'' Journal of the Indian Association for the Study of Population vol 18 no 1 and 2 P 1

2 Civil Services Chronicle April 2002 P 88

3 Chaudhuri D P (1974) Effects of Farmer's Education and Agricultural Productivity A Case Study of Panjab and Haryana States of India I L O Geneva

4 Pratiyogita Darpan (Oct 2000) P 467/7

5 ``Population Profile'' Women Population and Development P no 7 P 10

6 Rapid Population Growth Response Patterne Seminar Report (1988) Geo-Science Journal N G S I , B H U Part I P 46

BIBLIOGRAPHY

BIBLIOGRAPHY

- Archana Kumarı and Mukherjı S (1997) 'Male Mıgratıon and Regıonal Dısaparıtıes In Bıhar' Vol 43 N G S I B H U
- Agrawal S N (1978) 'Indıa's Populatıon Pıoblems' Tata McGıow Hıll New Delhı
- Abusaleh S (1989) 'Demography of Indıa', Journal of Indıan Assocıatıon Study of Populatıon
- Azmı, I (1976) 'Dıfferentıal Fertılıty ın Peasant Communıtıes A study of Iranıan vıllages' Populatıon Studıes Vo 30 No 3
- Acharya H (1976) 'Publıc Health And Famıly Welfare Programme ın Indıa' eds M M Geandotra and Das N Populatıon Polıcy ın Indıa Blackıe & Sons Publıshers Pvt Ltd Delhı
- Bhatıa S S (1967) 'A New Measurement of Agrıcultuıal Effıcıency ın U P ' Economıc Geography Vol 43
- Bansal S C (1999) 'Advanced Geography of Indıa' (ın Hındı) Mınakshı Prakashan Merrut
- Bogue D (1969) 'Prıncıple of Demography' NewYork Johnwıley And Sons Ltd
- Bogue D (1969) 'Internal Mıgratıon In O Duncan and Houser' (eds) The Study of Populatıon An Inventory And Appraısal Chıcago Unı Press
- Bhugole Ke Sıddhant Part II NCERT
- Bose A (1988) 'Indıa's Quest for Populatıon Stabılısatıon Progress Pıtfalls and polıcy optıons', Lecture Delıvered By Author at Bonn, Germany Quated ın Demography of Indıa Vol 18
- Bose A (1989) 'Demographıc Indıa' Journal of the Indıan

Association for the Study of Population Vol 18

- Bebarta P C (1977) 'Attitude of Woman Towards Family Planning A Study of Differences By Family Types In Six Villages of Delhi' Quarterly Journal of India Studies in Social Sciences 1(1)
- Berelson B (1969) 'Beyond Family Planning' Studies in Family Planning No 38(2)
- Clark J I (1972) Population Geography Pergaman Oxford Press
- Chandana R C (1997) Population Geography (in Hindi) Kalyani Publishers New Delhi
- Census of India (2001) series 10 U P Provisional Population Totals Paper I of 2001
- Chandana R C and Sidhu M S (1980) Introduction to Population Geography Kalyani Publishers New Delhi
- Cartwright A (1970) Parents and Family Planning Services Routledge Kegan Poul London
- Civil Services Chronicale April 2002
- Chaudhari D P (1974) 'Effects of Former's Education of Agricultural Productivity A Case Study of Punjab And Haryana Atates of India' I L O Geneva
- Chandrasekhar S (1979) 'India's Population Facts, Problems and Policy' Allied Publishers, Bombay (Mumbai)
- Doi K (1975) 'The Industrial Structure of Japanese Prefectures Proceading of I G U Regional Confrence in Japan'
- Demko G J (1970) 'Population Geography A Reader' McGrow Hill Com New York
- District Census Hand Hand Book (1951) Ghazipur
- Davise K. (1955) 'Social And Demographic Aspects of Economic Development In India ' eds Simson Kuznets et at Duke Uni Press Durnam

- Doza B (1975) 'Dynamics of Family and Fertility' Dept of Sociology University of Chittgong
- Devi Gayatri (1994) 'Gramin Parivaron Main Swasthya Paricharya Ka Samaj Vagyanic Adhyayan ' Classical Comp Publishing New Delhi
- Ehrlich P R (1977) Ehrlich, A H and Holdren J P Eco-Science, Population, Resource Environment W H Freeman & Comp Sanfransisco
- Everett M Rogers (1973) 'Communication Strategies for Family Planning' The Free Press a Division of Macmillion Publishing Co
- Franklin S H (1956) 'The Patterns of Sex Ratio in Newzealand' Economic Geography Vol 32
- Freedman, Ronala, J T and T H Sun (1964) Fertility And Family Planning in Taiwan A Case Study of Demographic Transition American Journal of Sociology 70(1)
- Gazettear District Ghazipur U P 1971
- Gosal G S (1961) 'Internal Migration in India- A Regional Analysis Indian Geographical Journal Vol 36
- Gosal G S , Krishan G (1975) Patterns of Internal Migration in India' Methuen and Co Ltd London
- Government of India (1946) Health Survey and Development Committee Report Vol II New Delhi
- Govt Publications
- Government of India (1951) Planning Commission First Five Year Plan New Delhi
- Government of India (1956) Planning Commission Second Five Year Plan New Delhi
- Government of India (1961) Planning Commission Third Five Year Plan New Delhi

- Government of India (1969) Planning Commission Forth Five Year Plan New Delhi
- Government of India (1980) Planning Commission Sixth Five Year Plan New Delhi
- Government of India (1985-90) Planning Commission Seventh Five Year Plan New Delhi Vol II
- Government of India (1992-97) Planning Commission Eighth Five Year Plan New Delhi
- Goyal R P 'Fertility and Family Planning in U P ' India a Survey Delhi Demographic Research Centre Institute of Economic Growth (Mimeo)
- Hussain M (1970) 'Patterns of Crop Concentration in U P ' Geographical Revew of India XXXI
- Hussain M (1999) 'Human Geography' (in Hindi) Rawat Publications Jawahar Nagar Jaipur
- Hussain M (1998) 'Urbanisation in India Appraisal' N G S I B H U
- Hartshorne R (1939) 'The Nature of Geography' Association of American Geographers Rancaster
- Hashmi S S (1965) Examples of Application of Analysis Varience in the Study of Fertility Word Population Conference Vol III New York
- Hull V J (1975) Socio Economic Status And The Position of Women in a Javanese village unpublished Ph D Thesis Deptt of Demography Canverra Australian National University
- Information Centre District Ghazipur U P 1999
- Indian Statistical Institute National Sample Survey 16nt Round June 1960-61 Table with notes on Family Planning Culcutta 1961
- India Planning Commission (1992-97) Eight Five year plane New Delhi vo II

- India 2001 (in Hindi) Prakashan Vibhag Ministry of Information and Broadcasting Government of India
- India 2002 (in Hindi) Prakashan Vibhag Ministry of Information and Broadcasting Government of India
- Jha D (1963) 'Economics of crop pattern of Irrigated forms in North Bihar' Indian Journal of Agricultural Economics vol XVIII no 1
- Joglekar N M (1963) Study of Cropping of Pattern On An Urban Fringe Journal of Agricultural Economocs vol 18 no 1
- Jagannadham V (ed) 1973, 'Family Planning In India Policy and Administrative' New Delhi
- Jain S P (1939) Relationship between Fertility and Economic status in Panjab Punjab Board of Inquiry no 64
- Jones H K (1981) 'A Population Geography' Harper and Row Publishers London
- Khare, P C and Sinha V C (1985) 'Samajik Janankee Avam Janswasthya' National Publishing House New Delhi
- Kumar Mithilesh and Shahani N (1985) 'Jansankhya Siksha Siddhant Avam Tatva' Population Centre Indira Nagar Lucknow
- Khan, M E (1979) 'Family Planning Among Muslims in India' New Delhi Manker Publications
- Karim M S (1974) Fertility Defferentials by Family type' the Pakistan Developmen Review 13 (2)
- Khan N (1983) 'Studies in Human Migration' Rajesh Publications New Delhi
- Lokanathan P S (1963) 'Cropping Pattern In M P ' National council of Aplied Economic Research New Delhi
- Lee, E.S (1966) Theory of Migration Demography vol 3 Mc Graw Hill New York
- Louis, H (1976) 'Population Analysis Two Models' Edward Arnold

- Learmouth A T A (1958) Medıcal Geographer ın Indıa and Pakıstan Indıan Geographıcla Journal vol 33
- Mehrotra C L (1968) Soılsurey and Soıl work ın U P Government Prıntıng and statıonary Allahabad
- Mamorıa, C B (1999) Human and Economıc Geography (ın Hındı) Sahıtya Bhawan Publıcatıons Agara
- Majumdar D M (1980) Ek Auoduogık Shahar ka Samajıc Contoor Kanpur, Shıvlal Agrawal and Com Agara
- Mahopatra A C , Nazarene V M (1998) Lıtracy and the Poor Study of Selected steem of Shıllong N G S I , B H U Vol 44
- Mıshra J P (2001) Censas of Indıa 2001 (ın Hındı) Shahıtya Bhawan Publıcatıons Agara
- Mukerjee R N and Kulshrasth G C (1998) 'Rural Socıology of Indıa' (ın Hındı) Prakash Book Dıpot Badabazar Bareılly
- Majumdar P S and Majumdar I (1978) 'Rural Mıgrants In An Urban Settıng', Hındustan Publıshıng Corporatıon Delhı
- Matthus, T R (1966) 'An Eassay on Prıncıples of Populatıon As It Effects The Future Improvement of Socıety Fırst Essay on Populatıon 1978 London Macmıllon (Re-Issued)
- Mamorıa C B (1961) 'Indıa's Populatıon Problems Kıtab Mahal Prıvate Ltd Allahabad
- Mukherjee B N (1975) Status of Women as related to famıly Plannıng' Journal of Populatıon Research 2(1)
- Nag, M (1967) Famıly Type and Fertılıty' ın Proceedıngs of word populatıon Conference 1965 vol-2 New York U N
- Nartman D L (1982) Famıly Plannıng Programmes the Populatıon Councıl, New York
- Nav-Bharat Tımes (ın Hındı) 2002
- Ojha S.S (2001) 'Geography of Indıa' (ın Hındı) Bhaugolık

Adhyayan Sansthan Allahabad

- Ojha R (1983) 'Jansankhya Bhugale' Pratibha Prakashan Kanpur
- Omprakash (1973) 'Population Geography of U P ' Published Ph D Thesis B H U
- O Kediji F O J C Coldwell P Coldwell and H Ware (1976) The changing African Family Project Studies in Family Planning 7(5)
- Provisional Population Totals District Ghazipur U P Table I and II 2001
- Panda B P (1995) 'Jansankhya Bhugole' M P HIndi Acedemy Bhopal
- Pant, J C (1983) Janankikee' Goyal Publishing House Meerut
- Prachin Bharat (1990) N C E R T
- Population Profile Women Population and Development
- Prakash K and C Malker (1967) The Relationship between family Type And Fertility Millbank Memorial Fund Quarterly, 45
- Palmore, J A 'Population change Conjugal Status and the Family In Population Aspect of Social Development Asian Population Studies Series no 11 Bangkok ESCAP
- Pandey, O, (1941) Techniques of Population Study I G J vol XV
- Peterson, W (1969) 'Readings in Population' New Yrok
- Pratiyogita Darpan Oct 2000
- Ramlingon C (1963) 'Some Economic Aspect of Cropping Pattern' vol XVII
- Rov B P (1993) Human Geography (in Hindi) Vasundhara Prakashan Gorakhpur
- Roy, Kumkum (1989) 'Fatehpur District A Study In Rural Settlement Geography' D Phil Thesis Allahabad University Allahabad
- Rapid Population Growth (1988) Response Pattern Semminor Report Geo-Science Journal N.G S I , B H U Part I

- Ronal G Rıdker (1969) Synosıs of a Proposal For Famıly Bond' Studıes ın Family Plannıng 1(43)
- Stamp, L D (1962) 'The Land of Brıtaın Its Use And Mısuse' III edıtıon
- Steel, R W (1955) 'Land and Populatıon ın Brıtısh Tropıcal Afrıca'
- Srıvastava K C (2000) 'Prachın Bharat Ka Itıhas Tatha Sanskrıtı' Unıted Book Depot Allahabad
- Saxena, C B (1971) Indıan Populatıon ın Trasıtıon' Commercıal Publıcatıon Bureau New Delhı
- Sen, J C (1963) The sex composıtıon of the populatıon of Indıa' The Deccan Geographers vol II
- Sıddıque, F A (1984) Regıonal Analysıs of Populatıon Structure A Study of U P Indıa Concept Publıshıng Company New Delhı
- Smıth, T L Fundmental of Populatıon study Lıppıncott Co New York
- Snow, C P (1959) The Two Culture And the Scıentıfic Revolutıon Combrıdge Unıversıty Press, London
- Spate, O H K and Learmonth, A T A (1954) 'Indıa and Pakıstan a General and Regıonal Geography' Methuen and Co London
- Sharma R N and Sharma R K (1983) Demography and Populatıon Problems' Rajhans Prakashan Mandır Meerut
- Sıngh B B (1979) 'Agrıcultural Geography' Tara Publıcatıon, Varanası
- Sıngh J (1996) 'Arthık Bhugole Ke Mool Tatva'Gyanodaya Prakashan Gorakhpur
- Sıngh R L and Sıngh K N Readıngs ın Rural settlement Geography
- Sıngh M B and Dubey K K (2001) Jansankhya Bhugol Rawat Publıcatıon, Jaıpur
- Sıngh Savındra (2000) Paryavaran Bhugole' Pryage Pustak Bhawan Unıversıty Road Allahabad

- Sıngh, D K (1993) 'Gramın Jansankhya ka Shaharon Kee Oı Palayan' Geo-Scıence Journal vol 8 N G S I , B H U
- Sıngh, D N (1997) 'Rapıd Populatıon Growth and Sustaınable Development Wıth Partıcular Reference To Developıng Countııes' N G S I , B H U
- Sıngh, S N (1970) 'Demographıc Structure of Surroundıng Area of Varanası cıty' Uttar Bharat Bhugole Patrıka Gorakhpur
- Sıngh, R L (1971) 'Indıa A Regıonal Geography' N G S I , B H U
- Sıngh Rana P B (1977) 'Clan Settlement In The Saran Plaın (mıddle Ganga Valley) A Study ın Cultural Geography ' N G S I B H U
- Sıngh, R L (1977) 'Role of Geography as ın Integratıng Scıence N G S I Varanası,
- Sawmınathan M S (1995) 'Agrıculture, Food Securıty and Employment Changıng Tımes Uncommon Opportunıtıes, Nature and Resources' (UNESCO) vol 31, no 1
- Trewartha, G T (1969) 'A Geography of Populatıon Word Pattern Jhon Wıley And Sons New York
- Trewartha, G T (1953) A Case For Populatıon Geography' Annals of the Assocıatıon of Amerıcan Geographers vol 43
- Thompson, W S (1951) 'Populatıon Progress ın For Est London' Mc Graw Hıll Book Co
- Thampson, W S and Lewıs, D T (1965) Populatıon N Y Mc Graw Hıll Book Co
- Tyagı, N (1982) 'A Geographıcal study of Hıll Resorts of U P Hımalaya' Unpublıshed Ph D Thesıs Unıversıty of Gorakhpur
- Tıllara, K S (1979) 'Prıncıples of Demography' Publıshıng Centre Lucknow
- U N O (1961) The Mysore Populatıon Study ST/SOA/Serıes, A 34 New York

- United Nations (1961) Methodology of Demographic Sample Sarveys ST/TAO/Ser /4119 series M N C 51 New York
- Wadia D N (1961) 'Geology of India' London
- Wong, W and Lee, E S 'General Theory of Movement' 'Population Geography A Reader'
- Yadav H L (1997) 'Jansankhya Bhugole' Vasundhara Prakashan Gorakhpur
- Yadav H C S (1990) 'Water Resources of Deoria District (U P)' Unpublished Ph D Thesis B H U
- Yadav N L S (1996) 'Gram Budhanpur Ka Samajik Arthik Avan Bhaugolic Adhyayan' Dissertation Thesis For M A (1996) B H U
- Yadav Rana P S (1997-1998) Population 'Study of Sadat Block District Ghazipur U P ' A Dissertation Work For Degree For M A B H U
- Yadav K M S (1989), 'Rural-Urban Migration in India Determinants, Patterns and Consequences' Independents Publishers Company, Delhi
- Zeelinsky W B (1966) 'Prologue to Population Geography' Prentice Hall Inc N J

परिशिष्ट

परिशिष्ट 1 1

भूमि उपयोग 1984-85 (प्रतिशत)

विकास खण्ड	कुल क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	कृषि योग्य बजर भूमि	ऊसर तथा कृषि अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग मे लाई गई भूमि	परती भूमि	चरागाह	उद्यान एव वृक्ष
जखनियाँ	20368	77 15	3 31	1 96	8 02	7 18	0 66	0 80
मनिहारी	22273	75 83	3 43	1 77	7 45	10 17	0 77	0 54
सादात	22644	72 45	2 21	3 18	9 47	10 66	1 41	0 59
सैदपुर	21691	77 37	1 80	1 24	10 52	7 47	0 90	0 67
देवकली	22226	77 40	1 68	1 36	11 07	7 17	0 35	0 94
बिरनो	154447	79 39	3 02	1 54	8 27	6 57	0 25	0 78
गाजीपुर	15980	71 28	1 94	1 13	19 23	5 29	0 06	0 50
मरदह	18561	77 58	2 86	1 46	6 00	10 83	0 51	0 72
करण्डा	15526	73 54	1 04	4 04	13 87	6 74	0 06	0 67
कासिमाबाद	22897	76 58	2 32	1 65	7 18	10 78	0 31	1 14
बाराचँवर	19930	78 02	1 19	1 30	8 33	9 31	0 25	1 57
मुहम्मदाबाद	17430	82 45	0 63	0 90	9 82	4 48	0 02	1 87
भाँवरकोल	25059	82 96	0 37	0 70	11 06	3 93	0 003	0 96
जमानियाँ	27255	79 31	0 60	4 70	10 34	4 15	0 04	0 65
रेवतीपुर	22386	78 66	0 68	3 27	9 90	5 50	0 02	2 00
भदौरा	20589	82 14	0 80	1 10	11 05	3 30	0 004	1 57

स्रोत- जनपद साख्यिकीय पत्रिका 1986

परिशिष्ट 1 2

भूमि उपयोग 1999-2000 (प्रतिशत)

विकास खण्ड	कुल क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	कृषि योग्य बजर भूमि	ऊसर तथा कृषि अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग मे लाई गई भूमि	परती भूमि	चरागाह	उद्यान एव वृक्ष
जखनियाँ	2058	82 44	2 02	1 16	9 80	1 37	0 41	0 63
मनिहारी	22288	81 78	3 10	1 89	8 35	0 87	0 58	0 61
सादात	22639	76 94	2 09	2 63	10 13	1 82	0 92	1 06
सैदपुर	21691	79 59	1 40	1 16	10 01	1 93	0 51	0 69
देवकली	22226	78 78	1 31	1 63	10 75	1 18	0 34	0 48
बिरनो	15447	81 33	1 77	1 17	9 96	2 10	0 15	0 76
गाजीपुर	15980	69 33	0 77	1 22	22 49	1 63	0 001	0 70
मरदह	18561	81 20	1 99	1 18	8 20	2 29	0 20	0 63
करण्डा	15526	79 20	0 44	1 69	18 13	0 83	0 001	1 14
कासिमाबाद	22316	79 25	1 46	1 48	7 64	3 05	0 19	1 58
बाराचँवर	19642	81 41	1 62	1 66	9 02	1 37	0 20	1 72
मुहम्मदाबाद	17922	84 04	0 64	0 78	9 86	0 86	-	1 73
भाँवरकोल	25298	81 90	0 43	0 48	9 93	1 07	0 001	1 73
जमानियाँ	27327	77 86	0 06	3 21	15 47	0 43	-	0 97
रेवतीपुर	22386	77 36	1 38	0 59	14 54	1 34	0 187	1 30
भदौरा	20589	81 56	0 24	0 95	11 53	1 48	-	1 10

स्रोत- जनपद साख्यिकीय पत्रिका 2000

परिशिष्ट 1 3

जनपद गाजीपुर शस्य प्रतिरूप (प्रतिशत) 1984 - 1985

विकास खण्ड	सकल बोया गया क्षेत्र (हेक्टेयर)	धान	गेहूँ	जौ	ज्वार-बाजरा	मक्का	अन्य धान्य	कुल धान्य
जखनियाँ	23336	35 70	35 94	2 32	2 37	1 04	0 57	77 95
मनिहारी	25248	35 31	35 11	2 53	5 46	0 61	0 54	79 56
सादात	25337	37 73	36 56	2 00	2 32	2 06	0 60	81 22
सैदपुर	24338	26 10	39 18	2 70	7 60	3 30	0 47	79 37
देवकली	24429	29 88	37 57	2 04	9 63	1 11	0 34	80 57
बिरनो	19786	39 02	36 31	2 38	3 12	0 15	0 45	81 45
गाजीपुर	17660	24 33	35 45	3 14	8 16	1 01	0 50	72 70
मरदह	20148	39 80	39 78	1 73	1 94	0 70	0 15	84 11
करण्डा	16051	12 72	31 82	6 12	18 01	0 72	0 32	69 76
कासिमाबाद	24963	37 86	36 95	2 70	4 07	0 14	0 30	82 03
बाराचँवर	21617	29 46	34 90	3 23	7 40	0 11	0 86	75 97
मुहम्मदाबाद	20765	19 36	37 08	1 96	12 70	0 34	0 52	71 97
भाँवरकोल	24199	8 59	27 08	2 42	13 71	0 28	0 96	53 03
जमानियाँ	31614	32 37	28 33	3 08	7 43	0 22	0 35	71 78
रेवतीपुर	20439	14 10	31 52	4 37	8 40	0 21	0 44	59 00
भदौरा	23295	38 22	33 65	4 00	3 17	0 05	0 18	79 27

स्रोत-जनपद साख्यिकी पात्रिका 1986

परिशिष्ट 1 4

जनपद गाजीपुर शस्य प्रतिरूप 1999-2000 (प्रतिशत मे)

विकास खण्ड	सकल बोया गया क्षेत्र	धान	गेहूँ	जौ	ज्वार-बाजरा	मक्का	अन्य धान्य	कुल धान्य
जखनियाँ	25166	41 98	40 92	1 19	0 61	0 15	0 03	84 80
मनिहारी	28066	41 69	40 18	1 25	0 64	0 13	0 04	83 93
सादात	26632	42 40	43 59	1 00	1 02	0 53	0 06	88 60
सैदपुर	19859	25 95	51 11	1 31	10 35	0 67	0 03	89 42
देवकली	22913	29 24	43 76	0 78	12 76	0 24	0 03	68 81
बिरनो	21152	38 88	42 01	1 46	0 50	0 04	-	82 89
गाजीपुर	19404	33 40	33 05	1 38	3 51	0 22	8 4	79 96
मरदह	24325	44 74	43 45	1 00	0 46	-	0 01	89 66
करण्डा	17686	16 23	39 20	3 01	14 23	0 10	0 05	72 82
कासिमाबाद	29392	37 90	42 40	1 66	1 17	0 31	0 32	83 76
बाराचँवर	25782	33 12	37 39	2 03	2 06	0 79	0 01	75 40
मुहम्मदाबाद	22023	25 14	36 42	1 53	5 63	0 81	0 02	69 55
भाँवरकोल	24749	17 70	24 18	3 69	5 36	0 77	0 05	51 75
जमानियाँ	37608	39 34	34 92	2 89	4 85	0 005	0 01	82 02
रेवतीपुर	22987	26 16	36 91	4 26	2 84	0 10	0 03	70 30
भदौरा	27244	36 94	36 30	3 17	1 05	0 007	14 37	91 84

स्रोत-जनपद साख्यिकी पत्रिका 2000

परिशिष्ट 1 5

जनपद गाजीपुर शस्य-सयोजन प्रदेश (2000)

प्रथम स्तरीय	द्वितीय स्तरीय	तृतीय स्तरीय	चतुर्थ स्तरीय	विकास खण्ड
गेहूँ	1 गेहूँ, धान	1 गेहूँ, धान, ज्वार	1 गेहूँ, धान, ज्वार	सैदपुर,
			बाजरा, गन्ना	देवकली
	2 गेहूँ, धान चना	2 गेहूँ, धान, गन्ना		मुहम्मदाबाद
		3 गेहूँ, ज्वार, बाजार, चना	2 गेहूँ, धान, गन्ना, चना	जखनियाँ
		4 गेहूँ, ज्वार, बाजरा, धान	3 गेहूँ, धान, ज्वार आलू	गाजीपुर
	3 गेहूँ, चना	5 गेहूँ, चना, धान	4 गेहूँ धान, ज्वार, चना	बाराचँवर
धान-	धान, गेहूँ	6 धान, गेहूँ, गन्ना	5 गेहूँ, ज्वार, बाजरा	भाँवरकोल
प्रधान		7 धान, गेहूँ, ज्वार, बाजरा,	चना, धान।	
		8 धान, गेहूँ, चना	6 गेहूँ, ज्वार, बाजरा,	करण्डा
		9 धान, गेहूँ, गन्ना	धान, अरहर	
			7 गेहूँ, चना, धान,	रेवतीपुर
			ज्वार, बाजरा	
			8 धान,	सादात,
गेहूँ, चना				बिरनो,
				मरदह।
			9 धान, गेहूँ, ज्वार,	जमानियाँ
			बाजरा, चना	
			10 धान गेहूँ, चना, जौ	भदौरा
			11 धन, गेहूँ, गन्ना	कासिमाबाद
			ज्वार, बाजरा	मनिहारी

परिशिष्ट 2 1

जनपद गाजीपुर आँकिक जनसख्या
घनत्व 1961-1191
(व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी)

विकास खण्ड	1961	1971	1981	1991
जखनियाँ	381 84	446 00	592 00	716 21
मनिहारी	351 64	403 00	511 00	641 09
सादात	360 59	448 00	544 13	637 98
सैदपुर	453 73	523 80	667 00	858 70
देवकली	364 28	411 00	551 00	772 14
बिरनो	360 00	430 00	587 41	762 84
गाजीपुर	581 02	756 52	960 42	1365 70
मरदह	341 62	413 00	522 00	660 41
करण्डा	364 50	437 00	539 00	658 00
कासिमाबाद	373 13	457 00	559 71	723 32
बाराचँवर	387 47	396 00	525 00	639 30
मुहम्मदाबाद	542 02	628 20	792 00	1010 18
भाँवरकोल	351 58	470 00	475 00	516 26
जमानियाँ	371 65	414 00	532 07	687 06
रेवतीपुर	328 36	365 52	466 00	528 14
भदौरा	402 14	469 00	605 26	728 07

स्रोत-जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 1961, 1971, 1981 एव जनपद साख्यिकीय पत्रिका 2000

परिशिष्ट 2 2

जनपद-गाजीपुर ग्रामीण आकिक जनसख्या घनत्व (व्यक्ति प्रति वर्ग किमी)

विकास खण्ड	1961	1971	1981	1991
जखनियाँ	381 84	446 00	572 00	716 21
मनिहारी	351 64	403 00	511 00	641 09
सादात	360 59	448 00	572 00	631 00
सैदपुर	428 99	495 00	638 00	775 00
देवकली	364 28	411 00	551 00	722 14
बिरनो	360 00	430 00	551 00	709 00
गाजीपुर	436 66	538 00	669 00	762 84
मरदह	341 62	413 00	522 00	660 41
करण्डा	364 50	437 00	539 00	658 00
कासिमाबाद	373 13	457 00	528 00	673 00
बाराचँवर	387 47	396 00	525 00	639 30
मुहम्मदाबाद	502 04	516 00	688 00	872 00
भाँवरकोल	351 58	470 00	475 00	516 26
जमानियाँ	371 65	414 24	500 00	609 00
रेवतीपुर	324 36	365 52	466 00	528 14
भदौरा	402 14	469 00	466 00	685 00

स्रोत-जिला जनगणना हस्त पुस्तिका 1961, 1971, 1981 एव जनपद साख्यिकीय पत्रिका 2000

परिशिष्ट 4 1

भारत के अन्य प्रान्तो से ग्रामीण आब्रजिल जनसख्या (प्रतिशत) 1991

वर्ष (प्रतिशत)	प्रान्तो की सख्या	क्षेत्राश	प्रतिशत सहित प्रान्तो का नाम
0-0 10 से कम	6	0 38	उडीसा (021), राजस्थान (0 10), हिमाचल प्रदेश (0 04), कर्नाटक (0 02), महाराष्ट्र (0 01)
0-10-1 00 तक	4	1 17	आन्ध्र प्रदेश (0 76), गुजरात (0 28), असम (0 01), मध्य प्रदेश (0 12)
1 00-10 00 तक	1	1 32	पश्चिमी बगाल (1 32)
10 00 से 20 00	-	-	-
20 00 से अधिक	-	-	बिहार (97 13)

स्त्रोत- जनगणना पुस्तिका उ प्र माइग्रेशन टेबुल 1991

परिशिष्ट 4 2

भारत के अन्य प्रान्तो से नगरीय आब्राजित जनसख्या (प्रतिशत) 1991

वर्ष (प्रतिशत)	प्रान्तो की सख्या	क्षेत्राश (प्रतिशत)	प्रतिशत सहित प्रान्तो का नाम
1 से कम	9	2 45	उड़ीसा (065), आध्र प्रदेश (0 52), महाराष्ट्र (0 36), कर्नाटक (0 18), राजस्थान (036), दिल्ली (0 18), केरल (0 08), अरुणाचल प्रदेश (0 09), जम्मू-कश्मीर (0 03)
1-10 00	4	9 37	असम (3 10), मणिपुर (1 24), मध्य प्रदेश (2 43), पजाब (2 60)
10-20 00	-	-	-
20 00 से अधिक	2	88 18	बिहार (58 25), प बगाल (29 93)

स्त्रोत- जनगणना पुस्तिका उत्तर प्रदेश माइग्रेशन टेबुल 1991

परिशिष्ट 4 3

अन्य प्रान्तो मे ग्रामीण प्रवजित जनसख्या (प्रतिशत) 1991

वर्ग (प्रतिशत)	प्रान्तो की सख्या	क्षेत्राश (प्रतिशत)	प्रतिशत सहित प्रान्तो का नाम
0 50 से कम	11	0 97	हिमाचल प्रदेश (0 05), जम्मू-कश्मीर (0 04), नागालैण्ड (0 03), हरियाणा (0 05), तमिलनाडु (0 06), आन्ध्र-प्रदेश (0 09), उडीसा, (0 01), म0प्र0 (0 16), राजस्थान (0 07), गुजरात (0 32), असम (0 06)
50-3 0	3	2 03	पजाब (0 52), प बगाल (1 51), महाराष्ट्र (1 01)
3 0-20 00	-	-	-
20 00 से अधिक	1	97 00	बिहार (97 00)

स्रोत- जनगणना पुस्तिका उ प्र माइग्रेशन टेबुल 1991

परिशिष्ट 4 4

अन्य प्रान्तो मे नगरीय प्रवजित जनसख्या (प्रतिशत) 1991

वर्ग (प्रतिशत)	प्राती की सख्या	क्षेत्राश (प्रतिशत)	प्रतिशत सहित प्रान्तो का नाम
01 0 से कम	8	3 40	केरल (0 29), उडीसा (0 72), हरियाणा (0 56), तमिलनाडु (0 62), कर्नाटक (0 65), हरिमाणा प्रदेश (0 25), जम्मू कश्मीर (0 10), गोवा (0 21)
1 0-5 0	6	-	असम (2 64), राजस्थान (2 43), म0प्र0 (3 14), दिल्ली (2 15), गुजरात (2 97), आ प्र (1 01)
5 0-15 0	-	-	-
15-30 00	3	82 26	बिहार (28 90), पश्चिम बगाल (30 90), महाराष्ट्र (23 36)

स्रोत- जनगणना पुस्तिका उ0प्र0 'माइग्रेशन टेबुल 1991

परिशिष्ट 4 5

अन्य जिलो मे ग्रामीण आव्रजित जनसख्या (प्रतिशत) 1991

वर्ग (प्रतिशत)	जिलो की सख्या	क्षेत्राश	प्रतिशत सहित जिलो का नाम
0 10 से कम	30	0 99	गढवाल (0 0081), सहारनपुर (0 0078), मुजफ्फर नगर (0 0058), मेरठ (0 0039), उत्तर काशी (0 0045), टिहरी गढवाल (0 0043), देहरादून (0 0012), रामपुर (0 0028), बुलन्द शहर (0 0012), शाहजहाँपुर (0 0032), बादा (0 0098), झाँसी (0 0085), रायबरेली (0 0029), हम्मीरपुर (0 0048), खीरी (0 018), प्रतापगढ (0 038), सीतापुर (0 089), गोण्डा (0 10), लखनऊ (0 14), उन्नाव (0 006), गाजियाबाद (0 0234), नैनीताल (0 045), बाराबकी (0 034), मुरादाबाद (0 18), आगरा (0 082), मथुरा (0 08), बरेली (0 12), ललितपुर (0 03), एटा (0 0164)
0 10-1 00 तक	6	1 44	इलाहाबाद (0 23), गोरखपुर (0 48), फैजाबाद (0 23), कानपुर (0 21), सुल्तानपुर (0 17), पिथौरागढ (0 12)
1 00-10 00 तक	4	10 14	जौनपुर (6 76), बस्ती (1 05), मिर्जापुर (1 18), देवरिया (1 03)
10 से अधिक	3	87 43	बलिया (32 99), बाराणसी (20 27) आजमगढ़ (34 27)

स्रोत- जनगणना पुस्तिका उ0प्र0 माइग्रेशन टेबुल

परिशिष्ट 4 6

अन्य जिलो मे नगरीय आव्रजित जनसख्या (प्रतिशत) 1991

वर्ग (प्रतिशत)	जिलो की सख्या	क्षेत्राश (प्रतिशत)	प्रतिशत सहित जिलो का नाम
0 10 से कम	9	0 45	देहरादून (0 06), उतरकाशी (0 04), जालौन (0 08), मथुरा (0 05), फर्रुखाबाद (0 05), हरदोई (0 04), उन्नाव (0 05), बहराइच (0 03), पिथौरा (0 09)
0 10-1 00 तक	21	7 25	सुल्तानपुर (0 68), बस्ती (0 85), बाराबकी (0 23), गोडा (0 76), प्रतापगढ (0 58), लखनऊ (0 94), रायबरेली (0 53), खीरी (0 21), सीतापुर (0 27), झाँसी (0 31), बाँदा (0 13), एटा (0 39), फतेहपुर (0 23), अलीगढ (0 32), आगरा (0 11), मुजफ्फरनगर (0 10), बिजनौर (0 20), मेरठ (0 15), बरेली (0 10), नैनीतल (0 23)
1 00-10 00 तक	7	21 65	इलाहाबाद (3 24), गोरखपुर (2 82), फैजाबाद (2 13), मुरादाबाद (1 01), देवरिया (1 8?), मिर्जापुर (3 58), जौनपुर (7 01)
10 00 से अधिक	3	70 65	बलिया (19 99), आजमगढ (21 94), वाराणसी (28 72)

स्रोत- जनगणना पुस्तिका, उ०प्र० 'माइग्रेशन टेबुल' 1991

परिशिष्ट 4 7

अन्य जिलो मे ग्रामीण प्रव्रजित जनसख्या (प्रतिशत) 1991

वर्ग (प्रतिशत)	जिलो की सख्या	क्षेत्राश (प्रतिशत)	प्रतिशत सहित जिलो का नाम
0 10 से कम	19	0 75	सुल्तानपुर (0 07), सीतापुर (0 04), गोडा (0 08), हमीरपुर (0 05), झाँसी (0 02), फतेहपुर (0 03), फरुखाबाद (0 08), मैनपुरी (0 01), आगरा (0 05), मुज्जफरनगर (0 02), शाहजहाँपुर (0 02), बुलन्दशहर (0 03), सहारनपुर (0 04), रामपुर (0 09), बिजनौर (0 04), अल्मोडा (0 04), चमोली (0 01), गढवाल (0 03), उत्तरकाशी (0 02)
0 10-1 00	15	6 48	लखनऊ (0 18), फैजाबाद (0 19), उन्नाव (0 43), रायबरेली (0 15), प्रतापगढ (0 96), बस्ती (0 31), गोरखपुर (0 67), देवरिया (0 38), नैनीताल (0 75), खीरी (0 92), हरदोई (0 15), देहरादून (0 38), मेरठ (0 45), कानपुर (0 44), इटावा (0 12)
1-10 00	3	17 18	मिर्जापुर (4 57), बहराइच (7 38), इलाहाबाद (5 23)
10-20	2	24 83	जौनपुर (9 16), वाराणसी (15 67)
20 00 से अधिक	2	49 76	आजमगढ़ (29 31), बलिया (20 45)

स्त्रोत- जनगणना पुस्तिका उ0प्र0 माइग्रेशन टेबुल 1991

परिशिष्ट 4 8

अन्य जनपदो मे नगरीय प्रव्रजित, जनसख्या (प्रतिशत) 1991

वर्ग (प्रतिशत)	जिलो की सख्या	क्षेत्राश प्रतिशत	प्रतिशत सहित जिलो का नाम
0 50 से कम	21	7 40	बाराबकी (0 50), प्रतापगढ (0 41), सुल्तानपुर (0 23), गोण्डा (0 51), बहराइच (0 41), हरदोई (0 18), उन्नाव (0 41), रायबरेली (0 29), इटावा (0 13), फतेहपुर (0 41), जालौन (0 13), हम्मीरपुर (0 38), मुजफ्फरनगर (0 11), बुलन्दशहर (0 31), एटा (0 16), मैनपुरी (0 14), खीरी (0 29), बिजनौर (0 31), गढवाल (0 10), चमोली (0 02), उत्तरकाशी (0 01), टिहरी गढवाल (0 06), पीलीभीत (0 91), अल्मोडा (0 23), बदायूँ (0 05), मथुरा (0 43), बाँदा (0 29)
0 50-3 0	12	10 92	देवरिया (1 43), फैजाबाद (1 35), बस्ती (0 68), नैनीताल (0 73), बरेली (0 84), सहारनपुर (0 53), मेरठ (1 38), आगरा (1 31), देहरादून (0 63), मुरादाबाद (0 82), सीतापुर (0 71), झाँसी (0 51)
3 0-10 0	6	33 30	इलाहाबाद (7 32), बलिया (5 13), मिर्जापुर (7 11), जौनपुर (3 41), गोरखपुर (5 13), लखनऊ (5 25)
10 0-20 0	2	21 33	कानपुर (10 12), आजमगढ (11 21)
20 00 से अधिक	1	27 00	वाराणसी (27 00)

स्त्रोत- जनगणना पुस्तिका उ0प्र0 माइग्रेशन टेबुल 1991

परिशिष्ट 5 1

जनपद गाजीपुर की आयु सरचना (प्रतिशत)

	1981			1991		
आयु वर्ग	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री
0-9	30 00	30 91	29 09	29 56	29 96	29 15
10-19	21 35	22 32	20 58	20 82	21 35	20 26
20-29	13 73	12 50	14 96	14 28	12 98	15 65
30-39	11 29	10 27	12 33	11 66	11 07	12 26
40-49	9 17	8 85	9 50	9 10	8 94	9 21
50-59	6 43	6 72	6 15	6 25	6 50	6 90
60 से अधिक	6 60	8 36	4 85	7 70	8 29	7 10

स्रोत- जिला जनगणना हस्त पुस्तिका 1981, 1991 (सोशल एण्ड कल्चरल टेबुल)

परिशिष्ट 5 2

आयु वर्गानुसार वैवाहिक स्तर 1971 (प्रतिशत मे)

	अविवाहित		विवाहित		विधवा/विधुर		तलाकशुदा	
आयु वर्ग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
0-9	100 00	100 00	-	-	-	-	-	-
10-19	78 24	54 86	21 74	44 85	0 14	0 06	0 01	0 01
20-29	18 37	2 27	80 49	96 94	1 07	0 78	0 23	0 02
30-39	3 38	0 26	93 22	95 05	3 26	4 66	0 27	0 06
40-49	2 33	0 22	88 78	87 09	7 40	12 55	0 17	0 16
50-59	1 81	0 19	86 38	72 16	11 64	27 49	0 25	-
60-69	1 49	0 02	79 94	50 54	21 43	49 29	0 29	0 08
70 से अधिक	1 03	-	64 55	26 83	34 10	78 83	0 13	-

स्रोत- जिला जनगणना हस्तपुस्तिका सोशल एण्ड कल्चरल टेबुल 1971

परिशिष्ट 5 3

आयुवर्गानुसार वैवाहिक स्तर 1981 (प्रतिशत)

	अविवाहित		विवाहित		विधवा/विधुर		तलाकशुदा	
आयु वर्ग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
0-9	100 00	100 00	-	-	-	-	-	-
10-19	85 23	62 16	14 63	34 1	0 11	0 99	0 05	0 07
20-29	23 04	3 70	75 80	95 47	1 76	0 55	0 25	0 22
30-39	4 32	0 46	93 21	96 62	2 15	2 52	0 32	0 36
40-49	1 76	0 11	93 89	91 92	4 17	7 70	0 17	0 27
50-59	1 73	0 10	88 60	80 91	9 26	18 73	0 33	0 29
60-69	2 02	0 16	81 40	34 18	16 40	42 65	0 15	0 45
70 से अधिक	1 99	0 17	68 35	56 70	29 38	65 15	0 38	0 51

स्रोत- जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 1981, सोशल एण्ड कल्चरल टेबुल

परिशिष्ट 5 4

आयुवर्गानुसार वैवाहिक स्तर (प्रतिशत) 1991

आयु वर्ग	अविवाहित		विवाहित		विधवा/विधुर		तलाकशुदा	
	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
0-9	100 00	100 00	--	--	--	--	--	--
10-19	87 19	71 09	12 69	28 80	0 05	0 07	0 06	0 03
20-29	17 38	2 60	81 88	96 84	0 58	0 48	0 16	0 09
30-39	2 95	0 031	95 07	97 79	1 77	1 78	0 19	0 11
40-49	0 11	0 33	93 60	94 69	3 50	4 85	0 17	0 02
50-59	1 53	0 30	90 64	87 97	7 50	11 60	0 24	0 11
60-69	1 72	0 17	84 65	69 56	13 54	30 13	0 06	0 11
70 से अधिक	5 27	2 86	69 82	44 69	24 5	52 13	0 38	0 30
योग	52 49	44 57	44 89	51 17	2 60	4 19	0 10	0 07

स्रोत- जनपद साँख्यिकीय पत्रिका 2002

परिशिष्ट 5 5

साक्षरता 1971

विकास खण्ड	कुल	पुरुष	स्त्री
जखनियाँ	15 60	24 50	5 80
मनिहारी	19 70	28 40	6 10
सादात	17 80	29 10	4 80
सैदपुर	18 20	28 30	6 40
देवकली	18 60	28 40	6 00
बिरनो	21 90	34 40	9 10
मरदह	18 30	28 70	7 90
गाजीपुर	26 42	40 00	11 40
करण्डा	24 00	33 40	9 70
कासिमाबाद	17 10	24 00	8 00
बाराचँवर	19 40	28 70	9 50
मुहम्मदाबाद	20 40	30 40	9 80
भाँवरकोल	21 10	30 20	12 60
जमानिया	20 10	34 00	9 00
रेवतीपुर	28 00	43 30	12 20
भदौरा	28 30	42 40	14 40

स्रोत- जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 1971

परिशिष्ट 5 6

साक्षरता 1981

विकासखण्ड	कुल	पुरुष	स्त्री
जखनियाँ	22 04	35 93	8 63
मनिहारी	22 29	36 18	9 95
सादात	29 20	43 86	14 66
सैदपुर	26 93	42 77	11 45
देवकली	26 27	41 46	11 19
बिरनो	22 11	35 76	8 67
मरदह	23 73	38 36	9 00
गाजीपुर	34 56	48 00	20 23
करण्डा	28 40	43 22	13 46
कासिमाबाद	21 05	35 76	8 67
बाराचँवर	22 50	34 26	10 55
मुहम्मदाबाद	23 52	35 97	10 60
भाँवरकोल	27 84	38 58	16 99
जमानियाँ	28 25	42 57	13 51
रेवतीपुर	32 50	46 95	17 52
भदौरा	33 35	47 34	19 00

स्त्रोत- जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 198

परिशिष्ट 5 7

साक्षरता 1991

विकासखण्ड	कुल	पुरुष	स्त्री
जखनियाँ	38 00	56 80	19 30
मनिहारी	38 60	57 50	19 90
सादात	39 30	58 30	20 90
सैदपुर	42 70	62 60	22 90
देवकली	41 00	59 60	21 90
बिरनो	39 10	58 20	19 90
मरदह	37 03	55 20	18 70
गाजीपुर	39 40	58 70	18 70
करण्डा	46 90	66 80	18 70
कासिमाबाद	38 40	56 30	26 60
बाराचँवर	37 30	54 30	19 60
मुहम्मदाबाद	40 70	59 00	20 90
भाँवरकोल	45 60	62 90	27 60
जमानियाँ	44 10	63 90	23 40
रेवतीपुर	45 90	63 30	27 60
भदौरा	49 40	67 10	30 70

स्रोत- जनपद साख्यिकीय पत्रिका 2000

परिशिष्ट 5 8

आयु वर्गानुसार साक्षरता

आयुवर्ग	1971			1981			1991		
	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री
कुल	20 14	30 75	9 28	27 77	42 00	13 44	27 30	61 40	24 40
0-4	--	--	--	--	--	--	--	--	--
5-9	15 10	19 68	9 40	16 45	22 23	10 45	23 61	28 77	17 95
10-14	44 47	57 45	22 63	45 68	66 32	24 37	61 19	76 89	44 14
15-19	39 85	61 07	18 14	44 63	65 02	24 12	59 58	78 88	37 95
20-24	26 27	47 88	11 67	28 30	55 57	12 25	48 09	73 43	26 79
25-34	21 90	36 99	9 28	23 30	38 47	10 00	41 15	64 82	19 71
35 से अधिक	15 19	25 98	4 10	16 28	28 23	5 67	28 85	46 48	7 90

परिशिष्ट 5 9

जनपद गाजीपुर मे शैक्षिक-स्तर

शैक्षिक स्तर	1971			1981			1991		
	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री
शिक्षित (बिना शैक्षिक स्तर के)	43 55	31 09	12 45	34 60	23 95	10 66	30 23	21 06	9 07
प्राइमरी	29 89	21 98	7 81	28 64	19 80	8 84	23 10	14 44	8 66
मिडिल	14 45	12 85	1 60	16 27	13 56	2 71	19 70	14 53	5 17
मैट्रिक/ हाईस्कूल	10 95	10 13	0 82	16 91	14 96	1 95	21 83	17 85	3 98
डिग्री के असमान गैर-तकनी का डिप्लोमा	--	--	--	0 03	0 02	0 09	0 40	0 27	0 10
डिग्री के असमान तकनी की डिप्लोमा	0 08	0 07	0.01	0 092	0 09	0 002	0 16	0 14	0 02
स्नातक एव उससे अधिक	1 14	1 05	0 09	3 42	3 07	0 35	4 64	3·99	0 65

स्रोत- जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 1971, 1981 एव जनपद साख्यिकीय पत्रिका 2000

परिशिष्ट 5 10

जनसख्या की व्यावसायिक सरचना 1971 (प्रतिशत मे)

विकास खण्ड	कुल कार्यरत	कृषक	कृषक मजदूर	उद्योग एव निर्माण कार्य	अन्य	अकार्यरत
जखनियाँ	27 91	67 80	21 00	4 45	6 75	72 09
मनिहारी	28 80	66 45	20 64	5 87	6 94	71 20
सादात	31 06	50 56	31 71	7 80	9 93	68 94
सैदपुर	26 33	62 60	23 79	6 40	7 20	73 77
देवकली	29 70	72 39	15 79	3 23	8 57	70 30
बिरनो	29 28	56 87	28 02	5 63	9 51	70 72
गाजीपुर	29 09	60 57	20 05	6 32	13 04	70 90
मरदह	30 59	55 57	32 12	5 16	7 15	69 41
करण्डा	27 28	48 46	32 13	6 23	13 14	72 72
कासिमाबाद	31 19	55 25	30 51	7 36	6 88	68 81
बाराचँवर	33 90	46 24	42 92	3 95	6 87	66 10
मुहम्मदाबाद	34 40	48 67	35 94	5 58	9 80	66 55
भाँवरकोल	30 78	40 24	44 75	6 54	8 47	69 22
जमानियाँ	30 07	43 46	36 67	6 39	13 48	69 93
रेवतीपुर	28 77	40 69	43 48	6 17	9 65	71 23
भदौरा	27 53	38 00	40 80	7 00	14 20	42 47

स्रोत- जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 1971

परिशिष्ट 5 11

व्यवसायिक सरचना 1981 (प्रतिशत मे)

विकास खण्ड	कृषक	कृषक मजदूर	उद्योग एव निमार्ण	अन्य	कुल कार्यरत मुख्य	कुल कार्यरत सीमातिक	अकार्यरत
जखनियाँ	69 59	7 18	3 57	19 66	24 13	2 96	72 90
मनिहारी	71 57	12 09	2 68	13 66	26 08	1 60	72 3
सादात	71 20	10 53	3 26	15 01	24 54	3 00	72 60
सैदपुर	59 50	12 85	4 05	23 35	24 65	2 40	72 90
देवकली	64 41	9 29	4 00	22 30	24 70	2 46	72 70
बिरनो	65 38	12 92	2 60	19 10	27 23	2 92	69 84
गाजीपुर	54 58	13 57	4 80	27 05	27 29	1 67	71 04
मरदह	66 77	11 80	3 11	28 32	26 67	4 87	68 46
करण्डा	52 99	20 63	4 95	21 42	24 00	1 90	74 04
कासिमाबाद	62 09	16 64	3 45	17 90	26 56	1 52	71 90
बाराचँवर	49 45	30 08	3 78	16 69	28 48	2 07	69 45
मुहम्मदाबाद	53 28	24 69	4 50	17 53	26 75	1 30	71 94
भाँवरकोल	40 81	39 09	4 27	15 83	27 00	1 01	71 90
जमानियाँ	51 83	35 88	1 50	10 79	25 84	0 54	73 62
रेवतीपुर	40 13	38 87	3 37	18 63	26 30	0 62	72 90
भदौरा	45 78	33 32	2 37	18 53	23 16	0 80	75 80

स्त्रोत-जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 1981 जनपद गाजीपुर (उ0प्र0)

परिशिष्ट 5 12

व्यावसायिक सरचना 1991 (प्रतिशत मे)

विकास खण्ड	कृषक	कृषक मजदूर	उद्योग एव निमार्ण	अन्य	कुल कार्यरत मुख्य	कुल कार्यरत सीमातिक	अकार्यरत
जखनिया	62 60	11 99	6 47	19 06	25 02	3 23	71 53
मनिहारी	61 57	16 09	5 24	16 91	28 16	3 45	68 39
सादात	65 27	17 73	4 45	13 23	28 03	2 01	69 96
सैदपुर	57 00	18 06	6 88	18 13	25 56	2 70	71 74
देवकली	62 35	13 67	4 71	13 90	26 38	2 83	71 61
बिरनो	57 05	13 15	4 01	14 67	27 43	6 02	67 60
गाजीपुर	53 34	22 80	13 94	22 00	24 67	0 73	74 60
मरदह	60 32	13 13	3 88	14 43	27 17	4 34	68 49
करण्डा	50 00	23 22	4 96	17 29	26 45	2 80	70 75
कासिमाबाद	51 50	29 76	3 70	14 21	28 26	2 04	69 70
बाराचँवर	47 84	31 75	4 11	15 82	28 60	1 45	69 95
मुहम्मदाबाद	48 18	32 88	9 02	16 57	27 27	1 19	71 54
भाँवरकोल	38 44	47 06	2 37	14 01	29 16	1 16	69 68
जमानियाँ	45 73	36 87	6 83	15 45	29 17	1 34	69 49
रेवतीपुर	36 26	47 27	2 71	15 12	28 58	1 06	70 36
भदौरा	38 11	39 84	3 84	20 23	17 27	0 70	82 03

स्रोत- जनपद साख्यिकी पत्रिका 2000

परिशिष्ट 5 13

नगरीय केन्द्रो की व्यावसायिक सरचना (प्रतिशत) 1991

नगर केन्द्र	कृषक	कृषक मजदूर	उद्योग एव निमार्ण	अन्य	कुल कार्यरत मुख्य	कुल कार्यरत सीमातिक	अकार्यरत
सैदपुर	14 15	11 29	18 34	55 10	24 64	0 23	75 13
सादात	19 62	4 67	27 89	51 85	24 54	0 26	75 20
गाजीपुर	4 25	1 68	18 63	75 09	21 77	0 07	78 16
जगीपुर	20 05	5 95	18 41	44 32	23 31	2 53	74 16
मुहम्मदाबाद	10 21	8 55	17 95	63 70	23 68	0 32	76 00
बहादुरगज	13 32	8 58	45 09	23 95	25 79	2 54	71 67
जमानिया	16 74	11 89	16 85	52 78	20 06	0 33	79 61
दिलदारनगर	5 94	8 46	11 51	7268	20 16	0 28	79 56

स्रोत- डिस्ट्रिक्ट प्राइमरी सेन्सस एब्सट्रैक्ट 1991

परिशिष्ट 8 1

जनपद गाजीपुर विकास स्तरो का विनिर्धारण

1999-2000

विकास खण्ड	1	2	3	4	5	6	7
जखनिया	38 00	28 25	6 47	3 23	19 06	25 28	1382
मनिहारी	38 60	31 61	5 24	3 45	16 91	23 67	1362
सादात	39 30	30 04	4 45	2 01	13 23	24 70	1301
सैदपुर	42 70	28 26	6 88	2 70	18 13	22 69	1193
देवकली	41 00	29 21	4 71	2 83	13 90	23 47	1135
बिरनों	39 10	33 45	4 01	6 02	14 67	24 77	1203
गाजीपुर	39 40	25 40	13 94	0 73	22 00	21 41	1266
मरदह	37 03	31 51	3 88	4 34	14 43	25 61	1213
करण्डा	46 90	29 25	4 96	2 80	17 29	18 79	1140
कासिमाबाद	38 40	30 29	3 70	2 04	14 21	22 01	1222
बाराचँवर	37 30	30 05	4 11	1 45	15 82	20 05	1133
मुहम्मदाबाद	40 70	28 46	9 02	1 19	16 57	19 96	1403
भाँवरकोल	45 60	30 32	2 37	1 16	14 01	18 82	1148
जमानियाँ	44 10	30 51	6 83	1 34	15 45	17 68	1263
रेवतीपुर	45 90	29 64	2 71	1 06	15 12	18 74	1312
भदौरा	49 40	17 97	3 84	0 70	20 23	14 71	1133

1 साक्षरता (प्रतिशत)

2 कुल परिवार (प्रतिशत)

3 उद्योग एव निर्माण कार्य (प्रतिशत)

4 सीमातिक कर्मकार (प्रतिशत)

5 अन्य सेवाए (प्रतिशत)

6 अनुसूचित जाति जनजाति (प्रतिशत)

7 खाद्यान्न उत्पादन (किग्रा प्रति हक्टेयर)

क्रमश

विकास खण्ड	8	9	10	11	12	13	14	15
जखनिया	842 3	174 74	716 21	100 00	30 43	117 60	12 07	79 71
मनिहारी	783 3	181 28	641 09	100 00	15 80	122 20	14 28	57 14
सादात	798 6	184 24	631 00	100 00	36 60	126 50	19 12	98 36
सैदपुर	909 6	183 24	775 00	100 00	22 80	117 40	12 80	64 40
देवकली	760 9	170 78	722 14	100 00	27 90	105 40	24,18	73 95
बिरनो	841 5	189 90	709 00	100 00	51 51	118 70	34 09	71 96
गाजीपुर	926 3	224 50	762 84	100 00	16 39	107 30	18 39	80 03
मरदह	916 4	169 76	660 41	100 00	30 45	138 80	18 03	81 96
करण्डा	904 4	185 99	958 00	100 00	38 20	137 51	33 70	68 96
कासिमाबाद	675 0	178 85	673 00	100 00	12 66	100 40	7 42	66 26
बाराचँवर	666 0	219 25	639 30	100 00	44 19	104 20	32 04	51 96
मुहम्मदाबाद	1099 3	159 32	872 00	100 00	26 92	126 20	31 73	88 39
भाँवरकोल	567 6	172 56	516 26	100 00	37 24	109 90	15 17	83 17
जमानियाँ	565 6	158 87	609 00	100 00	36 22	92 90	11 81	66 89
रेवतीपुर	461 5	159 87	528 14	100 00	53 96	87 40	07 9	68 2.5
भदौरा	758 3	165 13	685 00	100 00	32 25	110 70	22 50	96 77

8 पक्की सडके (प्रति हजार वर्ग किमी0)

9 कृषि घनत्व

10 ग्रामीण घनत्व

11 विद्युतीकृत ग्राम (प्रतिशत)

12 एलोपैथिक चिकित्सालय/प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (3 किमी0 पर)

13 पक्की सड़को की लम्बाई (प्रति लाख जनसख्या पर)

14 आयुर्वेदिक चिकित्सालय/औषधालय (3 किमी0 पर)

15 परिवार मातृशिशु कल्याण केन्द्र (3 किमी0 पर)

क्रमश

विकास खण्ड	16	17	18	19	20	21	22	23
जखनिया	85 02	13 52	89 37	92 30	149 84	91 53	8 64	160
मनिहारी	75 00	--	91 83	87 50	153 65	84 24	9 45	
सादात	98 90	--	91 25	86 40	154 13	86 03	8 43	122
सैदपुर	69 60	--	100 00	76 60	114 90	72 97	7 13	207
देवकली	55 80	--	96 27	71 30	130 42	71 67	7 04	145
बिरनो	63 63	--	71 96	94 30	168 34	92 43	10 03	201
गाजीपुर	78 73	26 43	91 95	90 80	175 80	86 15	12 40	235
मरदह	87 70	--	59 01	93 40	161 50	88 43	8 23	200
करण्डा	75 28	--	79 77	82 70	157 76	69 13	6 15	184
कासिमाबाद	52 24	--	99 56	84 80	166 22	84 14	9 62	168
बाराचँवर	90 60	--	100 00	91 90	161 40	91 11	8 13	133
मुहम्मदाबाद	69 71	11 53	75 00	76 00	146 28	75 45	10 23	205
भाँवरकोल	82 06	--	78 62	47 80	119 40	50 17	4 68	134
जमानियाँ	88 97	8 66	100 00	83 60	176 59	82 40	2 62	145
रेवतीपुर	87 30	--	65 07	65 60	132 64	51 61	2 23	136
भदौरा	69 35	--	80 64	73 90	153 20	71 25	2 01	192

16 डाकघर (3 किमी0 पर)

17 तारघर (5 किमी0 पर)

18 बैकिग सुविधा (5 किमी0 पर)

19 शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल (प्रतिशत)

20 फसल गहनता (प्रतिशत)

21 सिचाई गहनता (प्रतिशत)

22 मुद्रादायिनी फसल (प्रतिशत)

23 उर्वरक अपयोग (किग्रा प्रति हेक्टेयर)

क्रमश

विकास खण्ड	24	25	26	27	28
जखनिया	57 48	28 01	100 00	98 06	54 06
मनिहारी	42 85	39 28	105 61	63 77	83 52
सादात	52 00	--	91 25	74 31	84 04
सैदपुर	57 20	37 15	58 00	76 80	93 93
देवकली	43 72	--	97 20	60 93	70 80
बिरनो	85 61	54 5	100 00	102 22	68 99
गाजीपुर	81 03	49 42	82 75	67 80	106 12
मरदह	63 27	1 63	100 00	82 78	53 80
करण्डा	51 68	--	89 88	50 66	53 57
कासिमाबाद	77 72	28 82	93 44	59 39	89 10
बाराचँवर	88 39	34 80	98 89	96 68	66 90
मुहम्मदाबाद	32 69	45 67	92 78	76 92	99 46
भाँवरकोल	46 89	--	93 10	52 41	66 44
जमानियाँ	51 95	23 62	100 00	25 19	74 52
रेवतीपुर	71 42	--	100 00	68 25	48 62
भदौरा	66 12	20 63	100 00	77 41	31 87

24 पशु चिकित्सालय (5 किमी0 पर)

25 शीत गोदाम (5 किमी0 पर)

26 बीज गोदाम एव उर्वरक भण्डार (5 किमी0 पर)

27 बाजार (5 किमी0 पर)

28 पक्की सड़क (3 किमी0 पर)

क्रमश

विकास खण्ड	29	30	मानक सख्या	सयुक्त सूचकाक
जखनिया	72 94	90 82	+1 06	110 60
मनिहारी	5 10	100 00	+0 19	101 90
सादात	43 71	85 79	+0 16	101 60
सैदपुर	46 40	73 60	+0 54	105 40
देवकली	49 30	63 25	-0 81	91 90
बिरनो	4 54	87 87	+0 96	109 60
गाजीपुर	39 09	89 08	+1 55	115 00
मरदह	--	78 68	+0 74	107 40
करण्डा	28 03	89 88	-0 09	99 10
कासिमाबाद	--	65 93	-0 64	93 60
बाराचँवर	42 54	94 47	-0 42	95 80
मुहम्मदाबाद	50 96	89 90	+2 29	122 90
भाँवरकोल	--	85 50	-2 21	77 90
जमानियाँ	22 04	100 00	-1 01	89 90
रेवतीपुर	71 42	68 25	-1 67	82 40
भदौरा	95 16	79 03	-0 34	96 60

29 रेलवे स्टेशन (5 किमी0 पर, प्रतिशत)

30 बस स्टेशन (5 किमी0 पर, प्रतिशत)

मान सख्या = $\sum_{1}^{30}=1\frac{x-\bar{x}}{\sigma}$

जहाँ x = अवयवो का मान

$\bar{x}$ = मध्यमान

σ = मानक विचलन

सयुक्त सूचकाक = (मानक सख्या +10) 10

स्रोत- जनपद साख्यिकी पत्रिका 2000 गाजीपुर (उ0प्र0)